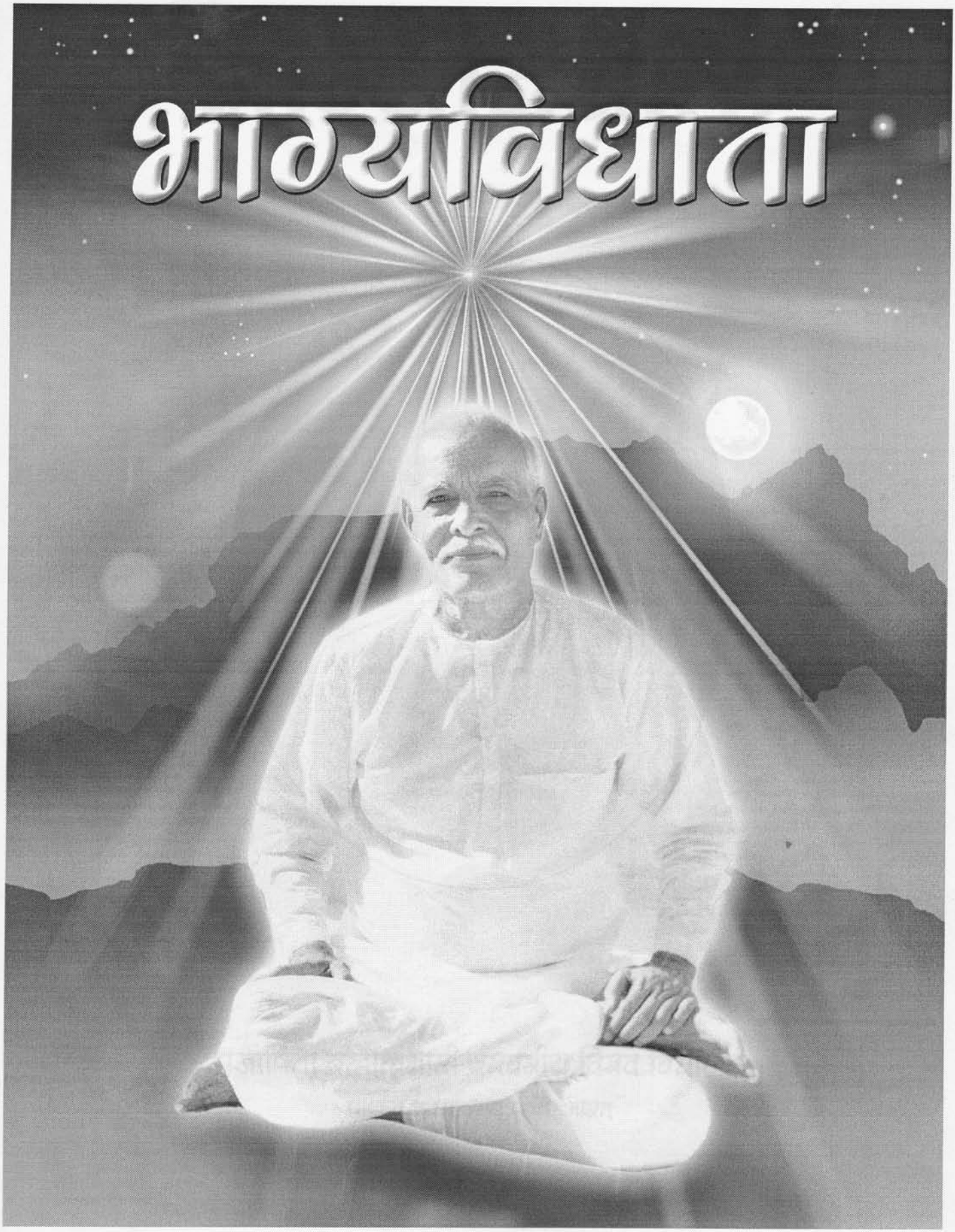
ભાગ્યવિધાતા

अहो ! कैसी अद्भुत थीं वे सुहावनी घड़ियाँ !

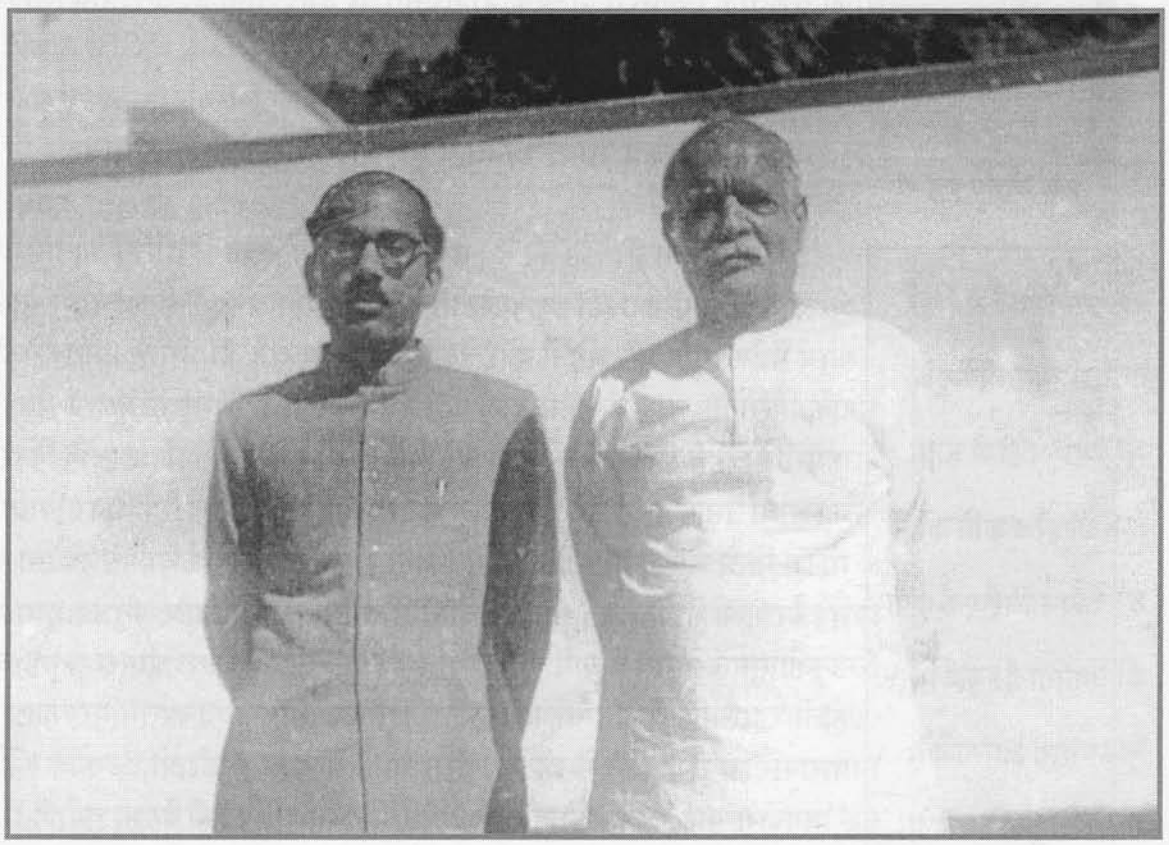

बाबा के साथ भ्राता जगदीश चन्द्र जी।

ब्रह्माकुमार भ्राता जगदीश चन्द्र जी अपने अनुभव इस प्रकार लिखते हैं कि साकार बाबा के साथ जीवन की जो घड़ियाँ बीतीं, वे सभी निस्सन्देह अत्यन्त अनमोल घड़ियाँ थीं। उनके संग और सम्पर्क की वे घड़ियाँ इस आत्मा पर अमिट छाप छोड़ गयी हैं। इस ईश्वरीय ज्ञानमय जीवन के प्रारम्भ से ही बाबा की हरेक कृति को मैं अपने लिए एक कृपा मानता हूँ। मुझ प्रभु-प्यासी आत्मा को योगयुक्त करने के लिए बाबा ने क्या नहीं किया होगा ? मुझ पर उनका मधुमय प्यार एक ऐसा प्यार था जो अनिर्वचनीय है। दिन हो या रात, सोने का समय हो या जागने

s_book final.1.pmd 1 02-01-2005, 4:58 PM

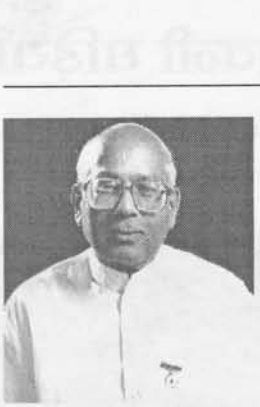

भ्राता जगदीश चन्द्र जी

इस ईश्वरीय ज्ञानमय जीवन के प्रारम्भ ही से बाबा की हरेक कृति को मैं अपने लिए एक कृपा मानता हूँ। मुझ प्रभु-प्यासी आत्मा को योगयुक्त करने के लिए बाबा ने क्या नहीं किया होगा ? मुझ पर उनका मधुमय प्यार एक ऐसा प्यार था जो अनिर्वचनीय है।

का, उनकी कृपा-दृष्टि एक चुम्बक की तरह मुझ लोहे को अपनी ओर खींचे चली जाती थी। इसके उदाहरण स्वरूप जीवन में अनन्त घटनायें हैं जिनका उल्लेख किया जा सकता है। उनमें से दो-एक जो मेरे मन पर उभर आयी हैं, उन्हें यहाँ लिपिबद्ध कर देता हूँ –

एक अजब सरूर को लिये हुए धीरे-धीरे नीचे उतर आया

ये वृत्तान्त सन् 1953 का है। तब इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का मुख्यालय भरतपुर के महाराजा की 'बृजकोठी' में स्थित था। यह कोठी आज भी माउण्ट आबू में, वर्तमान बस अड्डे से कोई डेढ़ फर्लांग आबू रोड़ की ओर है। उस कोठी के एक हिस्से का नाम था– 'सरदारी क्वाटर्स'। उसके ऊपर की मंज़िल में बड़े-बड़े कमरों में बहुत बड़ी-बड़ी चारपाइयाँ ही पड़ी थीं। एक दिन की बात है कि रात्रि को बाबा उस कमरे में लेटे हुए थे और वे ईश्वरीय जीवन, ईश्वरीय ज्ञान इत्यादि की मीठी-मीठी बातें हम 5-7 उपस्थित जनों से काफ़ी देर तक बड़ी सहृदयता और बड़े वात्सल्य से करते रहे थे। उन बातों से आत्मा को बड़ा सुख अनुभव हुआ और उनको सुनते-सुनते योग में ऐसी स्थिति हुई कि मन करता था श्रीमुख से यह चर्चा होती रहे ताकि ये आत्मा आज पूर्णतः धुलकर योग की उच्चतम पराकाष्ठा का पारावार पा ले। इतने में ही जो वरिष्ठ बहनें मेरे साथ बैठी थीं, उन्होंने कहा – ''जगदीश भाई, अब चलो बाबा को आराम करने दो; काफ़ी देर हो गयी है।'' मैं मन मसोस कर रह गया। अपने प्रियतम के आराम में ख़लल कैसे डाल सकता था ? बाबा ने मुस्कराते हुए चितवन से कमल नयनों को विशेष आभा देते हुए मेरी ओर निहारा और मैं उस चित्र को मन के फ्रेम में जड़कर वहाँ से प्रस्थान करने लगा। एक विचित्र दशा थी। मन जाना नहीं चाहता था, बुद्धि जाने का निर्णय देती थी और टाँगें इस असमंजस में थीं कि वे मन की बात मानें या बुद्धि की। लाचार चल रहा था परन्तु चलते समय भी ऐसा अनुभव होता था कि आज पाँव पृथ्वी पर नहीं हैं (छत पर भी नहीं हैं), बल्कि मैं स्वयं को प्रकाश के एक समुद्र में, विदेह अवस्था में अनुभव करता था। एक अजब सरूर को लिये हुए धीरे-धीरे नीचे उतर आया। नीचे कुछ कमरे थे जिन्हें 'धोबी क्वार्टर' कहते थे क्योंकि वहाँ दो कमरों में कपड़े

s_book final.1.pmd 2 02-01-2005, 4:41 PM

प्रैस करते थे। उसके निकट ही कई ख़ाली कमरे थे। मैं उसी ओर बढ़ रहा था क्योंकि उस रात्रि को मेरे शयन की वहाँ व्यवस्था थी। जब मैं बाहर आकर चल रहा था तो चाँदनी की सफ़ेद छटा छिटक रही थी। उसने मेरी उस प्रकाशमय स्थिति को और बल दे दिया। इतने में मैं अपने कमरे तक आ पहुँचा। वहाँ आकर कुछ देर अपनी चारपाई पर इसी मस्ती में बैठा रहा क्योंकि उस स्थिति में नींद का तो नाम ही नहीं था। आख़िर कब तक बैठा रहता ? उसी कमरे में वहीं लेट गया।

एक विचित्र दशा थी। मन नहीं जाना चाहता था, बुद्धि जाने का निर्णय देती थी और टाँगें इस असमंजस में थीं कि वे मन की बात मानें या बुद्धि की। लाचार चल रहा था परन्तु चलते समय भी ऐसा अनुभव होता था कि मैं प्रकाश के एक समुद्र में विदेह अवस्था में हूँ।

अपनी आँखों और अपने कानों पर एतबार भी नहीं हो रहा था

परन्तु बाबा की वह तस्वीर भुलाये नहीं भूलती थी। उस मौन चित्र से मेरे मन में ऐसे आवाज़ आती कि – ''बच्चे, ये तुम्हें विदा कर रहे हैं। तुम इन्हें जाने दो और अभी तुम भी चले जाओ, फिर मैं तुम्हारे पास आऊँगा।'' बस, यही अव्यक्त आवाज़ भीतर के कानों में गूँजती रही। वही मुस्कान भीतर की आँखों के सामने आती रही और वही बन्द होंठ कुछ बोलते हुए सुनायी देते रहे और वही नयन कुछ इशारा करते हुए महसूस होते रहे। इस अजब हालत में समय गुज़रते पता भी नहीं चला परन्तु सोचने से ऐसे लगा कि तब रात्रि के 12-30 या 1-00 का समय हो गया होगा क्योंकि लगभग 11 बजे तो मैंने बाबा के यहाँ से प्रस्थान किया था। इतने में देखता क्या हूँ कि अकेले बाबा उस कमरे में मेरे सामने आ खड़े हुए हैं और प्यार से पुचकार कर कह रहे हैं – ''क्यों बच्चे, नींद नहीं आ रही ?'' बाबा को देखकर मुझे बेहद ख़ुशी भी हुई और साथ-साथ मुझे अपनी आँखों और अपने कानों पर एतबार भी नहीं हो रहा था। मैंने थोड़ा उठने की कोशिश की कि बाबा की ओर बढ़ूँ परन्तु बाबा ही मेरे सिरहाने की ओर बढ़े और मस्तक पर हाथ रखते हुए बोले – ''बच्चे, अब सो जाओ, फिर सुबह मिलेंगे।'' काश, मुझे वह शिष्टाचार भी नहीं आया कि उठकर बाबा के कमरे तक साथ चला जाता परन्तु यह बाबा का ही प्रभाव था कि बस, यादों में खोये हुए मुझ पर धीरे-धीरे नींद ने अपनी चादर डाल दी। बस, इसके बाद जब प्रातः उठा तो रात का वो दृश्य फिर याद हो आया और मैंने सोचा कि हमारे बाबा, शिव बाबा के माध्यम होने से

s_book final.1.pmd 3 02-01-2005, 4:58 PM

दोनों किस प्रकार हमारी याद से अपनी याद का तार जोड़े हुए हैं और किस प्रकार वह करुणाकर एक नाचीज़ बच्चे के याद करने पर उसके प्यार की डोरी से खिंचे चले आते हैं और अपने वरद् हस्तों से उसे दुलार देकर सुलाते हैं। यह सब तो अनुभव की बात है, परन्तु इससे यह भी तो स्पष्ट हुआ कि ज्ञान और प्रेम की डोरी द्वारा बाबा से याद की तार कैसे जोड़ी जा सकती है।

इसीलिए ही तो मैं जगा रहता था

बाबा उस कमरे में मेरे सामने आ खड़े हुए हैं और प्यार से पुचकार कर कह रहे हैं – "क्यों बच्चे, नींद नहीं आ रही ?" बाबा मेरे सिरहाने की ओर बढ़े और मस्तक पर हाथ रखते हुए बोले – "बच्चे, अब सो जाओ, फिर सुबह मिलेंगे।"

इसी प्रकार के अनुभव कई बार हुआ करते थे। मैं पाण्डव भवन में पहले जब कभी भी जाया करता था तो नये भवन का कुछ हिस्सा बन जाने पर मेरे रहने की व्यवस्था प्रायः उसी कमरे में होती थी जिस कमरे में अभी निर्वैर भाई रहते हैं। सामने ही बाबा का कमरा था। रात को क्लास इत्यादि समाप्त होने के घण्टे-दो घण्टे बाद तक भी बाबा के कमरे की लाइट जग रही होती थी। तब मैं भी प्रायः अपनी लाइट का स्विच ऑफ़ नहीं करता। बहुत बार ऐसा होता था कि बाबा लच्छू बहन, सन्देशी बहन, सन्तरी बहन या जवाहर बहन, जो उन दिनों वहाँ बाबा के साथ होती थीं, को कहते – "देखो, जगदीश के कमरे की लाइट जग रही है ?" बहुधा तो जग ही रही होती थी। तो बाबा उन्हें कहते – "अच्छा, उसे बुला लाओ।" इसीलिए ही तो मैं जाग रहा होता था। जब मैं बाबा के कमरे में पहुँचता तब कई बार खड़े-खड़े ही दूसरे दिन के लिए कुछ आवश्यक निर्देश दे देते और कभी-कभी अपनी चारपाई पर बिठा देते और जिस बात के लिए बुलाया होता, वह बात भी करते रहते और कई बार साथ में लिटा कर ही ईश्वरीय बातें करते रहते।

ऐसा भी होता कि प्रातः कभी मेरी यदि ढाई बजे या तीन बजे नींद खुल जाती तो खिड़की में से झाँक लेता कि क्या बाबा के कमरे की लाइट हो रही है और मैं पाता कि प्रायः लाइट जग रही होती थी। तो मैं भी अपनी लाइट का स्विच ऑन कर देता। शीघ्र ही बाबा के कमरे से बुलावा आ जाता। इस प्रकार, कभी 3 बजे, कभी 3-30 बजे, कभी 4 बजे एकान्त और शान्ति के समय में साकार रूप में भी बाबा से रूहरिहान करने का सौभाग्य प्राप्त होता था।

s_book final.1.pmd 4 02-01-2005, 4:41 PM

बाबा को यहाँ छोड़कर, वहाँ पाने की कोशिश की

एक बार की बात है कि मैं प्रातः जल्दी उठ गया। उस दिन स्नान भी जल्दी कर लिया। आकर अपने कमरे में बैठ सोच रहा था कि क्या ही अच्छा होता यदि मैं भी ध्यानावस्था में जाता और साक्षात्कार करता होता तो मैं देख आता कि परमधाम कैसा है, कितना विशाल है और परमधाम जाते समय मार्ग में जो सूर्य-चाँद-तारागण हैं, वे वहाँ से गुज़रते हुए कैसे दिखायी देते हैं ? चलो यदि ये भी न देखता, कम-से-कम सन्देश ले जाता और ले आता और ईश्वरीय सेवा में सहयोगी तो रहता। यज्ञ के सामने कई प्रकार की समस्यायें आती हैं। बाबा मुझे इस ईश्वरीय सेवा पर भेज देते हैं। अगर मुझे दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जाये तो मैं कठिनाई के समय बाबा से मदद तो ले सकूँगा। इतने में बाबा के कमरे से बुलावा आ गया। बुलाने वाली बहन ने पूछा – ''आपने स्नान कर लिया है ?'' मैंने कहा – '' जी हाँ''। उन्होंने कहा – ''तब चलो, बाबा ने याद किया है।''

मैं बाबा के पास गया। बाबा ने अपनी चारपाई पर अपने पास मुझे लिटा दिया और सन्देशी बहन को निर्देश दिया – ''बच्ची, (शिव) बाबा के पास जाओ। बाबा को कहना, यह मेरा लाडला बच्चा है, सर्विस में अच्छा मददगार है। यदि इसे दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जाये तो और भी अच्छी मदद कर सकता है। इसलिए बाबा को कहना कि यह बाबा ख़ुद सिफ़ारिश करता है कि अगर बाबा इस बच्चे की ध्यान की डोरी आज खींच लेंगे तो अच्छा ही होगा। अच्छा बच्ची, जाओ।'' उसको ऐसा कहने के बाद बाबा ने मेरी ओर देखा और मुझे कहने लगे – ''अच्छा बच्चे, अब बाबा को याद करो। तुम थोड़ा-थोड़ा तो जाते ही हो, क्या पता आज बाबा तुम्हें अपने पास बुला लें। अर्ज़ी हमारी, मर्ज़ी बाबा की। ऐसा कहकर बाबा मुझे मदद करने लगे और मैं भी कोशिश करने लगा कि इस शरीर से किसी तरह निकलूँ और बाबा के पास पहुँचूँ। बाबा की याद मन में लाने का पूर्ण प्रयत्न कर रहा था। वहाँ से तो गुम हो ही गया था, ऐसा अनुभव हुआ कि सूक्ष्मलोक में जा पहुँचा हूँ परन्तु वहाँ बाबा दिखायी नहीं दिये। कुछ समय के बाद मैं अव्यक्त से व्यक्त में लौट आया। इतने में सन्देशी बहन भी लौट आयी।

बाबा ने पहले उससे पूछा – ''बच्ची, यह बच्चा वहाँ पहुँचा था ? बाबा ने

''बच्ची, बाबा के पास जाओ। बाबा को कहना, यह मेरा लाडला बच्चा है, सर्विस में अच्छा मददगार है। यदि इसे दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जाये तो और भी अच्छी मदद कर सकता है। बाबा को कहना कि यह बाबा ख़ुद सिफ़ारिश करता है।

s_book final.1.pmd 5 02-01-2005, 4:58 PM

इस बच्चे के लिए क्या कहा ?'' सन्देशी खिलखिला उठीं। मैं भी यह सुनते हुए मुस्करा रहा था। सन्देशी ने कहा – ''बाबा, यह पहुँचा तो था परन्तु बाबा किधर है ? – इसे यह नहीं मालूम पड़ा। फिर बाबा को मैंने आपकी बात कही तो बाबा ने कहा कि बच्चा आ तो सकता है, थोड़ा सन्देशी से सुनता रहे और हल्का हो तो ये (अव्यक्त वतन में) आ सकता है।'' तब बाबा ने मेरी ओर मुड़कर मुझे कहा – ''अच्छा बच्चे, देखो, कोशिश करना अपना फ़र्ज़ था। बाबा ने तुम्हारी अर्ज़ी तो भेज ही दी थी। भई, अब मर्ज़ी तो उस बाबा की है। दिव्यदृष्टि की चाबी तो उसके पास है। यह चाबी उसने मुझे भी नहीं दी।''

ये सब मीठी बातें सुनकर मेरे मन में बाबा के लिए बहुत प्यार उमड़ आया। मैंने यह सोचा कि देखो बाबा तक हमारे मन के भाव कैसे पहुँच जाते हैं और बाबा हमारे लिए क्या कुछ नहीं करते। उसी दिन ही बाबा ने दादी कुमारका जी को भी ध्यान में भेजने का प्रयत्न किया था। मैंने यह भी सोचा कि शायद यह मेरे ज्ञान की कमज़ोरी की ओर इशारा था क्योंकि यहाँ (व्यक्त में) मैं बाबा के पास ही तो था। उन्हें यहाँ छोड़कर वहाँ पाने की मैंने कोशिश की थी, इसलिए वहाँ बाबा से मिले बिना यहाँ लौटना पड़ा ! परन्तु बाबा कितने मीठे हैं, बच्चों पर कितनी मेहनत करते हैं !

❄

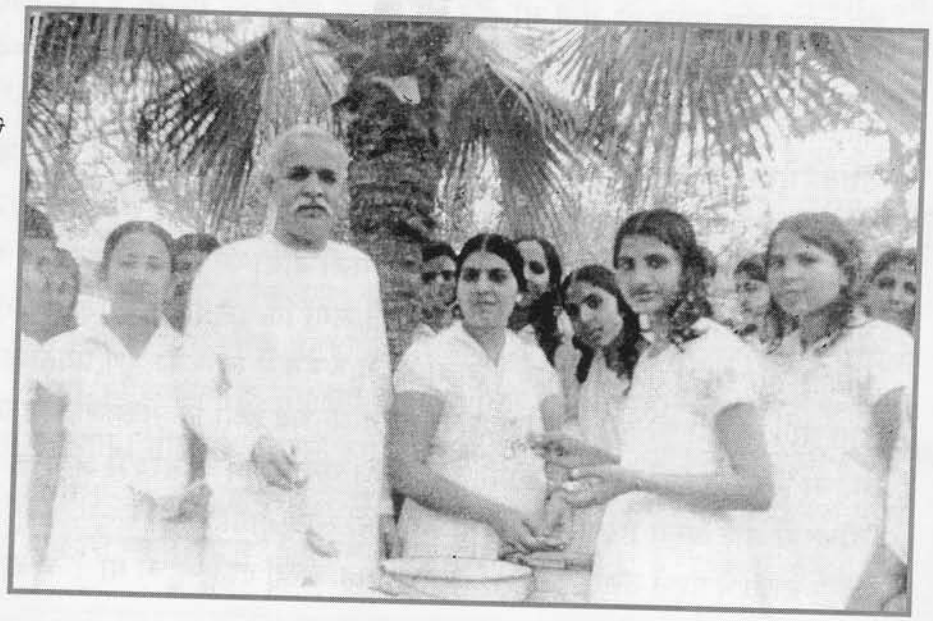

कराची (1939)– आनन्दी माता, बाबा, मम्मा और दादी प्रकाशमणि जी।

book final 1.pmd 6 02-01-2005, 4:41 PM

मुझे मुरलीधर की मीरा बनना ही था

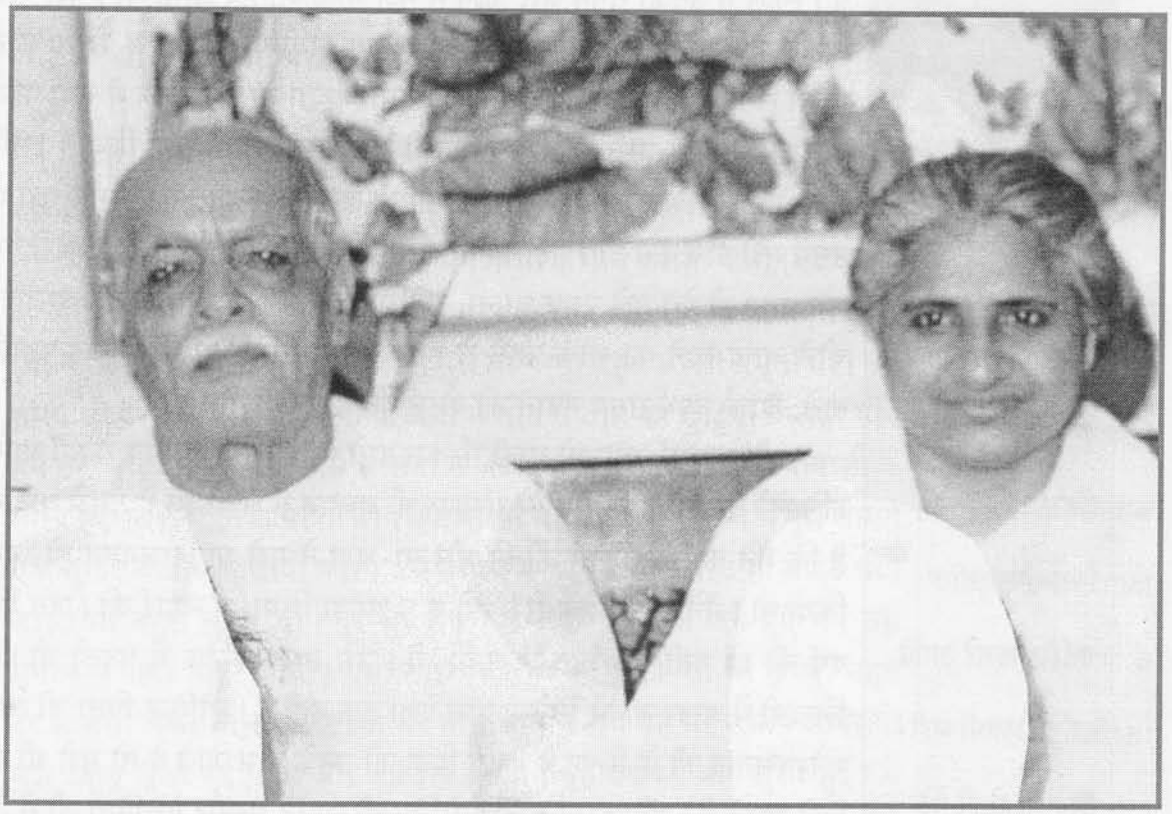

मुंबई– बाबा के साथ दादी प्रकाशमणि जी।

ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणि जी साकार बाबा के संग के अपने अनुभव सुनाती हैं कि बचपन से ही मैं रोज़ श्री कृष्ण की पूजा करती थी। छोटेपन से ही मन में यह रहता था कि मैं मीरा बनूँ। मैं मीरा की कहानी जानती थी। हमारे घर के पास ही राधे-कृष्ण का मंदिर था। सुबह और शाम को मंदिर में जाकर पूजा ज़रूर करती थी। शाम के समय मंदिर में जाकर श्री कृष्ण को झुलाना, सुलाना मेरा नित्य का नियम था। मुझे श्री कृष्ण से बहुत प्यार था और पूजा भी बहुत प्रेम से करती थी। मुझे लगता था कि श्री कृष्ण और श्री राधे भी मुझे बहुत प्यार करते हैं। मैं रोज़ भागवत पढ़ती थी। आप लोग जानते होंगे कि सिन्धी लोग सुखमणी

s_book final.1.pmd 7 02-01-2005, 4:58 PM

दादी प्रकाशमणि जी

मुझे याद नहीं कि मैंने मम्मी से कभी कहा हो कि मुझे ऐसा-ऐसा फ्रॉक चाहिए, कपड़े आदि चाहिएँ। कभी नहीं। छोटेपन से ही मेरे फेवरेट (मनपसन्द) स्लोगन थे कि 'माँगने से मरना भला', 'इच्छा रखना अज्ञान है।'

और ग्रन्थ साहिब को मानते हैं। उस समय स्कूल में रिलीजियस (धार्मिक) पिरियड होता था। उसमें सुखमणी, गुरु ग्रन्थ साहिब, रामायण, महाभारत आदि पढ़ाते थे। स्कूल में उनको सुनने और पढ़ने में मुझे बहुत आनन्द आता था। मुझे याद है कि रिलीजियस पिरियड में मैं हमेशा नम्बर वन आती थी और 65% से 70% तक मार्क्स लेती थी। मुझे पढ़ाई से भी बहुत प्यार रहता था। मैं स्कूल में सदा पहला, दूसरा या तीसरा नम्बर लेती थी। इससे कम नम्बर कभी नहीं लिया। इसलिए स्कूल में टीचर्स भी मुझे बहुत प्यार करते थे। खेलकूद में बहुत कम समय देती थी। उसमें मुझे रुचि कम थी। बड़ी बहनों की शादी हो चुकी थी। घर में मैं, मेरी मम्मी और पापा ही थे। मुझे बाहर घूमना, सहेलियों के साथ गपशप मारना, बाज़ार की चीज़ें आदि खाने का शौक पहले से ही नहीं था। सहेलियाँ थीं लेकिन पढ़ाई के नाते, बाक़ी व्यर्थ समय गँवाने की दोस्ती किसी से भी नहीं थी।

लौकिक माँ-बाप भी अच्छे संस्कार वाले थे। सत्संग, धार्मिक कार्यों आदि में रुचि लेने वाले थे। इसलिए मेरे संस्कार भी बचपन से अच्छे ही थे। मुझे याद नहीं है कि मैंने कभी चंचलता की हो और माँ-बाप ने मुझे थप्पड़ लगाया हो, गुस्सा किया हो। मैंने स्कूल में कभी किसी से न झगड़ा किया, न लड़ाई की। जब मैं 14 वर्ष की हो गयी तब ज्ञान में आयी थी। उस समय मैट्रिक में पढ़ती थी। मैंने ज़िन्दगी में अन्दर जाकर सिनेमा हॉल देखा तक नहीं है। लौकिक पिता जी स्वामी गंगेश्वरानन्द जी के शिष्य थे। जब पिता जी उनके पास जाते थे तो मुझे भी साथ में ले चलते थे। गंगेश्वरानन्द जी ज्योतिष भी जानते थे और मेरे पिता जी से कहा करते थे कि तुम्हारी बेटी शादी नहीं करेगी और मीरा बनेगी। मुझे बचपन से ही खाने-पीने का, देखने-पहनने का शौक नहीं था। मुझे याद नहीं है कि मैंने मम्मी से कभी कहा हो कि मुझे ऐसा-ऐसा फ्रॉक चाहिए, कपड़े आदि चाहिएँ अथवा आज यह खाने का दिल हो रहा है, यह बनाओ। कभी नहीं। छोटेपन से ही मेरे फेवरेट (मनपसन्द) स्लोगन थे कि 'माँगने से मरना भला', 'इच्छा रखना अज्ञान है।' मैं सोचती थी कि गोपियाँ थोड़े ही इच्छा रखती थीं ? मीरा थोड़े ही इच्छा रखती थी ? वे नहीं रखती थी तो मैं क्यों रखूँ ?

हाँ, मुझे एक इच्छा ज़रूर थी कि मैं श्री कृष्ण का दीदार करूँ या विष्णु का दीदार करूँ। मुझे यही मन में लगन रहती थी कि कब भगवान विष्णु के दर्शन

nal 1.pmd 8 02-01-2005, 4:42 PM

होंगे, कब भगवान श्री कृष्ण के दर्शन होंगे। उस समय तो इनको ही भगवान मानते थे ना !

श्री कृष्ण जी और श्री सत्यनारायण जी सपने में आने लगे

सन् 1937 में जब मैं मैट्रिक में पढ़ रही थी तो सब विषय – इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान आदि अंग्रेजी भाषा में ही पढ़ाते थे। उसी स्कूल में मम्मा भी पढ़ती थी। मैं और मम्मा एक ही बेंच पर बैठते थे। मम्मा के साथ क्लास-फेलो (सहपाठी) के नाते मित्रता थी, बाक़ी उनके बारे में कुछ नहीं जानती थी। मम्मा बहुत स्वीट थी, लम्बे-लम्बे बाल, सुन्दर रूप था। मुझे तो मम्मा बहुत अच्छी लगती थी। उस समय भी दशहरा और दीपावली के दिनों में तीन सप्ताह की छुट्टियाँ मिलती थीं। हम उन छुट्टियों में मन्दिरों और सत्संगों में जाया करते थे। सवेरे-सवेरे दीवाली के समय हैदराबाद में ठण्डी पड़ती थी। एक बार मैं सोयी हुई थी। सपने में मुझे सामने एक सुन्दर बगीचा दिखायी पड़ा। उस बगीचे में चारों तरफ़ लाइट ही लाइट थी। लाइट भी बहुत सुन्दर थी। दूर-दूर तक बड़े-बड़े फूल-फल लगे हुए थे। उस बगीचे में पहले लाइट आयी। उसी लाइट के बीच से, छोटा-सा श्री कृष्ण, बहुत दूर से बंसी लेकर नाचता-नाचता मेरे पास आया। जब वह मेरे समीप आया तो मुझे बहुत ख़ुशी हुई। वह और नज़दीक आया। यह देखकर और ख़ुशी हुई। मैं उसको देखती रही और बहुत ख़ुश होती रही। देखते-देखते ही श्री कृष्ण के पीछे एक सफ़ेद वस्त्रधारी फ़रिश्ता आया। छोटेपन में सत्यनारायण की कथा में सुनते थे कि भगवान बूढ़े के वेष में आता है। जब श्री कृष्ण के पीछे यह फ़रिश्ता देखा तो मुझे लगा कि मैं भगवान सत्यनारायण को देख रही हूँ। मैं कभी श्री कृष्ण को देखूँ, कभी उस बूढ़े तनधारी फ़रिश्ते को देखूँ। दोनों मुझे बहुत प्यारे लगते थे। इतने में मैं जाग गयी। मुझे बहुत ख़ुशी हुई। सुना था कि अगर भगवान का दीदार होता है तो किसी को नहीं सुनाना चाहिए। जैसे गूँगा मिठाई खाता है तो उसको बता नहीं सकता, अन्दर ही अन्दर उसका आनन्द लेता रहता है। उसी प्रकार, भगवान का दीदार करने वाले को भी किसी को बताना नहीं चाहिए, बताया तो फिर भगवान उसके पास नहीं आयेगा। इसलिए मैंने भी किसी को नहीं बताया, मम्मी को भी

छोटेपन में सत्य नारायण की कथा में सुनते थे कि भगवान बूढ़े के वेष में आता है। जब श्री कृष्ण के पीछे यह फ़रिश्ता देखा तो मुझे लगा कि मैं भगवान सत्य नारायण को देख रही हूँ। मैं कभी श्री कृष्ण को देखूँ, कभी उस बूढ़े तनधारी फ़रिश्ते को।

नहीं बताया। लेकिन दोबारा भगवान आया नहीं। फिर मैंने कोठी में जाकर श्री कृष्ण की माला फेरी, मन्दिर गयी और कहा, हे श्री कृष्ण ! आओ। वो आये नहीं। ऐसे करके दो-तीन दिन बीत गये। मेरी एक क्लास फेलो ॐ-मंडली में जाती थी। एक दिन उसने मुझे कहा कि तुम भी मेरे साथ वहाँ आओ। मैंने कहा, ठीक है। एक दिन उसके घर पर गयी। जब मैं वहाँ गयी तो वह (मेरी सहेली) ध्यान में गयी हुई थी और आँसू बह रहे थे। उसका नाम लीला था। मैं आवाज़ देती रही, लीला, लीला। वह कुछ सुने नहीं, अपनी ही धुन में अपने आप मुस्कराती थी, हाथ ऊपर करती रहती थी। मुझे कोई जवाब नहीं देती थी। मैंने उसकी मम्मी से कहा, मुझे लीला ने बुलाया था लेकिन न बोलती है, न आँखें खोलती है, जवाब भी नहीं देती है। मैं जाती हूँ। उसकी मम्मी ने कहा, बेटी, मुझे पता नहीं इसको क्या हुआ है, जब भी देखो ध्यान में बैठी रहती है। दो-तीन दिन से इसकी यह अवस्था है। उसकी यह अवस्था मुझे बहुत अच्छी लगी। मैं जा रही थी तो उतने में ही वह ध्यान से जागी और मुझे देखकर कहने लगी, रामा चलो, मैं तुमको श्री कृष्ण का दीदार करा दूँगी। मैंने कहा, श्री कृष्ण का दीदार कराना क्या मौसी का घर है ? मैं इतनी पूजा, भक्ति करती हूँ, मुझे ही नहीं होता तो तुम क्या मुझे दीदार कराओगी ? फिर लीला ने कहा, अभी शाम हो गयी है, कल सुबह 10 बजे चलेंगे। सत्संग में ज़्यादातर मातायें ही आती थीं इसलिए बाबा सुबह 10 बजे सत्संग आरम्भ करते थे। फिर मैं घर गयी।

जब हम बाबा के पास पहुँची, उस समय बाबा ॐ की ध्वनि लगा रहा था। वो ध्वनि बहुत अच्छी थी। जाते ही मेरी दृष्टि बाबा के मस्तक पर पड़ी। ऐसा लग रहा था कि मस्तक से कोई लाइट निकल रही है।

पिता जी ने ही कहा –
बेटी, तुम भी दादा के सत्संग में जाओ

बाबा ने शुरू-शुरू में भाऊ के घर में सत्संग आरम्भ किया था। वह घर मेरी सहेली के घर के पास ही था। भाऊ विश्व किशोर बाबा का भतीजा था। बाबा ने पहले-पहले सत्संग अपने भाई के घर में किया, न कि अपने घर में। हम लोग घर से बाहर कहीं भी जाते थे तो माँ-बाप की छुट्टी लेकर ही जाते थे। उसी रात को मेरे लौकिक पिता जी ने कहा, बेटी, अभी तो तुम्हारी छुट्टियाँ हैं, दादा सत्संग कराता है, वहाँ ॐ की ध्वनि लगाते हैं और गीता सुनाते हैं, जाओ तुम भी सत्संग

s_book final 1.pmd 10 02-01-2005, 4:42 PM

करो। तब मैंने भी कहा, पापा, मेरी सहेली भी कह रही थी कि वहाँ श्री कृष्ण का दीदार होता है, तुम भी चलो। पिता जी ने कहा, ठीक है बच्ची, तुम ज़रूर जाओ। अगले दिन मैं अपनी सहेली लीला के पास गयी और वहाँ से उसके साथ सत्संग में गयी।

जिनको स्वप्न में देखा था, उन्हें फिर ध्यान में भी देखा

जब हम बाबा के पास पहुँची, उस समय बाबा ॐ की ध्वनि लगा रहा था। वो ध्वनि बहुत अच्छी थी। जाते ही मेरी दृष्टि बाबा के मस्तक पर पड़ी। ऐसा लग रहा था कि मस्तक से कोई लाइट निकल रही है। उस समय मुझे पता नहीं था कि शिव बाबा कौन है, ब्रह्मा बाबा कौन है। मुझे याद आया कि 3-4 दिन पहले स्वप्न में श्री कृष्ण के साथ सफ़ेद वस्त्र वाले सत्यनारायण भगवान को देखा था, यह दादा भी वैसे ही हैं। ये मेरे स्वप्न में क्यों आये थे। यह कौन हैं ? यह बाबा सत्यनारायण भगवान है क्या ? ऐसे सोचते-सोचते बाबा को देखती रही। ऐसे देखते-देखते ॐ की ध्वनि हुई तो मैं ध्यान में चली गयी। वही श्री कृष्ण, वही शाही बगीचा, वही सत्यनारायण भगवान जिनको स्वप्न में देखा था, उन्हें फिर ध्यान में भी देखा। मैं कितने समय ध्यान में गयी, मुझे पता नहीं क्योंकि जब मैं ध्यान से उतरी तब सत्संग पूरा हो चुका था, सब उठकर चले गये थे। किसी ने मुझे उठाया। देखा तो अकेली थी, लज्जा भी आ गयी। उस समय अभी ध्यान के नशे में ही थी। बाबा कमरे में बैठे थे, उन्होंने मुझे बुलाया – आओ बच्ची, आओ। जब बाबा को देख रही थी तो कभी श्री कृष्ण, कभी सत्यनारायण भगवान दिखायी पड़े। घर आने के बाद भी वही सत्यनारायण भगवान और श्री कृष्ण दिखायी पड़ते थे। रात-रात नींद नहीं आती थी, उसी ध्यान के नशे में रहती थी। न खाती थी, न पीती थी। माँ घबरा गयी कि बेटी को क्या हो गया। मुझे ध्यान में अच्छा लगता था, छत पर जाकर बैठ जाती थी। ध्यान में जाकर श्री कृष्ण को देखती थी, स्वर्ग को देखती थी, सत्यनारायण भगवान को देखती थी, गोप-गापियों का नृत्य देखती थी। लगन बढ़ती गयी। पापा भी सोचने लगे कि बच्ची को क्या हो गया। मैं कहती रही – कुछ नहीं, कुछ नहीं, सब ठीक है। उतने में दीवाली आयी। दीवाली

पहले स्वप्न में श्री कृष्ण के साथ सफ़ेद वस्त्र वाले सत्यनारायण भगवान को देखा था, यह दादा भी वैसे ही हैं। ये मेरे स्वप्न में क्यों आये थे। यह कौन हैं ? यह बाबा सत्यनारायण भगवान है क्या ?

s_book final.1.pmd 11 02-01-2005, 4:58 PM

की छुट्टियाँ पूरी हुईं। स्कूल में जाना पड़ा। स्कूल में तो जाती थी लेकिन पढ़ाई में मन नहीं लगता था। फिर भी जाना पड़ा। जब मैं स्कूल गयी तो वहाँ मम्मा से मुलाक़ात हुई। मैंने मम्मा से कहा, राधे, आप भी सत्संग में चलो, वहाँ दादा बहुत अच्छा गीता-पाठ करते हैं। मम्मा उससे पहले एक बार गयी थी। फिर दोनों ने पक्का किया कि रोज़ सत्संग में जाना है। मैंने पापा से कहा, मैं स्कूल नहीं जाऊँगी। पापा आँख दिखाने लगे कि क्यों नहीं जायेगी। मैंने कहा, मुझे यह पढ़ाई नहीं पढ़नी है, मुझे ज्ञानामृत पीना है और पिलाना है, मुझे श्री कृष्ण और राधा के साथ गोपी बनके रास खेलना है। मुझे तो योगिन बनना है। फिर पापा ने कहा कि ठीक है बच्ची, तुम्हें जो पसन्द है हमें भी वही पसन्द है।

घर आने के बाद भी वही सत्यनारायण भगवान और श्री कृष्ण दिखायी पड़ते थे। रात-रात नींद नहीं आती थी, उसी ध्यान के नशे में रहती थी। न खाती थी, न पीती थी।

बड़ी दीदी मनमोहिनी जी सत्संग में हमसे पहले से ही जाती थी। दीदी लौकिक में मेरी चाची थी। आनन्द किशोर दादा लौकिक में चचेरा भाई लगता था। ये सब सत्संग में जाते थे। मैं दीदी के साथ आती थी तो मेरे पापा और मम्मी भी कुछ नहीं कहते थे। बाद में बाबा ने मुझे भाषण करना, गीत गाना, कोर्स कराना, श्लोक बोलना आदि सिखाया। दुनिया की कोई बात याद नहीं रही।

बाबा, मैं तो श्री कृष्ण की बन चुकी हूँ

इससे पहले की एक घटना मुझे याद आती है। एक दिन हम तीन सखियाँ सत्संग में जा रही थीं। उस समय हमने रंगीन कपड़े पहने थे और चैन आदि कुछ जेवर भी पहने थे। बाबा का घर बाज़ार के बीचों बीच था। घर नीचे से बहुत बड़ा था। ऊपर एक ही कोठी थी जहाँ बाबा अकेले रहते थे। जब हम बाज़ार से होकर सत्संग के लिए बाबा के मकान में जा रहे थे तो बाबा ने ऊपर से हमें देखा और सन्देश भेजा कि बच्चों को ऊपर आने के लिए कहो। हम घबरा गये कि बाबा हमें ऊपर क्यों बुला रहे हैं ! हम गये तो बाबा ने पूछा, बच्ची तुमको कोट-पैण्ट वाले से शादी करनी है या पिताम्बरधारी से शादी करनी है ? हमें तो यह प्रश्न समझ में नहीं आया। क्योंकि कोट-पैण्ट क्या होता है और पिताम्बर क्या होता है – यह भी पता नहीं था। यह भी हमें आश्चर्य लगा कि बाबा शादी की बात क्यों कर रहा है। फिर बाबा ने पूछा, बोलो बच्ची, तुमको श्री कृष्ण से शादी करनी है या कोई

s_book final.1.pmd 12 02-01-2005, 4:42 PM

लड़के से शादी करनी है ? मैंने कहा, बाबा मैं तो श्री कृष्ण से शादी कर चुकी हूँ और किसी से शादी करने की बात ही नहीं। फिर बाबा ने कहा, अगर श्री कृष्ण से शादी की है तो ये रंगीन कपड़े और जेवर क्यों पहने हुए हो ? उस दिन के बाद आज तक मैंने न जेवर पहने, न रंगीन कपड़े पहने।

कहाँ गये मोरे गिरिधर-गोपाल ?

उस समय हमें ज्ञान की बहुत मस्ती चढ़ी थी। फिर अप्रैल-मई मास में मम्मा को ॐ-मंडली की ज़िम्मेवारी देकर बाबा अपने लौकिक परिवार के साथ काश्मीर चले गये। वहाँ से बाबा ने मम्मा को पत्र लिखा कि ॐ राधे, हैदराबाद में स्कूल बन रहा है और सत्संग में आने वाली माताओं के बच्चे और बच्चियों के लिए जब तक तुम भी बोर्डिंग नहीं बनवाओगी तब तक मैं हैदराबाद नहीं आऊँगा। बाबा ने जाते समय कहा था कि मैं एक मास के लिए काश्मीर जा रहा हूँ लेकिन तीन मास तक बाबा वहाँ रुक गये। हम सब बच्चे दिन-रात रोते रहे कि कहाँ गये मोरे गिरिधर-गोपाल। हम तो पागल-से बन गये थे, सब बाबा-बाबा कहकर तड़प रहे थे। कई मास तक हम जब भी बाबा को देखते थे तो बाबा श्री कृष्ण ही दिखायी पड़ते थे। कई मास तक मुझे भी श्री कृष्ण ही दिखायी पड़े। मेरी आँखों में कृष्ण ही रहता था।

मुझे ध्यान में अच्छा लगता था, छत पर जाकर बैठ जाती थी। ध्यान में जाकर श्री कृष्ण को देखती थी, स्वर्ग को देखती थी, सत्यनारायण भगवान को देखती थी, गोप-गापियों का नृत्य देखती थी। लगन बढ़ती गयी।

15 साल उम्र में ही मैं 10 साल वालों को पढ़ाती थी

मम्मा ने बहुत मेहनत करके स्कूल बनवाया। उसके लिए एक मीटिंग और कमेटी बनायी गयी। मीटिंग में तय हुआ कि दादी अर्थात् मैं उसको निमित्त बन संभालूँ। यह सब होने के बाद मम्मा ने बाबा को पत्र लिखा, तो बाबा हैदराबाद आये। सन् 1937 में बाबा ने बाक़ायदा स्कूल का उद्घाटन किया। उस समय सत्संग में हरेक के नाम से पहले ॐ शब्द लगाते थे। जैसे ॐ बाबा, ॐ राधे, ॐ रामा, ॐ गोपी इत्यादि। पचास के क़रीब बच्चे-बच्चियाँ थीं। उस समय मेरी उम्र थी 15 साल, पढ़ाती थी 10 साल वालों को। बाबा हमें सब कुछ पहले सिखाते थे

s_book final.1.pmd 13 02-01-2005, 4:58 PM

कि कैसे लेशन (पाठ) तैयार करना है, ख़ुद बाबा कविता और गीत लिखकर देते थे और कैसे पढ़ाना है – यह भी सिखाते थे। बच्चों को कैसे उठाना, नहाना, खिलाना, पढ़ाना और सुलाना – बाबा ने सब हमें सिखाया।

बाबा मुझे बहुत प्यार भी करते थे और इज़्ज़त भी देते थे

उसके बाद बाबा ने चार माताओं और चार कन्याओं सहित आठ की एक कमेटी बनायी। उसमें बाबा ने अपने किसी भी लौकिक सम्बन्धी का नाम नहीं डाला। दीदी मनमोहिनी, रुक्मिणी दादी, रूप (मम्मा की लौकिक मामी), मोहिन्द्र और चार कन्याओं में मम्मा, मैं, शान्तामणि और सुन्दरी बहन। बाबा ने अपनी सारी प्रापर्टी इन माताओं और कन्याओं की कमेटी को विल कर दी। मेरे में बचपन से ही रूसना, रोना, लड़ना, झगड़ना, चोरी करना, माँ-बाप की बातों का उल्लंघन करना, बड़ों को जवाब देना, अहंकार दिखाना – कुछ भी नहीं था, इसलिए बाबा मुझे बहुत प्यार करते थे। कभी भी बाबा ने मुझे न आँख दिखायी, न डाँटा, न पूछा कि बच्ची तुमने ऐसे क्यों किया। कभी नहीं। बाबा मुझे बहुत प्यार भी करते थे और इज़्ज़त भी देते थे।

बाबा जब हैदराबाद में हमारे साथ रहते थे तो बीच-बीच में चतुराई करते थे। हैदराबाद से कराची रेल में तीन घंटे का सफ़र था। रात दो बजे ट्रेन जाती थी। बाबा उस ट्रेन में कराची चले जाते थे। हम सुबह उठकर देखते तो बाबा गायब। सब तड़पने लगते थे कि कहाँ गयो मोरा गिरिधर, कहाँ गयो मेरा घनश्याम, ओ गंगा, ओ जमुना, कहाँ गयो मेरा श्याम। बाबा वहाँ जाकर पत्र लिखते थे कि मैं दो दिन रहकर आऊँगा। फिर भारत का विभाजन हुआ तो बाद में हम आबू आ गये।

❄

उस समय सत्संग में हरेक के नाम से पहले ॐ शब्द लगाते थे। जैसे ॐ बाबा, ॐ राधे, ॐ रामा, ॐ गोपी इत्यादि।

ख़ुद बाबा कविता और गीत लिखकर देते थे और कैसे पढ़ाना है – यह भी सिखाते थे।

s_book final.1.pmd 14 02-01-2005, 4:42 PM

क्यों हो अधीर माता, गुरुकुल में मैं आ बसा हूँ

आबू – (बायें से दायें) आलराउण्डर दादी (गुलजार दादी की माँ), बाबा, विजयलक्ष्मी बहन (वैज्ञानिक एल.एस. माथुर भाई की युगल) और अन्य भाई।

दादी आलराउण्डर जी अपने अनुभव की दास्तान इस प्रकार सुनाती हैं कि मेरी एक मामी थीं जिनका नाम गंगा देवी था। उनकी भक्ति में अटूट भावना थी। मेरे भी भक्ति-प्रधान संस्कार थे। लौकिक सम्बन्ध के कारण मैं उनके पास जाया करती थी। उनके पास काश्मीर से लाल अक्षरों में लिखा हुआ पत्र आया करता था जिसे वह मुझे भी सुनाती थीं। सुनते-सुनते अन्दर सन्नाटा-सा छा जाता था और एक लाइट-सी अन्दर घूमती थी। उस पत्र को बार-बार सुनने की इच्छा होती थी। पत्र सुनने की इच्छा से मैं जैसे-कैसे बार-बार उनके पास जाया करती थी।

s_book final.1.pmd 15 02-01-2005, 4:58 PM

दादी आलराउण्डर जी

बाबा की भृकुटि में सफ़ेद प्रकाश का गोला चमक रहा था

एक बार मेरी मामी ने बाबा को एक महान् पुरुष जानकर अपने घर में निमंत्रण दिया। बाबा, ओम् राधे, ध्यानी आदि 30 जन, बस (Bus) भर कर उनके यहाँ पधारे। मैं भी वहाँ पहुँच गयी। पहले दिन जब सत्संग शुरू हुआ और सामने सन्दली पर बाबा को देखा तो ऐसे लगा जैसेकि बाबा की भृकुटि में सफ़ेद प्रकाश का गोला चमक रहा हो। उस प्रकाश के गोले में बड़ा आकर्षण था। मैं तो उसी की तरफ़ एकटक देखती रही। मन में विचार आया कि ऐसे महान् पुरुष को तो कभी नहीं देखा। जीवन में यह तो लक्ष्य था कि गुरु करना चाहिए क्योंकि सुन रखा था कि गुरु बिना गति नहीं। सोचा, क्यों न ऐसे महान् पुरुष को ही गुरु कर लें। उसी क्षण उन्हें गुरु बनाने का दृढ़ संकल्प कर लिया। ऐसा सोचते-सोचते ही उस दिन की सभा समाप्त हो गयी। जितने दिन बाबा वहाँ रहे, मैं भी वहाँ ही रही।

सामने सन्दली पर बाबा को देखा तो ऐसे लगा जैसे बाबा की भृकुटि में सफ़ेद प्रकाश का गोला चमक रहा हो। उस प्रकाश के गोले में बड़ा आकर्षण था। मैं तो उसी की तरफ़ एकटक देखती रही। विचार आया कि ये तो महान् पुरुष हैं।

दूसरे दिन अमृतवेले बाबा ने ध्यानी बहन को कहा कि बच्ची को नक्शा समझाओ। अमृतवेले सत्संग के बाद बाबा ने मुझे 'तीन लोक' का नक्शा समझाया।

बाबा सुबह-शाम सत्संग करते रहे। बस, मन में यही आता था कि भृकुटि में उस प्रकाश के गोले को ही देखती रहूँ, फिर तो ज्ञान भी बुद्धि में घूमने लगा, जिसे सुनने की बार-बार इच्छा उत्पन्न होती थी। इकट्ठे रहने के कारण उस दिन से बाबा व अन्य बहनों से भी स्नेह जुटता गया। बाबा ने समझाया कि देवलोक में वही जायेगा जो ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करेगा। फिर मेरे लौकिक पति भी वहाँ आने लगे। उन्होंने जब बाबा से ज्ञान सुना तो उनका भी बाबा से रूहानी सम्बन्ध जुट गया और हम दोनों ने यह प्रतिज्ञा की कि विचारों में भी एक-दूसरे का साथ देंगे और जीवन को पवित्र बनायेंगे। उसी समय से बाबा द्वारा बतायी गयी धारणाओं का हम पालन करने लगे। फिर बाबा वापस चले गये लेकिन पत्राचार जारी रहा।

लौकिक बच्ची का बाल भवन में प्रवेश

जब हैदराबाद (सिन्ध) में बाल भवन बना तो हमें यह समाचार मिला कि जिन बच्चों के माँ-बाप ईश्वरीय ज्ञान की शिक्षा लेने ओम् मंडली में आते हैं, वे

s_book final.1.pmd 16 02-01-2005, 4:42 PM

(बच्चे) चाहें तो बाल भवन में रह सकते हैं। मैंने अपनी एक लौकिक बच्ची शोभा (दादी गुलजार), जो उस वक्त क़रीब 9 वर्ष की थी और एक स्कूल में पढ़ती थी, को स्कूल छुड़वा कर बाल भवन के छात्रालय में दाख़िला करवा दिया। इस ईश्वरीय छात्रालय की पढ़ाई देखकर हमारे अन्य सम्बन्धियों ने भी अपनी बच्चियों का वहाँ ही दाख़िला करा दिया और स्वयं भी यह शिक्षा लेने लगे। इस प्रकार, हम अपनी धारणाओं पर चलते रहे। इसी बीच हंगामे, पिकेटिंग आदि शुरू हो गये। उपद्रवियों ने ख़ूब ही हल्ला मचाया। हरेक बच्चे को उनके अपने घर में रवाना कर दिया गया। शोभा भी घर आ गयी। उनके आने से ऐसे लगता था जैसेकि एक अलौकिक दुनिया से लौकिक दुनिया में आ गये हैं। उनको जो शिक्षा मिली थी और जैसा वातावरण मिला था उसमें और अब घर के वातावरण में तथा रहन-सहन के तरीके में रात-दिन का फ़रक था। यह देखकर मेरे मन में सदैव यह ख़याल आता था कि ईश्वरार्थ सेवा में दान दी हुई चीज़ (लौकिक बच्ची शोभा) को वापस नहीं लेना चाहिए। परन्तु बच्चे तो बच्चे ही होते हैं, उन्हें जैसे रखो, जिस ओर ढालो उसी तरफ़ ढल जाते हैं। हम दोनों (मैं और मेरे लौकिक पति), जो अब तक एकमत होकर चलते थे, के विचारों में भी अन्तर आ गया। एक तरफ़ सारा परिवार और दूसरी तरफ़ मैं अकेली। विचारों में अन्तर आ जाने के कारण मुझे संसार से वैराग्य आने लगा। मुझे यह संकल्प आता था कि मैं पूरी तरह से ईश्वरीय सेवा करूँ, उस प्रभु की ही बन जाऊँ और रात-दिन यही पुकार चलती रहती थी कि 'हे प्रभु, कब ये दोनों जीवन आपके हवाले होंगे ?''

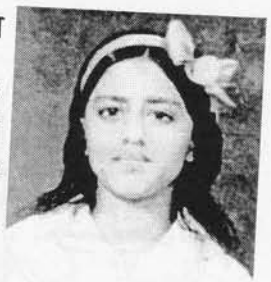

कुमारी शोभा

मैंने अपनी एक लौकिक बच्ची शोभा (दादी गुलजार), जो उस वक्त क़रीब 9 वर्ष की थी और एक स्कूल में पढ़ती थी, को स्कूल छुड़वा कर बाल भवन के छात्रालय में दाख़िला करवा दिया।

हंगामे के कारण हम पर बन्धन

इसी बीच हैदराबाद में बहुत हंगामे होने के कारण बाबा कराची में आ गये। जब-जब मुझे मौका मिलता, घूमने-फिरने या लौकिक सम्बन्धियों से मिलने के निमित्त मैं सुबह चार बजे सत्संग में जाया करती थी। सत्संग भवन हमारे घर से लगभग 10 मील दूर था। सवेरे एक ट्राम या घोड़ा-गाड़ी मिलती थी। ट्राम सवेरे-सवेरे मज़दूरों को ले जाती थी, हम भी उसमें ही चढ़कर चले जाते थे। उन मज़दूरों की दृष्टि-वृत्ति तो ख़राब होती थी लेकिन हम इसी निश्चय के साथ कि ''जाको

s_book final.1.pmd 17 02-01-2005, 4:58 PM

राखे साईंया मार सके ना कोये, बाल न बाँका कर सके चाहे सब जग बैरी होय'', निर्भय होकर रोज़ सत्संग करके आठ बजे घर पहुँच जाती थीं। लौकिक पति कभी साथ देते थे और कभी नहीं देते थे। ऐसे चलते-चलते वैराग्य और भी बढ़ता गया। बच्ची शोभा को भी अन्य लौकिक सम्बन्धी इस मायावी दुनिया की ओर अधिक खींचने का यत्न करते थे। चलते-चलते कहीं उस संगत का, खान-पान का प्रभाव उस पर न पड़ जाये – यह सोचकर मन में ही कहती थी कि इसको इस मायावी दुनिया से बचाना चाहिए। यह देखकर लौकिक सम्बन्धी मुझ पर और भी अधिक बन्धन डालने लगे क्योंकि उनके मन में यह आता था कि स्वयं के साथ बच्ची को भी ''बिगाड़ती है'' (वे तब ईश्वरीय मार्ग पर ले जाने को बिगाड़ना मानते थे)। उन्होंने मेरा सत्संग में आना-जाना बन्द कर दिया। अब जब मुझ पर पूरी निगरानी रहने लगी तो ईश्वरीय प्यास को बुझाने के लिए मैं दिन के वक्त किसी-न-किसी कारणवश घर से बाहर निकल जाती थी और दूसरे-तीसरे दिन अपने सत्संग के स्थान पर पहुँच ही जाती थी। कभी-कभी अपने ड्राइवर को भी थोड़ा समझा-बुझाकर उससे मदद ले लेती थी तो वह कार में मुझे छोड़ आता था। इस प्रकार कुछ दिन यही चलता रहा। आख़िर यह बात कब तक छिपती। जब सबको पता चला तो सब बहुत डराने, धमकाने लगे क्योंकि 50 सदस्यों के बड़े परिवार में मैं ही सबसे छोटी थी। उस समय मैं उन्हें तो कुछ नहीं कहती थी। बस, एक कोने में बैठकर भगवान (शिव बाबा) को याद करती थी। मेरे कानों में यह आवाज़ गूँजा करती थी –

''क्यों हो अधीर माता, गुरुकुल में मैं आ बसा हूँ
सन्ताप सख्त भारी अबला पर मैं देख रहा हूँ
क्यों हो अधीर माता...''

जिस समय यह गीत गाती थी उस समय ऐसा अनुभव होता था कि बाबा हम आत्माओं में शक्ति भर रहे हैं जिसके आधार से ही हम जी रहे हैं। आख़िर एक दिन यह संकल्प आया कि इस स्वार्थी एवं विकारी दुनिया को छोड़कर ईश्वरीय दुनिया में क्यों न चलें ? यदि अत्याचार न होते तो यह विचार न आता। यह दृढ़ संकल्प करके अमृतवेले चार बजे शोभा को नींद से जगाकर, उसको साथ लेकर कराची सत्संग में पहुँच गयी। सत्संग चल रहा था। बाबा की नज़र जब मुझ पर पड़ी तो

सत्संग भवन हमारे घर से लगभग 10 मील दूर था। सवेरे एक ट्राम या घोड़ा-गाड़ी मिलती थी। ट्राम सवेरे-सवेरे मज़दूरों को ले जाती थी, हम भी उसमें ही चढ़कर चले जाते थे। उन मज़दूरों की दृष्टि-वृत्ति तो ख़राब होती थी।

s_book final.1.pmd 18 02-01-2005, 4:42 PM

बाबा ने पूछा – ''बच्ची, कैसे आयी हो ?'' बाद में और सबने भी पूछा। मैंने कहा – ''पुरानी दुनिया के धन्धों को त्याग कर आयी हूँ।'' बाबा ने कहा – ''बच्ची, ऐसे मौके पर, जबकि इतना हंगामा हो रहा है, तुम यहाँ कैसे रह सकती हो ?'' मैंने कहा – ''नहीं बाबा, अब तो मेरा पाँव सद्गुरु के घर में है; अब यह पीछे कैसे हट सकता है।''

सत्गुरु मिलने जाइये, साथ न लीजे कोई,
आगे पाँव राखिये पीछे पाँव न होई।

फिर दयानिधि बाबा ने कहा – ''बच्ची पर सितम होता है, अच्छा जब बच्ची कहती है कि मैं सिलाई की क्लास में रहूँगी, तो फ़िलहाल इसे वहाँ रहने दो और अगर कोई पूछे तो कहना कि वह सिलाई की क्लास (Sewing Class) में है।''

लेकिन हम इसी निश्चय के साथ कि ''जाको राखे साईंया मार सके ना कोये, बाल न बाँका कर सके चाहे सब जग बैरी होय'', निर्भय होकर रोज़ सत्संग करके आठ बजे घर पहुँच जाती थीं। ऐसे चलते-चलते वैराग्य और बढ़ता गया।

लोगों की अफवाहों के कारण हम पर अत्याचार

इस प्रकार सारा दिन बीत गया। मन में संकल्प आता था कि कहीं कोई खींचकर वापस न ले जावे। शाम के 6 बजे थे। एक टैक्सी लेकर मेरा पति और अन्य सम्बन्धी आ गये। दो व्यक्ति बाहर ही रहे और दो अन्दर भवन में आ गये। कहने लगे – ''हम रुक्मणी से मिलना चाहते हैं।'' बाबा की अनुमति से उन्हें अन्दर आकर मिलने की स्वीकृति दे दी गयी। उन्होंने पूछा – ''तुम यहाँ क्यों आयी हो ?'' मैंने कहा कि मैं सत्संग के बिना नहीं रह सकती। अब हम दोनों (मैं और शोभा) यहाँ ही रहेंगे। अपने हाथ से मेहनत करके शरीर निर्वाह करूँगी। मैं सिलाई का काम करूँगी। यह सुनकर उनकी आँखें गुस्से से लाल हो गयीं और उसी कम्पाउण्ड में, जहाँ मैं उनसे मिल रही थी, उन्होंने मुझे हाथ-पाँव से पकड़कर खींचते हुए, उठाकर टैक्सी में डाल दिया। टैक्सी में उन चारों (लौकिक देवर, दो मामे और लौकिक पति) ने मुझे कस कर पकड़े रखा और टैक्सी चल दी। मैंने भी उस टैक्सी से निकलने की पूरी कोशिश की। मैंने कहा – ''आज मैं मर जाऊँगी लेकिन आपके साथ नहीं आऊँगी। आपघात कर लूँगी लेकिन इस रीति से घर नहीं जाऊँगी।''

यह बात सुनकर उन्हें, विशेषकर पति को, मुझ पर या तो रहम आने लगा या वे डर गये और पूछने लगे कि क्या तुम अलग रहना चाहती हो ? वे मुझे पाँच मील

s_book final.1.pmd 19 02-01-2005, 4:58 PM

दूर एक दोस्त के ख़ाली फ़्लैट में ले गये और कहने लगे – ''हम तुम्हें अलग रखते हैं, तुम आपघात न करो।'' मैंने कहा – ''मेरी चार बातें सुन लो। (1) मैं अलग रहूँगी अर्थात् जो जीवन को अशुद्ध बनाने लिए दबाव डालते हैं उनके साथ नहीं रहूँगी। (2) दिन में एक बार सत्संग में ज़रूर जाऊँगी। (3) शोभा को घर वापस नहीं लाऊँगी। (4) सभी नियमों (ब्रह्मचर्य, शुद्ध अन्न आदि) पर चलूँगी। आप मुझे इन चारों बातों की स्वीकृति की चिट्ठी लिखकर दो वरना तो मैं आपघात कर लूँगी।'' सम्बन्धी सभी चले गये थे, सिर्फ लौकिक पति ही साथ थे और मैं चुन्नी लेकर गला घोटने लगी।

एक दिन यह संकल्प आया कि इस स्वार्थी एवं विकारी दुनिया को छोड़कर ईश्वरीय दुनिया में क्यों न चलें ? यह दृढ़ संकल्प करके अमृतवेले चार बजे शोभा को नींद से जगाकर, साथ लेकर कराची सत्संग में पहुँच गयी।

उन्होंने मुझसे पूछा – ''तुम घर से निकलना क्यों चाहती हो ? आपघात क्यों करती हो ?'' मैंने कहा – ''मैं सत्संग छोड़ नहीं सकती, नियमों को छोड़ नहीं सकती, बच्ची को ईश्वरीय पढ़ाई तथा सेवा में देकर वापस नहीं ले सकती। आप या तो मेरी बात मानो, नहीं तो मुझे आपघात करने दो। रात का समय था। उन्होंने सोचा कि कहीं कोई ऐसी घटना न घट जाये तो चारों ही बातों का स्वीकृति-पत्र लिख कर दे दिया। शायद यह प्रभाव उसी अविनाशी ज्ञान के बीज का था जो पति में भी पड़ा हुआ था। अमृतवेले चार बजे उसी अकेले मकान से मुझे वे सत्संग में ले गये।

जब मैं वहाँ पहुँची तो सभी आश्चर्यचकित रह गये। कल तो इसको हाथ-पाँव पकड़ उठाकर ले गये थे, आज सवेरे ही फिर यह कैसे पहुँची ! फिर तो शोभा भी वहाँ ही रहने लगी। लगभग ढाई मास तो ये चारों बातें ठीक चलीं। धीरे-धीरे उस घर से फिर मुझे अपने बंगले में ले गये। वे कहते थे कि हम रोज़ तुझे सत्संग में ले आयेंगे परन्तु अपना मकान होते हुए 300 रुपये फ़ालतू इस बंगले के किराये पर क्यों ख़र्चें ? वहाँ अपने मकान में भी कुछ समय तो ठीक चला परन्तु फिर वही सत्संग बन्द करने की सख्ती शुरू हो गयी।

फिर वही ढाक के तीन पात

अब फिर लौकिक सम्बन्धी लौकिक पति को उल्टा पाठ पढ़ाने लगे। व्यापार इकट्ठा होने के कारण बड़े भाइयों का छोटों पर बहुत प्रभाव था, अतः मेरा पति

s_book final.1.pmd 20 02-01-2005, 4:42 PM

उनकी बात मानने पर मज़बूर हो जाता था। अब उन्होंने भी रोकना-टोकना शुरू कर दिया। स्वयं को बन्धन में देखकर एक दिन मैं किसी बहाने से फिर सत्संग में पहुँच गयी। उन्होंने जाँच की तो उन्हें मेरे वहाँ जाने की बात मालूम हो गयी। अब उन्होंने सारे घर में ताला लगा दिया। मैंने कहा, अगर आप मुझे जेल में बन्द रखते हैं तो मैं भोजन नहीं करूँगी। आप आत्मा का भोजन बन्द करते हैं तो मैं शरीर का भोजन बन्द कर दूँगी। शरीर छूट जायेगा तो मैं प्रभु के पास चली जाऊँगी। ताले लग गये, पहरेदार खड़े हो गये। छोटे-बड़े सभी को यह बता दिया गया कि इसकी पूरी निगरानी की जाये। दो-तीन दिन खाना न खाने के कारण मेरा शरीर कमज़ोर हो गया परन्तु आत्मा को सूक्ष्म शक्ति रूपी भोजन मिलता रहा। सबको डर लगने लगा कि कहीं इसका शरीर न छूट जाये। बहुत बार उन्होंने मायावी दुनिया की तरफ़ बहलाने की कोशिश की परन्तु जो मन एक बार प्रभु का हो चुका था, वह अब और किसी का कैसे हो सकता था ?

मैंने रंगीन वस्त्र, ज़ेवर आदि उतार कर सफ़ेद कपड़े पहन लिये थे। घर वालों को यही विचार आता था कि अमीरी से ग़रीबी को कैसे देखेगी ? वे सोचते थे कि यह स्वयं ही ठीक हो जायेगी।

प्रभुकृपा से साक्षात्कार होने लगे। विष्णु के रूप में बाबा आकर यही कहते थे कि "बच्ची, धैर्य धरो ! ये कष्टों की दुनिया, सितमों की दुनिया अब गयी कि गयी। इससे पार कराने के लिए मैं आ चुका हूँ।"

इधर सितम, उधर प्रभुकृपा

इधर रात-दिन ऐसे सितम सह रही थी, उधर प्रभुकृपा से साक्षात्कार होने लगे। विष्णु के रूप में बाबा आकर यही कहते थे कि "बच्ची, धैर्य धरो ! ये कष्टों की दुनिया, सितमों की दुनिया अब गयी कि गयी। इससे पार कराने के लिए मैं आ चुका हूँ।" जब यह आवाज़ सुनती थी तो मुझे तसल्ली होती थी कि इस जेलख़ाने में भी मेरा कोई रक्षक है। फिर मैं बाबा के साथ बातें भी करती थी, जो बाहर वाले भी सुनते थे जिससे उनको यह लगता था कि इसकी लगन पक्की होती जा रही है। परन्तु वे सब तो इतने सहानुभूतिहीन थे कि उन्होंने बहुत ही निर्दयतापूर्वक व्यवहार किया, मेरी एक भी बात नहीं मानी। मन में यही आता था कि आख़िर इस जेलख़ाने में कब तक रहूँगी; अब इससे कैसे छूटूँ ! कोशिश तो बहुत की कि चाबी मिल जाये परन्तु नहीं मिली। मैंने सोचा कि कहते हैं कि जब प्रह्लाद पहाड़ी से कूदा तो उसे

s_book final.1.pmd 21 02-01-2005, 4:58 PM

सँवारेंगे !''

पुलिस और भी इकट्ठी हो गयी। मैंने सोचा, अब कहाँ जाऊँ ? आश्रम तो दस मील दूर था। दूसरे के घर से कूदी थी तो थोड़ी देर मन में हलचल भी मची। फिर मन से आवाज़ आयी –

जिसके ऊपर तू मेरा रक्षक स्वामी, सो दुःख कैसे पाये !

मुसीबत अकेली नहीं आया करती

रास्ते में एक सिपाही मिला। जब उसने देखो कि एक स्त्री रात के अन्धेरे में नंगे पाँव वर्षा में जा रही है तो उसने पीछा किया कि आख़िर जाती कहाँ है। रास्ते में और भी सिपाही मिले। वे भी उसके साथ हो मेरा पीछा करते गये।

मैंने सोचा कि क्यों न लौकिक पीहर घर में अपनी लौकिक माँ के पास जाऊँ ? मैंने पुलिस वालों को कहा कि मुझे सत्संग में चार बजे जाना था लेकिन अगर अभी दो बजे हैं तो मैं तब तक अपनी माँ के पास चली जाती हूँ। इलाके-इलाके के सिपाही इकट्ठे होते-होते अब तक 25 हो गये। रास्ता पार कर मैं 25 पुलिस वालों के साथ माता जी के दरवाज़े पर पहुँची। दरवाज़ा बन्द था। सब सो रहे थे। माता जी तीसरी मंज़िल पर थीं। मैंने दरवाज़ा खटखटाया परन्तु उन्हें नहीं सुनायी दिया। माता जी के घर के नज़दीक ही गंगा देवी (मेरी लौकिक मामी जी) का घर था। वहाँ के चौकीदार ने जब देखा कि हमारे घर की लड़की नंगे पाँव आयी है और साथ में 25 पुलिस वालों को भी लायी है तो उन्होंने मुझसे बिना कुछ पूछे ही मामा जी को सूचना दे दी। मेरे दोनों मामे आये, जो इस ईश्वरीय ज्ञान के बिल्कुल खिलाफ़ थे। उन्होंने पुलिस को कहा – ''आप जाइये, यह हमारी लड़की है।'' पुलिस तो चली गयी। मामा जी ने बहुत ही क्रूरतापूर्वक मुझ से व्यवहार किया। वे मेरे सम्मुख आये और पूछने लगे – ''क्या हुआ, इस समय कहाँ से आयी हो ? तुमने हमारी इज़्ज़त ख़ाक में मिला दी है। क्या यह शोभा देता है कि इतनी रात हो गयी है और इतने पुलिस वालों के साथ आयी हो ? तुम तो हमारे घर की आबरू ख़त्म करने के लिए पैदा हुई हो।'' उन्हें मालूम था कि मैं तालों में बन्द थी। वे कहने लगे कि अब अपनी जिद्द छोड़ो और जैसे वे कहते हैं, वैसे करो।

मैंने कहा – ''मामा जी, अब मुझे छुट्टी है, इसलिए आज सत्संग में जा रही हूँ। घड़ी रुक जाने के कारण मैंने समझा कि चार बज गये हैं लेकिन अभी दो बजे हैं। मैंने सोचा कि चलो अपनी बहन रुक्मणी के साथ ही सत्संग में चली जाऊँगी

s_book final.1.pmd 24 02-01-2005, 4:42 PM

(रुक्मणी मेरी छोटी बहन है)। पुलिस वाले साथ हो लिये थे, बाक़ी ऐसी कोई बात नहीं है।'' फिर मैंने दरवाज़ा खटखटाया। माता जी ने सुना और वह नीचे आयीं। मैंने मामा जी से कहा – ''मामा जी, आप जाकर आराम कीजिये, मैं ऊपर चली जाऊँगी और सवेरे रुक्मणी के साथ ही सत्संग में चली जाऊँगी।'' मैं समझती हूँ कि यह भगवान (शिव बाबा) की ही कृपा थी कि मामा जी जाकर सो गये। फिर तो ऊपर आकर माता जी को सारी दुःखभरी दास्तान सुनायी कि कैसे मुझे इतने दिन उन्होंने तालों में बन्द रखा। मैंने खाना भी नहीं खाया। यह सुनकर उनमें भी वैराग्य उत्पन्न हुआ। मैंने कहा – ''इतने दिनों से सत्संग में नहीं गयी हूँ। आज रुक्मणी बहन के साथ चलूँगी।'' हम ठीक चार बजे घोड़ा-गाड़ी लेकर कुँज भवन वाले मकान में पहुँच गये। कुँज भवन वहाँ से लगभग 14 मील दूर था। आख़िर हम सत्संग में पहुँचे।

पुलिस और भी इकट्ठी हो गयी। मैंने सोचा, अब कहाँ जाऊँ ? प्रभु को पुकारा – ''हे प्रभु, अब रक्षा करो ! भक्तों पर भीड़ पड़ी है, उसे आप ही तो सँवारेंगे !'' जिसके ऊपर तू मेरा रक्षक स्वामी, सो दुःख कैसे पाये !

नया जीवन

बाद में मातेश्वरी जी और पिताश्री जी से मिलना हुआ। मैंने उन्हें बताया कि आज मैंने आसुरी जीवन का त्याग कर ईश्वरीय जीवन बनाने का क़दम उठाया है। आज मैं बीते हुए जीवन को इस ड्रामा की रील में समाप्त कर देने की प्रतिज्ञा करती हूँ। बाबा यह सुनकर मुस्कराये। मातेश्वरी जी ने कहा – ''इसके लिए बहुत हिम्मत चाहिए। तुम्हारे लौकिक सम्बन्धी आयेंगे और फिर वैसे ज़ोर-ज़बर सितम करेंगे। माया भिन्न-भिन्न रूपों से आयेगी। इतनी हिम्मत है कि इन लौकिक सम्बन्धियों की निर्दयता का, सितमों का, सब प्रकार की परीक्षाओं का सामना कर सको ?'' मेरे निश्चय की नींव की मज़बूती देखने के लिए मातेश्वरी जी ने ऐसी कई बातें पूछीं। परन्तु मैंने कहा, ''उन मायावी मनुष्यों को चाहिए भौतिक सुख-सामग्री; मैं सब कुछ (धन, ज़ेवर आदि) उनको देकर नंगे पाँव आयी हूँ। ईश्वर से मिलने के लिए क़दम उठाया है तो आज मेरी यह प्रतिज्ञा है कि ''हे प्रभु, जहाँ बिठाओगे, जो खिलाओगे, जैसे रखोगे वैसे रहेंगे।'' यह सुनकर मातेश्वरी जी और पिताश्री जी मुस्कराये। उस दिन से मैं कुँज भवन में रहने लगी। वह दिन मेरे लिए पुरानी दुनिया से मरने और ईश्वरीय दुनिया में जीने का शुभ दिवस था।

s_book final.1.pmd 25 02-01-2005, 4:58 PM

अब उधर क्या हुआ ?

उधर अमृतवेले घर वालों को जब पता चला कि मैं वहाँ नहीं हूँ, दरवाज़े बन्द हैं, ताले लगे हैं तो उन्होंने चौकीदार से पूछा। उसने कहा – ''मुझे नहीं पता।'' फिर जब साथ वालों ने अपना दरवाज़ा खुला देखा तो उन्होंने समझा कि चोर आया है। जब देखा कि किसी भी चीज़ की चोरी नहीं हुई है, तो सबने यही नतीज़ा निकाला कि वह ज़रूर गैलरी कूद कर गयी है। उन्हें एक तरफ़ तो पाँच वर्ष याद आ रहे थे जो मैंने ईश्वरीय धारणाओं में बिताये थे और दूसरी तरफ़ मन में यह भी था कि जैसे बुद्ध दुनिया से वैराग्य करके रात्रि को दो बजे जंगल में गये थे, इसने भी धन, ज़ेवर आदि का त्याग किया है तो ज़रूर कुछ और ऊँच मिला है।

पुलिस तो चली गयी। मामा जी ने बहुत ही क्रूरतापूर्वक मुझ से व्यवहार किया। वे मेरे सम्मुख आये और पूछने लगे – ''क्या हुआ, इस समय कहाँ से आयी हो ? तुमने हमारी इज़्ज़त ख़ाक में मिला दी है। क्या यह शोभा देता...?''

वे फिर पीछा करने आ गये

मन ही मन इस बात पर विचार करते हुए वे शाम को 4 बजे कुँज भवन में पहुँच गये। उन्होंने कहा – ''हमें रुक्मणी से मिलना है। मातेश्वरी जी ने कहा – ''अवश्य मिलो। मुझे पहले तो थोड़ा डर लगा कि पता नहीं अब फिर क्या कहेंगे और क्या करेंगे। लेकिन फिर तो शिवशक्ति बनकर मैं उनके सामने गयी। मैंने साफ़ शब्दों में कह दिया कि मैं आपकी पुरानी दुनिया से मर चुकी हूँ, इसलिए अब आप मेरा पीछा नहीं करो। अगर आपको मायावी दुनिया पसन्द है तो आप बेशक दूसरी शादी करो और माया के सुख लूटो। वे सुख अगर मुझे अच्छे लगते होते तो मैं सब कुछ आपको न दे आती। ज़रूर उससे कुछ ऊँची प्राप्ति हुई है, तभी तो उसको त्याग कर यह जीवन बिताना चाहती हूँ।'' लौकिक पति ने कहा – ''मैं शादी करना चाहता हूँ, तुम मुझे लिखकर दोगी ?'' मैंने कहा – ''आप मालिक हैं पुरानी दुनिया के सुख लूटने के, मैं मालिक हूँ ईश्वरीय सुख लूटने के लिए। आप चाहते हो तो शादी करो, लिखवाने की कोई ज़रूरत नहीं है।'' फिर तो वे एक सप्ताह तक रोज़ आते रहे। कभी मोह के रूप से यत्न करते रहे, कभी लोभ के रूप में वे मुझे ईश्वरीय मार्ग से हटाने के यत्न करते रहे। मैंने कहा – मेरा तो एक ईश्वर ही है। लौकिक मामी जी, जिसके घर से पहले-पहले ईश्वरीय ज्ञान मिला था, ने

s_book final.1.pmd 26 02-01-2005, 4:42 PM

बताया कि ईश्वरीय जीवन बिताना कोई इतना सहज नहीं, सोच लो, सारे जीवन का फ़ैसला जल्दबाज़ी में नहीं करो। बहुत परीक्षायें आयेंगी, क्या आप में उनको पार करने की शक्ति है ? ज्ञान तो हमने भी लिया है परन्तु दुनिया की हालतों को देखकर घर में रहते हुए निमित्त बन पार्ट बजाना है। सोच-समझ कर क़दम आगे बढ़ाना। मैंने कहा, ''जबकि सत्गुरु के दर पर आये हैं तो पीछे क्यों हटा रही हो ? आपने ही तो यह शिक्षा दी थी –

सत्गुरु मिलने जाइये, साथ न लीजे कोई,
आगे पाँव धरिये, पीछे पाँव न होई।

यह मेरा दृढ़ संकल्प है, इससे मुझे कोई हटा नही सकता।'' मामी ने कहा – ''यह तो मैंने सोचा भी नहीं था कि आप इस प्रकार चल पड़ोगी। अभी आप जोश में हो, कुछ होश भी रखो। मैं भी तो ऐसे चल रही हूँ न ?'' मैंने कहा – ''हरेक का अपना-अपना पुरुषार्थ है।'' इस प्रकार एक सप्ताह तक माया ने अनेक मोहिनी रूप दिखाये। आख़िर मैंने ही उन्हें लिखकर दिया कि आप जो चाहें सो कर सकते हैं। यह थी देह के सम्बन्धों से ममता टूटने की अन्तिम घड़ी। ❄

कराची (1940)– बगीचे में सेवा करते बाबा और बृजेन्द्रा दादी।

s_book final.1.pmd 27 02-01-2005, 4:58 PM

सर्व का उद्धारक मेरा बाबा

आबू (1961)– हरिलासराय बाबूजी, कानपुर, बाबा को टोली खिलाते हुए। मोहिनी बहन, मनमोहिनी दीदी, सन्देशी दादी और गंगे दादी। नीचे की लाइन में सती दादी (दादी जी की बड़ी बहन), कर्माबाई, ध्यानी दादी।

ब्रह्माकुमारी दादी गंगे जी ने अपने अनुभव इस प्रकार सुनाये हैं कि जैसे ही शिव बाबा ने ब्रह्मा बाबा में प्रवेश किया, वैसे ही ब्रह्मा बाबा शिव बाबा की आज्ञा अनुसार अपने भागीदार से अपना हिस्सा लेकर, व्यापार समेटकर कोलकाता से हैदराबाद (सिन्ध) आ गये। यह ड्रामा इतना सुन्दर बना हुआ है कि शुरू-शुरू में भट्ठी बनी जिसमें 400 बहनें आयी थीं। वे सब एक ही शहर में थीं। भगवान को उन्हें ढूँढ़ना नहीं पड़ा। वे भक्तिकाल में भी आपस में किसी-न-किसी की रिश्तेदार थीं या आपस में किसी-न-किसी पारिवारिक कार्यक्रम में किसी-न-किसी स्थान पर मिलती-जुलती थीं। पहले बाबा ने अपने मकान में ही सत्संग शुरू किया। घर

s_book final.1.pmd 28 02-01-2005, 4:42 PM

पर आने वालों को बाबा गीता पढ़कर उसका अर्थ बताते थे। धीरे-धीरे मकान छोटा पड़ने लगा तो दूसरा बड़ा मकान ले लिया, नाम रखा – ''ॐ-मंडली।'' धीरे-धीरे ॐ-मंडली के नाम से आवाज़ फैला कि दादा बहुत अच्छा सत्संग कराते हैं, अभी तक किसी ने ऐसा सत्संग नहीं कराया है। इस प्रकार बात फैलते-फैलते बहुत लोग वहाँ जाने लगे। मैंने भी एक दिन किसी के द्वारा सुना तो वहाँ गयी। उस समय मेरी उम्र क़रीब 13 साल की होगी। उन दिनों बाबा हफ़्ते में तीन दिन सत्संग कराते थे। सत्संग की शोभा बहुत निराली थी। यहाँ के नियम भी बहुत विचित्र थे। सब से पहली बात थी खान-पान की शुद्धि, दूसरी बात थी कभी रोना नहीं। भले प्रभु-प्रेम के आँसू बहा सकते हैं लेकिन दुःख के कभी नहीं। तीसरी बात थी कि कोई किसी भी कारण से कटु बोल बोले या दुःख देवे तो उसकी फीलिंग नहीं करनी चाहिए। सत्संग में आने वाले हर व्यक्ति को एक-एक कॉपी (नोट बुक) दी जाती थी, उसमें रोज़ की दिनचर्या लिखनी होती थी। रोज़ पहरे पर दो बहनें होती थीं, एक बड़ी दीदी और दूसरी शान्तामणि बहन की भाभी, ये बहनें सबकी कॉपी लेती थीं और कॉपियों की चेकिंग करती थीं। आदि से ही बाबा ने हमें ये नियम सिखाये और धारणा करवाये। सत्संग में आने वाले बहुत ख़ुश होने लगे। बड़े-बड़े परिवारों की मातायें और कन्यायें भी आने लगीं।

जैसे ही शिव बाबा ने ब्रह्मा बाबा में प्रवेश किया, वैसे ही ब्रह्मा बाबा शिव बाबा की आज्ञा अनुसार अपने भागीदार से अपना हिस्सा लेकर, व्यापार समेटकर कोलकाता से हैदराबाद (सिन्ध) आ गये।

सत्संग में आने वालों के लिए अनोखे नियम

सिन्ध में यह रिवाज़ था कि किसी महिला का पति अथवा बड़ा बेटा मर जाता था तो उसको 12 महीने शोक के कपड़े पहनने पड़ते थे। बाबा के सत्संग का नियम था कि कोई भी यहाँ शोक के कपड़े (जो मैले और काले होते थे) पहन कर न आये। यहाँ आना है तो सफ़ेद कपड़े पहनकर आये। सत्संग इतना बढ़ गया कि बाबा के पास जो दो बड़े हॉल थे उनके बीच की दिवार भी तोड़नी पड़ी। धीरे-धीरे गीताज्ञान के साथ-साथ शिव बाबा ने ब्रह्मा बाबा द्वारा यह इशारा दिया कि देवता बनना है तो पवित्र रहना पड़ेगा। जब ऐसी बातें आने लगीं तो लोगों के मन में थोड़ी हलचल होने लगी। क्योंकि माताओं ने पवित्र रहना शुरू कर दिया था और जो कन्यायें थीं वे कहने लगीं कि हम शादी नहीं करेंगी। फिर परिवारों में झगड़े

s_book final.1.pmd 29 02-01-2005, 4:58 PM

दादी गंगे जी

मैंने भी एक दिन किसी के द्वारा सुना तो वहाँ गयी। उस समय मेरी उम्र क़रीब 13 साल की होगी। उन दिनों बाबा हफ़्ते में तीन दिन सत्संग कराते थे। सत्संग की शोभा बहुत निराली थी। यहाँ के नियम भी बहुत विचित्र थे।

शुरू हो गये कि यह कैसे होगा, भविष्य-जीवन कैसे चलेगा ? दादा तो बूढ़ा है, 60 साल का है, यह कब तक इन माताओं और कन्याओं को खिलाता रहेगा ? धीरे-धीरे घर वालों ने सत्संग में आने वालों पर रोक लगाना शुरू किया। भविष्य के ज्ञाता बाबा ने एक बड़ा अच्छा नियम बनाकर रखा था कि जो भी सत्संग में आना चाहते हैं वे अपने माँ-बाप, दादा-दादी, सास-ससुर से चिट्ठी ले आयें कि हम ख़ुशी-ख़ुशी से अपनी बच्ची को अथवा अपनी बहू को ॐ-मंडली में ज्ञानामृत पीने और पिलाने की छुट्टी दे रहे हैं। जब वे लोग हमें रोकना चाहते थे तो हम उनसे कहते थे कि आप ने ही तो चिट्ठी लिखकर दी है। तो घर वाले परेशान होने लगे कि अब क्या करें ? बाबा ने सब के पत्रों को आफिस में संभालकर रखा था। जिनके घर वाले विरोधी बन गये उन्होंने सोचा कि सबसे पहले इन पत्रों को ख़त्म कर दें। जहाँ इन पत्रों को रखा था उस मकान को ही आग लगाने की कोशिश की गयी। रूई में तेल डालकर उसको आग लगाकर खिड़की से अन्दर फेंक दिया गया। लेकिन बाहर गैलरी से किसी बहन ने देखा। उसको पता पड़ा कि कुछ लोग आग लगाने का प्रयत्न कर रहे हैं। तुरन्त दरवाज़ा खोला और आग को बुझा दिया। फिर वे लोग सोचने लगे कि अब क्या करें। वे अपनी-अपनी औरतों और कन्याओं को कमरे में बन्द करने लगे। चार-चार, सात-सात कमरों के अन्दर रखकर ताला लगाने लगे।

मैं भी हैदराबाद में अपने परिवार के साथ थी और सत्संग में जाया करती थी। मुझ पर भी बन्धन लगने लगे। हैदराबाद से कराची का चार घंटे का रास्ता था। एक दिन बाबा ने सबको बोला कि मैं एक मास के लिए कराची जाता हूँ घूमने के लिए। अगर किसी को आना है तो घर से छुट्टी लेकर मेरे साथ चले। कई परिवार के परिवार ही जाने के लिए तैयार हो गये। मेरे जैसी 8-9 बहनें (कन्यायें) थीं जो बहुत बाँधेली थीं। मुझे माता-पिता ने छुट्टी नहीं दी। सब लोग चले गये। बाबा आदि सब लोगों के कराची चले जाने के दो दिन पहले से ही घर वाले हमें घरों में बन्द करके पहरा देने लगे थे। दो दिन बाद भी मुझे कमरे से बाहर निकलने नहीं दिया गया। हमारे में से कोई भी घर से बाहर निकल ही नहीं सकती थी। मुझे बाबा और सत्संग के प्रति बहुत लगन थी। मन में तो आता था कि इतनी सारी बहनें जो बाबा के साथ गयीं वे रोज़ ज्ञानामृत पी रही होंगी, कितनी ख़ुशी में रह रही होंगी और मैं तो जैसी थी वैसी ही रह गयी।

s_book final.1.pmd 30 02-01-2005, 4:42 PM

बचपन से ही मेरे संस्कार बहुत भक्ति प्रधान थे। श्री कृष्ण से मेरा बहुत प्यार था। जब मैं भागवत पढ़ती थी तो बहुत अच्छा लगता था। गोपियाँ श्रीकृष्ण के साथ रास करती थीं, मुरली सुनती थीं – यह पढ़कर और सुनकर मुझे बहुत आनन्द होता था। मैं भगवान से कहती थी कि हे भगवान, मुझे भी ऐसी ही अपनी गोपी बना दिया होता तो कितना अच्छा होता! मैंने यह नहीं सोचा था कि आख़िर वो दिन आयेगा कि मैं भी एक सच्ची गोपी बन जाऊँगी। आप सोचिये, हम लोगों का क्या हाल हुआ होगा जब हमें कमरे में बन्द किया गया था। मुझे न प्यास लगती थी, न भूख। सिर्फ बाबा से मिलने की तड़प रहती थी। श्री कृष्ण के साथ रास खेलने का नशा रहता था। मैं माँ से कहती थी कि आप मेरे साथ क्या कर रही हो ? अन्दर से उनको हमारे ऊपर तरस भी आता था कि क्या करें, बच्चियाँ कुछ खा-पी नहीं रही हैं। फिर मैंने माँ से कहा कि यहाँ हैदराबाद में पहले जो बहनें सत्संग में जाती थीं लेकिन कराची जा नहीं सकीं, वे और हम सब मिलकर तो सत्संग कर सकती हैं ना। उन्होंने मान लिया तो हमने भोजन करना शुरू किया।

सत्संग इतना बढ़ गया कि बाबा के पास जो दो बड़े हॉल थे उनके बीच की दिवार भी तोड़नी पड़ी। धीरे-धीरे गीताज्ञान के साथ-साथ शिव बाबा ने ब्रह्मा बाबा द्वारा यह इशारा दिया कि देवता बनना है तो पवित्र रहना पड़ेगा।

तड़पन और मज़बूरन

जब हम बहनें आपस में मिलती थीं तो बातें करती थीं कि देखो, जो यहाँ से गयी हैं वे तो ज्ञानरत्नों से अपनी झोली भर रही होंगी, बाबा के साथ रहकर अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूल रही होंगी। ऐसी बातें करते-करते हमसे रहा नहीं गया। सब बाबा से मिलने के लिए बहुत तड़पती थीं। फिर सबने मिलकर एक योजना बनायी कि हम सब यहाँ से चलें और 3-4 दिन रहकर बाबा को और उन सब बहनों को देखकर आयें। हमने आपस में निर्णय लिया कि जिनको बिल्कुल डर नहीं है वे हैदराबाद स्टेशन से गाड़ी में चढ़ें और जिनको घर वालों का डर है कि वे स्टेशन पर भी आ जायेंगे, तो वे आगे वाले स्टेशन से चढ़ें। एक दिन मुकर्रर किया और बाबा को ख़बर दे दी कि हम लोग फलानी गाड़ी से आ रही हैं। मैंने घर से कुछ नहीं लिया। उस समय गाड़ी का किराया भी बहुत कम होता था। एक जोड़ी कपड़े पहने हुए थी और एक जोड़ी कपड़े हाथ में लेकर निकली। घर वालों को पता चलने नहीं दिया कि मैं कब और कहाँ गयी हूँ। ऐसे एक-एक निकल आयी। किसी के

s_book final.1.pmd 31 02-01-2005, 4:58 PM

पास न खाने के लिए कुछ था, न पीने के लिए।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, घर वाले हैरान हो गये कि बच्चियाँ अभी तक घर क्यों नहीं आयीं। बेचैन होकर एक-दूसरे के घर जाकर पूछने लगे कि आपकी बच्ची है, आपकी बच्ची कहाँ गयी है ? सब कहने लगे कि मेरी लड़की भी नहीं आयी है। आपस में मिलकर मातायें रोने लगीं। वे आपस में बोलने लगीं कि ये लड़कियाँ तो बहुत चालाक निकलीं। जब हम बाबा के पास पहुँचीं तो बाबा ने कहा, ''बच्चे, पहले तुम अपने-अपने घर वालों को टेलिग्राम दो कि हम यहाँ हैं। बेचारे वे कितने परेशान हो गये होंगे ! जाओ, पहले यह काम करो।'' हमने घर पर टेलिग्राम दिया कि हम यहाँ आयी हैं, आप हमारी चिन्ता न करें। बाबा ने हमें अपने पास नहीं रखा। उस समय बड़ी दीदी और क्वीन मदर भी बाँधेली थीं। बाबा ने एक बंगला अलग से लेकर उनको उसमें रखा था। हम सब बहनों को बाबा ने उनके पास भेजा ताकि हमारे घर वालों को बताया जा सके कि वे हमारे पास नहीं हैं, अपनी सखियों के पास हैं।

मैं भगवान से कहती थी कि हे भगवान, मुझे भी ऐसी ही अपनी गोपी बना दिया होता तो कितना अच्छा होता! मैंने यह नहीं सोचा था कि आख़िर वो दिन आयेगा कि मैं भी एक सच्ची गोपी बन जाऊँगी।

जन्म एण्टी ॐ-मंडली का तथा भ्रम लोगों का

इसी बीच हैदराबाद में एक ऐसा व्यक्ति निकला, जो यह बात फैलाने लगा कि दादा कोलकाता से सुरमा लाया है, उसको सबकी आँखों में डालकर जादू करता है। मैं आपको जादू पढ़कर देता हूँ, इसको आप अपनी कन्याओं और माताओं पर फेंकेंगे तो दादा द्वारा लगाया गया जादू उतर जायेगा और वे अपने आप लौटकर आयेंगी। ऐसे-ऐसे ॐ-मंडली के विरोधी इकट्ठे होते-होते एन्टी-ॐ-मंडली का जन्म हो गया। कराची में ॐ-मंडली और हैदराबाद में एन्टी ॐ-मंडली।

हम कन्यायें जो हैदराबाद से योजना बनाकर कराची आयी थीं उनमें से मनोहर बहन भी एक थी और उनकी माँ ही सबसे पहले उनसे मिलने आयी। बाबा ने उस माता से कहा कि फलाने बंगले में जाकर मनोहर से मिलो। वो हमारे बंगले में आयी और मनोहर बहन से बात करते-करते उसको बाहर बगीचे में ले गयी। थोड़े समय वहाँ बात करने के बाद धीरे-धीरे उसको गेट के बाहर ले गयी। जैसे ही मनोहर बहन गेट से बाहर गयी, बाहर कार से दो भाई आ गये और उसको उठाकर

s_book final.1.pmd 32 02-01-2005, 4:42 PM

गाड़ी में ले गये। एक को ले गये तो दूसरी बहनों के माँ-बाप को भी हिम्मत आयी कि हम भी अपनी बच्चियों को ऐसे ले आ सकते हैं। बंगले के बाहर बहुत बड़ा बगीचा था। कोई माँ अपनी बेटी से, कोई भाई अपनी बहन से, कोई पति अपनी पत्नी से इधर-उधर खड़े होकर बातें कर रहे थे, कोई झगड़ रहे थे, कोई रो रहे थे। ये सब होते हुए, एक आदमी जादू पढ़कर लाये गये अनाजों को इधर-उधर फेंक रहा था। मैंने उससे पूछा कि तुम यह क्या कर रहे हो ? उसने कहा, कुछ नहीं, कुछ नहीं। मुझे हँसी आने लगी क्योंकि मुझे तो पता था कि ये जादू उतार रहे हैं। जब किसी को जादू चढ़ा ही नहीं तो उतरेगा कहाँ से ? लेकिन सिन्ध के लोगों को भ्रम पैदा हुआ था कि ॐ-मंडली वाले जादू करते हैं। मेरे घर वाले भी मुझे अपने साथ ले जाने के लिए ज़ोर-जबरदस्ती करने लगे तो मैंने कहा, आप घर चले जाओ, मैं बाद में आऊँगी।

एण्टी-ॐ-मंडली वालों ने और एक योजना बनायी कि जो कन्यायें नाबालिग हैं उन पर वारंट निकलवाकर कोर्ट द्वारा उन्हें घर ले जायें। उस समय ब्रिटिश गवर्नमेण्ट थी तो प्रशासन बहुत सख्त था। अठारह साल से कम उम्र वालों पर वारंट आता गया और जज उनको घर भेजता गया। एक दिन मेरे नाम से भी वारंट आया। उस दिन सत्संग पूरा होने के बाद बाबा ने मुझे बुलाया और कहा, ''बच्ची, तुम्हारे नाम पर भी वारंट आया है।'' मैं रोने लगी। बाबा ने कहा, ''बच्ची, ऐसा करने से क्या होगा ? जाकर तुम जज को समझाओ। उससे बात करके उसको स्पष्ट करो कि मैं नाबालिग नहीं हूँ।'' लेकिन जज ने मेरी सुनी कहाँ ? उसने कहा, तुम्हारे माँ-बाप कहते हैं कि तुम नाबालिग हो। क़ानून कहता है कि तुम्हें माँ-बाप के पास रहना है। उतने में जज के आस-पास जो यमदूत जैसे दो आदमी रहते हैं उन्होंने मुझे पकड़कर मेरे माँ-बाप के हवाले कर दिया। मैं उनके साथ घर चली गयी।

कोर्ट से मुझे ले जाने के बाद घर वालों ने मेरे साथ क्या-क्या किया – उसका वर्णन मैं नहीं कर सकती। छह मास तक एक जादू करने वाला हमारे घर आता रहा और पढ़कर जादू उतारता रहा। मेरे साथ में और जो अन्य कन्यायें वारंट के कारण घर आयी थीं, उन्हों को मेरे से अलग कर दिया। घर वालों ने समझा कि अगर ये सब इकट्ठी रहती हैं तो हमारा जादू इन पर चलेगा नहीं क्योंकि इन सबका जादू

घर वाले हैरान हो गये कि बच्चियाँ घर क्यों नहीं आयीं। बाबा ने कहा, ''बच्चे, पहले तुम अपने-अपने घर वालों को टेलिग्राम दो कि हम यहाँ हैं। बेचारे वे कितने परेशान हो गये होंगे ! जाओ पहले यह काम करो।''

s_book final.1.pmd 33 02-01-2005, 4:58 PM

हमारे से बलशाली होकर रहेगा। हमें अलग-अलग करने के बाद वह मंत्र पढ़ने वाला एक-एक पर जादू पढ़कर उतारने लगा। उससे कुछ भी हुआ नहीं क्योंकि हमारे ऊपर कोई जादू तो था ही नहीं और उसके जादू का प्रभाव भी हमारे ऊपर नहीं होता था। मेरा यह ख़ुद का अनुभव है कि जिसके पास परमात्म-शक्ति होती है, जिसको ज्ञान का नशा रहता है उस पर जादू का असर नहीं हो सकता। लगातार छह महीने तक घर वालों ने मेरे ऊपर जादू का प्रयोग किया। मुझे कुछ नहीं हुआ, और ही मैं ईश्वरीय मस्ती में मस्त रहने लगी। जिस दिन मैं शान्ति से बैठी रहती थी तो वह जादू करने वाला मेरे माता-पिता से कहता था कि देखो, आज उस पर जादू का असर हो गया है इसलिए चुपचाप बैठी है। मैं जब बोलना शुरू करती थी तो वो कहता था कि देखो, आज दादा उन पर जादू का प्रयोग कर रहा है, उसका असर हो रहा है। आख़िर मैंने माँ से कहा कि आप लोग फालतू में पैसे बर्बाद कर रहे हो। इससे कुछ होने वाला नहीं है। मुझे तो प्रभु के संग का रंग और ईश्वरीय ज्ञान का जादू लगा हुआ है, उसको कोई भी उतार नहीं सकता। तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं आता तो जो मर्जी करो।

एक दिन मेरे नाम से भी वारंट आया। बाबा ने मुझे बुलाया और कहा, "बच्ची, तुम्हारे नाम पर भी वारंट आया है।" मैं रोने लगी। बाबा ने कहा, "बच्ची, ऐसा करने से क्या होगा ? जाकर तुम जज को समझाओ।"

बहुरूपी बनकर आती थीं सहेलियाँ और सन्देशियाँ

कमरे में मैं बाबा की याद में बैठी रहती थी। बीच-बीच में ॐ-मंडली की बहनें रूप बदलकर आती थीं और कहती थीं कि मैं गंगे की सखी हूँ, उससे बात करने आयी हूँ – ऐसे कहकर कभी बाबा की चिट्ठी, कभी मुरली की प्वाइंट्स सुनाकर जाती थीं। उनमें कुमारका दादी भी थीं जो आया करती थीं। एक दिन एक सहपाठी के रूप में मनोहर बहन आयी और मेरी माँ से कहने लगी कि इसको घर में अकेली क्यों रखा है ? किसी हमारे जैसी सखी के साथ बाहर घूमने भेजो तो पुरानी बातें भूल जायेगी। जहाँ शुरू-शुरू में ॐ-मंडली का सत्संग होता था, वहाँ वो ले जाती थी। बाबा ने मनोहर बहन का नाम रखा था – बहुरूपी। एक दिन घर वालों को शक हो गया कि ये वही लड़कियाँ हैं जो ॐ-मंडली में जाती हैं। इस तरह का पार्ट हमारा चलता रहा।

फिर घर वालों ने सोचा कि विदेश में जहाँ मेरी एक बहन और भाई रहते थे

s_book final.1.pmd 34 02-01-2005, 4:42 PM

वहाँ भेज दें। मैंने सोचा कि अगर इन लोगों ने मुझे विदेश भेज दिया तो बहुत अनर्थ होगा, न मैं बाबा से मिल पाऊँगी, न ज्ञान सुन पाऊँगी। जब विदेश ले जाने वाले आये तो मैंने उनसे कहा कि देखो, अगर तुम मुझे ले जायेंगे तो मैं स्टेशन पर हंगामा कर दूँगी और मैं तुम सबको स्टेशन पर ही पुलिस वालों को पकड़ा दूँगी कि मैं इनको जानती नहीं हूँ, ये मुझे जबरदस्ती ले जा रहे हैं। तुमको जेल में बन्द कर देंगे। अगर तुम जेल में जाना चाहते हो तो मुझे यहाँ से ले चलो। वो लोग डर गये क्योंकि वे विदेश में रहने वाले थे, यहाँ उनको पहचानने वाले बहुत कम थे। उन्होंने सोचा कि यह तो सही कह रही है, ऐसा हुआ तो हमारे लिए बहुत मुश्किल हो जायेगी। डर के मारे उन्होंने मेरा प्रोग्राम कैन्सल किया। थोड़े दिन के बाद मेरा भाई आया। उसने पूछा कि यह क्या हो रहा है। भाई का प्यार तो मेरे ऊपर था ही। मैंने भाई से कहा कि मैं सत्संग में जाना चाहती हूँ, ये मुझे जाने नहीं दे रहे हैं। मुझे बहुत तंग कर रहे हैं, तुम ही इनको समझाओ, इसमें मेरी क्या ग़लती है। मैं मीरा बनना चाहती हूँ, ये मुझे बन्धन डालते हैं। मेरी बातें सुनकर भाई को तरस आया, प्यार से उसकी आँखें भर गयीं। उसने सबको समझाया। उसके बाद कभी भाभी के साथ, कभी बहन के साथ बाहर जाने की छुट्टी दी गयी।

छह महीने तक घर वालों ने मेरे ऊपर जादू का प्रयोग किया। मुझे कुछ नहीं हुआ, और ही मैं ईश्वरीय मस्ती में मस्त रहने लगी। जिस दिन मैं शान्ति से रहती थी जादू करने वाला कहता था कि आज जादू का असर हो गया है।

मधुर मिलन के लिए क्या-क्या युक्ति रची मैंने !

दिन-प्रतिदिन मेरे अन्दर इतनी तड़प बढ़ने लगी कि कैसे भी करके जाकर बाबा से मिलूँ। एक दिन बड़ी बहन से मिलने गयी, साथ में छोटी बहन थी। मन में तो बहुत इच्छा हो रही थी कि आज कैसे भी करके बाबा से मिलूँ। समझ में नहीं आ रहा था कि कैसे मिलने जाऊँ। रास्ते में खजूर का ठेला लगा हुआ था। मैंने छोटी बहन से कहा, तुम मेरे लिए खजूर ले लो। मैंने योजना बनायी कि जब यह लेने में व्यस्त हो जायेगी तब मैं दौड़कर भाग जाऊँगी। बहन ने सोचा कि यह तो कभी अपने लिए कुछ माँगती नहीं है, आज माँगा है तो खजूर ले लेती हूँ। जैसे ही उसने लेना शुरू किया, मैं दौड़ी। गली-गली से होकर दौड़ते-दौड़ते ऐसी जगह पर आ रुकी जहाँ ॐ-मंडली में जाने वालों का घर था। मुझे पता था कि ये उन्हीं का घर है।

s_book final.1.pmd 35 02-01-2005, 4:58 PM

बहन मुझे ढूँढ़ते-ढूँढ़ते, रोते-रोते अकेली घर पहुँची। घर में सभी उसी को डाँटने लगे कि तुमने उसको छोड़ा ही क्यों ? उसको साथ में रखना चाहिए था। जब मैं उस घर के अन्दर गयी तो मुझे देखकर वे लोग बहुत ख़ुश हुए। मैंने उनसे कहा कि आप जल्दी मुझे कहीं छुपाओ क्योंकि हमारे घर वालों को पता है कि आप लोग ॐ-मंडली में जाते हैं। वे जगह ढूँढ़ने लगे तो मैंने कहा, अलमारी से मैले कपड़े निकालकर मेरे ऊपर सफ़ेद कपड़े डालकर मुझे अन्दर बन्द कर देना। उन्होंने ऐसा ही किया। उतने में मेरी बड़ी बहन उनके घर पर पहुँच गयी और परिवार वालों को धमकाने लगी कि मेरी बहन को आपने कहाँ छिपाकर रखा है। उन्होंने कहा, वो तो हमारे पास आयी नहीं, घर खुला है, आप जहाँ चाहो जाकर देख लो। बहन ने इधर-उधर ढूँढ़ा लेकिन मिली नहीं तो वो चली गयी। उस घर वालों को मैंने अपनी सारी कहानी बता दी कि इन्होंने मुझे छह मास से कैसे-कैसे तंग किया और सताया है। मुझे कैसे भी करके बाबा के पास जाना है। आप मुझे रात को 12 बजे कराची जाने वाली गाड़ी में बिठा दो। मैंने उनसे कहा कि मैं इन वस्त्रों में नहीं जाऊँगी। मैं रंगीन कपड़े पहनूँगी। आप मुझे कुछ जेवर भी दे दो। मैं बहुरानी जैसी दिखायी पड़ूँगी तो कोई मुझे पहचानेंगे नहीं। मैं ऐसे ही करके ट्रेन में बैठ गयी, सुबह चार बजे कराची पहुँची। बंगले का पता किया और वहाँ चली गयी। बाबा सत्संग करा रहे थे। मैं जाते ही सीधा बाबा की गोद में चली गयी। बाबा को भी पता था कि इसको सख्त बन्धन है। बाबा ने भी बहुत प्यार-दुलार दिया।

दिन-प्रतिदिन मेरे अन्दर इतनी तड़प बढ़ने लगी कि कैसे भी करके जाकर बाबा से मिलूँ। एक दिन बड़ी बहन से मिलने गयी, साथ में छोटी बहन थी। मन में तो बहुत इच्छा हो रही थी कि आज कैसे भी करके बाबा से मिलूँ।

उन दिनों यज्ञ में गायें थीं। उनमें से एक गाय का नाम बाबा ने मेरे नाम से रखा था। वो गाय बहुत रोती थी, आँसू बहाती थी। बाबा कहते थे कि गंगे बच्ची बहुत रोती है, आँसू बहाती है, बाबा के लिए तरसती है। जब बहनें रूप बदलकर मेरे पास आती थीं, उस समय ये सारी बातें बताती थीं। मैं वहाँ पहुँच तो गयी लेकिन उस समय ॐ-मंडली पर दफा 140 लगा हुआ था। मुझे पता था कि मेरे को यहाँ ज़्यादा दिन नहीं रखेंगे लेकिन बाबा को देखने की तड़प ने मुझे आने के लिए मज़बूर किया। बाबा ने कहा, ''बच्ची, तुमको वापस जाना पड़ेगा।'' मैंने हाँ कह दिया क्योंकि मैं नहीं चाहती थी कि मेरे कारण ॐ-मंडली पर कोई कलंक आये। बाबा से मिलने की तीव्र इच्छा थी, मिल लिया। मुझे यह भी पता था कि यहाँ से जाने के बाद मेरे पर और ही सख्त बन्धन डालेंगे।

s_book final.1.pmd 36 02-01-2005, 4:42 PM

क्या-क्या सितम सहन किये मैंने !

भाई ने मुझे थोड़ी आज़ादी दिलायी थी तो मैं भागकर यहाँ आयी थी। उसको ज़रूर बुरा लगा कि इसने मुझे धोखा दिया। मैं घर लौटी। मैं जिस गाड़ी से हैदराबाद पहुँची थी उसी गाड़ी में मेरा भाई कराची पहुँचा। जब उसको पता पड़ा कि गंगे घर गयी है तो वह लौट आया। जैसे ही मैं घर पहुँची तो घर वालों ने मूक जानवरों की तरह जंजीरों से बाँध दिया। सिर्फ जब स्नान आदि करना होता था तब ही खोलते थे। बाद में फिर चारपाई से बाँध देते थे। तो भी मुझे कोई परवाह नहीं थी। क्योंकि मैंने भागवत में पढ़ा था कि गोपियों को जंजीरों से बाँधते थे। मैंने समझा कि शायद मैं वही गोपी हूँ। मेरा पार्ट ऐसा ही चलता रहा। कुछ दिनों के बाद मेरी बहन विदेश से आयी। मेरी यह हालत देखकर वह सहन नहीं कर पायी। उसने मेरे ताले तोड़े और जंजीर निकाली। मैंने उससे कहा कि मैं आपके साथ विदेश चलूँगी और आपके साथ रहूँगी। उसको भी मेरी बात सही लगी। दो मास तक मेरा पार्ट ऐसा चला कि न मुरली सुनी, न किसी से मिली-जुली। आप सोच सकते हैं कि मैं कैसे रह पायी हूँगी ! लेकिन सूक्ष्म में बुद्धि बाबा के पास और साथ थी। बाबा मुझे बहलाता था, हर्षाता था। इस तरह मेरा संघर्ष का पार्ट ख़ूब चला। मैं कभी हारी नहीं, घबरायी नहीं। बाबा के साथ बुद्धि का अटूट सम्बन्ध था।

उस घर वालों को मैंने अपनी सारी कहानी बता दी कि इन्होंने मुझे छह मास से कैसे-कैसे तंग किया और सताया। मुझे कैसे भी करके बाबा के पास जाना है। आप मुझे रात को 12 बजे कराची जाने वाली गाड़ी में बिठा दो।

आख़िरकार फैसला हुआ –
आज भारत के लिए ऐसी देवियों की सख्त ज़रूरत है

एन्टी-ॐ-मंडली वालों ने अब भी पीछा नहीं छोड़ा। किसी-न-किसी रूप से हम सब बहनों को तंग करते ही थे। सरकार को भी समझ में नहीं आ रहा था कि ॐ-मंडली की समस्या का समाधान कैसे करें। क्योंकि जब जज जजमेन्ट देता था कि क़ानून के अनुसार तुमको अपने माँ-बाप के पास जाना ही है तो कोई बहन रोती-रोती जाती थी, कोई उसको गाली देती-देती जाती थी, कोई घर वालों से लड़ती-लड़ती जाती थी। उनको आश्चर्य होता था कि यह क्या है, बच्चे अपने माँ-बाप के पास जाने के लिए तैयार क्यों नहीं हैं, क्यों इनको अपने ही घर जाने में

s_book final.1.pmd 37 02-01-2005, 4:58 PM

इतना दु:ख और परेशानी होती है ? सिन्ध में लोहे का एक बड़ा व्यापारी था। उसके प्रति लोगों का और सरकार का बड़ा सम्मान था। कराची में, क्लिफ्टन में जहाँ बाबा रहते थे, वहाँ ही उस व्यापारी का एक बड़ा बंगला था। सरकार ने उस व्यापारी से विनती की कि आप ॐ-मंडली की गतिविधियों को जाँच कर इस समस्या का समाधान निकालो और अपना फैसला सुनाओ।

उस व्यापारी ने मुझे और अन्य बहनों को, जिनके घर वाले विरोध करते थे, परिवार सहित अपने बंगले में बुलाया। तीन दिन तक हम सब वहाँ रहे। उन्होंने मेरे से पूछा कि आपको ॐ-मंडली में क्या मिलता है ? दादा ने आपको कौन-सा ज्ञान सुनाया है जो तुमको अपने ही घर-परिवार को भुलाता है ? आपके जीवन में क्या परिवर्तन आया है ? फिर एक-एक करके सब बहनों से भी पूछता गया। हम सबका अनुभव सुनकर वह बहुत प्रभावित हुआ। उस पर ज्ञान की बहुत गहरी छाप पड़ी। हमारे सब लौकिक वालों ने तीन दिन तक उसके घर का ही खाना खाया। हमारे लिए खाना बाबा के यहाँ से आता था। तीसरे दिन फैसला होना था। उस बंगले पर चारों तरफ़ से अख़बार वाले पहुँच गये। उस व्यापारी ने अपना फैसला इस प्रकार सुनाया कि ''ये भारत की देवियाँ हैं। आज भारत के लिए ऐसी देवियों की सख्त ज़रूरत है। इनके माता-पिता अज्ञानी हैं जो इनको रोकते हैं। ऐसी देवियों को किसी को भी रोकना नहीं चाहिए।'' उस फैसले में यह भी लिखा था कि ''इनको 15 दिन के लिए घर भेजा जायेगा, 15 दिन के बाद इनके माता-पिता अथवा घर वालों को इनको ॐ-मंडली में भेजना चाहिए। अगर नहीं भेजेंगे तो हम ख़ुद इनको लेने आयेंगे।'' यह सुनकर चारों तरफ़ से तालियाँ बजने लगीं। हम सबके घर वाले और एण्टी-ॐ-मंडली वाले हैरान हो गये। उन्होंने सोचा कि दादा ने इनको भी जादू लगा दिया। हमारे घर वाले तो रोने लगे। फिर हम सब कन्यायें लौकिक घर गयीं। एक दिन मैंने अपने घर वालों को समझाया कि आज से मुझे सत्संग में जाने की छुट्टी देंगे तो मैं आपके पास आती-जाती रहूँगी। अगर छुट्टी नहीं देंगे तो मैं जाऊँगी ज़रूर लेकिन कभी वापस नहीं आऊँगी। फिर उन्होंने इस बात को मान लिया, तो उनसे चिट्ठी लेकर मैं सदा के लिए लौकिक से मुक्त होकर बाबा के पास आ गयी।

जैसे ही मैं घर पहुँची तो घर वालों ने मूक जानवरों की तरह जंजीरों से बाँध दिया। सिर्फ जब स्नान आदि करना होता था तब ही खोलते थे। बाद में फिर चारपाई से बाँध देते थे। तो भी मुझे उसकी कोई परवाह नहीं थी।

s_book final.1.pmd 38 02-01-2005, 4:42 PM

क्षमा के सागर बाबा

शुरू से ही बाबा हम बच्चों को कहते थे कि बच्चे, चेरिटी बिगिन्स एट होम (पहले अपने घर वालों की सेवा करो)। बाबा ने कभी यह नहीं कहा कि घर वालों के साथ, रिश्तेदारों के साथ लड़ाई करो। मैंने तो कभी लड़ाई की ही नहीं। क्रोध तो उन्होंने मेरे ऊपर किया, झगड़ा तो मेरे से उन्होंने किया, तंग तो उन्होंने मुझे किया लेकिन मैंने उसके बदले उन्हें कुछ नहीं कहा और न बदला लिया। शान्ति से, हँसते-हँसते बाबा की याद में सब सहन किया। कुछ समय के बाद बाबा ने मुझे कहा, ''बच्ची जाओ, घर जाकर अपने माँ-बाप को लेकर आओ।'' उनको ले आने के लिए मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ी। बाबा के पास लाने के लिए उनको मैंने कैसे मनाया – यह भी एक बड़ी कहानी है। एक बार बहुत मेहनत करके उनको तैयार किया, तो अड़ोस-पड़ोस वाले भड़काने लगे कि अरे, उनके पास कभी नहीं जाना, आपको भी जादू लगा देंगे। बेचारे तैयार होकर भी बैठ गये। आख़िर उनको मनाकर एक सप्ताह के लिए बाबा के पास ले आयी। जब उन्होंने बाबा को देखा, हमारी दिनचर्या देखी, हमारा रहन-सहन देखा तो मेरी माँ ने सभा में ही खड़े होकर बाबा से माफ़ी माँगी कि बाबा, मुझे माफ़ करो, मैंने इसको बहुत कष्ट दिये, मुझे माफ़ करो। बाबा तो क्षमा के सागर हैं, बाबा ने कहा, ''बच्ची, इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं। तुमने अपना पार्ट बजाया, उसने अपना पार्ट बजाया।'' उसके बाद भारत का विभाजन हुआ तो हम आबू आये। आबू आने के बाद बाबा ने मुझे सेवा के लिए यज्ञ से बाहर भेजा। सेवा की तो बहुत लम्बी कहानी है। ❄

मेरी माँ ने बाबा से माफ़ी माँगी कि बाबा, मैंने इसको बहुत कष्ट दिये, मुझे माफ़ करो। बाबा तो क्षमा के सागर हैं, बाबा ने कहा, ''बच्ची, इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं। तुमने अपना पार्ट बजाया, उसने अपना पार्ट।''

शिव भगवानुवाच :

मीठे बच्चे, तुम सभी का कनेक्शन एक परमात्मा के साथ है। परमात्मा आकर इस रथ द्वारा तुम्हें ज्ञान सुनाते हैं। आत्मा को आत्मा से वर्सा नहीं मिलता, वर्सा हमेशा बाप से मिलता है। वह कहते हैं मामेकम् याद करो। मुझ एक के साथ प्रीत रखो। देही-अभिमानी बनो।

s_book final.1.pmd 39 02-01-2005, 4:58 PM

बाबा को समस्त विश्व को सन्देश पहुँचाने का बहुत उमंग था

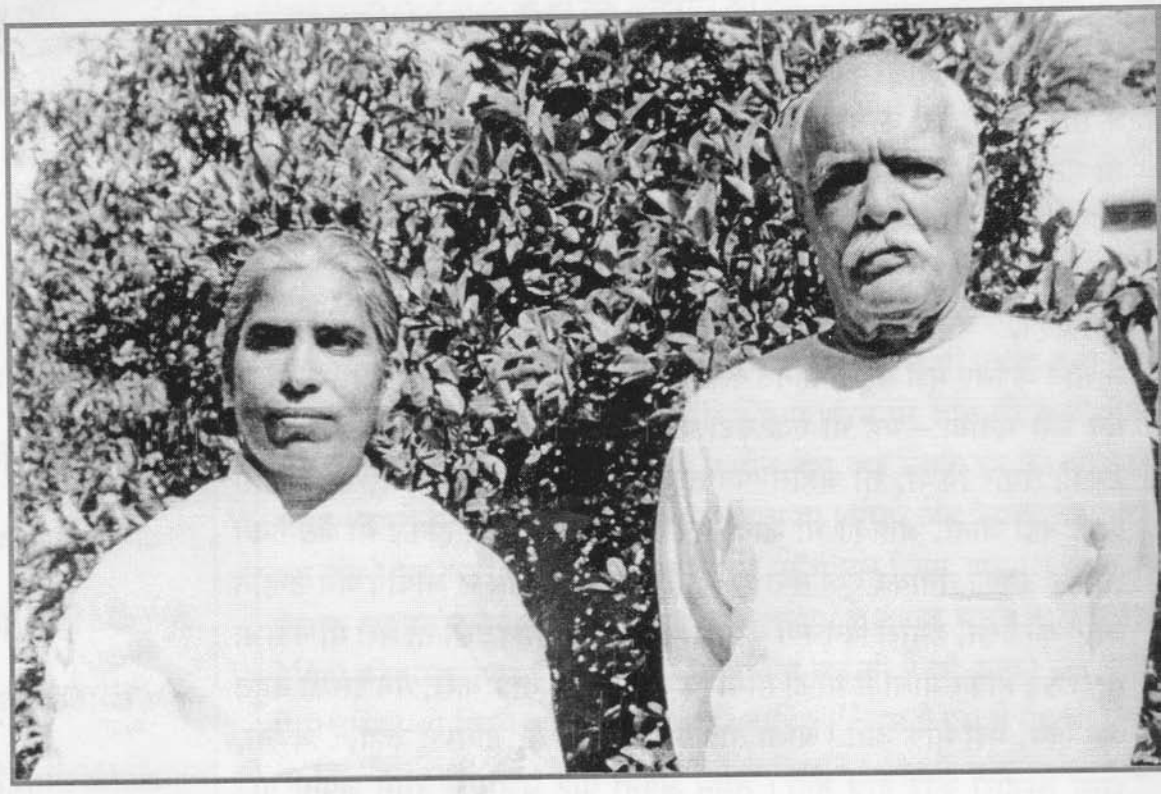

आबू - बाबा के साथ मनोहर दादी।

ब्रह्माकुमारी दादी मनोहर जी अपने अनुभव ऐसे सुनाती हैं कि सन् 1950 में हम सभी यज्ञवत्स कराची से आबू आये। जब हम यहाँ आये तो हमारे मित्र-सम्बन्धियों ने हमें निमंत्रण दिया कि हमारे पास आओ। लेकिन हम बाबा को छोड़कर कहीं जाना नहीं चाहते थे। धीरे-धीरे यज्ञ में बेगरी लाइफ आ गयी। चौदह साल तो हम बच्चों के लिए बाबा ने अपना सब कुछ ख़र्च किया। बाबा को तो नाज था कि यह शिव बाबा का यज्ञ है, आपे ही शिव बाबा पालना करेगा। दूसरी ओर सिन्धियों ने आपस में यह शर्त रखी थी कि इन्हों को कुछ नहीं देंगे तो सभी भूखे रहेंगे और एक दिन ये सब हमारे पास ही वापस आ जायेंगे। लेकिन उन्हों

को मालूम नहीं था कि यह यज्ञ स्वयं भगवान शिव ने रचा है। इसलिए बाबा कहते थे, बच्चे, थोड़े दिन ठहरो, शिव बाबा परीक्षा ले रहा है बच्चों की। शिव बाबा का यज्ञ है ना तो बच्चों को थोड़े दिन सब सहन तो करना पड़ेगा ना बाबा-मम्मा सहित। लेकिन उस समय शिव बाबा के अनेक चमत्कार देखने को मिले। बाबा सर्विस के लिए मुरली चलाते थे, हमारे में उमंग भरते थे और प्रेरणा देते थे कि तुम ज्ञान-गंगा हो, तुम्हें जाकर सर्विस करनी चाहिए। गंगा तो बहती रहती है। एक बार ऐसी मुरली चलायी जो हमारे में भी उमंग आया और हमने सोचा कि बाबा ने कहा है तो हम ज़रूर सर्विस पर जायेंगे। हमने ग्रुप बनाया और बाबा से छुट्टी लेकर दिल्ली के लिए रवाना हो गयी। मैंने ट्रेन में ही ज्ञान देना शुरू किया। ट्रेन में ही मेरे को निमंत्रण मिलने शुरू हो गये। मेरा निश्चय और ही दृढ़ हो गया और सोचा कि दिल्ली पहुँचेंगे तो शिव बाबा और चमत्कार दिखायेगा। ट्रेन में ही एक माता ने कहा, हमारे पास आओ और दो मास रहो। दूसरी ने कहा कि जयपुर में हमारे पास रहो, हमारा मकान खाली है। ऐसे रास्ते चलते कई निमंत्रण मिले। लेकिन हमें दिल्ली में हमारे रिश्तेदारों ने बुलाया था तो हम दिल्ली पहुँचे।

उस समय शिव बाबा के अनेक चमत्कार देखने को मिले। बाबा सर्विस के लिए मुरली चलाते थे, हमारे में उमंग भरते थे और प्रेरणा देते थे कि तुम ज्ञान-गंगा हो, तुम्हें जाकर सर्विस करनी चाहिए।

बाबा ने उत्तर में लिखा कि तुम दोनों भेड़-बकरियाँ हो

दिल्ली में मेरे चार भाई थे। मैंने उनसे कहा कि मैं आपकी सेवा करने आयी हूँ। चारों भाइयों के पास एक-एक मास रहकर उनकी अच्छी सेवा की और दूसरों की भी सेवा की। उसके बाद मैं और गंगे बहन दोनों चाँदनी चौक में एक राम मन्दिर में जाकर ठहरे। उन्होंने हमें एक कमरा दे दिया। हम अपने हाथ से खाना बनाके खाते थे। मन्दिर के ट्रस्टी ने हमें मन्दिर में बनने वाला खाना ही लेने के लिए कहा। हमने कहा कि हम किसी के हाथ का नहीं खाते हैं। इस प्रकार हम मन्दिर का भी खाना नहीं खाते थे। वहाँ एक ट्रस्टी बहुत प्रभावित हुआ। भावना में आ गया और कहा कि हम अनाज, दाल, चावल आदि देंगे। उसने सारी अनाज सामग्री भेज दी। मन्दिर में काफी मातायें आती थीं। हम उनकी सेवा करती थीं जिसके फलस्वरूप एक मास में काफी मातायें ज्ञान सुनने आने लगीं। योग में तो इतनी चढ़ जाती थीं कि सभी ध्यान में चली जाती थीं। फिर धीरे-धीरे यह बात इस ट्रस्टी के

s_book final.1.pmd 41 02-01-2005, 4:58 PM

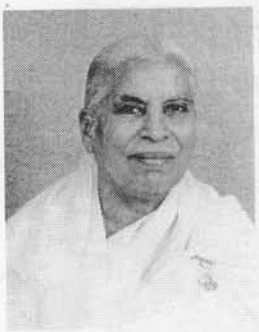

दादी मनोहर जी

मन्दिर के ट्रस्टी ने भावना में आ कर सारी अनाज सामग्री भेज दी। मन्दिर में हम माताओं की सेवा करती थीं जिसके फलस्वरूप एक मास में काफी मातायें ज्ञान सुनने आने लगीं।

ऊपर जो दूसरा ट्रस्टी था उसको मालूम पड़ी। उसने हमें बुलाया और पूछा कि तुम क्या सिखाती हो जो सभी मातायें कहती हैं कि हमने कृष्ण को देखा, स्वर्ग को देखा, विष्णु को देखा। हमें तुम बताओ कि तुम क्या करती हो ? वह ट्रस्टी बड़ा पढ़ा-लिखा और एक्टिव था। मैंने उसको बहुत समझाया कि हम तो कुछ नहीं करती हैं सिर्फ ज्ञान और योग सिखाती हैं। लेकिन वह विश्वास करने के लिए तैयार नहीं था। मैंने झाड़ (कल्पवृक्ष) का चित्र निकाला और दिखाकर उसको समझाने लगी लेकिन उसकी नज़र चित्र के नीचे पड़ी। उसमें छोटे-छोटे अक्षरों में लिखा था कि रामायण इज ए नॉवेल (रामायण एक उपन्यास है)। उसने वह पढ़ा और उसके मन में आग लग गयी। वह गुस्से से बोला, तुम राम मन्दिर में रहती हो, तुमको अनाज भी राम मन्दिर से मिलता है और रहने के लिए कमरा भी राम मन्दिर में मिला है। तुम्हारे चित्र में लिखा है – रामायण इज ए नॉवेल। उसका गुस्सा बढ़ता गया। उसने बोला कि या तो यह लिखत निकालो या यह चित्र निकालो या फिर तुम यहाँ से चली जाओ। मैंने सोचा कि बड़ी मुश्किल से सेवा करने के लिए जगह मिली है और अचानक यहाँ से कहाँ जायें। वह गुस्से से लाल-लाल हो रहा था। तो हमने वह लिखत निकाल दी। फिर सारा समाचार बाबा को लिखा। बाबा ने उत्तर में लिखा कि तुम दोनों भेड़-बकरियाँ हो क्योंकि तुमने अपने हाथों से भगवान के महावाक्य की चिटकी उतारी है। हमने बाबा को कई कारण बताये लेकिन बाबा ने कारण नहीं सुना और उपरोक्त टाइटल दे दिया। हम जब भी आते थे तो बाबा बड़े प्यार से मुस्कराकर कहते थे, मम्मा देखो, ये दोनों भेड़-बकरी आ गयीं। हम भी प्यार से स्वीकार कर लेते थे। अन्दर से बाबा का रूहानी प्यार बहुत मिलता था। फिर तो मन्दिर का भी समय पूरा हो गया।

तुम देवियाँ हो, तुम्हारे दर्शन के लिए भक्त आते रहेंगे

उसके बाद एक दिन एक भाई आया और हमें जमुना घाट पर ले गया। जमुना घाट पर पूजा का स्थान बना हुआ था। एक बड़ा हॉल जिसमें कोई दरवाज़ा नहीं था, सिर्फ बीच में दो दीवारें थीं उसमें सभी लोग पूजा करने आते थे। उसने कहा, यहाँ रहो। शाम का समय था। मैंने कहा, यहाँ जमुना घाट पर बिना दरवाज़े वाले

s_book final.1.pmd 42 02-01-2005, 4:42 PM

मकान में कैसे रहेंगे ? उसने कहा, तुम तो देवियाँ हो, तुम देवियों के दर्शन करने भक्त आते रहेंगे। तुम्हारे को कोई कुछ नहीं करेगा। वह पक्का निश्चय-बुद्धि हो गया था। हम बाबा की याद में बैठ गयीं और सोचा कि बाबा हमारा रक्षक है, जो होगा देखा जायेगा। रात हो गयी। एक बहन सोती थी तो एक बहन जागती थी। लेकिन एक पहलवान भाई था, वह रात भर हमारा पहरा करता था। उसको आवाज़ सुनायी पड़ी थी कि तुम्हारे घाट पर देवियाँ आयी हैं, तुम्हारा काम है उनकी सम्भाल करना। उसको यह भी प्रेरणा मिली थी कि अगर ये सच में देवियाँ होंगी तो कुश्ती में तुम्हारी जीत होगी। रोज़-रोज़ वह रात्रि को पहरा लगाता था। पन्द्रह दिन के बाद कुश्ती में उसकी जीत हो गयी। तो उसकी भावना बैठ गयी कि ये सच में देवियाँ हैं। एक दिन उसके साथ 20 हट्टे-कट्टे पहलवान लंगोट में ही हमारी ओर आ रहे थे। मैंने कहा, गंगे बहन, ये सारे इधर क्यों आ रहे हैं ? वे सारे आकर हमारे सामने दण्डवत् प्रणाम करके लेट गये। फिर भावना से ओतप्रोत होकर हमारे सामने हाथ जोड़कर बैठ गये। वे दूध, चावल, नारियल और 20 रुपये की दक्षिणा हमारे सामने रखकर, स्वीकार करने के लिए विनती करने लगे। उनमें से एक पहलवान ने सारी बातें बता दी कि उन्हें आवाज़ सुनायी पड़ी थी और कुश्ती में उनकी जीत हो गयी इसलिए ख़ुशी से यह सब लाये हैं। मैंने उनको बाबा की याद में प्यार से दृष्टि दी और कहा कि यह सभी तुम ले जाओ और खीर बनाकर खाओ। उन्होंने कहा कि यह तो नहीं हो सकता, हम आप के लिए लाये हैं, बनाकर आपको ही खाना पड़ेगा। वो ही अंगीठी लाये, कोयला लाये। फिर हमने खीर बनायी और बाबा को भोग लगाया। उन्हें ज्ञान भी सुनाया, सबको खीर खिलायी और हमने भी स्वीकार की।

एक पहलवान भाई था, वह रात भर हमारा पहरा करता था। उसको आवाज़ सुनायी पड़ी थी कि तुम्हारे घाट पर देवियाँ आयी हैं, तुम्हारा काम है उनकी सम्भाल करना।

फिर उन्होंने घाट पर आने वाले लोगों को प्रेरणा देना शुरू किया कि आबू से दो देवियाँ आयी हैं, जो गहन तपस्या करती हैं, साथ में भगवान का ज्ञान सुनाती हैं। ऐसे धीरे-धीरे लोगों का आना आरम्भ हुआ। हमने ज्ञान देना शुरू किया। बाबा के ज्ञान से दो सेठ काफी प्रभावित हुए जो हर प्रकार से यज्ञ की सेवा भी करते रहते थे। हमको कोई भी यज्ञ के लिए संकल्प आता था तो हम उनको प्रेरणा देते थे। वे कभी मूँग की दाल की बोरी तो कभी चावल की बोरी भेज देते थे। ऐसे यह यज्ञ की सेवा शुरू हुई।

s_book final.1.pmd 43 02-01-2005, 4:58 PM

पंडित नेहरु जी तक शिकायत गयी

फिर उन्होंने घाट पर आने वाले लोगों को प्रेरणा देना शुरू किया कि आबू से दो देवियाँ आयी हैं, जो गहन तपस्या करती हैं, साथ में भगवान का ज्ञान सुनाती हैं। ऐसे धीरे-धीरे लोगों का आना आरम्भ हुआ। हमने ज्ञान देना शुरू किया।

जमुना घाट पर एक माता आती थी, उसने देखा कि ऐसी देवियाँ और घाट पर रहकर परमात्मा का ज्ञान सुनाती हैं ! क्या इनको रहने के लिए स्थान नहीं है ? उसने हमारे को कहा कि आपको तो शहर में रहकर सेवा करनी चाहिए। वह हमें ताँगे में बिठाकर शहर में अपने घर में ले आयी। (उस माता की लड़की की कोठी अभी भी दिल्ली पाण्डव भवन के बाजू में है।) उस माता ने अपने मकान में एक कमरा हमें रहने के लिए दिया, साथ में हॉल उपयोग करने के लिए भी दिया। हम रोज़ ज्ञान-योग सिखाकर उसकी रूहानी पालना करती थीं, वो अनाज आदि देकर हमारी स्थूल पालना करती थी। धीरे-धीरे उस घर के आसपास रहने वाली मातायें आने लगीं। आश्चर्य की बात यह थी कि आने वाली माताओं को जब ॐ शान्ति कहकर हम योग कराती थीं तो बहुत-सी मातायें ध्यान में चली जाती थीं। यह रोज़ होता था। यह बात उनके पतियों को पता पड़ गयी क्योंकि वे मातायें घर जाने के बाद सारा दिन अपने ही नशे में रहती थीं और कृष्ण-कृष्ण कहती रहती थीं। वे कहने लगे कि ये कौन हैं जिन्होंने हमारी पत्नियों को पागल बना दिया ? उन लोगों ने मिलकर उस समय के भारत के प्रधान मंत्री पंडित नेहरु जी को शिकायत की। उन्होंने अपनी पुत्री इंदिरा को यह कार्य सौंपा कि जाकर इसकी पूछताछ करो। इंदिरा ने हमारे पास चार माताओं को चेकिंग के लिए भेजा। जब हमारा सत्संग शुरू होता था तो वे मातायें हमारे संगठन के बीच में बैठ जाती थीं। कभी चुपचाप अलग बैठ जाती थीं और सब देखती रहती थीं। उन्होंने देखा और सच्चाई का पता लगा कि ये बहनें तो कुछ नहीं करती हैं, ये तो योग में बैठ दृष्टि खुली रखती हैं। परन्तु मातायें ध्यान में चली जाती हैं। यह न जादू है, न सम्मोहन (हिप्नोटिज्म)। किसी को बुलाकर दृष्टि में दृष्टि मिलायें – ऐसा भी नहीं है। तुरन्त उन्होंने हमारी रिपोर्ट अच्छी पहुँचायीं। लेकिन उनमें से एक माता ने ग़लत रिपोर्ट पहुँचायी कि ये जादूगरनियाँ हैं, ऐसे-ऐसे करती हैं। आँखें खोलकर योग करती हैं, यह कौन-सा योग है ? योग तो आँखें बन्द करके होता है। यहाँ से ही हंगामा शुरू हुआ क्योंकि बात नयी थी। लेकिन मातायें रोज़ आती रहीं और ध्यान में रोज़ जाती रहीं। उनके पतियों को भी पता लगता था कि ये तो रोज़ जाती हैं। बात भी सच्ची थी, कोई

s_book final.1.pmd 44 02-01-2005, 4:42 PM

झूठ बात तो थी नहीं। ऐसे करते-करते उस समय के राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी के पास भी रिपोर्ट गयी। जब हम उनसे मिलने गये तो उन्होंने प्रश्न पूछा कि आप कहाँ से आयी हैं ? क्या सिखाती हैं ? कैसा आपका योग है ? हमने उनके प्रश्नों का उत्तर दिया तो उन्होंने कहा कि आपका सब अच्छा है। आप अच्छा काम करती हैं लेकिन आपकी रिपोर्ट हमारे पास आयी है। हमने कहा कि हम तो कुछ करतीं नहीं, यह सब भगवान का कार्य है।

बच्चों को खिलाये बग़ैर बाबा कभी नहीं खाते थे

उसके बाद हमारे मन में विचार आया कि सेवाओं की वृद्धि करें। मैंने योग में बैठकर संकल्प किया कि कोई एक ऐसा बाबा का बच्चा निकले जो हमारे को कम से कम अलग कमरा दे देवे। थोड़े दिनों में ही एक भाई निकला जिसने कमरा दिया, उसमें हम सत्संग करते थे। फिर संकल्प आया कि बाबा एक ऐसा बच्चा भेजे जो साहित्य छपवाकर देवे। कुछ दिनों के बाद ऐसा बाबा का बच्चा आया जो हमें साहित्य छापकर देता था। ऐसे हम जो संकल्प करते थे वह ज़रूर साकार होता था। फिर संकल्प आया कि और एक बड़ा मकान चाहिए तो एक बड़ा हॉल मिल गया। उस मकान में मैं, दीदी मनमोहिनी जी और एक बहन रहती थीं। दीदी सेन्टर पर रहती थीं और मैं अलग सेवा पर और दूसरी बहन अलग सेवा करने जाती थी। वह किसी मन्दिर में जाती तो मैं किसी गुरुद्वारे में जाकर आने वाले लोगों की ज्ञान-सेवा करती थी। जिनको ज्ञान अच्छा लगता था उन्हों को सेन्टर पर आने का निमंत्रण देते थे कि आज आप आना, आपको अपनी बड़ी दीदी से मिलायेंगे जो तपस्विनी, योगिनी हैं। ऐसे धीरे-धीरे सेवा की वृद्धि होने लगी। अच्छे-अच्छे लोग आने लगे। एक दिन मैं दीदी के पास बैठी थी और सेवा की बातें कर रही थी उस समय एक भाई एक टोकरा फल लेकर आया और रखकर चला गया। लेकिन जब हमने फल देखे तो हम खा नहीं सके क्योंकि हमें बाबा याद आया। बाबा को छोड़कर हम फल कैसे खायें ? बाबा ने बच्चों को खिलाये बिगर कभी कुछ नहीं खाया और बेगरी पार्ट में भी हम बच्चों को जो भी था बड़े प्यार से, पहले खिलाया। जिस भाई ने फल दिये थे वह दूसरे दिन आया और फल देखे तो बोला, आपने खाये

जमुना घाट पर एक माता आती थी, उसने देखा कि ऐसी देवियाँ और घाट पर रहकर परमात्मा का ज्ञान सुनाती हैं ! क्या इनको रहने के लिए स्थान नहीं है ? वह हमें ताँगे में बिठाकर शहर में अपने घर में ले आयी।

s_book final.1.pmd 45 02-01-2005, 4:58 PM

नहीं ? ये आपके लिए लाया था। आप बहनें इतनी मेहनत करती हैं। हमने कहा, सतगुरुवार को भगवान को भोग लगाकर खायेंगे, हम ऐसे नहीं खाते हैं। पहले शिव बाबा को अर्पण करते हैं। जब शिव बाबा हमारे को देता है तब हम खाते हैं। उसे हमने यज्ञ की बात सुनायी कि आबू में हमारे मम्मा-बाबा हैं, वहाँ विश्व शान्ति के लिए महायज्ञ रचा है, वहाँ अनेक भाई-बहनें तपस्या कर रहे हैं। इसलिए हम उनको छोड़कर ये फल नहीं खा सकते। हमें सारा यज्ञ याद आ गया। उसने पूछा कि यज्ञ क्या होता है ? हमने उसको विस्तार से बताया। तुरन्त उसने कहा कि मैं और फल भेजता हूँ तथा उसने भेज भी दिये। वह कई बार फल के टोकरे भेजता रहा क्योंकि उसको पता था कि यज्ञ में 400 भाई-बहनें हैं। यह बाबा का कमाल ही था।

एक भाई एक टोकरा फल लेकर आया और रखकर चला गया। लेकिन जब हमने फल देखे तो हम खा नहीं सके। क्योंकि हमें बाबा याद आया कि बाबा को छोड़कर हम फल कैसे खायें।

अरे भाई, मैं सेवा करने जा रही हूँ, टिकट कहाँ से लाऊँ ?

इसी तरह एक व्यापारी आने लगा जिसका देशी घी का व्यापार था। उसने हमें एक देशी घी का डिब्बा लाकर दिया। वह डिब्बा मधुबन पहुँचाने के लिए मैं बिना टिकट ट्रेन में चढ़ गयी। रास्ते में टी.टी. मिला, उसने कहा – बहन जी कहाँ जा रही हो ? मैंने कहा, आपको पता है, आबू में विश्व शान्ति का महायज्ञ रचा गया है, वहाँ अनेक भाई-बहनें तपस्या कर रहे हैं। टी.टी. ने कहा, हमें पता नहीं। मैंने कहा कि अरे भाई, आप राजस्थान में रहते हो और रोज़ ट्रेन में आते-जाते हो, यह भी मालूम नहीं ? यह बड़ी आश्चर्य की बात है। उसने पूछा – उस महायज्ञ में क्या होता है ? मैंने कहा, उस महायज्ञ में विकारों को स्वाहा करते हैं। इससे परमात्मा से अनेक शक्तियाँ मिलती हैं। जो मातायें, बहनें और भाई तपस्या कर रहे हैं उनके लिए यह घी का डिब्बा मिला है, इसको पहुँचाने मैं जा रही हूँ। टी.टी. ने कहा, अच्छा बहन जी, वह तो ठीक है, डिब्बा भले पहुँचाओ परन्तु आपकी टिकट कहाँ है ? मैंने कहा, डिब्बा फ्री मिला है, मैं इसे पहुँचाने जा रही हूँ, मैं तो सेवा करने जा रही हूँ, मेरे पास टिकट कहाँ से आयेगी ? टी.टी. मुस्कराने लगा और कहा, बहन जी, मैं आपके भाव को समझ रहा हूँ, आपकी भावना बहुत अच्छी है, चलो मैं छोड़ता हूँ परन्तु और भी टी.टी. होते हैं, उनमें से कोई आकर

s_book final.1.pmd 46 02-01-2005, 4:42 PM

आपको जुर्माना कर सकता है। इसलिए दूसरी बार आओ तो टिकट ज़रूर लेना। मैंने कहा कि दूसरी बार भी आप जैसा ही भाई मिलेगा और सच्ची बात जो है उसको भी बताऊँगी। उसे मैंने ज्ञान भी सुनाया, वह बहुत ख़ुश हुआ। ऐसे हम सेवा करते रहते थे। सारा समाचार बाबा को बताया तो बाबा ने कहा, बच्ची, ऐसा नहीं करना चाहिए। उनका जो क़ानून है उसी अनुसार चलना चाहिए। बेगरी लाइफ के समय हमें जो कुछ भी मिलता था उसे फटाफट मधुबन भेज देते थे। एक पाई भी अपने पास नहीं रखते थे। क्योंकि इतना बड़ा यज्ञ और हम सेवा पर निकली थीं। हम जिगर से सबकी ज्ञान-सेवा करती थीं। कई बार हम अपने लिए कुछ नहीं रखते थे, हम भूखे रहते थे लेकिन यज्ञ में भेज देते थे। हम कई बार पानी में आलू को छोंक लगाकर सूखी रोटी के साथ खाती थीं। हमें यह बात कभी महसूस नहीं हुई कि हम सूखी रोटी खा रहे हैं। हमको ईश्वरीय नशा था कि हमें भगवान मिला है, हम उसकी सेवा कर रहे हैं।

इस प्रकार सेवा करते कई प्रकार के विघ्न आये। कई बार तो मकान वाले मकान भी ख़ाली करा देते थे। दूसरा मकान लेने जाते थे तो उस मकान मालिक को भी भड़का देते थे कि इन ब्रह्माकुमारियों को मकान नहीं देना। कोई मकान मालिक कहता था, अच्छा, शाम को मकान की चाबी ले जाना। जब हम चाबी लेने जाते थे तो कहते थे, आपका नाम यहाँ बहुत ख़राब है, यहाँ के लोग कहते हैं कि ये जादूगरनियाँ हैं। ऐसे रोज़ कोई-न-कोई विघ्न ज़रूर आता था। लेकिन हम प्यार से आत्माओं की सेवा करते रहते थे। जिनकी भी ज्ञान-सेवा करते थे उन्हें 12 मास पक्की धारणा करा कर, निश्चय-बुद्धि बनाकर बाबा के पास ले जाते थे। जब बाबा से एक बार भी मिल लेते थे तो वे और पक्के हो जाते थे क्योंकि बाबा का रूहानी प्यार, बाबा की रूहानी दृष्टि मिलते ही सारी पार्टी ख़ुश हो जाती थी। यह बाबा का ही कमाल था जो सारी पार्टी को फ्रेश कर देते थे। यहाँ से जाने के बाद उनके ही मन में आता था कि इन बहनों के लिए मकान लेना है, इनका सारा ख़र्चा हमें करना है– ऐसे वे ज़िम्मेवारी से सब कुछ करते थे। उन्होंने ही मकान लिया और सेवा भी तीव्र हुई।

बाबा ने बच्चों को खिलाये बिगर कभी कुछ नहीं खाया और बेगरी पार्ट में भी हम बच्चों को बड़े प्यार से, जो भी था, वह पहले खिलाया।

s_book final.1.pmd 47 02-01-2005, 4:58 PM

शिव बाबा के प्रति बाबा का सदा अटल और अखण्ड निश्चय रहा

बेगरी पार्ट भी कुछ समय चला। उस समय शिव बाबा के अनेक चमत्कार देखने को मिले। उस वक्त यज्ञ में कुछ नहीं रहता था, न दाल, न चावल। आफिस में बाबा के पास भोली दादी आती थी और कहती थी, बाबा, आज क्या बनेगा ? बाबा कहते थे, बच्चे, जो है बनाओ। भोली दादी कहती थी, बाबा, आज कुछ भी नहीं है। बाबा कहते थे, अच्छा बच्ची तुम 12 बजे मेरे पास आना। भोली का सोच चलता था कि 12 बजे बाबा ने क्यों बुलाया ? लेकिन 12 बजे पोस्ट आती थी। पोस्ट में कहीं न कहीं से कुछ न कुछ पैसा आ जाता था। बाबा बच्चों को फौरन बुलाते थे और कहते थे कि बच्चे, दाल, चावल, आटा आदि बाज़ार से लेकर आओ और सभी बच्चों को भोजन बनाकर खिलाओ। आख़िर मैंने एक दिन बाबा से पूछा कि यह पैसा कहाँ से आता है ? बाबा बड़े निश्चय और निश्चिन्तता से कहते थे कि ''बच्ची, बाबा के बच्चे तो चारों ओर हैं। कोई बच्चे पोस्ट में पैसा भेज देते हैं। कभी कहाँ से, कभी कहाँ से पैसा आ जाता है। कभी किसी भक्त से आता है, उसको शिव बाबा की टचिंग होती है और पैसा भेज देता है।'' बाबा यह भी कहते थे कि ''बच्ची, यह यज्ञ शिव बाबा ने रचा है। मैं तो शिव बाबा से बात करता रहता हूँ कि बाबा, मेरा तो कुछ नहीं, ये बच्चे सब आपके हैं, यज्ञ भी आपने ही रचा है। अगर नहीं खिलायेंगे तो आपको भी भोग नहीं लगायेंगे और यह बाबा भी खायेगा नहीं।'' ऐसे मीठी-मीठी बातें बाबा शिव बाबा से करते थे। यह सब शिव बाबा का ही चमत्कार था जो कहीं-न-कहीं से पैसा आ जाता था। हमने देखा, बेगरी लाइफ में भी कभी यज्ञ में हम भूखे नहीं रहे। कहने के लिए बेगरी जीवन था लेकिन एक दिन भी हम भूखे नहीं सोये। भोला भण्डारी अपने बच्चों को कुछ न कुछ खिलाकर पेट भर देते थे। हमें बेगरी जीवन महसूस ही नहीं हुआ, मम्मा-बाबा के साथ हम तो ईश्वरीय नशे में मस्त थे।

बाबा बड़े निश्चय और निश्चिन्तता से कहते थे कि बच्ची, बाबा के बच्चे तो चारों ओर हैं। कोई बच्चे पोस्ट में पैसा भेज देते हैं। कभी कहाँ से, कभी कहाँ से पैसा आ जाता है। कभी किसी भक्त से आता है।

❄

s_book final.1.pmd 48 02-01-2005, 4:42 PM

बाबा ने मुझे 'ध्रुव-तपस्विनी' की उपाधि दी

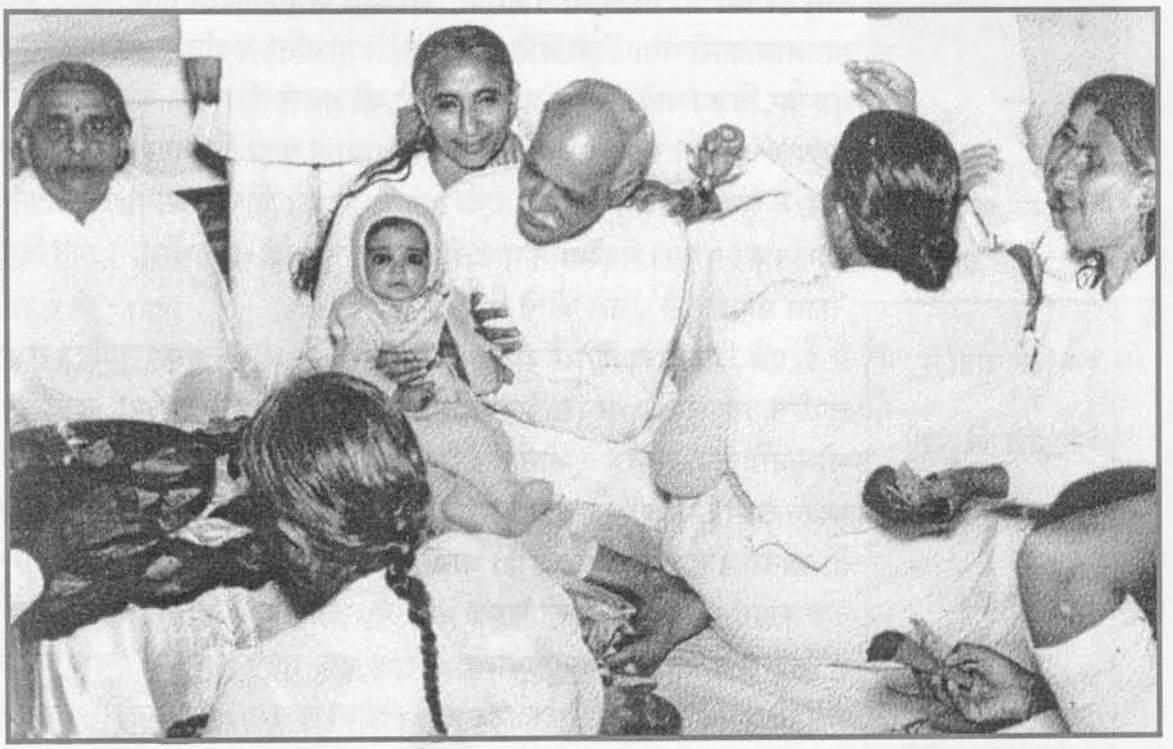

नन्हे-से बच्चे के साथ बाबा। बाबा के साथ हैं रोचा माता (मम्मा की माँ), सती दादी, ध्यानी दादी आदि।

लखनऊ से ब्रह्माकुमारी सती दादी जी अपने अनुभव सुनाती हैं कि मेरे लौकिक पिताजी जापान में बिजनेस करते थे। मैं जब दो वर्ष की थी तो जापान में भूकंप आया था। उसमें 30 सिन्धी दबकर मर गये। उसी में मेरे पिताजी ने भी शरीर छोड़ दिया। मेरी माताजी भारत में आ गयी और हैदराबाद (सिन्ध) में रहने लगी। बाबा का लौकिक परिवार मेरे घर के पास ही रहता था। बाबा लौकिक जीवन में बिजनेस करते हुए गीता का पाठ करता था। बाबा का चाचा मूलचन्द और उनकी बहू फुलकी तथा कुछ मातायें सत्संग में आती थीं। सत्संग में आने वाली बहुयें और मातायें पुरुष का मुख नहीं देखती थीं।

यह सन् 1935 की बात है। एक दिन बाबा की भतीजी किकनी के साथ, हम

s_book final.1.pmd 49 02-01-2005, 4:58 PM

सती दादी जी

पाँच बहनें भी बाबा के पास गयीं, उस समय मेरी उम्र 11 वर्ष थी। बाबा ने हम पाँच बहनों को देख कर पूछा कि गीता तो सब के लिए है, फिर पाँच पाण्डवों का नाम ही क्यों ? फिर बाबा ने ही बताया, देखो अर्जुन का ही नाम क्यों ? क्योंकि वह आज्ञाकारी था। ''जो ओटे सो अर्जुन'', युधिष्ठिर अर्थात् अन्दर के दुश्मनों से युद्ध कर विजय पाये। नकुल माना भगवान की अकल की नकल करे, सहदेव माना सहयोग देना, दुःख को सुख में बदलना। बाबा ने कहा कि आप लोग रोज़ आना फिर मैं पूरी गीता सुनाऊँगा। एक दिन बाबा को विचार आया कि अपने घर हैदराबाद (सिन्ध) में ही ओम् मण्डली खोलूँ। फिर धीरे-धीरे बाबा ने ज्ञान दिया – 'काम महाशत्रु है', उसे जीतो।

एक दिन बाबा ने मेरी बुद्धि की रस्सी खींच ली और मैं सुबह सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक सूर्य के सम्मुख बैठ गयी। इस प्रकार आठ मास हो गये, खाना-पीना भी छूटता गया, सुबह से शाम तक तपस्या में लगी रही।

एक दिन बाबा ने मेरी बुद्धि की रस्सी खींच ली और मैं सुबह सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक सूर्य के सम्मुख बैठ गयी। इस प्रकार आठ मास हो गये, खाना-पीना भी छूटता गया, सुबह से शाम तक तपस्या में लगी रही। शरीर दुबला-पतला हो गया। सभी ने बाबा को कहा कि सती बहन सारा दिन सूर्य के सन्मुख बैठी रहती है, खाना-पीना भी नहीं लेती है। बाबा ने बहनों से कहा कि उसको लेकर आओ। तब बहनों ने कहा, वह तो बहुत भारी है, उठती ही नहीं है। बाबा ने कहा, अच्छा, मैं उठाता हूँ। आकर बाबा बोले, हे ध्रुव-तपस्विनी उठो। बाबा के शब्द जैसे ही कानों में पड़े, मैं तुरन्त उठ गयी। बाबा ने कहा, अब सूर्य के सामने नहीं बैठो। उस समय से मेरा नाम सूर्यमोहनी पड़ा।

बाबा जब कराची में चले गये, उस समय एक गोपी ने मुझसे कहा कि मुझे भी बाबा के पास ले चलो। उस पर घर वालों का बहुत बन्धन था तथा पैसे की भी कमी थी। तब मैं उसको गाड़ी से लेकर गयी क्योंकि बहनों को विकारियों से बचना था। कुछ समय पश्चात् सन् 1950 में बाबा के डायरेक्शन अनुसार भारत में आये। दीदी मनमोहिनी के चाचा ने आबू में स्थान देखकर बाबा को बताया। हमने जहाज से आबू के लिए प्रस्थान किया।

अनहोनी भी होनी हुई

बेगरी पार्ट चल रहा था और होली के दिन नज़दीक थे। एक दिन बाबा ने

s_book final.1.pmd 50 02-01-2005, 4:42 PM

मम्मा से कहा, मम्मा होली आ रही है, बच्चों को जलेबी खिलानी है। मम्मा ने बाबा को कहा, जी बाबा लेकिन यज्ञ में न तेल है, न आटा है। बाबा बोले, मम्मा, सेठ (परमात्मा) ऊपर बैठा है, हम तो बीच में हैं। अगर जलेबी खिलानी होगी तो वह खिलायेगा। अगर नहीं खिलानी होगी तो नहीं खिलायेगा। मम्मा-बाबा आपस में ये बातें कर रहे थे। होली का दिन भी आ पहुँचा। तब बाबा ने कहा, मम्मा कल होली है, बच्चों को जलेबी खिलानी है। मम्मा ने कहा, जी बाबा। लेकिन सभी यज्ञ-वत्स सोचने लगे कि अभी तक कोई भी सामान नहीं है फिर कल जलेबी कैसे बनेगी ? सभी ने मम्मा को कहा, यह कैसे होगा ? मम्मा ने कहा, बाबा ने कहा है तो ज़रूर होगा।

दूसरी ओर आबू में ही एक युगल आपस में कुछ दिनों से बात कर रहे थे कि कुछ दान देना है। पति कहता था कि हरिद्वार में दान करके आयें मगर पत्नी कहती थी – नहीं, यहाँ जो देवियाँ रहती हैं उनको दान देना है। पति मानता नहीं था। तो पत्नी ने कहा, अभी मुझे कुछ नहीं करना है, बाद में देखेंगे। उसी रात पति जिसका नाम ख़ुशीराम था, के सपने में विष्णु जी आये और बोले, उठो, जाओ और यज्ञ में दान करके आओ। उसने सोचा कि ऐसे ही सपना आया होगा। लेकिन रात को फिर दो-तीन बार ऐसा ही सपना आया। सुबह पति उठा और पत्नी से कहा, तुम रोज़ कहती थी कि मुझे उन देवियों को ही दान देना है तो चलो तुम्हें जितना दान देना है देकर आओ। पत्नी ने पैसा निकाला और लेकर आश्रम की ओर चल दी। इधर मम्मा होली के दिन बच्चों को बाहर पहाड़ी पर ले जाने के लिए तैयार होकर बाहर आयी। तो जानी-जाननहार बाबा बोले, बच्ची, ठहरो ! अभी तुम्हारा संकल्प पूरा होगा। उधर से वह माता आती हुए दिखायी दी। बाबा बोले, बच्ची, वह माता तुम्हारे पास ही आ रही है। वो माता आयी और मम्मा को देखा तो देखती ही रह गयी, फिर धीरे से बोली, मैं आपको कुछ अर्पण करने आयी हूँ।

माता ने मम्मा के हाथ में लिफाफा दिया और बोली कि आज मेरी आश पूरी हो गयी। माता के जाने के बाद मम्मा ने लिफाफा खोला और देखा कि पैसा इतना था जो एक सप्ताह तक यज्ञ का करोबार चल सकता था। बाबा ने कहा, बच्ची, आज तो जलेबी बनाकर बच्चों को खिलाना है। फिर तो जलेबी बनाकर बच्चों को खिलायी। यह है बाबा का चमत्कार, जो अनहोनी को होनी करा दिया। ❄

"जो ओटे सो अर्जुन", युधिष्ठिर अर्थात् अन्दर के दुश्मनों से युद्ध कर विजय पाये। नकुल माना भगवान की अकल की नकल करे, सहदेव माना सहयोग देना, दुःख को सुख में बदलना।

s_book final.1.pmd 51 02-01-2005, 4:58 PM

नहीं देते थे। उनको मैं साड़ियों में छिपा कर रखती थी। जब घर वाले उनकी खोजबीन करते थे तो एक भी पत्र उन्हें नहीं मिलता था। साड़ी झाड़ने के बाद भी वे नीचे नहीं गिरते थे, मानो कोई ने अपनी जादूगरी से उन्हें साड़ी के अन्दर चिपका कर रखा हो। वे लोग चुप रह जाते। यह प्यारे बाबा का चमत्कार नहीं था तो और क्या था !

एक बार मेरा लौकिक भाई आया और चेतावनी देकर गया कि तुम जहाँ भी होगी, तुम्हें मैं वापिस घर ले जाऊँगा। गुण्डों को लेकर पहुँचूँगा। तुम्हें रहना है तो ससुराल में रहो, या मेरे पास रहो। मैं थोड़ा डर गयी। यह बात मैंने बाबा को कमरे में सुनायी तो बाबा ने प्यार से सिर पर हाथ रखकर कहा, ''बच्ची, तुम बिल्कुल नहीं डरो। तुम बाबा पर बलिहार हो गयी हो, अनुभवी हो, तुम्हें दुनिया की कोई शक्ति मुझसे दूर नहीं ले जा सकती। बलिहार होने वाले बाबा के गले के हार होते हैं। तुम बाबा के गले का हार हो। तुम्हें माया नहीं हरा सकती।'' मुझे बहुत हिम्मत और साहस आ गया। मेरा भाई कुछ नहीं कर सका। वह हार गया, बाबा की जीत हो गयी। कैसा भी बड़ा बन्धन और भयभीत करने वाली बात मेरा कुछ नहीं कर सकी।

बाबा ने कहा, ''बाबा को ऐसी साहसी बच्चियाँ चाहिएँ। शाबास बेटी, तुम ऐसे ही सर्विस करते आगे बढ़ती रहना। तुम मेरे विजयी रत्न हो।'' 'विजयी भव'' और ''सेवा करते रहो।''

दिलाराम बाबा ने मेरे दिल की आश जान ली

सन् 1966 की बात है। उस समय मैं एक सेन्टर पर थी। मैं बहुत बीमार हो गयी। ऐसी परिस्थिति आयी कि कमज़ोरी के कारण चलना भी मुश्किल हो गया। पता नहीं जानीजाननहार बाबा को कैसे पता पड़ा, दूसरे दिन ही साकार बाबा का टेलिग्राम आया कि बच्ची को फ़ौरन मधुबन भेजो। उस बीमार अवस्था में मेरे श्वास-श्वास में बाबा और मधुबन की ही याद थी। जब मधुबन पहुँची तो बड़ा विचित्र और रोमाञ्चकारी दृश्य था। पहुँचते ही बाबा मेरा हाथ पकड़कर बगीचे में ले गये और एकदम पास में बिठाकर सारा समाचार पूछा। दिलाराम बाबा ने मेरे दिल की आश जान ली और साकार में सुन भी ली। उस समय मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मैं अपने प्यारे दिलवर के सामने सब दिल की बातें सुना रही हूँ। बाबा ने इतना प्यार किया जिसे कि मैं वर्णन नहीं कर सकती। मैं अपने सारे दु:ख-दर्दों को भूल गयी और बाबा की प्रीत में खो गयी।

s_book final.2.pmd 138 03-01-2005, 10:03 AM

आठ-दस दिन के बाद एक माता ने मुझे कहा, तुम एक बार और चलकर देखो। फिर मैं ॐ-मंडली में गयी तो वहाँ कहा गया कि तुम दादा से नहीं मिल सकती हो क्योंकि तुमने कोर्स नहीं किया। पहले कोर्स करो बाद में दादा से मिल सकती हो। फिर मैंने कहा, ठीक है, दादा से नहीं मिलायेंगे तो मैं घर चली जाऊँगी। उनसे तो मैंने कहा कि घर चली जाऊँगी लेकिन मैंने बाबा का कमरा देखा हुआ था तो मैं सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर गयी, बाबा तपस्या में बैठे हुए थे। मैं भी जाकर बाबा के सामने बैठ गयी। बाबा ने मुझे दृष्टि दी। जैसे ही दृष्टि मेरे ऊपर पड़ी तो मैं गुम हो गयी। रात साढ़े दस बज गये। घर वाले सब परेशान हुए कि अभी तक नहीं आयी, कहाँ गयी। ॐ-मंडली वालों ने सोचा कि वह घर चली गयी। जो माता मुझे ॐ-मंडली लेकर आयी थी उसने अपने पति को कहा, कैसे भी उसको ढूँढ़कर आओ। उसका पति ॐ-मंडली में आया। बाबा चाँदनी में झूला झूल रहे थे। बाबा से उसने पूछा, बाबा, दिन में कोई आयी थी ? बाबा ने कहा, एक बच्ची दिन में 2-3 बजे आयी थी, वह चली गयी होगी। उसने कहा, बाबा वह अभी तक घर नहीं पहुँची। तो बाबा ने कहा, ठीक है जाकर कमरे में देखो। कमरे में देखा तो मैं ध्यान में बैठी थी। आँखों से आँसू बह रहे थे। उन्होंने बहुत जगाया लेकिन मैं जागी नहीं। तो फिर बाबा को बुलाया गया। बाबा ने आकर मुझे जगाया। जब मैं जागी तो देखा कि बाबा का हाथ मेरे मस्तक पर था और बाबा कहने लगे, बच्चे, अभी मैं आया हूँ, तुम्हें लेकर ही जाऊँगा, अभी तुम घर जाओ, तुम्हारे घर वाले रो रहे हैं, कल सुबह फिर आना। बाबा ने मुझे एक बड़ा सेब दिया और कहा इसको खाओ। मैंने उसे खाया नहीं, साथ में घर लेकर गयी। जब मैं घर गयी तो वहाँ सारे रिश्तेदार इकट्ठे हुए थे। वे मुझसे पूछने लगे कि तुमको वहाँ क्या मिला ? मैंने कहा, वहाँ जाने से मुझे भगवान मिला। भाई के कारण मैं जो रोज़ रोती रहती थी, वह बन्द कर दिया। क्योंकि मुझे भाई भूल ही गया था। यह देखकर घर वाले बहुत ख़ुश हो गये। सुबह होते ही मैं फिर बाबा के पास जाने लगी तो उन्होंने मुझे रोका नहीं, जाने दिया। मैं बाबा के पास आयी तो बाबा ने फिर मुझे दृष्टि दी, फिर मैं ध्यान में चली गयी और सब कुछ भूल गयी। मुझे यह निश्चय हो गया कि मुझे भगवान मिल गया, और कुछ नहीं चाहिए। ऐसे तीन दिन तक बाबा मुझे दृष्टि देते रहे। मैं रोज़ आया-जाया करती थी। चौथे दिन बाबा ने मुझे बिठाकर त्रिमूर्ति और आत्मा का

बाबा ने आकर मुझे जगाया। जब मैं जागी तो देखा कि बाबा का हाथ मेरे मस्तक पर था और बाबा कहने लगे, बच्चे, अभी मैं आया हूँ, तुम्हें लेकर ही जाऊँगा, अभी तुम घर जाओ, कल सुबह फिर आना।

सीतू दादी जी

बाबा ने मुझे दृष्टि दी। जैसे ही दृष्टि मेरे ऊपर पड़ी तो मैं गुम हो गयी। रात साढ़े दस बज गये। घर वाले सब परेशान हुए कि अभी तक नहीं आयी, कहाँ गयी। ॐ-मंडली वालों ने सोचा कि वह घर चली गयी।

चित्र निकालकर सारा समझाया। इस प्रकार छह मास तक रोज़ जाती रही, घर में किसी ने मुझे कुछ कहा नहीं।

कंस लद्दाराम का आगमन

छह मास के बाद मैं सबके साथ क्लास कर रही थी तब लाखा भवन को विरोधियों ने आग लगा दी। उसके बारे में तो आप जानते ही हैं कि कैसे लाखा भवन आग से बच गया। अगले दिन जब मैं ॐ-मंडली जाने लगी तो घर वालों ने रोका कि जहाँ आग लगती है वहाँ तुम नहीं जाओ। मैं तो रुकती नहीं थी, सत्संग में चली आती थी। उसके बाद बाबा ने ॐ-निवास खोला। मैं ॐ-निवास में क्लास करने जाया करती थी। उसके बाद एण्टी ॐ-मंडली वालों की पिकेटिंग चली, इसमें मेरा भाई भी था। वह मुझे सत्संग में जाने से रोकने लगा। मैं दादीमाँ की लाल चादर ओढ़कर क्लास करने आती थी। दो-तीन दिन ऐसे ही आती रही। इस भाई को मालूम पड़ गया। एक दिन बाहर जाते हुए देखा तो मुझे पकड़कर एक कमरे में बन्द कर दिया। अच्छी तरह बन्धन में रखा। ऐसे कुछ दिन बीते। इसी बीच, पड़ोस की एक कन्या जो ॐ-मंडली में जाती थी, उसको एण्टी ॐ-मंडली वालों ने बहुत मारा। वह सात वर्ष की थी। उसको भी कमरे में बन्द कर रखा था। उस कमरे के बीच एक दीवार थी जिसमें एक खिड़की थी। उस खिड़की द्वारा हम दोनों एक-दूसरे की चिट्ठी का लेना-देना करते थे। मैं उसके साथ खिड़की से बात करती तो उसने वहाँ बातें करने से मना किया और कहा, तुम छत पर आकर बात करो। मैं ऊपर से बात कर रही थी कि उतने में एण्टी ॐ-मंडली में एक आदमी था जिसका नाम लद्दाराम था जो लड़कियों को मारता था, वह आ गया। उसने मेरे से कहा, तुम वहाँ क्या कर रही हो, नीचे आ। मैंने कहा, तू बदमाश यहाँ क्या करने आया है लड़कियों के पास ? शर्म नहीं आती तुझे ? उसने कहा, तुम नीचे आओ, बता दूँगा कि मैं क्यों आया हूँ। इतने में किरायेदार वहाँ आ गया। उसने लद्दाराम को ही कहा कि तुम यहाँ क्यों आये हो। किरायेदार को पता था कि इसने ही लड़की को मारा था। इसलिए उसने मेरे से कहा, तुम ऊपर ही रहो, नीचे मत आओ। ऐसे कहकर वह दरवाज़ा बन्द करके चला गया। लद्दाराम नीचे खड़ा होकर बाबा को

s_book final.1.pmd 54 02-01-2005, 4:42 PM

जितनी भी गाली बकनी थी, बकता रहा। उसे गाली देते हुए सुनकर मुझसे रहा नहीं गया। मैंने दरवाज़ा खुलवाया और फैसला कर लिया कि आज मेरी मौत होगी या इसकी। मुझे पहले ही पता था कि लद्दाराम आने वाला है और वह आयेगा तो क्या करना है, यह भी सोचकर रखा था। इसलिए मैंने एक रूमाल में लाल मिर्च का पाउडर बाँधकर एक गमले में रखा था। जब मैं नीचे उतरी तो उसने मुझे ज़ोर से थप्पड़ मारा जिससे मैं उस गमले पर जाकर गिरी जहाँ मैंने रूमाल रखा था। मैंने रूमाल उठाकर लाल मिर्च का पाउडर उसकी आँखों में डाल दिया। उसको पता नहीं था कि यह मिर्च का पाउडर है। वह चिल्लाने लगा कि दादा ने इसके हाथ से जादू भेजा है, इसने मेरे ऊपर डाल दिया, मैं अन्धा हो गया। ऐसे कहते, चिल्लाते हुए वह बाहर गया। उसके बाहर जाते ही मैंने थोड़ा बहुत गिरा हुआ पाउडर साफ़ कर दिया ताकि किसी को पता नहीं पड़े। उस आदमी ने ही सात बालिकाओं को ताले में बन्द करवाया था। उनमें थीं गंगे, मनोहर आदि। उसने एण्टी ॐ-मंडली वालों से कहा कि मैं कभी उनके पास नहीं जाऊँगा, नहीं तो वे मुझे मार देंगे। फिर उसने ही इन सात बहनों को ताले से छुड़ा दिया। उसके बाद हम सब छुटेली हो गयीं।

जब मैं ॐ-मंडली जाने लगी तो घर वालों ने रोका कि जहाँ आग लगती है वहाँ तुम नहीं जाओ। मैं तो रुकती नहीं थी, सत्संग में चली जाती थी। एक दिन बाहर जाते हुए देखा तो घर वालों ने मुझे पकड़कर एक कमरे में बन्द कर दिया।

युक्ति से मुक्ति पा ली

यह सारी घटना बाबा को पता पड़ गयी तो बाबा ने कहा, बच्ची, भले ही घर में ही रहना पर अपने को बचाना भी, साथ-साथ रोज़ बाबा के पास आना। दोनों तरफ़ निभाना। लेकिन कुछ दिनों के बाद, एक दिन जो आदमी मुझे मारता था वह मेरे पास आया और कहा, देखो आज वो सफ़ेद कपड़े वाले यहाँ से चले गये। अभी दिन के दो बजे हैं, चार बजे के अन्दर तुम फैसला कर लो। इस तरफ़ रहना है तो तुम्हारी शादी करायेंगे, उस तरफ़ जाना है तो जाओ। आज फैसला कर लो। उस समय बाबा ने ॐ-मंडली को कराची में स्थानान्तरित कर दिया था। सब उस दिन कराची चले गये थे। वह मेरे कपड़े, पैसे, गहने आदि सब लेकर अपने नीचे रखकर सो गया और मेरी माँ से कहा, तुम एक पाई भी नहीं देना। मैं बाबा की याद में बैठ गयी। थोड़े समय के बाद उसको नींद लग गयी। मुझे बाबा की एक बात

s_book final.1.pmd 55 02-01-2005, 4:58 PM

याद आयी कि कोई भी घर छोड़कर आते हो तो घर वालों से चिट्ठी लेकर आना। मैं अपने दादा के पास गयी। दादा मुझसे बहुत प्यार करता था और ॐ-मंडली में जाने के लिए सहयोग भी देता था। दादा के पास जाकर मैं बहुत रोयी। मैंने उनसे कहा कि दादा जी, मैं यहाँ रहूँगी तो आप आज नहीं तो कल मेरी शादी कर देंगे। शादी होने के बाद मुझे आपको छोड़कर जाना ही पड़ेगा। मैं आपको छोड़कर जाती हूँ तो आपको बहुत दु:ख होगा और मुझे भी दु:ख होगा। अगर बाबा के पास जाती हूँ तो मैं बहुत ख़ुश रहूँगी। मैं ख़ुश रहूँगी तो आपको भी ख़ुशी होगी। तो दादा जी ने कहा, हाँ बेटी, तुम ठीक कहती हो। मैं क्या करूँ बताओ ? मैंने कहा, दादा जी, बाबा के नाम से मुझे एक पत्र लिखकर दो कि मैं अपनी पौत्री को ज्ञानामृत पीने और पिलाने के लिए ख़ुशी से छुट्टी दे रहा हूँ। मेरे दादा जी बाबा को बहुत मानते थे तो उन्होंने कहा, बेटी, दादा जैसा अच्छा मनुष्य कोई नहीं है। दादा लेखराज के नाम से लिखकर दूँ तो पुलिस वाले दादा को तंग करेंगे, मैं दादा को कष्ट देना नहीं चाहता। ऐसा मत कर जो दादा पर कोई आपत्ति आये। तो मैंने कहा, ॐ-राधे के नाम से लिखकर दो। उन्होंने लिखकर दिया कि ॐ-राधे माता जी, मैं मेरी पौत्री को ज्ञानामृत पीने और पिलाने के लिए ख़ुशी-ख़ुशी से छुट्टी दे रहा हूँ। मैंने चिट्ठी ली और माँ को बताया कि तुम किसी को नहीं बताना कि मैं कहाँ गयी हूँ। मैं अपनी दादी माँ के पास गयी और उससे चप्पल, चुन्नी आदि ली। ईशू दादी के पिता जी को मैंने कहा, मुझे रेलवे स्टेशन छोड़कर आओ। वे स्टेशन पर मुझे गाड़ी में बिठाकर गये। मैं कराची पहुँची लेकिन मुझे पते (address) का मालूम नहीं था कि सफ़ेद कपड़े वाले कहाँ हैं। मैंने स्टेशन पर एक भाई से पूछा तो उसने कहा कि हाँ, कल तो वे लोग आये हैं लेकिन कहाँ हैं यह पता नहीं है। उतने में हरदेवी बहन का पति वहाँ आया। बाबा ने ही उसको कहा था कि स्टेशन पर बच्ची आयी है उसको लेकर आना। वह मुझे बाबा के पास लेकर गया। जाते ही बाबा ने मेरे से पूछा – कहाँ है चिट्ठी ? मैंने तुरन्त बाबा से कहा, बाबा, बाप के पास आने के लिए चिट्ठी लायी जाती है ? बाबा मुस्कराये और कहा, तुम्हारी ये क्या हालत है ? न कपड़े ठीक हैं, न चुन्नी, न चप्पल। जाओ स्नान-पानी कर खाना खाकर आओ। मम्मा मुझे अन्दर ले गयी और कपड़े आदि दिये। मैं तैयार होकर बाबा के पास आयी और चिट्ठी दी। चिट्ठी देखकर बाबा मुस्कराये और कहा,

दादा मुझसे बहुत प्यार करता था। मैंने उनसे कहा कि ॐ-राधे के नाम से पत्र लिखकर दो। उन्होंने लिखकर दिया कि ॐ-राधे माता जी, मैं मेरी पौत्री को ज्ञानामृत पीने और पिलाने के लिए ख़ुशी-ख़ुशी से छुट्टी दे रहा हूँ।

s_book final.1.pmd 56 02-01-2005, 4:42 PM

ठीक है बच्ची, तुम आज़ाद हो गयी, भल यहाँ ही रहो। जो भी होगा देखा जायेगा। उसके बाद मैं तीन साल यज्ञ में रही। बीच-बीच में मेरे दादा जी मेरे पास आते थे। कभी कपड़े, कभी पैसे, कभी कुछ देकर जाते थे और मेरी माँ को मेरे बारे में सारा समाचार सुनाते थे।

तीन साल के बाद, जो लड़कियों को मारता था उस लद्दाराम ने जाकर मेरी दादी को भड़काया कि तू तो सारी दुनिया के लड़की-लड़कों की शादी कराती हो, क्या अपनी पोती की नहीं करा रही हो ? फिर मेरी दादी के द्वारा उसने मेरे ऊपर केस करा दिया कि यह 12 वर्ष की है, जबकि मैं 24 वर्ष की थी। तीन बार कोर्ट जाना पड़ा। तीसरी बार जज साहब ने कहा, आपको घर जाना पड़ेगा। मैंने उनसे कहा, जज साहब, आप बताओ क्या मैं 12 साल की लगती हूँ ? मैं तो 24 साल की हूँ। उसने कहा, मैं क्या कहूँ, आपकी माँ कहती है कि आप 12 साल की हैं इसलिए आपको घर जाना पड़ेगा। फिर मैं घर गयी, तो मुझे देखकर दादा जी ने कहा, तुमको मैं स्वर्ग में छोड़कर आया था फिर नरक में आ गयी ? मैंने रोते-रोते सारी कहानी सुनायी कि मेरे ऊपर केस कर दिया है दादी ने। तो उनको बहुत बुरा लगा और बताया कि मेरे सामने तो कहा था कि मैं गंगा जी में स्नान करने जाती हूँ। लेकिन कराची जाकर ऐसा काम किया है, उस जैसी पापी और कोई नहीं। चलो, तुमको मैं ॐ-मंडली में छोड़कर आता हूँ। उसी दिन शाम को दादा मुझे ॐ-मंडली में छोड़कर गये।

मेरा केस छह महीने तक चलता रहा। रोज़ सत्संग में आती-जाती थी। आख़िरी दिन फैसला दादी की तरफ़ हो गया। मैंने माँ को कहा, तुम यहीं रहो, मैं ताँगा लेकर आती हूँ। ताँगा लेने जाते समय मुझे संकल्प आया कि ॐ-निवास जाने का रास्ता तो पता है, क्यों न चली जाऊँ। तो मैं जहाँ मम्मा रहती थी उस मकान में पहुँच गयी। यज्ञ में ड्राइवरों को संभालने की सेवा मेरी थी। एक ड्राइवर को मैंने कहा, तुम मुझे क्लिफ्टन छोड़कर आओ, कोई मुझे ढूँढ़ने आये तो उसको कुछ नहीं बताना कि मैं कहाँ हूँ। मैं जाकर रेत पर बैठ गयी। वे ढूँढ़ते रहे। ड्राइवर से, बाबा से और मम्मा से भी उन्होंने पूछा मेरे बारे में। तो उन सबने जवाब दिया कि यहाँ तो वह आयी नहीं है। वह कहाँ गयी हमें पता नहीं है। साढ़े दस बजे के बाद ड्राइवर मेरे पास आया और मुझे मम्मा के पास ले गया। मैंने मम्मा को सब

मेरा केस छह महीने तक चलता रहा। आख़िरी दिन फैसला दादी की तरफ़ हो गया। मैंने माँ को कहा, तुम यहीं रहो, मैं ताँगा लेकर आती हूँ। मुझे संकल्प आया कि ॐ-निवास जाने का रास्ता तो पता है, क्यों न चली जाऊँ।

s_book final.1.pmd 57 02-01-2005, 4:58 PM

कहानी सुनायी तो बाबा ने कहा, ठीक है, देख लेंगे, तुम निश्चिन्त हो जाओ। उसके बाद मैं वापस घर गयी ही नहीं। यज्ञ में ही रह गयी।

दूध का इंजेक्शन देकर मरने से बचा लिया

एक बार मुझे डायरिया (दस्त) हुआ। डॉक्टर ने जवाब दे दिया कि यह बचेगी नहीं। बाबा ने मुझसे कहा कि अब बाबा तुम्हें ठीक करेंगे। बाबा ने मेरे से पूछा, तुमने कब से नींद नहीं की ? मैंने कहा, ढाई मास से। रात को खाना खाती हो ? मैंने कहा, नहीं बाबा। बाबा ने पूछा, क्यों ? मैंने कहा कि बाबा खाते ही उल्टी हो जाती है। तो बाबा ने विश्वरतन भाई को कहा कि गाय का दूध ले आओ। विश्वरतन भाई दूध लेकर आया और विश्वकिशोर भाई ने दूध का इंजेक्शन मुझे लगाया। फिर बाबा ने मम्मा को बुलाया और कहा कि मम्मा, तुम माँ हो ना, इसको सुला दो। मम्मा ने मुझे दृष्टि देते, योग करते-कराते सुला दिया। फिर आठ दिन तक बाबा ने मुझे मौसमी का रस पिलाया, उसके बाद आठ दिन आधी रोटी खिलायी, उसके बाद एक-एक रोटी खिलायी और उसके बाद मैं बिल्कुल ठीक हो गयी।

एक बार मुझे डायरिया (दस्त) हुआ। बाबा ने विश्वरतन भाई को कहा कि गाय का दूध ले आओ। विश्वरतन भाई दूध लेकर आया और विश्वकिशोर भाई ने दूध का इंजेक्शन मुझे लगाया।

जब बाबा ने मुझे सेवा करने के लिए दिल्ली जाने को कहा तो मैंने मना कर दिया। क्योंकि बाबा से हमने वायदा किया है कि साथ रहेंगे, साथ जीयेंगे और साथ चलेंगे। बाबा चुप हो गये। फिर कुछ दिनों के बाद क्लास में बाबा ने कहा कि जिसने 26 जनवरी की परेड नहीं देखी है और देखना चाहते हैं तो हाथ उठाओ। मैंने हाथ उठाया और कहा कि बाबा मैंने नहीं देखी है, मैं दिल्ली जाऊँगी। उस समय दिल्ली में देवियों की पूजा होती थी। मैं और बृजपुष्पा बहन गयी थी। उस समय वह तो छोटी थी इसलिए मैंने ही लाउड स्पीकर में बोला। कमला नगर में उस समय नन्दराम नामक एक भाई था जो उस सेवाकेन्द्र को खोलने के निमित्त बना था, उसको मेरा बोलना बहुत अच्छा लगा। फिर उसने बाबा को पत्र लिखा कि बाबा, सीतू बहन ने बहुत अच्छा भाषण किया, इसको दिल्ली में ही रहने दीजिये। बाबा ने फिर मुझे कमला नगर में रखा। कुछ समय के बाद अमृतसर में झगड़ा हुआ तो बाबा ने मुझे अमृतसर भेजा। वहाँ कुछ दिन रही, उसके बाद

s_book final.1.pmd 58 02-01-2005, 4:42 PM

दिल्ली कृष्णा नगर में झगड़ा हुआ। फिर बाबा ने मुझे कृष्णा नगर भेजा। जब विरोधी झगड़ा, पिकेटिंग आदि करते थे तो बाक़ी बहनें डर जाती थीं, मैं नहीं डरती थी इसलिए बाबा मुझे हंगामे वाले स्थान पर भेजता था। जब हापुड़ का हंगामा हुआ तो उस समय भी बाबा ने चन्द्रमणि बहन को और मुझे भेजा।

बाबा का धर्मराज का रूप

मैं मधुबन में स्टोर संभालती थी। एक बार मधुबन में पार्टी आयी थी। उनके लिए हलवा बनाना था लेकिन मेरे से स्टोर की चाबी गुम हो गयी। इसलिए हलवा नहीं बना सके। बाबा ने कहा कि तुम आज क्लास में नहीं बैठो। क्लास नहीं करना है तो उस दिन का खाना भी बन्द। बाद में चाबी बाबा को मिल गयी, बाबा ने चाबी मम्मा के हाथ में दे दी। अगले दिन बाबा ने मेरे से कहा, बच्ची, तुमने कितनी बड़ी भूल की है, कितने बच्चों को बाबा की टोली से वञ्चित रहना पड़ा। ऐसी भूल कभी नहीं करनी चाहिए जिससे बहुतों को दुःखी होना पड़े। जब एक चाबी नहीं संभाल सकती हो तो सतयुग की चाबी कैसे संभालोगी ?

बाबा ने कहा, बच्ची, तुम्हारे कारण कितने बच्चों को बाबा की टोली से वञ्चित रहना पड़ा। ऐसी भूल कभी नहीं करनी चाहिए जिससे बहुतों को दुःखी होना पड़े। जब एक चाबी नहीं संभाल सकती हो तो सतयुग की चाबी कैसे संभालोगी ?

बाबा परीक्षा भी लेते थे तथा सभ्यता भी सिखाते थे

एक बार हलवा बहुत अच्छा बना था। उस दिन परोसने की सेवा मेरी थी। कई लोग डबल-डबल माँगने लगे। तो मैंने जाकर बाबा से पूछा कि बाबा, बहुत बहनें दोबारा माँग रही हैं, क्या करें ? बाबा ने कहा, आज सेवा करने की बारी तुम्हारी है ना, दे दो। तुमने एक बार नहीं खाया तो क्या हुआ ? तो मैंने दोबारा दे दिया। उस दिन रात्रि क्लास में बाबा, मम्मा से कहने लगा, मम्मा, आज हलवा इतना अच्छा बना था कि मुझे और खाने की इच्छा हुई थी लेकिन मैंने दूसरी बारी नहीं खाया। क्यों नहीं खाया ? क्योंकि अगर मैं खाऊँगा तो मुझे देखकर और भी खायेंगे। हलवा भी हिसाब से बनता है ना, अगर मैं ज़्यादा खाऊँगा तो दूसरों को नहीं मिलेगा। इसलिए मम्मा, मैंने नहीं खाया। जिन्होंने ज़्यादा खाया था उनको पता पड़ गया कि हमें ज़्यादा नहीं खाना चाहिए था। इस प्रकार बाबा सीधा नहीं

s_book final.1.pmd 59 02-01-2005, 4:58 PM

बोलता था, ऐसे युक्ति से बोलकर बच्चों को शिक्षा देता था।

कई बार बाबा क्लास में टोली फेंकता था और बच्चों को उन्हें पकड़ने के लिए कहता था। किसी को चार, किसी को पाँच मिलती थी, किसी को कुछ नहीं मिलती थी। बाद में रात की क्लास में बाबा बच्चों से पूछता था कि किसको टोली नहीं मिली, हाथ उठाओ, फिर पूछता था कि जिसको एक से ज़्यादा टोली मिली वो हाथ उठाओ। फिर बाबा पूछता था कि इतनी सारी टोली का क्या किया ? कुछ कहते थे, मैंने सारी अकेले ही खा ली, कुछ कहते थे, हमने आपस में बाँट कर खायीं, कुछ चुप रह जाते थे। तब बाबा कहते थे, बच्चे, संगठन में सीखना चाहिए कि कोई भी चीज़ आपस में बाँट कर खानी चाहिए। इस प्रकार बाबा छोटी-छोटी बातों में भी शिक्षा देता था।

कई बार बाबा क्लास में टोली फेंकता था और बच्चों को उन्हें पकड़ने के लिए कहता था।
बाबा कहते थे, बच्चे, कोई भी चीज़ आपस में बाँट कर खानी चाहिए।
इस प्रकार बाबा छोटी-छोटी बातों में भी शिक्षा देता था।

भगवान के बच्चे कभी भूखे नहीं रहेंगे

जब बेगरी पार्ट चल रहा था, उस समय की एक घटना मुझे याद आती है। एक दिन शाम का समय था, भोली दादी ने आकर मेरे से कहा कि सीतू, आज न दाल है और न आटा है, शाम को क्या बनेगा बाबा से पूछ कर आओ। उस समय मैं स्टॉक संभालती थी। मैं बाबा के पास गयी तो देखा कि बाबा योग में बैठा था। मैंने बाबा से पूछा तो बाबा ने कहा, बच्ची, आज योग का टाइम बढ़ा दो। शाम को चार बजे तक चलने वाले योग को रात आठ बजे तक बढ़ा दिया। शाम को छह बजे पोस्टमेन आया पोस्ट लेकर। उसमें एक लिफ़ाफ़ा था। पोस्टमेन के जाने के बाद लिफ़ाफ़ा खोलकर देखा तो उसमें 200 रुपये थे। उस लिफ़ाफ़े को मैंने ही खोला क्योंकि उस पर नाम मेरा ही था। मैंने जाकर बाबा को बताया तो बाबा ने कहा, जाकर राशन लेकर आओ। फिर बाज़ार से अनाज ले आये और रात का भोजन बनाया गया। इस प्रकार बेगरी पार्ट में जब भी स्टॉक ख़त्म हो जाता था तब पोस्ट द्वारा कहीं-न-कहीं से पैसा आ जाता था।

ब्रह्मा बाबा में जब शिव बाबा आते थे तब ब्रह्मा बाबा का चेहरा ही बदल जाता था। उनका चेहरा तेजोमय हो जाता था, नयन बहुत मीठे होते थे। हमें अनुभव होता था कि बाबा से मेरे में लाइट आ रही है और साथ-साथ मेरे से भी

s_book final.1.pmd 60 02-01-2005, 4:42 PM

लाइट बाहर निकल रही है। हमें यह भी अनुभव होता था कि जब बाबा से दृष्टि मिलती थी अथवा लाइट मिलती थी तो वह कई दिनों तक हमारे अन्दर रहती थी।

लौकिक नाम और सम्बन्धियों की याद तक भुला दी

बाबा सम्बन्धों में जितने प्यारे थे उतने ही न्यारे भी रहते थे। लौकिक भान और भावना बिल्कुल बाबा में नहीं थी। यज्ञ में माँ-बाप और भाई-बहन के सिवाय और कोई रिश्ता यज्ञ-वत्सों में नहीं था। अगर कोई ने किसी को चाची अथवा भाभी कह दिया तो उसको बुलाकर बाबा पूछता था कि उसकी शादी किसने करवायी जिससे तुम्हारा चाचा या भाई बना ? इस प्रकार लौकिक रिश्तों की स्मृति भी बच्चों में न रहे – यह बाबा का उद्देश्य था। पहले हमारे कपड़े पर हमारा नाम होता था, नाम के साथ पीहर का भी नाम आता था इसलिए बाबा ने कपड़ों से नाम हटाकर हरेक को नंबर दे दिया। इस प्रकार बाबा ने हमारे लौकिक नाम और सम्बन्धियों की याद तक भुला दी।

जनवरी, 1969 में माताओं का एक ग्रुप लेकर मैं मधुबन आयी थी। शायद वह जनवरी मास की 14 तारीख़ थी। उस दिन बाबा ने मुझे कहा, बच्ची, आज अपने ग्रुप को बाबा के पास लेकर आना। मैं बाबा के पास सब माताओं को लेकर गयी। बाबा ने पहले लच्छु बहन को कह रखा था कि माताओं को गिट्टी खिलानी है। सबसे पहले मुझे गरम-गरम रोटी और मक्खन खिलाया। उसके बाद नम्बरवार सब माताओं को। फिर लास्ट में बाबा ने मुझे बुलाकर दोबारा गिट्टी खिलायी। यह देखकर एक माता ने बाबा से पूछ ही लिया कि बाबा इसको क्यों दो बार खिलायी ? तब बाबा ने कहा कि क्या पता यह दोबारा खा पायेगी या नहीं। उस समय बाबा में बहुत लाइट थी, वह बहुत प्यारी थी। बाबा ने मुझे दस मिनट तक दृष्टि दी। हम अगले दिन अपने सेन्टर पर चले गये, फिर तीन दिन के बाद समाचार मिला कि बाबा ने शरीर छोड़ दिया। उस समय मुझे यह नहीं पता था कि बाबा ने भविष्य को जानकर मुझे ऐसा बोला और शक्ति भी दी।

❄

ब्रह्मा बाबा में जब शिव बाबा आते थे तब ब्रह्मा बाबा का चेहरा ही बदल जाता था। उनका चेहरा तेजोमय हो जाता था, नयन बहुत मीठे होते थे। अनुभव होता था कि बाबा से लाइट आ रही है और हमारे से भी लाइट बाहर निकल रही है।

s_book final.1.pmd 61 02-01-2005, 4:58 PM

बाबा महान् गीतकार भी थे और संवादकार भी

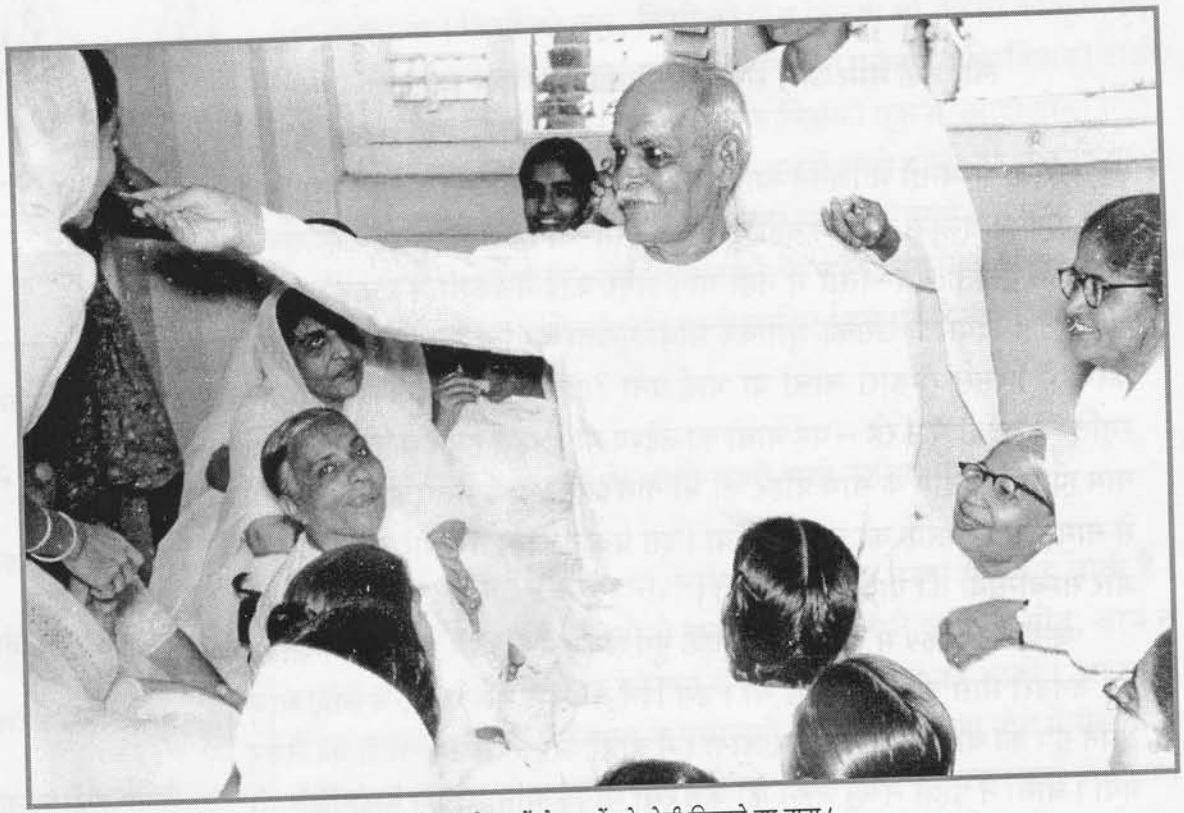

मुंबई– अपने हस्तों से बच्चों को टोली खिलाते हुए बाबा।

वडाला, मुंबई की ब्रह्माकुमारी रुकमणी दादी जी साकार बाबा के संग के अनुभव ऐसे सुनाती हैं कि सन् 1937 में मेरी माँ ने सुना कि बाबा अलौकिक ज्ञान देते हैं तो वह कराची से हैदराबाद बाबा के पास गयी। बाबा ने मेरी माँ को एक नक्शा समझाया और कहा कि जाकर इसका मनन करना। जितना तुम मनन करोगी उतना स्वयं परम आनन्द का अनुभव करोगी और पूजनीय मूरत बनोगी। बाबा का यह वरदान पाकर माँ कराची आ गयी। फिर माँ ने नित्य का नियम बना लिया कि सुबह दो बजे उठकर योग तपस्या में बैठ जाना है और मनन-चिन्तन करना है।

s_book final.1.pmd 62 02-01-2005, 4:42 PM

आठों प्रहर समाधि

कुछ दिनों के बाद बाबा ने एक पत्र लिखा कि बच्ची गंगादेवी, कराची में आने का मेरा विचार है। तो माँ ने लिखा कि बाबा ज़रूर आओ और सुदामा की झोपड़ी को पावन करो। बाबा कराची आये। हमने मकान के ऊपर के सारे कमरे बाबा के लिए दे दिये। क्योंकि बाबा के साथ मम्मा, दीदी मनमोहिनी और अन्य बहनें भी आयी थीं। बाबा दिन में दो बार सत्संग कराते थे और काफ़ी लोग सत्संग करने आते थे। इस प्रकार बाबा कुछ दिन कराची में रहे। उस समय बाबा ने एक गीत बनाया और मम्मा को कहा कि यह गीत गंगादेवी को सितार पर सुनाओ। गीत सिन्धी भाषा में था। ''सखीरो अठ्ठे पैहर समाधि'' अर्थात् आठ पहर समाधि में रहो। बाबा ने उसकी विधि इस प्रकार बतायी कि –

स्वभाव निर्मल, सम गंगा जल।
रहणी रख तू साधी, सात्विक भोजन कंद मूल फल।
ज्ञान-अमृत जो पी तू पाणी, सदा चिन्तन कर आत्म कहाणी।
कर्मण जी दैवी करे पूजाणी, कर अमरनाथ सा शादी।
धन जौबन जी थीण धयाणी, बारहः बचा सब कर्म प्राणी।
त्रिलोकी जी तू महाराणी, चैतन्य शुद्ध अनादि।
बुध गंगा चवे राधे निवणी, अमरनाथ जी अथ्थै कहाणी।
शिव सती चयो बुध ममः राणी तू चैतन्य शुद्ध अनादि।

यह गीत मम्मा ने सुनाया तो गीत सुनते-सुनते मेरी माँ की सहज समाधि लग गयी। मैंने भी बाबा को देखा तो ध्यान में चली गयी और श्री कृष्ण को देखा, साथ-साथ स्वर्ग को देखा। उस समय मैं छह घण्टे ध्यान में रही जिसमें परमात्मा से सर्व सम्बन्धों का अनुभव किया। बलिहारी मेरे बाबा की है जो मुझे एक सेकेण्ड में नज़र से निहाल करके अशरीरी बनाया। बाबा ने मुझे यह भी बताया कि बच्ची, शरीर तुम्हारा मन्दिर है, आत्मदेव अन्दर है। अब स्वयं ही तुम निर्णय करो कि भोजन कैसा होना चाहिए। मेरे पिताजी ज्वैलर थे, बड़े ठाट-बाट से रहते थे। हमारे घर में मांस-मदिरा का बहुत वरताव था। लेकिन मैंने और माँ ने सेकण्ड में तामसिक खान-पान, फैशनेबुल वेष-भूषा का त्याग कर दिया। यह बाबा की ही

कुछ दिनों के बाद बाबा ने मेरी माता जी को एक पत्र लिखा कि बच्ची गंगादेवी, कराची में आने का मेरा विचार है। बाबा दिन में दो बार सत्संग कराते थे और काफ़ी लोग सत्संग करने आते थे।

s_book final.1.pmd 63 02-01-2005, 4:58 PM

रुकमणी दादी जी

कृपा कहो, दया कहो, वरदान कहो, उसी वरदान ने 14 साल की आयु में ही त्याग कराया, आज तक वही त्यागी जीवन है।

भागवत में हम गोपियों का वर्णन पढ़ते थे लेकिन उसका अनुभव मैंने बाबा द्वारा किया। योग के गहरे अनुभव भी बाबा ने हमें कराये जो हम उसी रूहानी नशे और मस्ती में रहते थे। बाबा का यह गीत भी गाते थे –

आत्म खुमारी, कैसी बीमारी।
जीते जी मर गयी, अहो आनन्द।
तुम मेरी, तुम मेरे।
इस सुखमय जीवन का क्या साधन।
तुम मेरी, तुम मेरे।

यह बाबा की ही कृपा कहो, दया कहो, वरदान कहो, उसी वरदान ने 14 साल की आयु में ही त्याग कराया, आज तक वही त्यागी जीवन है। योग के गहरे अनुभव भी बाबा ने हमें कराये, हम उसी रूहानी नशे में रहते हैं।

यह अनुभव होने के बाद बाबा ने कहा, तुम बेहद में आओ। बेहद में आने के लिए बाबा ने गीत लिखा।

आज हमें सब बेहद भाता, क्या आनन्द है आता।
ज्ञान से सृष्टि देखी, अति सुन्दर।
ज्ञान से वस्तु देखी, अति सुन्दर।

शुरू हो गये तरह-तरह के बन्धन

इसके बाद मेरे पर बन्धन शुरू हुए क्योंकि मैं बहुत गहने पहनती थी। सदा गहनों से सजी रहती थी। लेकिन बाबा का ज्ञान मिला तो सारे गहने उतार दिये। पिता जी ने पूछा, गहने क्यों उतारे ? मैंने कहा, अभी हम ज्ञान के गहनों से सजे हैं। पिता जी को बहुत गुस्सा आया, मुझे और माँ को बहुत कुछ बोला। मेरे कान में जेवर पड़े थे, वे निकल नहीं रहे थे तो एक दिन एसिड लगाकर वे भी निकाल दिये। दूसरे दिन पिता जी ने कान देखे जो काफ़ी ख़राब हो गये थे, तो पूछा, तुमने क्या किया है। मैंने कहा, कान में कुछ हो गया था। पिता जी ने कहा, तुमने ख़ुद एसिड लगाया है और कहती है कि कान में कुछ हो गया था और कान के जेवर भी निकाल दिये हैं। पिता जी को इतना गुस्सा आया कि उस गुस्से में पहली बार मेरी बहुत पिटाई की और कहा कि अगर अब उस दादा के पास गयी तो तुम्हें काट कर

फेंक दूँगा। माँ और मेरे पर कड़ा पहरा बिठा दिया। लेकिन मैं बाबा को कभी भूली नहीं। बाबा से मेरा निरन्तर योग था। फिर एक दिन पिता जी ने कहा, यह त्यागी जीवन कैसे चलेगा और तुम्हें घर में ऐसे कैसे बिठायेंगे ? शादी के लिए जबरदस्ती करने लगे। लेकिन मैं तो अपनी मस्ती में थी। पिता जी ने देखा कि यह तो मानने वाली नहीं है तो हमें हरिद्वार ले गये कि वहाँ किसी मंत्र-तंत्र वाले को दिखाकर ठीक करेंगे और इन पर जो (ज्ञान का) जादू लगा है वह निकालेंगे। हरिद्वार में एक मंत्र पढ़ने वाले ब्राह्मण को बुलाया। ब्राह्मण ने पानी पर मंत्र पढ़कर और उसे बोतल में भरकर दिया। मेरी माँ से कहा कि यह पानी तुम भी पियो और बच्ची को रोज़ पिलाओ। जब माँ ने मुझे कहा कि यह पानी पिओ तो मैंने कहा कि जादू का पानी नहीं पिऊँगी। बाबा ने माँ की ज्ञान की नींव बहुत मज़बूत डाली थी। माँ ने कहा, डरती क्यों हो ? परमात्म-जादू श्रेष्ठ है या मनुष्यों का श्रेष्ठ है ? बाबा ने जो हमको ईश्वरीय जादू लगाया है उस पर मनुष्यों का जादू कुछ नहीं कर सकता और नहीं पिओगी तो तुम्हारे पिता जी गुस्सा करेंगे। माँ ने कहा कि पानी पिओ, डरो नहीं।

बाबा ने माँ की ज्ञान की नींव बहुत मज़बूत डाली थी। माँ ने कहा, डरती क्यों हो ? परमात्म-जादू श्रेष्ठ है या मनुष्यों का श्रेष्ठ है ? बाबा ने जो हमको ईश्वरीय जादू लगाया है उस पर मनुष्यों का जादू कुछ नहीं कर सकता।

बाबा ने एक बड़ा मस्ती का गीत बनाया था वह याद आया –

नेष्ठा का जादू है मुझ में भरा
और सामने बैठ मुझे देख ज़रा।
यह देह क्या है, एक संकल्प सखी
अहं-मम की बनी है मन से सखी।

जब त्रिलोकीनाथ हमारा रक्षक है तो कौन क्या कर सकता है ?

जब हमारे पर नेष्ठा (योग) का जादू है, मनुष्य का जादू क्या करेगा ? हमारा जादू उस पर लगेगा। हमारा रक्षक त्रिलोकीनाथ है। मैंने पानी पी लिया। लेकिन उस जादू के पानी का हमारे पर कोई असर नहीं हुआ। उसके बाद हम वापस कराची आ गये। मेरी माँ ने अपनी दिनचर्या शुरू की जैसेकि सुबह उठना, योग करना और मुरली पढ़ना। बाबा के पास जाने की सख्त मना थी। लेकिन बाबा

s_book final.1.pmd 65 02-01-2005, 4:58 PM

मुरली, विश्वरतन दादा के द्वारा भेज देते थे। विश्वरतन दादा सब्जी लेने आते थे तो बाबा सप्ताह में तीन बार मुरली और टोली उन द्वारा भेजते थे। यह परमात्म-चमत्कार ही था कि जब पिता जी घर से बाहर निकलते थे तो तुरन्त बाद विश्वरतन दादा आते थे। मुरली और टोली देकर, माँ को बाबा की बातें सुनाकर चले जाते थे। इस प्रकार बाबा ने घर में ही गुप्त पालना की। रुकमणी दादी और आलराउण्डर दादी लौकिक में मेरी बुआ की लड़कियाँ हैं। जब वे हमारे घर पर आती थीं तो पिता जी बहुत हंगामा मचाते थे और बहुत गुस्सा करते थे। क्योंकि पिता जी समझते थे कि ये ही लड़कियाँ इनको कैसे भी करके बाबा के पास ले जायेंगी। इनके संग से छुड़ाने के लिए दुबारा फिर छह मास के लिए हरिद्वार ले गये। वहाँ गंगाराम नाम के एक महात्मा जी रहते थे जो सिन्ध के जोही गाँव के महन्त थे। उनके पास मुझे और माँ को ले गये। महात्मा जी ने बहुत परीक्षा ली, कई उल्टे-सुल्टे प्रश्न पूछे लेकिन मेरी माँ की परख शक्ति बहुत अच्छी थी तो उनको बहुत सुन्दर उत्तर दिये। महात्मा जी बहुत ख़ुश हुए। वे हाथ जोड़कर बोले – ''तुम्हारे पति के कहने पर मैंने तुम्हारी इतनी परीक्षा ली। लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम्हारा निश्चय, तुम्हारी ज्ञान-योग की निष्ठा मुझसे बढ़कर है और संन्यास के लिए मैंने गेरूवे वस्त्र पहने हैं फिर भी तुम्हारे जैसा त्याग, वैराग मुझ में नहीं है। तुम्हारा ज्ञान और योग बहुत ऊँचे हैं।'' छह मास के बाद मैं और माँ वापस घर आये।

''मैं देखता हूँ कि तुम्हारा निश्चय, तुम्हारी ज्ञान-योग की निष्ठा मुझसे बढ़कर है और संन्यास के लिए मैंने गेरूवे वस्त्र पहने हैं फिर भी तुम्हारे जैसा त्याग, वैराग मुझ में नहीं है। तुम्हारा ज्ञान और योग बहुत ऊँचे हैं।''

चित्तचोर की याद से परमानन्द की अनुभूति

सन् 1947 में भारत विभाजन के बाद हम सब परिवार सहित कराची से मुंबई आ गये। लेकिन बाबा ने जो परम आनन्द का अनुभव कराया था उसके आगे तो सारे संसार के रस हमें फीके लगते थे। मैं और मेरी माँ उसी मस्ती में रहती थीं। बाबा ने जो कराची में गीत लिखे थे वे याद आये। गीतों में इतना आनन्द था जो संसार को सेकेण्ड में भुला देते थे –

बाहरमुखता छोड़, माला तोड़, किताब डाल पानी में।
पकड़कर हाथ वस्तों का निजानन्द को तू पाता जा।
प्रेम की मस्ती और, जगत में ज्ञान की मस्ती और, ज्ञान से मन की मस्ती और।

s_book final.1.pmd 66 02-01-2005, 4:42 PM

राजू सारथी रमझ बतावे, धीरे-धीरे पैर बढ़ावे।
कदम-कदम पर राह दिखावे, देह-अभिमान से जान छुड़ावे।
निज में ही निज नैन अडावे, ऐसा यह चित्त चोर।
जगत में योगी का प्रेम ही और, प्रेम से मोही लिया चित्त चोर।

इस गीत के याद आते ही श्रीकृष्ण की बात याद आयी कि श्रीकृष्ण की काठ की मुरली के पीछे गोपियाँ भागीं। लेकिन भगवान ने ज्ञान की मुरली बजायी उसके पीछे हम भागे। कराची में बाबा कहते थे, बच्चे, ज्ञान मुरली के अर्थ में टिकना है, शब्दों को नहीं देखना है। जितना अर्थ में टिकती जायेंगी उतना स्वयं सहज समाधि में टिक जायेंगी और दूसरों को भी अनुभव करायेंगी। इसलिए मैं बाबा की मुरली को बार-बार पढ़ती थी और उसका आनन्द लेती थी।

बाबा ने मेरी राखी को बड़े प्यार से उठाया और बोला - यह मेरी बाँधेली बच्ची की राखी है। इसका जिक्र बाबा ने मुरली में किया था। मेरा मन ख़ुशी से नाच उठा।

बाबा ने कहा – तुम गुप्त गोपी हो

राखी का त्योहर आया। मुझे संकल्प आया कि बाबा को राखी भेजूँ। राखी के दो दिन पहले एक साधारण राखी ख़रीद कर लायी और पोस्ट मास्टर से कहा कि यह पोस्ट, कैसे भी राखी के दिन आबू पहुँचनी चाहिए। उसने कहा कि थोड़ा पैसा ज़्यादा लगेगा। मैंने कहा कि जितने भी लगें लेकिन पहुँचनी चाहिए। मैंने राखी भेजी और वह सही समय पर मधुबन पहुँच गयी। जो भी राखियाँ बाबा के लिए आयी थीं उनको छोटे हाल (हिस्ट्री हाल) में सजा कर रखा था। उसमें मेरी भी राखी रखी हुई थी। मुझे किसी ने बाद में बताया कि बाबा हाल में आये और सब राखी देखते हुए मेरी राखी को देखकर कहा कि यह कहाँ से आयी है ? पता पड़ने के बाद बाबा ने उस राखी को बड़े प्यार से उठाया और बोला – यह मेरी बाँधेली बच्ची की राखी है। इसका जिक्र बाबा ने मुरली में किया था। मेरा मन ख़ुशी से नाच उठा। जब बाबा मुंबई आये थे तो मैं घर से छिपकर बाबा से मिलने गयी। उस समय क्लास चल रहा था। बाबा ने मुझे देखा और कहा, तुम गुप्त गोपी हो, तुमने राखी भेजी थी। बस यह सुनते ही मेरी आँखों से स्नेह का जल बहने लगा। वाह मेरे जानीजाननहार बाबा ! जो मुझ बाँधेली को भी आपने याद किया। कितनी ख़ुशी की बात है कि स्वयं भगवान मुझे याद करे ! कुछ वर्ष के

s_book final.1.pmd 67 02-01-2005, 4:58 PM

बाद पिता जी ने शरीर छोड़ा और मैं बन्धन से मुक्त हो गयी और बाबा की सेवा में तत्पर हो गयी। बाबा का सिन्धी में लिखा हुआ एक पुराना गीत याद आया जो वैराग्य दिलाता है –

छड़ देह-अभिमान, वठ योगीन सा ज्ञान
कर गंगा में स्नान, अर्थ ओम् सा
अहं आत्मा सुठो, कर परदेश फिठो
ओम् देश मिठो, हल गुरु कुलसा।

इसका हिन्दी अर्थ है – देह-अभिमान छोड़ो। गंगा में स्नान करो। ओम् एक औषधि है, अगर इस औषधि का पान किया तो तुम देह-अभिमान से मुक्त हो जाओगे। आत्मा श्रेष्ठ है, यह प्रकृति परदेश है, इससे उपराम हो जाओ। निज देश तुम्हारा शान्तिधाम है। ओम् मंडली का नाम गुरुकुल है, इसके साथ रहो। ❄

कराची (1946)– कार में बैठे हुए बाबा। पीछे सीट में बैठी हैं जशु बहन (शान्तामणि दादी की भाभी और क्वीन मदर (मनमोहिनी दीदी की माँ)। बाहर बैठी हैं दीदी मनमोहिनी और बृजेन्द्रा दादी।

s_book final.1.pmd 68 02-01-2005, 4:42 PM

बाबा छोटे बच्चों को अथाह स्नेह भी देते थे और सम्मान भी

आबू, कोटा हाउस– बाबा के साथ दादी गुलजार और चन्दा बहन।

ब्रह्माकुमारी दादी गुलजार जी अपने अनुभव सुनाती हैं कि जिस समय मैं ज्ञान में आयी, मैं छोटी बच्ची ही थी। आते ही बाबा की पालना में ऐसे पले जो मैं समझती हूँ कि द्वापर युग से लेकर आज तक कोई भी प्रिन्स-प्रिन्सेस भी नहीं पले होंगे। हमारा भाग्य था जो हम बाबा के पास पहुँच गयी। हमारी लौकिक माँ आलराउण्डर दादी को बहुत लगन थी। मैं बच्चों में सबसे बड़ी थी। बाबा ने छोटे बच्चों के लिए सुविधा रखी थी कि बच्चे गुरुकुल के मुआफिक यहाँ आकर पढ़ भी

s_book final.1.pmd 69 02-01-2005, 4:58 PM

दादी गुलजार जी

सकते हैं और रह भी सकते हैं। मेरे पिता जी को इतना पता नहीं था कि ज्ञान-योग क्या है और यहाँ क्या हो रहा है। माता जी को गीता के बारे में ज्ञान था, भक्ति भी बहुत करती थी। इसलिए बड़ी होने के कारण और उम्र 9 साल होने के कारण मुझे बोर्डिंग ओम् निवास में भर्ती करवाया। हमारा परिवार रहता था कराची में और बाबा का बोर्डिंग खुला था हैदराबाद में। मैं और मेरी चाची की लड़कियाँ आदि ग्रुप बनाकर इकट्ठे होकर बोर्डिंग गये थे। आश्चर्य की बात यह है कि उस ग्रुप के सारे चले गये, मैं एक ही रह गयी।

हमारी लौकिक माँ आलराउण्डर दादी को बहुत लगन थी। मैं बच्चों में सबसे बड़ी थी। बाबा ने छोटे बच्चों के लिए सुविधा रखी थी कि बच्चे गुरुकुल के मुआफिक यहाँ आकर पढ़ भी सकते हैं और रह भी सकते हैं।

बाबा हमें ठाकुर कहते थे

बच्चियों प्रति बाबा की जो पालना थी वह बहुत सुन्दर थी। भारत में देवताओं की छोटी-छोटी मूर्तियों को घर में एक गद्दी बनाकर उस पर रखते हैं। वे मूर्तियाँ सोने-चाँदी की होती हैं और उनकी पूजा करते हैं। सिन्धी भाषा में उन मूर्तियों को ठाकुर कहते हैं। बाबा हमें कहता था – ये तो मेरे चैतन्य ठाकुर हैं। हम लोगों को भी नशा यही चढ़ाया कि तुम ठाकुर हो, तुम देवता थे, देवता बनेंगे। ऐसा नशा बाबा ने चढ़ाया था। हम भी उसी नशे में ही चलते थे कि हम बाबा के ठाकुर हैं। हमारी जो दादियाँ थीं वे हमें पढ़ाती थीं और दूसरा जो ग्रुप था माताओं का, वो हमारी पालना करता था। यहाँ तक हमारी पालना होती थी कि ब्रुश पर पेस्ट डालने की भी हमें ज़रूरत नहीं होती थी। पेस्ट डालकर ही हमें ब्रुश दिया जाता था। बाथरूम में कपड़े रखे जाते थे। रोज़ हमारी मालिश होती थी। इस प्रकार अच्छी से अच्छी पालना बाबा करते थे। बाबा कहते थे – रोज़ इनको पहले मालिश करो, बाद में स्नान कराओ। बाबा यह भी कहते थे कि भक्तजन, मौसम के पहले फल अपने इष्ट को भोग लगाते हैं। वो जड़ मूर्तियाँ हैं, ये तो मेरी चैतन्य मूर्तियाँ हैं इसलिए मौसम का जो भी फल निकलता है पहले इन ठाकुरों को भोग लगना चाहिए। इस तरह बाबा मौसम के फल का पहला भोग हमें ही लगाते थे अर्थात् खिलाते थे। बाबा कहते थे कि ये मेरे खाने वाले ठाकुर हैं। वो तो जड़ और न खाने वाले ठाकुर हैं। बाबा फलों को ख़ुद काटकर एक बाल्टी में भरते थे और जब हमें क्लास के बीच रिसेस (छुट्टी) मिलती थी तब बाबा ही एक-एक बच्चे

s_book final.1.pmd 70 02-01-2005, 4:42 PM

को अपनी बाहों में लेकर उसके मुख में फल का टुकड़ा रखते थे। इतना प्यार से हम बच्चों की पालना करते थे बाबा!

बाबा हमें रोज़ गुडमार्निंग और गुड नाइट करने आते थे

ख़ुद बाबा हम बच्चों के लिए लेसन (Lessons) लिखते थे। उन लेसनों को दादियाँ हमें पढ़ाती थीं। बाबा डायलॉग बनाते थे, हम उन पर एक्टिंग करते थे। बाबा गीत-कविता लिखते थे और दादी मिट्ठू उन गीतों को गाकर हमें सिखाती थी। रोज़ सवेरे दादी चन्द्रमणि हमें ड्रिल कराती थी। ड्रिल करने से पहले हम आज जैसे योग नहीं करते थे परन्तु बेड पर बैठकर एक-दूसरे को आत्मा-आत्मा देखने का, समझने का अभ्यास करते थे। बाबा हमें आत्मा का पाठ पक्का कराता था। चन्द्रमणि दादी हमारी ड्रिल मास्टर थीं। रोज़ सवेरे ड्रिल के बाद बाबा-मम्मा हमसे हाथ मिलाकर गुड मार्निंग करने के लिए ड्रिल मैदान पर आते थे। हम सब बच्चे एक बड़े हॉल में रहते थे जिसमें 80 पलंग डाले गये थे। रात को सोते समय हमें संभालने वाली माता बिस्तर आदि सब ठीक-ठाक करके, हरेक पलंग पर मच्छरदानी लगाकर हम बच्चों को अन्दर बिठाती थी और टार्च लेकर हरेक मच्छरदानी को चैक करती थी कि अन्दर कोई मच्छर तो नहीं है। फिर वह माता मच्छरदानी बन्द करके जाती थी जैसे मन्दिर में मूर्ति के सामने पर्दा डालकर बन्द कर देते हैं। उसके बाद मम्मा-बाबा आते थे और एक-एक से गुड नाईट करके जाते थे। ऐसे रोज़ मम्मा-बाबा हमें गुड मार्निंग और गुड नाईट करके जाते थे। ऐसे कोई माँ-बाप हैं सारे जग में जो दो समय बच्चों के पास जाकर गुड मार्निंग और गुड नाइट करें ? सतयुग में भी नहीं होंगे।

बच्चियों प्रति बाबा की जो पालना थी वह बहुत सुन्दर थी। बाबा हमें कहता था – ये तो मेरे चैतन्य ठाकुर हैं। हम लोगों को भी नशा यही चढ़ाया कि तुम ठाकुर हो, तुम देवता थे, देवता बनेंगे। ऐसा नशा बाबा ने चढ़ाया था।

बाबा हमें दिन के तीन प्रहर में तीन रूप धारण कराते थे

बाबा ने सिर्फ हमें अच्छे से अच्छी पालना ही नहीं दी, साथ-साथ ज्ञान भी देते थे। बाबा हमें कहते थे कि रात को जब पलंग पर मच्छरदानी के अन्दर बैठ जाते हो तब तीन मिनट अपना चार्ट देखो कि सारे दिन में आपने क्या किया।

s_book final.1.pmd 71 02-01-2005, 4:58 PM

ख़ुद बाबा हम बच्चों के लिए लेसन लिखते थे। उन लेसनों को दादियाँ हमें पढ़ाती थीं। बाबा डायलॉग बनाते थे, हम उन पर एक्टिंग करते थे। बाबा गीत-कविता लिखते थे और दादी मिट्ठू उन गीतों को गाकर हमें सिखाती थी।

बाबा हमें उस समय यह ज्ञान देते थे कि बच्चे, तुम ही ब्रह्मा बनते हो, विष्णु बनते हो और शंकर भी बनते हो। सुबह को उठती हो, सृष्टि रचती हो तो ब्रह्मा बन गयीं। दिन में पालना करती हो तो विष्णु बन गयीं। फिर रात को तुम शंकर बनते हो। शंकर बनके सारे दिन की दिनचर्या रात को ख़त्म कर दो। कहते हैं ना कि शंकर विनाश करता है, वैसे तुम अपनी उस दिन की दिनचर्या की समाप्ति करो। हमारे ऐसे नियम थे कि पहले एक ट्यून बजती थी तब हम अपने चार्ट को चैक करते थे। उसके बाद बाबा-मम्मा गुड नाईट करके जाते थे। उसके बाद और एक रिकार्ड बजता था, उस समय हमें अपने को आत्मा समझ कर बैठना पड़ता था। उस समय परमात्मा का ज्ञान नहीं था अर्थात् बताया नहीं जाता था। केवल आत्म-अभिमानी बनने का ज्ञान दिया जाता था और अभ्यास कराया जाता था। तीन मिनट यह योग चलता था, इसमें हम आमने-सामने एक-दूसरे को आत्मा समझकर उनको आत्मिक रूप में दृष्टि देते थे। इसके बाद यह रिकार्ड बजता था कि 'सो जा राजकुमारी...', इस रिकार्ड पर हम सो जाते थे। रिकार्ड बजते ही सारे के सारे इकठ्ठे सो जाते थे। वो दृश्य देखने लायक होता था। हम ऐसे सोते थे जैसेकि हम बाबा के ठाकुर सो रहे हैं, राजकुमारियाँ सो रही हैं।

बाबा ने शुरू से जो नशा चढ़ाया था कि हम आत्मा हैं, हम ठाकुर सो देवता हैं – यह निश्चय और नशा पक्का हो गया था। साथ-साथ हमें यह भी पक्का हो गया था कि हम ब्रह्मा-विष्णु-शंकर हैं। हम एक-दूसरे से सुबह पूछते थे कि तुम कौन हो ? तो बताते थे कि मैं ब्रह्मा हूँ। दिन में पूछती थी, तुम कौन हो ? तो उत्तर मिलता था कि मैं विष्णु हूँ और रात को कोई ने पूछा कि तुम कौन हो, तो उत्तर दिया जाता था कि मैं शंकर हूँ। इस प्रकार हमें यह अभ्यास कराया जाता था कि मैं आत्मा हूँ, मैं ठाकुर हूँ, मैं ब्रह्मा-विष्णु-शंकर हूँ। सुबह ड्रिल के बाद हमें सैर पर ले जाते थे। सैर करने जिस बगीचे में जाते थे उस बगीचे के दूसरी साइड में एक गुरु का सत्संग होता था। बाबा ने उन सत्संग करने वालों पर एक गीत लिखा और मिट्ठू दादी ने हमें सिखाया और हमने उसे बगीचे में गाया। उस गीत में था कि एक मकड़ी है, वह अपना ही जाल तैयार कर अपनी गृहस्थी बनाती है, फिर उसी में फँस जाती है, वो क्या दूसरों को मुक्त करेगी ? हम तो छोटे-छोटे बच्चे थे, हमने हँसते-खेलते उस गीत को गाया। यह सुनकर वो बहुत चिढ़ गये। मगर

s_book final.1.pmd 72 02-01-2005, 4:42 PM

क्या कर सकते थे ? बच्चे होने के कारण किसको कुछ कह भी नहीं सकते थे। चुप रह जाते थे। इस प्रकार, बाबा हम बच्चों से बचपन से ही ईश्वरीय सेवा कराते थे।

बाबा हम छोटे-छोटे बच्चों से बड़े-बड़ों को सन्देश दिलाते थे

एक बार हमारे ओम निवास को देखने के लिए सरकारी अफसर आये थे। हमारा जो ओम् निवास था वह बहुत ऊँची इमारत थी और उस पर बाबा ने बल्बों से 'ॐ' बनवाया था। वह सुन्दर दिखायी पड़ता था और बहुत दूर-दूर तक, रेलवे स्टेशन पर भी दिखायी पड़ता था। जब वो अफसर देखने आये थे तब बाबा ने हम बच्चों से एक डायलॉग करवाया था। उसमें एक पार्ट था भूला भाई का और दूसरा था ब्रह्माकुमारी का। ब्रह्माकुमारी भूला भाई से पूछती है, भूला भाई, तुम जानते हो कि तुम कौन हो ? भूला भाई कहता था, क्या तुम नहीं देखती हो, मैं मनुष्य हूँ। फिर ब्रह्माकुमारी कहती थी, भूला भाई, तुम भोले हो। तुम अपने बारे में ही नहीं जानते हो ? तुमको यह भी पता नहीं है कि तुम कौन हो ? वो अफसर तो समझ जाते थे कि यह बात हमारे लिए ही है। फिर उस भूला भाई को समझाती थी कि मैं कौन हूँ, मेरा नाम क्या है। वो अफसर सुनते थे और समझते थे कि इनडायरेक्ट ये लोग हमें ही ज्ञान दे रहे हैं। बाबा हमेशा कहते थे कि छोटे-छोटे बच्चे यह ज्ञान सुनायें तो कितना भी बड़ा आदमी हो बुरा नहीं मानेगा, इनसल्ट नहीं समझेगा। इसलिए जैसा समय वैसा डायलॉग बनाकर बाबा देते थे और हम बच्चों से अभिनय करवाते थे।

बाबा ने सिर्फ हमें अच्छे से अच्छी पालना ही नहीं दी, साथ-साथ ज्ञान भी देते थे। बाबा हमें कहते थे कि रात को जब पलंग पर मच्छरदानी के अन्दर बैठ जाते हो तब तीन मिनट अपना चार्ट देखो कि सारे दिन में आपने क्या किया।

पिकेटिंग वालों को भी हमने करके दिखाया कि हम भी कम नहीं हैं

इसके बाद पिकेटिंग हुई। उस समय हम बगीचे में घूमने गये हुए थे। जब हम सैर से लौटे तो पिकेटिंग लगी हुई थी। ओम् निवास के अन्दर जाने के लिए जो सीढ़ियाँ थीं उनके ऊपर लोग सोये हुए थे। वे लोग हमें कहने लगे, बच्चो, आप जाओ, आप के लिए हम उठकर रास्ता देंगे लेकिन बड़ों को जाने नहीं देंगे। उन

s_book final.1.pmd 73 02-01-2005, 4:58 PM

विरोध करने वालों में हमारे मामे, काके आदि रिश्तेदार थे। जब उन्होंने हमें अन्दर जाने के लिए कहा, हमने मना कर दिया। हमने कहा, जब तक बड़े अन्दर नहीं जायेंगे, हम भी नहीं जायेंगे, यहीं खड़े रहेंगे। हम खड़े रहे। दो घण्टे बीत गये। हर किसी बच्चे का उनमें कोई-न-कोई रिश्तेदार होने के कारण उनको हम पर तरस आने लगा। हमें चाकलेट, मिठाई आदि देने लगे। हमने तो कुछ लिया ही नहीं। हम ऐसे ही खड़े रहे। बार-बार आकर वे हमें कहने लगे कि यह मिठाई खाओ, यह टाफी खाओ। लेकिन हमें इतना नशा था कि हम कहते थे, तुम बन्दर लोग हो, बन्दरों का हम खायेंगे क्या ? चाकलेट आदि सब खाने की चीज़ों को हमने एकदम फेंक दिया। छोटे होते हुए भी हमें इतना नशा था कि हम परमात्मा के बच्चे परमात्मा जैसे हैं, शिवोऽहम् समझते थे। क्योंकि उस समय परमात्मा, चक्र, झाड़ आदि का ज्ञान नहीं था। सिर्फ मैं आत्मा, तुम भी आत्मा और शिवोऽहम् बताया जाता था। बाबा ने बच्चों को नशा चढ़ाया था। समाज में नारियों का स्थान बहुत गिरा हुआ था। उनको ऊपर उठाने के लिए इतना बड़ा नशा चढ़ायें तब तो वे ऊपर उठेंगी। बाबा कहते हैं, तुम परमात्मा के बच्चे सो बाप हो। तुम परमात्मा के भी मालिक हो। क्योंकि बच्चे बालक सो मालिक हैं। इस तरह, पहले बाबा ने बच्चों को नशा बहुत चढ़ाया। नशा चढ़ा होने के कारण हम बच्चे सारी दुनिया – माँ-बाप, चाचे-काके, मामा-मामी सबको भूल गये। हमें ऐसा लगता था कि जन्म से ही हमारे लौकिक और अलौकिक माँ-बाप बाबा हैं। लौकिक माँ-बाप याद आये – यह कभी नहीं हुआ। शुरू-शुरू में एक बार मुझे दादी माँ याद आयी। क्योंकि लौकिक घर में दादी गिट्टी खिलाती थी, हम घूम-घूम कर खाते थे, फिर भाग जाते थे तो हमारे पीछे-पीछे वह दौड़कर आती थी और प्यार से गिट्टी मुँह में रखती थी। यहाँ तो थाली बनाकर मिलती थी। थाली बड़ी मिलती थी, उसमें खाओ। इस कारण एक बार मुझे दादी याद आयी, बाहर देखा तो कोई नहीं था। मैं घर चली गयी। फिर थोड़े समय रहकर, दादी माँ से मिलकर वापस आ गयी।

बाबा ने शुरू से जो नशा चढ़ाया था कि हम आत्मा हैं, हम ठाकुर सो देवता हैं – यह निश्चय और नशा पक्का हो गया था। हमें यह भी पक्का हो गया था कि हम ब्रह्मा, विष्णु, शंकर हैं। हम एक-दूसरे से पूछते थे कि तुम कौन हो ?

बाबा ने हमें नशा इतना चढ़ा दिया था कि हमारे पाँव धरनी पर ही नहीं होते थे। सदा हम समझते थे कि ऊपर आकाश में हैं। इसके अलावा उस समय साक्षात्कार का पार्ट भी बहुत चलता था। बाबा आकर दृष्टि देता था तो सारा क्लास का क्लास साक्षात्कार में चला जाता था। कोई नाच रहा है, कोई भाग रहा है, कोई कृष्ण को

s_book final.1.pmd 74 02-01-2005, 4:42 PM

पुकार रहा है। बड़ा विचित्र पार्ट चलता था। लोग भी सोचते थे कि ये बच्चे पढ़ाई करते हैं, ध्यान में जाते हैं या खेलते रहते हैं ! लेकिन हमारा वो जीवन शहज़ादों से भी बढ़कर था। हम तो यही समझते हैं कि हमें जो पालना मिली वह पालना सारे कल्प में हमारे सिवाय और किसको मिल ही नहीं सकती।

मेरे नाम से भी वारंट आया

धीरे-धीरे हमारी पढ़ाई शुरू हुई, हंगामे होते रहे। हमारे लिए बाबा ख़ुद रोज़ गीत भी लिखते थे, भाषण भी लिखते थे और हमारे पास आकर ख़ुद गीत सुनाते थे। यह भी एक कमाल थी। लेकिन कराची में आफ़िशियली हमारी पढ़ाई शुरू हुई। पहले बाबा ने नशा भरा और ख़ूब प्यार दिया। उस समय आत्मा का पाठ इतना पक्का था कि हम कभी नहीं भूलते थे। कभी हम बच्चे एकान्त में बैठते थे तो एक-दूसरे को आत्मा ही देखते थे। बाक़ी और ज्ञान नहीं था। जो अण्डर एज वाले थे उनके नाम से वारंट आये। जिन के नाम से वारण्ट आते थे, बाबा कहते थे, उनको घर जाना ही पड़ेगा। मेरे नाम से भी आया था तो मैं भी एक साल घर गयी थी। एक साल होने के बाद एक दिन सुबह-सुबह जब सब सोये हुए थे, उस समय लौकिक माँ कमरे का कुण्डा खोलकर मुझे ताँगे में बिठाकर ओम् निवास में छोड़कर गयी। उसके बाद वह मुझे नहीं ले गयी और मैं वहीं रही।

जब मैं आठ साल की थी और यज्ञ में भी नहीं आयी थी तब से ही मेरा साक्षात्कार का पार्ट शुरू हो गया था। कराची में बाबा मेरी लौकिक माँ आलराउण्डर दादी की मामी के घर में सत्संग में आये थे। उस समय माता जी मुझे भी लेकर गयी थी। उस सत्संग में बैठे-बैठे मैं ट्रान्स में चली गयी थी। उस समय सूक्ष्मलोक आदि का नाम ही नहीं था। जिसको भी साक्षात्कार होते थे वे स्वर्ग के ही होते थे। मैं तो इस यज्ञ में खेल-खेल में पली हूँ और खेल-खेल में ही बड़ी हुई हूँ। पहले तो ध्यान-दीदार बहुत होते थे।

❄

बाबा हमेशा कहते थे कि छोटे-छोटे बच्चे यह ज्ञान सुनायें तो कितना भी बड़ा आदमी हो बुरा नहीं मानेगा, इनसल्ट नहीं समझेगा। इसलिए जैसा समय वैसा डायलॉग बनाकर बाबा देते थे और हम बच्चों से अभिनय करवाते थे।

s_book final.1.pmd 75 02-01-2005, 4:58 PM

बाबा विदेशी बच्चों को आदि समय से ही याद करते थे

मुंबई, शंकर सागर (1965)– ब्रजेन्द्रा दादी, कमलेश बहन, सन्तरी दादी, पुष्पशान्ता दादी, आनन्द किशोर दादा। नीचे बैठे हैं रतन मोहिनी दादी, ईशू दादी, शील दादी को बाबा केक खिलाते हुए।

ब्रह्माकुमारी दादी रतनमोहिनी जी कहती हैं कि हम बहनें तो बाबा के साथ ऐसे बैठते थे जैसे छोटे बच्चे माँ-बाप के साथ बैठते हैं। बाबा के साथ चिटचैट भी करते थे। कहाँ भी चलो, बाबा के हाथ में हाथ देकर चलो, कहाँ भी बैठो, बाबा के साथ बैठो। बाबा के साथ बोलते जाओ, देखते जाओ और चलते जाओ। क्योंकि बाबा के लिए हम लोगों की सदा ऊँची भावनायें थीं। हमें सदा स्मृति रहती थी कि हम भगवान के साथ हैं।

s_book final.1.pmd 76 02-01-2005, 4:42 PM

बाबा में भगवान की ही एक्टिविटी देखती थी

हमारे मन में सदा यह भावना बनी रहती थी कि भगवान के साथ चलते हैं, बैठते हैं, बातें करते हैं। हम बाबा को कभी साधारण रूप में नहीं देखते थे। जब बाबा क्लास के बाद चेम्बर में बैठते थे तो हम सब उनके सामने बैठते थे। भले ही बाबा उस समय रमणीकता से बात करेंगे परन्तु हमारे अन्दर भावना होती थी कि देखो, भगवान कितनी रमणीकता से बातें कर रहे हैं ! इस रीति हम बाबा को देखते और सुनते थे। साकार बाबा का हर बोल हम भगवान का महावाक्य समझकर ही स्वीकार करते थे। बाबा के हर बोल और क्रिया के प्रति हम आपस में रूहरिहान करते थे कि देखो भगवान साकार में कैसे कर्म कर रहा है और बोल रहा है ! उनके बोल में क्या-क्या राज़ समाया हुआ है, यह भी हम निकालते थे। ब्रह्मा बाबा की चलन से हमें भगवान के चरित्र का अनुभव होता था। हर समय हमारा ध्यान बाबा के चेहरे पर, बाबा की दृष्टि पर और बाबा के बोल पर ही होता था कि भगवान कैसे करते हैं और क्या कहते हैं। साकार बाबा को देखने का हमारा उद्देश्य यही होता था कि भगवान उस रथ द्वारा कैसे देखते हैं, कैसे बोलते हैं, कैसे कर्म करते हैं, कैसे बच्चों के साथ खेलपाल करते हैं। उस समय हमारे अन्दर यह पक्का बैठ गया था कि बाबा, बाबा तो है साथ में इस बाबा में भगवान बैठा है। ब्रह्मा बाबा में शिव बाबा है – यह निश्चय करने के लिए हमें मेहनत नहीं करनी पड़ी। जैसे आजकल लोग पूछते हैं कि ब्रह्मा बाबा में ही परमात्मा आता है अथवा आया है, कैसे विश्वास करें ? लेकिन कभी भी ऐसा प्रश्न हमें आया ही नहीं। हमें तो हर पल और क़दम में यही अनुभव होता था कि हम भगवान के साथ हैं और भगवान अपना यह काम कर रहा है और हमें भी वैसे ही करना है।

लोग पूछते हैं कि ब्रह्मा बाबा में ही परमात्मा आता है अथवा आया है, कैसे विश्वास करें ? लेकिन कभी भी ऐसा प्रश्न हमें आया ही नहीं। हमें तो हर पल और क़दम में यही अनुभव होता था कि हम भगवान के साथ हैं।

बाबा की दृष्टि इतनी मीठी और इतनी प्यारी होती थी कि हमें साकार रूप में दिखायी भी पड़ती थी और महसूस भी होती थी। इस कारण हमारे मन में कोई ऐसे-वैसे संकल्प उठें अथवा आपस में ऐसी बातचीत हो – इसके लिए मार्जिन ही नहीं थी। हमारे लिए पुरुषार्थ बहुत सहज था।

साकार बाबा विदेशी बच्चों को बहुत याद करते थे और कहते थे कि यह ज्ञान विदेशी बच्चों को बहुत अच्छा लगेगा। ये चित्र वहाँ भी जायेंगे। वे भी आकर

s_book final.1.pmd 77 02-01-2005, 4:58 PM

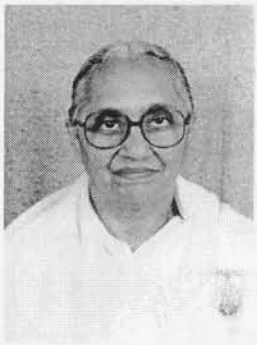

दादी रतनमोहिनी जी

बाप से अपना जन्मसिद्ध अधिकार लेंगे। ऐसी-ऐसी बातें बाबा बहुत समय से सुनाते थे। हम भी समझते थे कि बाबा कहते हैं तो वह बात कभी-न-कभी साकार होगी ज़रूर। हम यह नहीं समझते थे कि हम विदेश में जायेंगे और सेवा करेंगे। हम समझते थे कि बाबा का ज्ञान लेने के लिए वे ही यहाँ आयेंगे। क्योंकि हम समझते थे कि भगवान के पास सबको आना है तो वे ही सब यहाँ आयेंगे।

हम बहनें तो बाबा के साथ ऐसे बैठते थे जैसे छोटे बच्चे माँ-बाप के साथ बैठते हैं। कहाँ भी चलो, बाबा के हाथ में हाथ देकर चलो, कहाँ भी बैठो, बाबा के साथ बैठो। बाबा के साथ बोलते जाओ, देखते जाओ और चलते जाओ।

कल सो आज, आज सो अभी

बाबा की यह बहुत बड़ी विशेषता थी कि बाबा ने जो भी कहा, हमें उसी समय उसको करना है। अगर उसी समय नहीं करेंगे तो बाबा कहते थे फेल। बाबा उस दिन की मुरली में जो काम अथवा सेवा देते थे हमें उसी दिन करना ही होता था क्योंकि अगले दिन फिर बाबा हमें पूछते थे कि कल जो बाबा ने होमवर्क दिया था, किसने किया हाथ उठाओ। इसलिए हम बच्चों को यही लक्ष्य होता था कि बाबा ने आज के दिन जो होमवर्क दिया है उसको आज करना ही है। जो बच्चा कोई भी सेवा करता था भले वह समझाने की हो अथवा लिखने की हो, उसको बाबा क्लास में सुनाने के लिए कहते थे और उस बच्चे को आगे बढ़ाने के लिए, उसमें उमंग-उत्साह भरने के लिए क्लास में उसकी महिमा करते थे। बाबा उससे कहते थे कि तुमने बाबा की आज्ञा का पालन किया है, तुम फरमानवरदार बच्चे हो। बच्चों की ख़ुशी सदा बनाये रखने के लिए, उनको आगे बढ़ाने के लिए सदा बाबा भिन्न-भिन्न तरीके अपनाते थे। हर बात बाबा को देखकर ही हमें सीखने को मिलती थी। किसी बच्ची अथवा बच्चे को शिक्षा देनी है तो आते ही उनको सीधा यह नहीं कहते थे अथवा ऐसा नहीं समझाते थे कि तुमने यह भूल की है अथवा यह नहीं पूछते थे कि तुमने भूल क्यों की। पहले बाबा उस बच्चे को प्यार से बुलाते थे, उससे बात करते थे और उसकी विशेषताओं का वर्णन करते थे फिर उसको शिक्षा देते थे कि दोबारा ऐसा नहीं करना चाहिए। यह भी बड़ी विशेषता थी कि अगर कोई बच्चा देहाभिमान में है तो उसको शिक्षा नहीं देते थे क्योंकि वह समझेगा नहीं। इसलिए बाबा जनरल क्लास में ही सबको शिक्षा देते थे कि ऐसे-ऐसे नहीं करना चाहिए। बीच-बीच में उसकी तरफ़ ध्यान भी रखते थे कि वह समझा या

s_book final.1.pmd 78 02-01-2005, 4:42 PM

नहीं, समझ लिया तो ठीक है नहीं तो कुछ बहनें जो आगे रहती थीं उनसे कहलवाते थे। बाबा में यह विशेषता थी कि हर बच्चे की नब्ज देखकर, उसकी शक्ति और योग्यता जानकर उसको चलाते थे। ज्ञान एक होते हुए भी बाबा हर आत्मा की योग्यता अनुसार ही शिक्षा और धारणा की बातें सुनाते थे। इस तरह बाबा से हमें हर प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। ❄

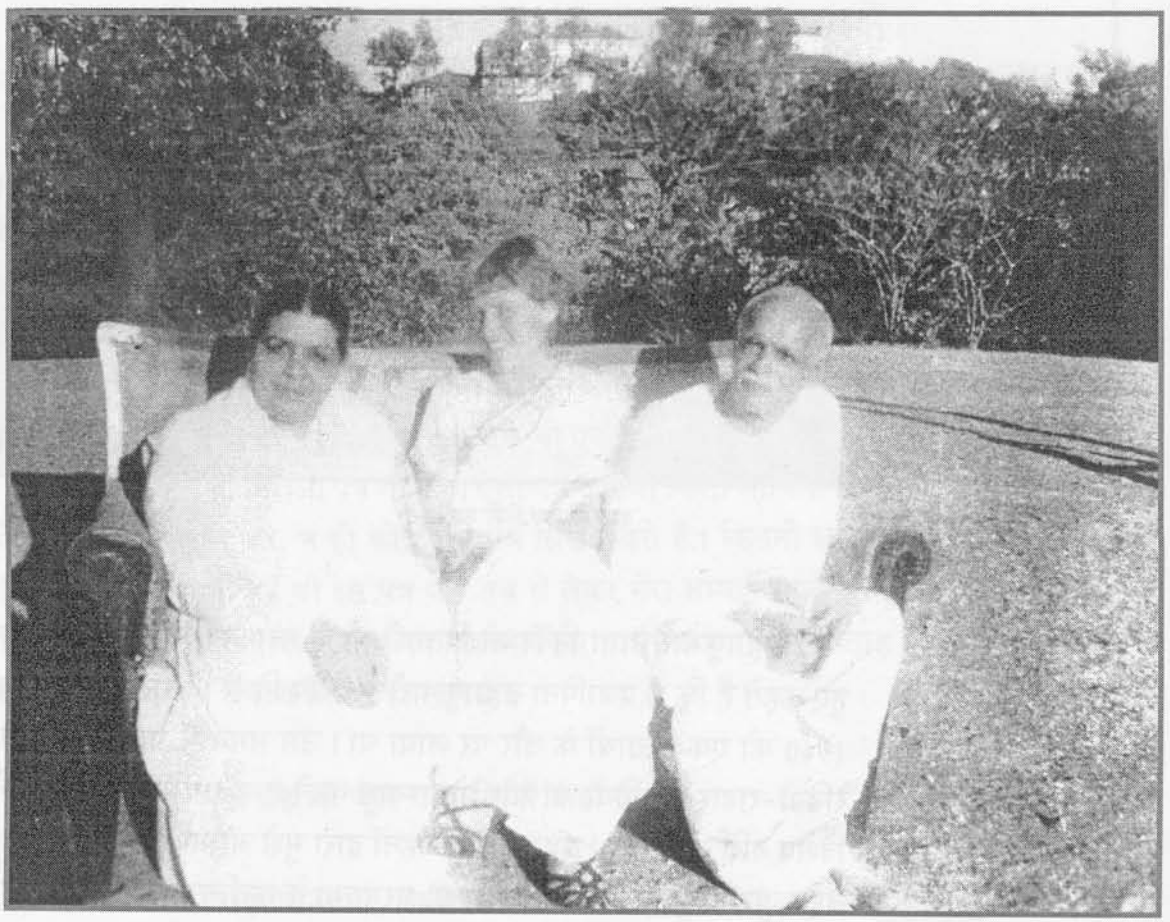

आबू– मम्मा-बाबा के साथ एक डबल विदेशी बहन।

s_book final.1.pmd 79 02-01-2005, 4:58 PM

ख़ुदा के नूर से आदम जुदा नहीं

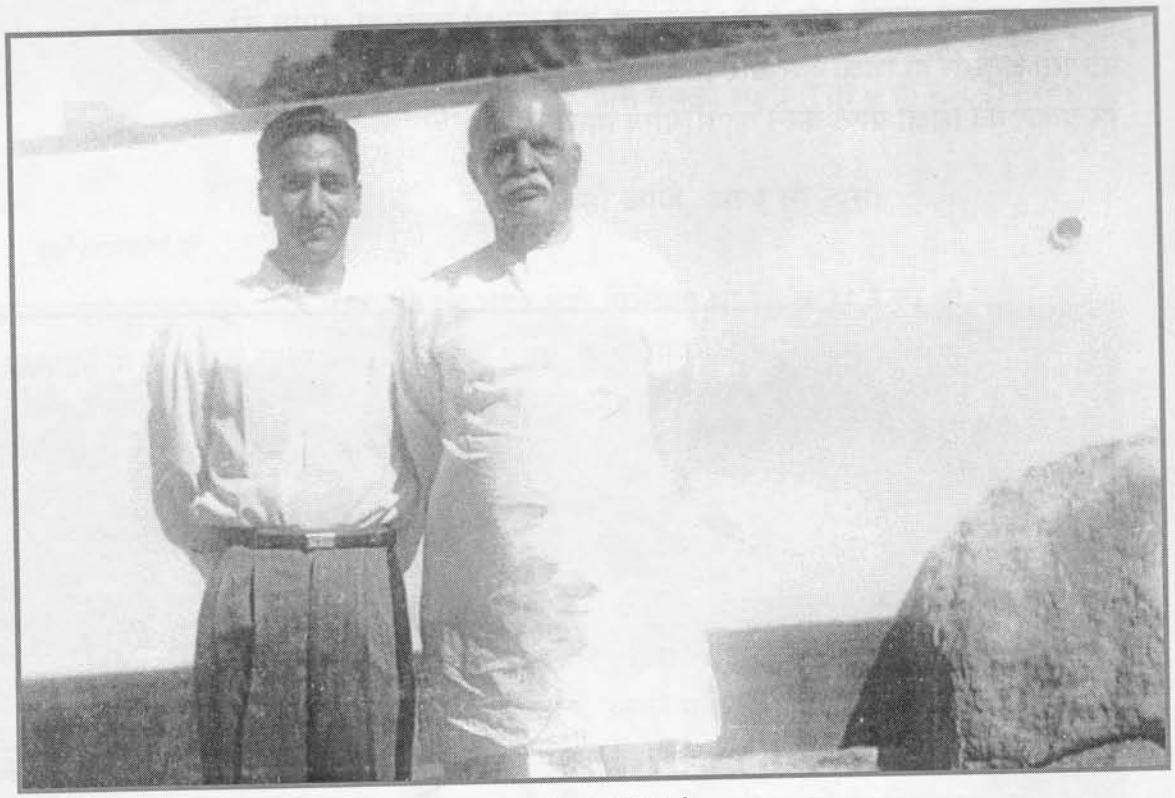

बाबा के साथ निर्वैर भाई।

ब्रह्माकुमार भ्राता निर्वैर जी पिताश्री जी के साथ का अपना अनुभव सुनाते हुए कहते हैं कि मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में 1 फ़रवरी, 1960 को एक विद्यार्थी के तौर पर आया था। उस समय मैं भारतीय नौसेना में रेडियो-राडार इंजीनियर था और योगाभ्यास करने तथा धार्मिक पुस्तकें पढ़ने में विशेष रुचि रखता था। ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा मुझे आत्मा, जीवन, जीवन का लक्ष्य, परमात्मा, परमात्मा से सम्बन्ध, परमात्मा के कर्त्तव्य, कर्म, अकर्म, विकर्म आदि का ज्ञान प्राप्त हुआ। यह ज्ञान और योग की शिक्षा प्रैक्टिकल अनुभव और ईश्वरीय मत पर आधारित थी जिसका असर अपने जीवन पर पहले दिन से ही

s_book final.1.pmd 80 02-01-2005, 4:42 PM

अनुभव होने लगा था। कई पुराने संस्कार थोड़े ही दिनों में पलट गये थे। पन्द्रह दिन के बाद जब पूरा समझ में आया कि पारलौकिक परमपिता परमात्मा शिव ने पिताश्री ब्रह्मा के साकार शरीर का आधार लेकर यह शिक्षा दी है तो मन में आया कि ऐसे अलौकिक बापदादा से मिलूँ परन्तु सरकारी नौकरी से छुट्टी नहीं मिली, तो मैंने निम्नांकित पते पर पत्र लिखा :–

"परमपिता परमात्मा शिव
C/o प्रजापिता ब्रह्मा
पाण्डव भवन, माउँट आबू।"

सचमुच यह भी एक निराली ही बात हुई कि भगवान से पत्र-व्यवहार करने का अवसर मिला। ख़ैर, चार दिन के बाद मेरे पत्र का यह उत्तर आया –

"ब्राह्मण कुल भूषण, स्वदर्शन चक्रधारी, सौभाग्यशाली नूरे रतन निर्वैर शेर के प्रति रूहानी बापदादा का याद-प्यार। बाद समाचार है कि स्नेहयुक्त पत्र बच्चे का पाया, हर्षाया। कल्प पहले की तरह पुरुषार्थ कर बेहद के बाप से भविष्य 21 जन्मों के लिए सतयुगी स्वर्ग की बादशाही का वर्सा पाना है। इस अन्तिम जन्म में योगबल से मायाजीत बन जगतजीत अर्थात् बेगर टु प्रिन्स (Begger to Prince) बनना है। माया के विघ्न तो आयेंगे, सच्चा शेर बन जीत पानी है। सब साथियों सहित रूहानी बापदादा का याद-प्यार। सन्मुख भी एक दिन पहुँच ही जायेंगे।"

"ब्राह्मण कुल भूषण, स्वदर्शन चक्रधारी, सौभाग्यशाली नूरे रतन निर्वैर शेर के प्रति रूहानी बापदादा का याद-प्यार। बाद समाचार है कि स्नेहयुक्त पत्र बच्चे का पाया, हर्षाया। कल्प पहले की तरह पुरुषार्थ कर बेहद के बाप से..."

एक बिल्कुल ही निराला पत्र था यह। ऐसा पत्र न कभी किसी लौकिक पिता ने, न गुरु ने लिखा होगा, न ही कोई ऐसा पत्र लिख सकते हैं। कितनी शक्ति, कितनी ख़ुशी समायी हुई थी इस पत्र में ! तब से लेकर मेरा सम्पर्क अपने अति प्रिय, अलौकिक बाप-दादा के साथ पत्र-व्यवहार द्वारा स्थापित हुआ और सप्ताह में एक-दो पत्र मुझे अवश्य मिलते ही रहते थे।

मुझे यह भी भूल गया कि मैं कहाँ बैठा हूँ

जिस दिन की राह देखता था, आख़िर वह दिन भी आ पहुँचा। जुलाई 1960 में मैं बापदादा से सम्मुख मिलने माउण्ट आबू स्थित 'मधुबन स्वर्गाश्रम' में पहुँचा। मधुबन पहुँचते ही शुद्ध वातावरण, निःस्वार्थ दैवी स्नेह तथा शान्ति का अनुभव

s_book final.1.pmd 81 02-01-2005, 4:58 PM

भ्राता निर्वैर जी

मैं ईश्वरीय विश्व विद्यालय में 1 फ़रवरी, 1960 को एक विद्यार्थी के तौर पर आया था। उस समय मैं भारतीय नौसेना में रेडियो-राडार इंजीनियर था। योगाभ्यास करने तथा धार्मिक पुस्तकें पढ़ने में विशेष रुचि थी।

होने लगा। भवन में पहुँचने के कुछ ही समय बाद बाबा के कमरे में पहुँचा। बाबा एक गद्दी पर विराजमान थे। मैं भी योगयुक्त होकर बैठ गया। बाबा को पहली बार सम्मुख मिल रहा था। सफ़ेद वस्त्रधारी बाबा को देखते-देखते उनके मस्तिष्क पर मुझे एक ज्योति का गोला नज़र आने लगा, बाबा से अत्यन्त मधुरता और स्नेह की दृष्टि मिलती रही जैसेकि कोई सूक्ष्म रीति से खींच रहा हो, पवित्रता, प्रेम और शक्ति की लहरें ऐसी आ रही थीं जिनका वर्णन करना मुश्किल है। मुझे यह भी भूल गया कि मैं कहाँ बैठा हूँ। कुछ समय के बाद मुझे बाबा का साकार शरीर भी ज्योतिर्मय और सूक्ष्म दिखायी देने लगा और कुछ समय तो केवल ज्योति स्वरूप शिव बाबा ही नज़र आता रहा। यह बिल्कुल ही एक अनोखा अनुभव था। मेरी ख़ुशी की कोई हद न रही, मुझे पारलौकिक और अलौकिक बापदादा सम्मुख मिले! दुनिया की बड़े से बड़ी हस्ती और मेरे पिता, मैं उनसे एक कल्प के बाद मिल रहा था! ख़ुशी के आँसू रुक न सके। ख़ुशी से मेरा चेहरा खिलता गया। लगभग 15-20 मिनट तक इस आत्मा ने साकार में प्रभु-मिलन मनाया और उस मिलन में अतीन्द्रिय सुख का अनुभव किया। मैंने सुन रखा था कि –

''आदम को ख़ुदा मत कहो, आदम ख़ुदा नहीं।
लेकिन ख़ुदा के नूर से, आदम जुदा नहीं।''

उसी बात का प्रैक्टिकल अनुभव किया। मैंने महसूस किया कि साकार ब्रह्मा (आदम) के तन में ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमात्मा (ख़ुदा) आदम की आत्मा के साथ विराजमान थे। उस दिन से लेकर मैंने ईश्वरीय जीवन को दृढ़ता से अपनाया और यह निश्चय किया कि समस्त जीवन बापदादा की श्रीमत पर चलकर ईश्वरीय सेवा में लगाऊँगा। ऐसा अनुभव कराना और संस्कारों में परिवर्तन करना किसी साधारण व्यक्ति का काम नहीं था। यह तो उस साधारण मानवी तन में अवतरित हुए असाधारण परमपिता परमात्मा का ही कार्य था। मैं जब भी पिताश्री जी के सम्मुख जाता था, मुझे वही ज्योति उनके मस्तक पर नज़र आती थी और उनसे नयन-मुलाक़ात करते ही अपरम-अपार अलौकिक आनन्द का अनुभव होता था। इतना मीठा, इतना प्यारा था शिव बाबा उस शरीर में!

s_book final.1.pmd 82 02-01-2005, 4:42 PM

पोप पॉल भारत में

दिसम्बर 1964 में, मुंबई में पोप पॉल तथा अन्य मुख्य क्रिश्चियन व्यक्तियों के क्रिश्चियन कांग्रेस (Eucharistic Congress) में आने का समाचार सबने पढ़ा था। कई लोगों ने तो इसे पसन्द भी नहीं किया था परन्तु परमात्मा की तो सभी सन्तान हैं, चाहे पोप हो या कोई और। सभी को पारलौकिक पिता के अवतरण का परिचय मिलना ही चाहिए, चाहे कोई माने या न माने। इसलिए बापदादा के निर्देश पर मुंबई में मैरीन ड्राइव पर एक विशेष 'विश्व नव निर्माण प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया और रोम में पोप पॉल को तार द्वारा प्रदर्शनी देखने का निमंत्रण भेजा गया था।

पोप पॉल को ईश्वरीय ज्ञान के 30"x40" आकार के रंगीन चित्रों का सुनहरी सेट तथा 'रीयल गीता' (Real Gita) भेंट करते हुए भ्राता जगदीश चन्द्र जी ने ईश्वरीय सन्देश दिया कि ''इन चित्रों को समझने तथा सच्ची गीता (Real Gita) के अध्ययन से ही स्वर्ग की प्राप्ति हो सकती है।'' पोप पाल ने कहा – ''मैं पुरुषार्थ करूँगा।''

पोप के अतिरिक्त मुख्य कार्डीनल एगेग्यानियन व अन्य कार्डीनल तथा पादरियों को भी चित्रों के सुनहरी सेट ईश्वरीय सौग़ात के रूप में सैकड़ों की संख्या में भेंट किये गये।

शिव बाबा ने पिताश्री के द्वारा उपरोक्त समस्त कार्य को करने का निर्देश देते हुए कहा था कि ''क्रिश्चियन बच्चे भारत में आ रहे हैं, भारत परमात्मा शिव की जन्म और कर्मभूमि है तो इन सबके उस पिता का सन्देश इन्हें अवश्य मिलना चाहिए।'' क्या यह कर्त्तव्य किसी साधारण मनुष्य का हो सकता था जो पोप को भी ईश्वरीय ज्ञान लेने के लिए सन्देश भेज सकता ? परन्तु शिव बाबा (परमात्मा) की नज़रों में तो वह आत्मा भी उनका ही एक 'बच्चा' है।

बाबा को देखते-देखते उनके मस्तिष्क पर मुझे एक ज्योति का गोला नज़र आने लगा। बाबा से अत्यन्त मधुरता और स्नेह की दृष्टि मिलती रही। पवित्रता, प्रेम और शक्ति की लहरें आ रही थीं।

दया का सागर और क्षमा का सागर

बाबा का प्रत्येक महावाक्य, प्रत्येक कर्त्तव्य तथा प्रत्येक विचार हम आत्माओं

s_book final.1.pmd 83 02-01-2005, 4:58 PM

अस्पताल के एक कमरे में लेटे हुए उनको देखकर मुझे ऐसे लगा जैसे कि मैं अजन्ता और एलोरा की गुफ़ा में शिला पर लेटे हुए गौतम बुद्ध को देख रहा हूँ। एक धर्म-संस्थापक का ऐसा प्रतिभाशाली व्यक्तित्व तो होता ही है कि उससे मिलने वाले सामान्य नर पर उसका प्रभाव पड़ता है; उतना सम्माननीय व्यक्तित्व पिताश्री का था। उनका स्थान वास्तव में एक धर्म-संस्थापक से भी बड़ा है – यह बात तो मुझे बाद में मालूम हुई परन्तु यह संकल्प तो मेरी बुद्धि में तब से ही चल रहा था कि यह अवश्य ही कोई बहुत महान् आत्मा है।

आदर्श ट्रस्टी और अति विनम्र

एक सामान्य घर को चलाने में भी हम सबके नाक में दम आ जाता है परन्तु इतनी बड़ी संस्था का प्रारम्भ करके उसके 150 से भी अधिक सेवाकेन्द्रों की स्थापना तथा पालना करते हुए भी पिताश्री सब बातों से उपराम रहकर निश्चिन्त और निर्संकल्प रहते थे। यदि कोई ट्रस्टीपन का सिद्धान्त सीखना चाहे तो उसके लिए पिताश्री एक प्रैक्टिकल आदर्श थे। उन्होंने अपना सर्वस्व त्याग करके सफल किया। अपने पुरुषार्थ से समग्र मानव-सम्प्रदाय में और सभी धर्मों में सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम और 100% सुख-सम्पन्न, प्रथम श्री नारायण का पद पाया। पुरुषार्थी की दृष्टि से देखा जाये तो इस सृष्टि रंगमंच पर उपस्थित 600 करोड़ से भी ज़्यादा मनुष्यात्माओं में से उन्होंने पहला नम्बर पाया। एक सामान्य विद्यालय या महाविद्यालय में प्रथम आने पर जितनी ख़ुशी होती है, उससे करोड़ों गुना अधिक उच्च पद पाने का सौभाग्य मिलने पर भी वे सब से न्यारे थे। उन्हें अपने पद पर अभिमान भी कभी नहीं था और वे सदा ही नम्रचित्त रहते थे।

पिताश्री सब बातों से उपराम रहकर निश्चिन्त और निर्संकल्प रहते थे। यदि कोई ट्रस्टीपन का सिद्धान्त सीखना चाहे तो उसके लिए पिताश्री एक प्रैक्टिकल आदर्श थे। उन्होंने अपना सर्वस्व त्याग करके सफल किया।

हर तरह से एक आदर्श व्यक्ति

पहले नम्बर का पद पाने के लिए पहले नम्बर का विद्यार्थी बनना पड़ता है। अब हम सभी यह जानते हैं कि परमपिता परमात्मा हम सभी आत्माओं के सच्चे शिक्षक हैं, वे पिताश्री के तन द्वारा मुरली सुनाते थे। परन्तु जब हम साक्षी होकर

s_book final.1.pmd 87 02-01-2005, 4:58 PM

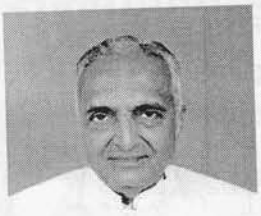

भ्राता रमेश जी

पिताश्री से मेरी पहली मुलाक़ात आज से 49-50 वर्ष पहले हुई थी। तब पिताश्री मुंबई में आये हुए थे। आज भी वह दृश्य मुझे याद आता है। उस समय तो मैं इस ईश्वरीय ज्ञान से परिचित नहीं था।

विचार करते हैं तो ख़्याल आता है कि कई बार ऐसा भी होता होगा कि मुरली चलाते-चलाते परमपिता परमात्मा अपने कर्त्तव्यों को पूर्ण करने के लिए उसी सौभाग्यशाली रथ (शरीर) से थोड़े समय के लिए छुट्टी लेते होंगे। परन्तु यह आदर्श विद्यार्थी इतनी आसान रीति से अपने शिक्षक का स्थान भरकर मुरली का कार्य चालू रखते थे कि यह अन्तर बड़ी मुश्किल से बहुत ही कम ब्राह्मणों को मालूम पड़ता था। अर्थात् ये (ब्रह्मा बाबा) आदर्श विद्यार्थी इतनी अच्छी रीति से अपने शिक्षक परमात्मा का ज्ञान-दान देने का कर्त्तव्य करते थे कि दोनों की वाणी में बहुत ही सूक्ष्म भेद रहता था। उनकी वाणी में उतनी शक्ति, भाषा में दिव्यता, शब्दों में ललकार, शैली में सौजन्य था कि वो वाणी अन्धे को रोशनी, लूले को सहायक, गूँगे को संकेत, उलझे हुओं को सुलझाने वाली तथा अशक्त को शक्तिप्रदायक थी।

जब हम नये थे तब एक बार मुंबई में हम बाबा के साथ घूमने गये थे। तब मैंने एक छोटा-सा प्रस्ताव बाबा के सामने रखा – ''बाबा, जब आप ज्ञान-मुरली चलाते हैं तब मुरली की पाइंट्स (Points) कॉपी में नोट करने का मन होता है। साथ-साथ यह भी मन होता है कि उस समय आपके मुख-कमल की तरफ़ देखते हुए ज्ञानामृत का पान करते रहें। आप अपनी मुरली के लिए तैयारी ज़रूर करते होंगे। वो तैयार नोट्स हमें ज़रूर पहले से दे दीजिये ताकि बाद में उनकी नकल करना आसान हो जाये और उस समय हम केवल मुरली सुनें।'' पिताश्री मुरली चलाने से पहले नोट्स (भाषण की रूप-रेखा) बनाते होंगे – ऐसी कल्पना इसलिए हुई कि सब बड़े-बड़े विद्वान, पंडित, आचार्य, शास्त्री ऐसे भाषण तैयार करते हैं। मैंने सोचा कि जैसे एक वकील या बैरिस्टर अपने ब्रीफ़ (brief; सार) तैयार करता है, वैसे ही बाबा भी करते होंगे। मैंने जब ऐसा निवेदन किया तो उन्होंने पूछा कि कौन-से नोट्स ? जब मैंने अपना संकल्प बाबा के सामने स्पष्ट रूप से रखा तो वे बोले – ''मैं तो बिल्कुल तैयारी नहीं करता।'' पिताश्री न कोई किताब पढ़कर सुनाते, न किसी किताब का ब्यौरा अथवा हवाला देते। बाबा थोड़े ही समय अख़बार पढ़ते थे। परन्तु मुरली के लिए किसी भी प्रकार की पहले से तैयारी नहीं करते थे बल्कि जो कहना होता था वह तत्काल ही कहते थे। उनकी स्वतः स्फुरित वाणी, उनकी बुद्धि के चमत्कार और विचारों की गहराई का प्रतीक है।

s_book final.1.pmd 88 02-01-2005, 4:42 PM

व्यर्थ संकल्पों से बचने की शिक्षा

एक बार हम मुंबई से पूना पिताश्री के साथ कार में गये। रास्ते में एक स्थान पर बैठकर नाश्ता किया। वापस लौटते समय मैंने उसी स्थान को याद किया। तब पिताश्री ने कहा – ''बच्चे, ऐसी बातों को क्यों याद करते हो ? याद उसको करो जिसमें कमाई हो। बाक़ी सब यादें फ़ालतू चिन्तन है और उनमें समय तथा शक्ति की बरबादी तो है ही।'' अपने जीवन के श्वासों का इतना भारी ध्यान रखने का कर्त्तव्य उन्होंने स्वयं किया और हम बच्चों को सिखाया। इसीलिए तो वे सबसे पहले कर्मातीत बन सके।

सेवाकार्य के लिए शिक्षा, निर्देश तथा पैरवी (देखरेख)

जब हम नये थे तब मुंबई में रोज़ सुबह पिताश्री के साथ गार्डेन में घूमने जाते थे। तब वहाँ ईश्वरीय सेवा कैसे करनी चाहिए, वह बाबा ने हमें सिखाया। उन्हीं दिनों अपना चार पृष्ठ का एक फ़ोल्डर (Folder) नया-नया छपा था। गार्डेन में आये हुए व्यक्तियों को कैसे ईश्वरीय सन्देश देना चाहिए, पिताश्री उसके बारे में हमें नये-नये तरीक़े सिखाते थे। हम सामान्य विद्यार्थी तो प्रदर्शनी के चित्रों पर एक बार जो व्याख्या सीख लेते हैं उसी को बार-बार दुहराते रहते हैं। परन्तु पिताश्री तो आदर्श शिक्षक थे, इसलिए वे अपने विद्यार्थियों को भिन्न-भिन्न अस्त्रों-शस्त्रों से सुसज्जित करते थे ताकि वे ईश्वरीय ज्ञान का सन्देश सबको विविध तरीक़ों से दे सकें। उन्हीं दिनों अनेक अमेरिकन संन्यासी भारत की यात्रा पर आये थे। उनसे मिलने का समय दोपहर में था। पिताश्री ने हमें बताया कि उनसे ज्ञान की क्या-क्या बात करनी है। वे हमें समझाने के कार्य में अपने आपको इतना भूल गये कि वे नंगे पाँव लिफ़्ट (Lift) तक आये। अर्थात् हमारी तैयारी सदैव सम्पूर्ण रहे और हमारा पुरुषार्थ भी शत-प्रतिशत रहे, उसी बात के लिए पिताश्री अपने शरीर के कष्ट का भी ख़्याल नहीं रखते थे। पिताश्री केवल हमें ईश्वरीय सेवा पर भेजते समय ही नहीं बल्कि हमारे वापिस लौटने पर भी हमसे पूछते थे कि हमने वहाँ क्या समझाया। वे समाचार की पूरी लेन-देन करते थे अर्थात् पिताश्री का आदर्श शिक्षक

ब्रह्मा बाबा इतनी अच्छी रीति से अपने शिक्षक परमात्मा का ज्ञान-दान देने का कर्त्तव्य करते थे कि दोनों की वाणी में बहुत ही सूक्ष्म भेद रहता था। उनकी वाणी में शक्ति, भाषा में दिव्यता, शब्दों में ललकार होती थी।

s_book final.1.pmd 89 02-01-2005, 4:58 PM

का रूप हम सबको ध्यान में रखने जैसा है।

पूर्णतः ज्ञानी बनाने के लिए सतत् प्रयत्न

मुंबई में जब एक बार पिताश्री आये तब उन्होंने ज्योतिस्वरूप के चित्र पर, जो कि देहली में छपा था, बताया कि परमात्मा का कोई इतना बड़ा रूप नहीं है। इस बात का विशेष रहस्य जानने के लिए मैंने जब पिताश्री से प्रश्न पूछा तब उन्होंने बताया कि ''यह चित्र छपवाया तो गया है परन्तु कई बच्चों ने इसका इस्तेमाल ग़लत किया है। वे योग में बैठते समय इस चित्र को आगे रखकर चित्र के साथ योग लगाते हैं। दूसरे शब्दों में यूँ कहें कि वे परमात्मा के 'रूप' के साथ ध्यान लगाते हैं। अब यह रस्म भी तो भक्तिमार्ग की है और इस तरह भी सच्चा योग नहीं लग सकता। इसी कारण बाबा को आज ऐसी मुरली चलानी पड़ी।'' ऐसा जब पिताश्री ने हमको समझाया तब मालूम पड़ा कि सूक्ष्म बातों का ग़लत तरीक़े से तथा किसी भी ग़लत विधि या साधन का इस ज्ञान में इस्तेमाल हम बच्चे न करें – इसके लिए पिताश्री सदा जागृत रहते थे। हम बच्चे कई बार भक्तिमार्ग के शब्द जैसे कि 'ब्रह्माकुमारी आश्रम' आदि प्रयोग में लाते हैं परन्तु पिताश्री ऐसे भक्तिमार्ग के शब्दों का प्रयोग कभी नहीं करते थे।

''बच्चे,
ऐसी बातों को
क्यों याद करते हो ?
याद उसको करो
जिसमें कमाई हो।
बाक़ी सब यादें
फ़ालतू चिन्तन है।
उनमें समय
तथा शक्ति की
बरबादी तो
है ही।''

परिस्थिति को तथा सामने वाले व्यक्ति के मन को पहचानने अथवा समझने की अद्भुत शक्ति पिताश्री में थी। मिलने के लिए आये हुए व्यक्ति किस विचार को लेकर सामने आये हैं, पिताश्री तुरन्त इस बात को जान लेते। उनके मन को जीतने का अद्भुत तरीक़ा पिताश्री के पास था। मातेश्वरी जी ने जब शरीर छोड़ा तब कई बच्चे मधुबन में आये थे। उसी समय कई कन्यायें भी मधुबन आयी थीं। तब हमको विचार आया कि मधुबन में कन्याओं के लिए एक सेमिनार (Seminar) का कार्यक्रम रखा जाये। वहाँ जितनी भी कन्यायें थीं उनके सामने विचार रखा। सबको वह पसन्द आया। फिर हम पिताश्री के पास गये। हमारे द्वारा पिताश्री जी के सामने विचार रखे जाने से पहले ही उन्होंने कहा – ''बच्चे, सेमिनार करना चाहते हो तो ज़रूर करो।'' बाबा ने तुरन्त ही एक बहन को बुलाकर सारा 'हवाई महल' कन्याओं के लिए ख़ाली करा दिया। उसी तरह जब मुंबई में प्रदर्शनी का

s_book final.1.pmd 90 02-01-2005, 4:42 PM

पहला सेट बन रहा था तब दो सेट एक-साथ में बनवाये थे। जब हम पिताश्री से देहली में मिले तब हमने यह आशा रखी कि हम कोलकाता जाकर अपनी प्रदर्शनी का प्रयोग करें क्योंकि हमारे पास चित्रों का दूसरा सेट तैयार है। एक क्षण में पिताश्री ने सब बातें सोच लीं और तुरन्त उस बात का प्रबन्ध करके दिया। कोलकाता में कौन-सी परिस्थितियाँ सामने आयेंगी, उसका भी अन्दाज़ा लगाकर समझाया जिससे ऐसा लग रहा था कि पिताश्री कोलकाता में सदा काल से रहते हैं। उसी दिन, रात को देहली से डायरेक्ट एक भाई को कोलकाता भेजा तथा हमको मुंबई जाकर चित्रों सहित कोलकाता पहुँचने का आदेश दिया।

विनोद में भी ज्ञान

पिताश्री विनोदप्रिय भी थे। विनोद में भी ज्ञान देने की उनकी शक्ति अलौकिक थी। एक बार मधुबन में एक छोटा-सा सिम्पोज़ियम (परिसंवाद) रखा था तो पिताश्री ने कहा कि मैं उसका उद्घाटन करने के लिए आऊँगा। ठीक 9.30 बजे, जैसे कोई चीफ़ मिनिस्टर या गवर्नर उद्घाटन करने के लिए सजे-सजाये वेष में आते हैं, उसी तरह पिताश्री आ गये और साथ में सिम्पोज़ियम में क्या करना चाहिए, उस बात को अच्छी रीति समझाने के लिए – ''गीता का भगवान कौन ?'' उसके तीन चित्र लाये और कहा कि इस विषय पर अच्छी रीति से एक नया चित्र बने, उस पर आप सब विचार करना। हम बच्चों की बुद्धि सदा ज्ञान के मंथन के कार्य में लगी रहे – इस बात का ख़्याल पिताश्री जी को रहता था।

सेवा के लिए हमारी तैयारी सदैव सम्पूर्ण रहे और हमारा पुरुषार्थ भी शत-प्रतिशत रहे, उसी बात के लिए पिताश्री अपने शरीर के कष्ट का भी ख़्याल नहीं रखते थे। सेवा से लौटने पर पिताश्री हमसे पूछते थे कि वहाँ क्या समझाया।

निर्मल और प्रेमपूर्ण हृदय

मेरे जीवन में परिवर्तन का कारण भी पिताश्री थे। सन् 1953 से इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का परिचय होते हुए भी मेरी बुद्धि इस ईश्वरीय ज्ञान की कई बातें मानने के लिए तैयार नहीं थी। भक्तिमार्ग के शास्त्रों के अटपटे ज्ञान तथा अभिमान के कारण इस ज्ञान को समझते हुए भी मेरे मन में इसके प्रति श्रद्धा उत्पन्न नहीं होती थी। फिर भी पिताश्री ने हमको मधुबन आने का निमन्त्रण दिया था। इसलिए

s_book final.1.pmd 91 02-01-2005, 4:58 PM

सन् 1961 में हम सब मधुबन गये थे। वहाँ पर सम्मुख ही कई भाई-बहनों से बात हुई, कइयों के अनुभव सुने। पिताश्री के साथ में 8-10 दिन रहने का मौका मिला परन्तु मेरा दिल पिघला ही नहीं था। विदाई लेने का क्षण आ गया और विदाई देने के लिए पिताश्री मधुबन के पिछले रास्ते के वटवृक्ष तक आये। पिताश्री के नयनों में विदाई देते-देते स्फटिक समान प्रेम के दो मोती चमकने लगे। वे अनमोल मोती देखकर मेरे मन में बिजली चमक उठी। मन की चेतना जाग उठी, धड़कन तेज हो गयी और एक क्षण मात्र में दृढ़ संकल्प हुआ कि देखो, पिताश्री का दिल कितना निर्मल और प्रेम सम्पन्न है ! इतने महान् व्यक्ति होते हुए भी वे मेरे जैसे व्यक्ति को प्यार दे रहे हैं। निःस्वार्थ प्यार देने का महान् कर्त्तव्य महान अलौकिक विभूति ही कर सकती है। तो मैं क्यों नहीं आज से असत्य ज्ञान वाले बगुले की बजाय पिताश्री के नयनों में चमकता हुआ मोती चुगने वाला हँस बनूँ ? जो कार्य हज़ारों शब्दों से नहीं हो सका, वह कार्य पिताश्री के नयनों की दो प्रेम की बूँदों अथवा मोतियों ने किया। वटवृक्ष के नीचे खड़े हुए पिताश्री की वह झलक आज भी बुद्धि में तरोताजा है। ❄

मेरे जीवन में परिवर्तन का कारण भी पिताश्री थे। पिताश्री के नयनों में विदाई देते-देते स्फटिक समान प्रेम के दो मोती चमकने लगे। वे अनमोल मोती देखकर मेरे मन में बिजली चमक उठी।

शिव भगवानुवाच :

मूल बात है याद की। याद में रहने वाला कभी देह-अभिमान में नहीं आयेगा। उसे अशुद्ध संकल्प नहीं आयेंगे। योग से कर्मेन्द्रियाँ एकदम वश हो जाती हैं। बाप अभी तुम बच्चों को राइट और रांग को समझने की बुद्धि देते हैं।

बाप समझाते हैं मीठे बच्चे, सतोप्रधान बनने के लिए याद का चार्ट रखो। इसका तुम्हें शौक होना चाहिए। देखना चाहिए कि हम बाबा को कितना याद करते हैं।

बच्चे, तुम्हारी चलन बहुत कायदेसिर होनी चाहिए। आजकल दुनिया में फैशन की भी बड़ी मुसीबत है। बच्चे, तुम्हें साधारण रहना है और श्रेष्ठ कर्म करना है।

s_book final.1.pmd 92 02-01-2005, 4:42 PM

बाबा में मैंने सदा निमित्त भाव देखा

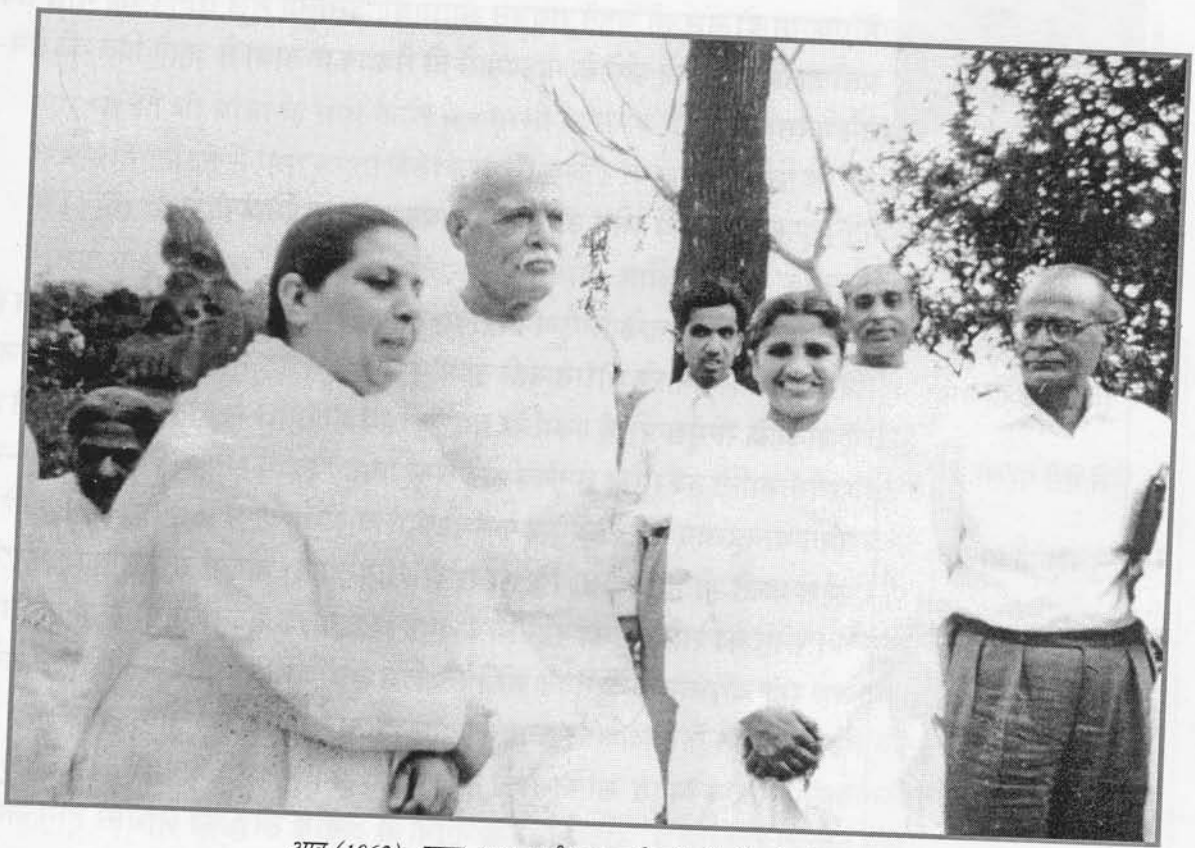

आबू (1962)– मम्मा, बाबा, दादी प्रकाशमणि जी और विश्वकिशोर भाऊ।

चण्डीगढ़ से ब्रह्माकुमार भ्राता अमीर चन्द जी अपना अनुभव लिखते हैं कि सर्वप्रिय साकार बह्मा बाबा से मेरी पहली मुलाकात पाण्डव भवन (मधुबन) में वर्ष 1959 के जून मास के पहले सप्ताह में हुई। उससे पहले मैं करनाल (हरियाणा) में सन् 1958 के अन्त में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सम्पर्क में आया था। मुझे वहाँ की शिक्षाओं को समझकर तथा उन्हें अपने व्यवहारिक जीवन में अपनाकर यह दृढ़ निश्चय हो गया था कि यह ज्ञान स्वयं निराकार ज्योति स्वरूप परमात्मा शिव साकार प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेकर इस नरकमय सृष्टि को पुनः श्रेष्ठाचारी तथा सतयुगी बनाने के लिए दे रहे हैं। अतः इस धरा पर

s_book final.1.pmd 93 02-01-2005, 4:58 PM

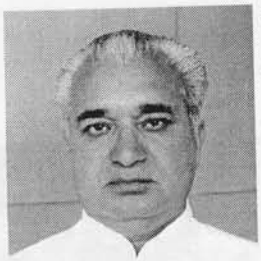

भ्राता अमीर चन्द जी

पुनः शीघ्र सतयुगी पावन सृष्टि का निर्माण होगा। यह दृढ़ विश्वास हो जाने पर साकार बाबा को सन्मुख मिलने की चाहना बहुत बढ़ गयी थी परन्तु उन दिनों वर्ष में एक या दो बार ही बहनें मधुबन आती थीं इसलिए मुझे तीन-चार मास तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। पत्रों के माध्यम से तो मैं साकार बाबा से अपने दिल की लेन-देन करता रहा।

साकार ब्रह्मा बाबा से मेरी पहली मुलाकात पाण्डव भवन में वर्ष 1959 में हुई। उससे पहले मैं करनाल में सन् 1958 में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सम्पर्क में आया था।

वे स्नेह और शक्ति का अद्भुत मिश्रण थे

जब मैं मधुबन के लिए अपने सेवा-स्थान से चला तो मन की स्थिति बहुत ही विचित्र थी। यात्रा के दौरान यही तड़प थी कि कब वह सुहावनी घड़ी आये, जब मैं बाबा के सन्मुख पहुँचूँ। आख़िर वह घड़ी भी आ गयी। मधुबन में प्रवेश करते ही असीम शान्ति का सुखद अनुभव होने लगा। उन दिनों का मधुबन बहुत छोटा-सा भवन था। स्नान आदि करके हम सभी प्यारे बाबा के कमरे की ओर बढ़े। कमरे में प्रवेश करते ही हमने देखा कि बाबा दो-तीन बहन-भाइयों से मुलाक़ात कर रहे थे। स्नेह का सागर उमड़ रहा था। बहन-भाइयों के नयनों में तो स्नेह की धारा बह रही थी, बाबा के नयन भी गीले दिखायी दिये। हम उनके पीछे बैठ गये। उनसे मिलने के बाद जब बाबा की दृष्टि हम बच्चों पर पड़ी तो मुझे लगा कि मेरे शरीर में एक बहुत शक्तिशाली करेण्ट का प्रवाह बहने लगा है। शक्तिशाली अनुभूति कराने के बाद बाबा के नयनों से असीम स्नेह का आभास होने लगा। कानों में जैसे कोई बहुत धीरे से, मधुरता से कह रहा हो – मीठे बच्चे, आराम से पहुँच गये ? आओ बच्चे ! आओ बच्चे ! ! ऐसे लगा जैसेकि अनेक जन्मों की प्रभु-मिलन की प्यास तृप्त हो रही हो। पल बीतते जा रहे थे परन्तु मेरे लिए स्वयं को रोकना कठिन होता जा रहा था। मुझे पता ही नहीं चला कि मैं अपने स्थान से कब उठा और बाबा की गोद में समा गया। स्नेह और शक्ति का अद्भुत मिश्रण था। बाबा का शरीर अति कोमल लेकिन उसके चारों ओर लाइट ही लाइट दिखायी पड़ रही थी। देह का भान समाप्त हो गया था। कुछ समय के बाद बाबा ने बहुत ही दुलार से मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए मुझे सचेत किया। नयन गीले, शरीर हल्का, आत्मा आत्म-विश्वास रूपी शक्ति से ओत-प्रोत थी।

s_book final.1.pmd 94 02-01-2005, 4:42 PM

बाप का घर सो बच्चों का घर

पहली बार मुझे 6-7 दिन बाबा के संग मधुबन में रहने का सुअवसर मिला। बहुत ही छोटा परिवार था। सारा दिन मम्मा-बाबा के संग ही बीतता था। कई बार भोजन भी बाबा के साथ करते थे। मुरली के समय भी सदा बाबा के सामने और समीप बैठने से ऐसा लगता जैसेकि मुरली चलाते समय बाबा मुझे ही देख रहा है। रात्रि को सोने के समय भी बाबा के कमरे के साथ ही हमारा कमरा होने के कारण एक छोटे-से परिवार की भासना आती थी। आख़िर लौटने का समय आ गया। मन की स्थिति बदलने लगी, मन लौटने को तैयार नहीं था। ईश्वरीय सुखों को त्याग कर कौन पुरानी दुनिया में जाना चाहेगा ? बहुत ही कठिनाई से मन को समझाते, अश्रुधारा बहाते बाबा से तथा मधुबन से विदाई ले आबू रोड़ रेलवे स्टेशन पर आ पहुँचे। मन उदास था। प्लेटफार्म पर बैठे-बैठे ही प्यारे बाबा को एक पत्र लिखा, ''मीठे बाबा, मुझे ऐसा लग रहा है जैसेकि एक फूल अपनी डाली से दूर हो गया हो। आप से अलग होकर मेरी शक्ति क्षीण होती दिखायी देती है, मन उदास है...''। अपने सेवा-स्थान पर लौटने के कुछ ही दिनों के बाद बाबा का पत्र आ गया। बहुत प्यार से बाबा ने लिखा, ''नूरे रतन अमीरचन्द बच्चे का पत्र पाया। यह फूल डाली से नहीं टूटा है, इस फूल को अपनी ख़ुशबू फैलाने की सेवा अर्थ भेजा गया है। बाप का घर सो आपका घर है, जब चाहो आ सकते हो...''। प्यारे बाबा के ये शब्द मेरे लिए आज भी वरदान साबित हो रहे हैं। मुझे आज भी यही आभास होता है कि मधुबन मेरा घर है और मैं हर मास वहाँ से सेवा के निमित्त जाता हूँ और 15-20 दिन के बाद पुनः लौट आता हूँ। मेरा कार्य ख़ुशबू फैलाना है, अन्य आत्माओं को पुनः दिव्यगुण सम्पन्न बनाना है – यह सदा स्मृति में रहता है। इस आयु में भी मधुबन इतना आना-जाना अति सहज और सुखद अनुभव होता है। मधुबन में बाबा के कमरे में जाते ही वही स्मृतियाँ आने लगती हैं। बाबा की आवाज़ कानों में धीमे-धीमे यही बार-बार कहती है – आओ बच्चे ! आओ बच्चे !! मीठे बच्चे, आराम से पहुँच गये ?

साकार बाबा का व्यक्तित्व अति प्रभावशाली और अति स्नेही था। समीप आने से अपनेपन की भासना आती थी। जब मैं पहली बार मधुबन आया था तब

जब बाबा की दृष्टि हम बच्चों पर पड़ी तो मुझे लगा कि मेरे शरीर में एक बहुत शक्तिशाली करेण्ट का प्रवाह बहने लगा है। शक्तिशाली अनुभूति कराने के बाद बाबा के नयनों से असीम स्नेह का आभास होने लगा।

s_book final.1.pmd 95 02-01-2005, 4:58 PM

मेरी आयु 19-20 वर्ष की थी। एक दिन प्यारे बाबा ने मेरा हाथ पकड़ा और अपने साथ ले चले। पाण्डव भवन के प्रत्येक कमरे में लेकर गये और बताया कि यह स्टोर है, यह भण्डारा है। स्टोर में भी क्या रखा है, बाबा दिखा भी रहे थे और सुना भी रहे थे। उस समय मुझे यह समझ में नहीं आया था कि इसके पीछे राज़ क्या है। अब मैं समझता हूँ कि बाबा मुझे महसूस करा रहे थे कि बाबा का यह स्थान सो मेरा अपना स्थान है और यहाँ की पूरी जानकारी होना मेरे लिए आवश्यक है।

ऐसे लगा जैसेकि अनेक जन्मों की प्रभु-मिलन की प्यास तृप्त हो रही हो। पल बीतते जा रहे थे परन्तु मेरे लिए स्वयं को रोकना कठिन होता जा रहा था। मुझे पता ही नहीं चला कि मैं कब उठा और बाबा की गोद में समा गया।

फ़िकर मत करो बाबा बैठा है

मेरी ट्रान्सफर फरवरी 1968 में चण्डीगढ़ हो गयी थी। मई 1968 में मैं बाबा से मिलने तथा कुछ आवश्यक दिशा-निर्देश लेने मधुबन आया था। प्यारे बाबा झोपड़ी में लेटे-लेटे मुझ से बात कर रहे थे। मैंने चण्डीगढ़ की सेवाओं का सारा समाचार सुनाया। बाबा बोले, चण्डीगढ़ राजधानी है। नया शहर बस रहा है। वहाँ ईश्वरीय सेवा का बहुत चान्स है। आगे चलकर आबादी बढ़ेगी। वहाँ पर एक अच्छा-सा संग्रहालय बनाना है। उसके लिए एक अच्छी कोठी किराये पर लेनी है, बहुत ही सुन्दर संग्रहालय बनेगा। बहुत-बहुत सेवा होगी।'' यह सुनकर मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। मैं जानता था कि वहाँ पर तो सेवाकेन्द्र का ख़र्चा भी ठीक से नहीं निकल रहा है। भाई-बहनों की संख्या भी बहुत कम है और बाबा कह रहे हैं कि वहाँ एक अच्छी कोठी लेनी है, संग्रहालय बनाना है। आँखों में आँसू देखकर बाबा उठकर बैठ गये, मुझे अपनी छाती से लगा लिया। बहुत प्यार किया और कहा कि इसका फ़िकर आप मत करो, बाबा बैठा है, सब प्रबन्ध बाबा करेगा। बस आप एक कार्य करो, अच्छी-सी कोठी देखो, किराये पर लेंगे और संग्रहालय बनायेंगे। विचित्र बात यह देखी कि मेरे चण्डीगढ़ लौटने से पहले ही बाबा ने बृजमोहन भाई, जो उन दिनों नंगल में लौकिक सेवा करते थे, उन्हें फोन किया और चण्डीगढ़ में संग्रहालय बनाने के लिए आदेश दिया। 18 जनवरी 1969 को बाबा नश्वर देह त्यागकर अव्यक्त फ़रिश्ता बन गये और अक्टूबर 1969 में चण्डीगढ़ में एक भव्य संग्रहालय का उद्घाटन हो गया। आज चण्डीगढ़ में 4000 वर्ग गज ज़मीन पर दो भव्य भवनों का निर्माण हो चुका है। सैकड़ों भाई-बहनें

s_book final.1.pmd 96 02-01-2005, 4:42 PM

नित्य प्रति सेवाकेन्द्र पर आकर अपने जीवन को दिव्य बना रहे हैं तथा अनकों कार्यक्रम स्थानीय, ज़ोनल तथा राष्ट्रीय स्तर के होते रहते हैं – यह सब देखकर प्यारे बाबा के बोल कानों में गूँजते हैं, ''चण्डीगढ़ में बहुत सेवा होगी''।

सदा कम्बाइण्ड स्वरूप ही सामने रहता था

साकार बाबा के दिनों में मुझे तो सदा स्मृति में यही रहता था कि साकार बाबा के तन का आधार लेकर निराकार शिव परमात्मा सतयुगी दुनिया का पुनर्निर्माण कर रहे हैं। सदा कम्बाइण्ड स्वरूप ही सामने रहता था। फिर भी प्रातः मुरली के समय जब बाबा सभी को दृष्टि देते थे तो उस समय बहुत ही शक्तिशाली स्वरूप का अनुभव होता था। मुरली के बीच-बीच में भी कई बार ऐसा लगता था कि स्वयं निराकार सर्वशक्तिवान, पतित-पावन अपनी वाणी के माध्यम से हम बच्चों में शक्ति भर रहे हैं तथा हमें पुनः सशक्त बना रहे हैं।

प्यारे बाबा में बहुत-सी ऐसी विशेषतायें मैंने देखीं जो अन्य किसी में नहीं देखीं। बाबा बहुत ही दृढ़ एवं निर्भय थे। स्वभाव मधुर एवं सरल था, ऊँची हस्ती परन्तु असीम निर्मानता, अद्भुत परख शक्ति एवं निर्णय शक्ति। स्पष्ट परन्तु सरल, सदा निमित्त भाव बाबा में देखा। करावनहार शिव बाबा है, अतः ब्रह्मा बाबा सदा स्वयं को निमित्त करनहार ही समझते थे।

बाबा स्नेह और शक्ति का अद्भुत मिश्रण था। बाबा का शरीर अति कोमल लेकिन उसके चारों ओर लाइट ही लाइट दिखायी पड़ रही थी। देह का भान समाप्त हो गया था।

देह-अहंकार को त्यागकर, सबके सामने अपनी भूल महसूस करना ही सच्चा प्रायश्चित है

यज्ञ-वत्सों से जब कभी कोई भूल हो जाती तो उनका मार्गदर्शन करने वाले प्यारे बाबा को मैंने एक कुशल सर्जन के रूप में देखा। वे एक ही झटके से सफल ऑपरेशन करते थे अर्थात् उनका संकल्प यही रहता था कि भूल करने वाला वत्स अपनी भूल सभी के सामने स्वीकार कर उस भूल को पुनः न करने का दृढ़ संकल्प ले। अतः बाबा किसी की भी भूल को छिपाने नहीं देते थे। उनका संकल्प यही रहा कि देह-अभिमान को त्याग कर प्रत्येक वत्स अपनी भूल को महसूस करे। ऐसे

s_book final.1.pmd 97 02-01-2005, 4:58 PM

वत्स को बाबा अपार स्नेह एवं शक्ति का आभास कराकर पुनः शक्तिशाली स्थिति में स्थित कराते थे।

प्यारे बाबा के संग से उनके कुछेक गुण स्वतः ही स्वयं में भी अनुभव होने लगते थे। मैं स्वयं भी अपने में निर्भयता एवं निर्मानता का गुण अनुभव करता हूँ। स्पष्टता का गुण भी मुझे अति प्रिय है। किसी बात पर निर्णय लेना भी सहज लगता है। भेदभाव की दृष्टि नहीं। ऐसा लगता है सभी बाबा के हैं और सभी अपने हैं। स्वयं की स्थिति की ओर विशेष ध्यान रहता है। एकान्त भी बहुत अच्छा लगता है। अपना संगठन शक्तिशाली बना रहे – यह संकल्प भी सदा ही रहता है। ❄

आबू– (दायें से बायें) पहली लाइनः दादी गुलजार, जशोदी बहन, बाबा, किशनी भण्डारी।
दूसरी लाइनः पालू दादी, इशु मुखी बहन, हरी बहन, सती दादी, चन्दा बहन।

s_book final.1.pmd 98 02-01-2005, 4:42 PM

सर्व को सन्तुष्ट करने वाले बाबा

दिल्ली– पालू दादी, सुदेश बहन, जर्मनी, रुक्मणी दादी, राजौरी गार्डेन और अन्य बच्चियाँ तथा बहनें।

जर्मनी की ब्रह्माकुमारी सुदेश बहन जी अपने अनुभव इस प्रकार सुनाती हैं कि मेरे लौकिक पिता जी इंजीनियर थे। हम दिल्ली में रहते थे। सन् 1957 में राजौरी गार्डेन सेन्टर से ज्ञान प्राप्त किया। उस समय मैं बी.ए. की पढ़ाई कर रही थी। मेरी आयु 16 साल थी। मुझे समाज सेवा का बहुत शौक था। कॉलेज के रास्ते में हरिजनों की बस्ती थी। उनका रहन-सहन देखकर मुझे लगता था कि ग़रीबों की सेवा करनी चाहिए। मैं जानती थी कि इनको पैसा दिया तो शराब, बीड़ी पीकर बर्बाद करेंगे, गरम कपड़े आदि दिये तो बेच देंगे तो कैसे इनकी सेवा करें – मैं यही सोचती थी। एक दिन घर पर मेरी मौसी आयी। जब हम दोनों टहलने गये तो मैंने उनके सामने अपने मन की इच्छा रखी कि मैं समाज सेवा करना चाहती हूँ।

s_book final.2.pmd 99 03-01-2005, 10:32 AM

ब्रह्माकुमारी सुदेश बहन जी

सन् 1957 में राजौरी गार्डेन सेन्टर से ज्ञान प्राप्त किया। उस समय मैं बी.ए. की पढ़ाई कर रही थी। मेरी आयु 16 साल थी। मुझे समाज सेवा का बहुत शौक था।

उन्होंने कहा कि सिर्फ ग़रीब ही दु:खी नहीं हैं, अमीर भी दु:खी हैं। किसी को पैसे देने से ये सुधरते नहीं हैं और दु:खी सुखी नहीं होते। उनकी ऐसी सेवा करो जो उनके मन की दु:ख-अशान्ति मिटे और वे सुख-चैन पायें। अगर तुम्हें सच्ची समाज सेवा करनी है तो मेरे घर पर आओ, वहाँ नज़दीक चानना मार्केट में ब्रह्माकुमारी आश्रम है, वहाँ जाकर सीखो। मैं देखती हूँ कि लोग उनके पास रोते हुए जाते हैं और मुस्कराते हुए लौटते हैं। उनके जीवन में परिवर्तन आ जाता है। अगर तुमको समाज सेवा करनी है तो उन जैसी सेवा करो जो किसी के दु:ख मिट जायें और वह सुखी बन जाये तथा दूसरों का भी जीवन बना दे। मैं बचपन से ही बहुत भक्ति करती थी, रोज़ शाम को सात आरती गाती थी। नौ साल की उम्र से ही सत्संग करने जाती थी।

ऐसा अनुभव हो रहा था कि चन्द्रमा की बहुत शक्तिशाली किरणें मेरे आसपास हैं

सन् 1957 में बाबा दिल्ली में आये थे, उस समय मुझे पहचान नहीं थी कि बाबा कौन हैं। सत्संग के नाम से मेरी मौसी और कॉलेज की सहेली ने निमंत्रण दिया था। बाबा दिल्ली होकर शायद पंजाब टूअर पर जा रहे थे। सितम्बर महीने की शाम का समय था। सत्संग में रुचि होने के कारण मैं वहाँ पहुँची परन्तु एक टीचर बहन ने कहा कि यह सत्संग नयों के लिए नहीं है, जो रोज़ आते हैं उनके लिए है। मैंने उनसे कहा कि मैं तो बचपन से ही सत्संग करती आयी हूँ, मैं समझ जाऊँगी। फिर भी वे मानी नहीं। हमारे साथ जो मेरी सहेली थी उसने कहा कि कोई बात नहीं बहन जी, इसको अगर कुछ समझ में नहीं आयेगा तो हम समझा देंगे। वैसे तो इसने कुछ-कुछ समझा है, इसकी मौसी घर में इसको ज्ञान सुनाती रहती है, फिर भी हम इसको प्वाइंट क्लीयर कर देंगे। सब इकट्ठे हो गये। मैं जाकर क्लास के दरवाज़े के पास ही बैठ गयी ताकि समझ में यदि न आये और बहन जी कहे कि तुम चली जाओ तो मैं सहज ही बाहर जा सकूँ। मैं वहाँ आँखें बन्द करके लौकिक रीति से ध्यान में बैठ गयी। मैंने यह समझा था कि जब महात्मा जी आयेंगे तो सब नारा लगायेंगे 'महात्मा जी की जय हो' अथवा 'जय महाराज जी जय हो',

s_book final.2.pmd 100 03-01-2005, 10:03 AM

तब मैं आँखें खोल लूँगी। सब योग में बैठे थे। बाबा शान्ति से आकर संदली पर बैठ गये। मुझे पता ही नहीं चला था। अचानक मैंने आँखें खोली तो बाबा सामने बैठे हुए थे। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि ये महात्मा जी कब आकर बैठ गये ! जैसे ही मेरी दृष्टि बाबा पर पड़ी तो बाबा लाइट ही लाइट दिखायी पड़े। मैंने समझा कि शायद यह सूर्य का प्रतिबिंब होगा। मेरे से आगे थोड़ी जगह ख़ाली पड़ी थी, मैं वहाँ जाकर बैठ गयी। वहाँ भी वही दृश्य, बाबा के चारों तरफ़ लाइट ही लाइट दिखायी पड़ी। उस समय मुझे यह मालूम नहीं था कि यह बाबा का फ़रिश्ता स्वरूप है। लेकिन वह प्रकाश का रूप बहुत सुन्दर था, मनभावन था। वह इतना आकर्षक था जो मन करता था कि उसको देखते ही रहें। मुझे ऐसा लगने लगा कि कहीं मैं स्वप्न तो नहीं देख रही हूँ। फिर मैंने अपने हाथ को चुटकी काट करके देखा तो पाया कि मैं जाग्रत अवस्था में थी। उस समय प्रश्न भी उठ रहे थे और आनन्द भी आ रहा था। मैंने आँखें बन्द कर ली। मुझे अनुभव हो रहा था कि चन्द्रमा की बहुत शक्तिशाली किरणें मेरे आसपास हैं, वे मेरे अन्दर जा रही हैं और मेरे से बाहर भी आ रही हैं। वे बहुत आनन्ददायक शीतल किरणें थीं। पहले बाबा का जो प्रकाश रूप देखा वह बहुत आकर्षित करने वाला था और ये किरणें आनन्द देने वाली, चन्द्रमा की शीतल किरणों जैसी थीं। मैं आनन्द का अनुभव कर रही थी, फिर भी मन के एक कोने में यह भी संशय आ रहा था कि यह कोई जादू तो नहीं है ! मैंने अपनी माता जी की तरफ़ देखा तो वह मस्त होकर बाबा की वाणी सुन रही थी। वह बहुत समय से आश्रम पर जाती थी। मगन होकर सुन रही माँ को देखकर मैंने भी सोचा कि चलो मैं भी सुन लूँ कि महात्मा जी क्या सुना रहे हैं।

सन् 1957 में बाबा दिल्ली में आये थे, उस समय मुझे पहचान नहीं थी कि बाबा कौन हैं। सत्संग के नाम से मेरी मौसी और कॉलेज की सहेली ने निमंत्रण दिया था। बाबा दिल्ली होकर शायद पंजाब टूअर पर जा रहे थे।

यद् भावं तद् भवति – जिसको जो चाहिए वो मिल गया

बाबा लाइट के बारे में ही बोल रहे थे। क्या सुना रहे हैं, यह मुझे पूरा समझ में नहीं आता था लेकिन कुछ शब्द तो समझ में आते थे। फिर मैं सोचने लगी कि अजीब बात है, ये महात्मा जी बोलते भी लाइट हैं और इनकी बॉडी भी लाइट है ! शायद खाते भी लाइट होंगे। ये पैदा ही शायद ऐसे हुए होंगे। इस प्रकार मन में प्रश्नों का एक प्रवाह ही चल रहा था। बाबा की मुरली से मुझे कुछ समझ में नहीं

s_book final.2.pmd 101 03-01-2005, 10:32 AM

ब्रह्माकुमारी सुदेश बहन जी

सन् 1957 में राजौरी गार्डेन सेन्टर से ज्ञान प्राप्त किया। उस समय मैं बी.ए. की पढ़ाई कर रही थी। मेरी आयु 16 साल थी। मुझे समाज सेवा का बहुत शौक था।

उन्होंने कहा कि सिर्फ ग़रीब ही दु:खी नहीं हैं, अमीर भी दु:खी हैं। किसी को पैसे देने से ये सुधरते नहीं हैं और दु:खी सुखी नहीं होते। उनकी ऐसी सेवा करो जो उनके मन की दु:ख-अशान्ति मिटे और वे सुख-चैन पायें। अगर तुम्हें सच्ची समाज सेवा करनी है तो मेरे घर पर आओ, वहाँ नज़दीक चानना मार्केट में ब्रह्माकुमारी आश्रम है, वहाँ जाकर सीखो। मैं देखती हूँ कि लोग उनके पास रोते हुए जाते हैं और मुस्कराते हुए लौटते हैं। उनके जीवन में परिवर्तन आ जाता है। अगर तुमको समाज सेवा करनी है तो उन जैसी सेवा करो जो किसी के दु:ख मिट जायें और वह सुखी बन जाये तथा दूसरों का भी जीवन बना दे। मैं बचपन से ही बहुत भक्ति करती थी, रोज़ शाम को सात आरती गाती थी। नौ साल की उम्र से ही सत्संग करने जाती थी।

ऐसा अनुभव हो रहा था कि चन्द्रमा की बहुत शक्तिशाली किरणें मेरे आसपास हैं

सन् 1957 में बाबा दिल्ली में आये थे, उस समय मुझे पहचान नहीं थी कि बाबा कौन हैं। सत्संग के नाम से मेरी मौसी और कॉलेज की सहेली ने निमंत्रण दिया था। बाबा दिल्ली होकर शायद पंजाब टूअर पर जा रहे थे। सितम्बर महीने की शाम का समय था। सत्संग में रुचि होने के कारण मैं वहाँ पहुँची परन्तु एक टीचर बहन ने कहा कि यह सत्संग नयों के लिए नहीं है, जो रोज़ आते हैं उनके लिए है। मैंने उनसे कहा कि मैं तो बचपन से ही सत्संग करती आयी हूँ, मैं समझ जाऊँगी। फिर भी वे मानी नहीं। हमारे साथ जो मेरी सहेली थी उसने कहा कि कोई बात नहीं बहन जी, इसको अगर कुछ समझ में नहीं आयेगा तो हम समझा देंगे। वैसे तो इसने कुछ-कुछ समझा है, इसकी मौसी घर में इसको ज्ञान सुनाती रहती है, फिर भी हम इसको प्वाइंट क्लीयर कर देंगे। सब इकट्ठे हो गये। मैं जाकर क्लास के दरवाज़े के पास ही बैठ गयी ताकि समझ में यदि न आये और बहन जी कहे कि तुम चली जाओ तो मैं सहज ही बाहर जा सकूँ। मैं वहाँ आँखें बन्द करके लौकिक रीति से ध्यान में बैठ गयी। मैंने यह समझा था कि जब महात्मा जी आयेंगे तो सब नारा लगायेंगे 'महात्मा जी की जय हो' अथवा 'जय महाराज जी जय हो',

s_book final.2.pmd 100 03-01-2005, 10:03 AM

तब मैं आँखें खोल लूँगी। सब योग में बैठे थे। बाबा शान्ति से आकर संदली पर बैठ गये। मुझे पता ही नहीं चला था। अचानक मैंने आँखें खोली तो बाबा सामने बैठे हुए थे। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि ये महात्मा जी कब आकर बैठ गये ! जैसे ही मेरी दृष्टि बाबा पर पड़ी तो बाबा लाइट ही लाइट दिखायी पड़े। मैंने समझा कि शायद यह सूर्य का प्रतिबिंब होगा। मेरे से आगे थोड़ी जगह ख़ाली पड़ी थी, मैं वहाँ जाकर बैठ गयी। वहाँ भी वही दृश्य, बाबा के चारों तरफ़ लाइट ही लाइट दिखायी पड़ी। उस समय मुझे यह मालूम नहीं था कि यह बाबा का फ़रिश्ता स्वरूप है। लेकिन वह प्रकाश का रूप बहुत सुन्दर था, मनभावन था। वह इतना आकर्षक था जो मन करता था कि उसको देखते ही रहें। मुझे ऐसा लगने लगा कि कहीं मैं स्वप्न तो नहीं देख रही हूँ। फिर मैंने अपने हाथ को चुटकी काट करके देखा तो पाया कि मैं जाग्रत अवस्था में थी। उस समय प्रश्न भी उठ रहे थे और आनन्द भी आ रहा था। मैंने आँखें बन्द कर ली। मुझे अनुभव हो रहा था कि चन्द्रमा की बहुत शक्तिशाली किरणें मेरे आसपास हैं, वे मेरे अन्दर जा रही हैं और मेरे से बाहर भी आ रही हैं। वे बहुत आनन्ददायक शीतल किरणें थीं। पहले बाबा का जो प्रकाश रूप देखा वह बहुत आकर्षित करने वाला था और ये किरणें आनन्द देने वाली, चन्द्रमा की शीतल किरणों जैसी थीं। मैं आनन्द का अनुभव कर रही थी, फिर भी मन के एक कोने में यह भी संशय आ रहा था कि यह कोई जादू तो नहीं है ! मैंने अपनी माता जी की तरफ़ देखा तो वह मस्त होकर बाबा की वाणी सुन रही थी। वह बहुत समय से आश्रम पर जाती थी। मगन होकर सुन रही माँ को देखकर मैंने भी सोचा कि चलो मैं भी सुन लूँ कि महात्मा जी क्या सुना रहे हैं।

सन् 1957 में बाबा दिल्ली में आये थे, उस समय मुझे पहचान नहीं थी कि बाबा कौन हैं। सत्संग के नाम से मेरी मौसी और कॉलेज की सहेली ने निमंत्रण दिया था। बाबा दिल्ली होकर शायद पंजाब टूअर पर जा रहे थे।

यद् भावं तद् भवति – जिसको जो चाहिए वो मिल गया

बाबा लाइट के बारे में ही बोल रहे थे। क्या सुना रहे हैं, यह मुझे पूरा समझ में नहीं आता था लेकिन कुछ शब्द तो समझ में आते थे। फिर मैं सोचने लगी कि अजीब बात है, ये महात्मा जी बोलते भी लाइट हैं और इनकी बॉडी भी लाइट है ! शायद खाते भी लाइट होंगे। ये पैदा ही शायद ऐसे हुए होंगे। इस प्रकार मन में प्रश्नों का एक प्रवाह ही चल रहा था। बाबा की मुरली से मुझे कुछ समझ में नहीं

s_book final.2.pmd 101 03-01-2005, 10:32 AM

आया सिवाय लाइट शब्द के। जब बाबा की मुरली पूरी हुई तो सब उठे। वे उठे थे शायद बाबा से टोली लेने के लिए। लेकिन मैं समझी सत्संग पूरा हो गया तो मैं बाहर निकल गयी। घर जाते समय रास्ते में मैंने माँ को अपना अनुभव सुनाया। उन्हें आश्चर्य हुआ और कहा कि मुझे तो कोई लाइट नहीं दिखायी पड़ी। यह तो अच्छा है। फिर माँ ने अपना अनुभव सुनाया कि यह ज्ञान बहुत सुन्दर है, मुझे सब सवालों का जवाब मिल गया, सब समस्याओं का हल मिल गया। यह बहुत श्रेष्ठ ज्ञान है। गीता का ज्ञान मुझे स्पष्ट हो गया। मेरे मन में जितने भी संशय थे उन सबका निवारण हो गया। यही सच्चा ज्ञान है। अब देखिये, हम दोनों एक स्थान पर बैठे थे और एक को ही देख रहे थे और एक से ही सुन रहे थे परन्तु उनकी थी ज्ञान की अनुभूति और मेरी थी लाइट की अनुभूति। फिर भी मेरे मन में यह प्रश्न रह गया कि बाबा में इतनी लाइट कहाँ से आ गयी। अगले दिन कालेज में मैंने अपनी सहेली से कहा कि मुझे ऐसा-ऐसा अनुभव हुआ। उसने कहा, तुम बहुत सेन्सीटिव होंगी, तुमने वायब्रेशन्स कैच किये होंगे। क्या तुमको पता है कि उस शरीर में भगवान आते हैं, उस समय भगवान प्रवेश कर ज्ञान सुना रहे थे। मैंने कहा, भगवान आते हैं तो उस समय कोई बिजली तो चमकी नहीं, कोई गजगोर हुआ नहीं, कोई आकाशवाणी हुई नहीं। उसने कहा कि अगर भगवान बिजली चमका कर वाणी सुनायेंगे तो वह किसको सुनायी पड़ेगी ? हम बच्चों को समझाने के लिए भगवान हमारी भाषा में ही बात करते हैं। उस समय उसकी बात मेरी समझ में नहीं आयी। यह प्रश्न तो दिमाग में रह गया कि सर्वशक्तिवान भगवान उस शरीर में इतने साधारण रूप से कैसे आते हैं ? फिर उसने एक रूमाल का उदाहरण देकर बताया कि एक रूमाल उठाने के लिए हमें पूरी ताक़त इस्तेमाल करने की ज़रूरत नहीं है, जब भारी चीज़ उठानी है तो ताक़त इस्तेमाल करेंगे। सर्वशक्तिवान परमात्मा अपनी शक्ति मनुष्य को जिन्दा करने के लिए, गजगोर करने के लिए प्रयोग नहीं करते। मनुष्यात्माओं के पाप भस्म करते हैं ज्ञान और राजयोग सिखाकर। इस बात ने मेरे मन में उत्सुकता पैदा की कि परमात्मा शरीर में कैसे प्रवेश करते हैं और कैसे ज्ञान सुनाते हैं ! अगले दिन मैं कॉलेज से सीधा राजौरी गार्डेन सेन्टर पर गयी। पढ़ते-पढ़ते मुझे मुरली अच्छी समझ में आने लगी। उस समय मुझे एक किताब मिली थी 'मनुष्य मत और ईश्वरीय मत में अन्तर', उसमें लाल अक्षरों में

अचानक मैंने आँखें खोली तो बाबा सामने बैठे हुए थे। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि ये महात्मा जी कब आकर बैठ गये ! जैसे ही मेरी दृष्टि बाबा पर पड़ी तो बाबा लाइट ही लाइट दिखायी पड़े।

s_book final.2.pmd 102 03-01-2005, 10:03 AM

लिखा हुआ था कि ईश्वर क्या कहते हैं और काले अक्षरों में या नीले अक्षरों में छपा हुआ था कि मनुष्य क्या कहते हैं। उस पुस्तक को और मुरलियों को पढ़ने से मुझे यह बिल्कुल समझ में आ गया कि परमात्मा निराकार ज्योति स्वरूप हैं और ब्रह्मा-विष्णु-शंकर द्वारा दिव्य कर्त्तव्य कर रहे हैं। इस प्रकार, रोज़ कॉलेज से दोपहर के समय सेन्टर पर आकर मुरली का अध्ययन करती थी और नोट्स तैयार करके ले जाती थी। घर में आकर शाम को उन नोट्स को पढ़ती थी।

बाबा, आप परमधाम से ब्रह्मा-तन में आ चुके हैं, क्या मेरे लिए आप कमरे से नीचे नहीं आ सकते ?

कुछ दिनों के बाद पंजाब का टूअर पूरा करके आबू वापस जाते समय बाबा फिर दिल्ली, राजौरी गार्डेन में आये। रोज़ की तरह मैं दोपहर में सेन्टर पर मुरली पढ़ रही थी। उतने में दो बहनें आयीं और मेरे से पूछा कि क्या आप बाबा से मिलने आयी हैं ? मुझे मालूम नहीं था कि बाबा यहाँ आये हैं। मैंने आश्चर्यचकित होकर पूछा, बाबा यहाँ हैं क्या ? उन्होंने कहा कि हाँ, हम बाबा से मिलने के लिए आयी हैं। ऐसे कहकर वे अन्दर चली गयी। मैंने जाकर बहन जी से कहा कि मुझे भी बाबा से मिलना है। उन्होंने कहा कि यह बाबा से मिलने का समय नहीं है, आप कल सुबह क्लास में आना। मैं फंक रह गयी। फिर मैं मुरली पूरी करके रोज़ की तरह योग करने लगी। उस योग में मैं ऐसे ही बाबा से बात कर रही थी जैसे सम्मुख बात करते हैं। मुझे निश्चय हो चुका था कि परमात्मा ब्रह्मा तन में प्रवेश हो चुके हैं और ईश्वरीय ज्ञान सुनाते हैं। मैं योग में बाबा से बात करने लगी, ''शिव बाबा, आप परमधाम से यहाँ साकार में आ चुके हैं, वो भी यहीं ऊपर आये हैं कमरे में। क्या आप कमरे से नीचे नहीं आ सकते हो मुझसे मिलने के लिए ? दीदी कहती है कि अभी बाबा से नहीं मिल सकती हो, कल सुबह आओ। सुबह-सुबह मुझे घर से कौन आने देगा ?'' ऐसी रूहरिहान करके मैं मुरली रखकर बाहर जा ही रही थी कि बिल्डिंग के पीछे की तरफ़, बाबा को कमरे से उतरते देखा। शायद बाबा भोजन करके थोड़ा टहलने के लिए निकले होंगे। बाबा को देखते ही ख़ुशी के मारे मेरे मुँह से निकला, ''बाबा'' ! नोट्स वहीं छोड़कर, दौड़कर गयी और छोटी

बाबा के चारों तरफ़ लाइट ही लाइट दिखायी पड़ी। उस समय मुझे यह मालूम नहीं था कि यह बाबा का फ़रिश्ता स्वरूप है। वह प्रकाश का रूप बहुत सुन्दर था, मनभावन था। वह इतना आकर्षक था जो मन करता था कि उसको देखते ही रहें।

s_book final.2.pmd 103 03-01-2005, 10:32 AM

बच्ची की तरह बाबा से लिपट गयी। बाबा भी उतने ही प्यार से बच्ची, बच्ची कहते मेरे सिर पर हाथ फेरने लगे। बहुत समय से बिछुड़े हुए बाप और बच्ची का वो मिलन था। दोनों तरफ़ से प्यार का पारावार न था। थोड़े समय के बाद बाबा ने कहा, ''बच्ची, तुम कल सुबह आ सकती हो। कोई तुमको रोकेगा नहीं। सुबह बाबा से मिलना।'' मैं सोच में पड़ गयी कि मैंने तो यह बात योग में कही थी, बाबा को मेरी पुकार सुनायी पड़ी, उसका उत्तर बाबा ने मुझे अभी साकार में सुना दिया। मुझे बहुत ख़ुशी हो गयी कि बाबा ने मेरा सुना और स्वीकार कर लिया। मुझे निश्चय हो गया कि भगवान ने कहा है कि तुम कल सुबह आ जाना, तुम्हें कोई रोकेगा नहीं। मैं ख़ुशी-ख़ुशी से निश्चिन्त होकर घर गयी। रात को मैंने मम्मी से कहा, कल सुबह मुझे सेन्टर पर जाना है। उन्होंने कहा, सुबह-सुबह तुम्हारे पापा कैसे जाने देंगे ? मैंने कहा, आप बताना कि जैसे उस युनिवर्सिटी में पढ़ने जाती है वैसे इस युनिवर्सिटी में पढ़ने गयी है। मैं सुबह घर से निकल गयी बाबा से मिलने। लेकिन जब मैं सेन्टर पहुँची तब तक बाबा की मुरली पूरी हो चुकी थी। दीदी बाबा से रूहरिहान कर रही थी। इस बीच में बाबा के साथ मेरा ऐसा सम्बन्ध जुट गया था कि अनुभव हो रहा था कि यह मेरा मरजीवा जन्म है, यही मेरा सच्चा पिता है। बाबा ने कहा, ''बच्ची, मैं तुम्हारे पिता को एक चिट्ठी लिखकर दूँगा कि आपकी बेटी हमारे पास आती है।'' तुरन्त मैंने उत्तर दिया, ''बाबा आप ही मेरे पिता हैं, क्या आपको पता नहीं है कि मैं यहाँ आती हूँ।'' बाबा मेरा चेहरा देखने लगे और बोले, यह तो बड़ी मज़बूत है। फिर बाबा मधुबन लौट गये।

बाबा
लाइट के बारे में ही
बोल रहे थे।
मैं सोचने लगी कि
अजीब बात है,
ये महात्मा जी बोलते
भी लाइट है और
इनकी बॉडी भी
लाइट है ! शायद
खाते भी लाइट होंगे।
ये पैदा ही शायद
ऐसे हुए होंगे।

रक्षा बन्धन का समय था। मैंने बाबा को राखी भेजी। रिटर्न में बाबा ने एक रूमाल और उसमें पैसे बाँधकर भेजे। उसमें एक चिट्ठी भी रखी थी जिसमें बाबा ने लिखा था – ''बच्ची, जब बाबा के साथ बच्चे का सम्बन्ध जुट जाता है तब बच्चे का पाई पैसे का जीवन हीरे जैसा बन जाता है।'' बाबा के पत्र के आधार पर ही मेरा पुरुषार्थ चलता था। बाबा के साथ मेरा पत्र-व्यवहार बहुत अच्छा था।

बाबा ने मुझे विविध वर्ग वालों की सेवा करना सिखाया

सन् 1959 में मेरा मधुबन में आना हुआ। उस समय यह ट्रेनिंग सेन्टर, विशाल

s_book final.2.pmd 104 03-01-2005, 10:03 AM

भवन आदि बने नहीं थे। अब जहाँ बाबा की झोपड़ी है वहाँ पार्टी वालों के लिए टेंट लगे रहते थे। कोई बड़ा व्यक्ति आता था या बहुत बुजुर्ग आते थे तो उनके लिए बाहर नज़दीक के मकान किराये पर लेते थे और उनमें ठहराते थे। अभी निर्वैर भाई का जो ऑफ़िस है वहाँ एक कमरा था, वहाँ विजिटर्स को बिठाना, फार्म भरवाना, उनको कोर्स कराना आदि होता था। उस समय बाबा मुझे आगन्तुकों को समझाने के लिए कहते थे। बाद में बाबा मुझसे पूछते थे कि बच्ची, तुमने उनको क्या समझाया। सुनने के बाद बाबा बताते थे कि किसको कैसे समझाना है। बाबा ने हमें यह ट्रेनिंग दी कि कैसे नब्ज को जाना जाता है, विद्यार्थी को कैसे समझायें, ऑफ़िसर्स को कैसे समझायें। कभी-कभी बाबा बाहर खड़े होकर सुनते थे कि बच्चे कैसे समझा रहे हैं, फिर अगले दिन करेक्शन भी बता देते और अच्छा सुनाया होता तो महिमा करते थे। इस प्रकार बाबा ने बाप बनकर मेरी परीक्षा ली कि इसको बाप पर निश्चय है या नहीं और टीचर बनकर दूसरों को कैसे शिक्षा दी जाती है, यह भी सिखाया।

मुझे एक किताब मिली थी 'मनुष्य मत और ईश्वरीय मत में अन्तर', उसमें लाल अक्षरों में लिखा हुआ था कि ईश्वर क्या कहते हैं और काले अक्षरों में या नीले अक्षरों में छपा हुआ था कि मनुष्य क्या कहते हैं

बाबा हर बच्चे की हर आश को पूरी करते थे

पहली बार जब मैं मधुबन आयी थी तो सुबह और शाम को गुड मार्निंग और गुड नाइट करने बाबा के कमरे में जाती थी। एक रात को लच्छु दादी टार्च लेकर, सबको मच्छरदानी, बिस्तर आदि ठीक मिले हैं या नहीं, यह देखने कमरों में जा रही थी। उस समय मैं भी उनके साथ थी। यह कार्य पूरा होने के बाद फिर मैं बाबा के पास गयी। बाबा ने समझ लिया कि यह दोबारा आयी है माना कुछ बात है। बाबा ने पूछा कि बच्ची, क्या तुम्हें कोई आश है ? मैंने कहा, हाँ बाबा, मेरी एक आश है। बाबा ने पूछा, क्या ? मैंने कहा, बाबा, मैं ध्यान में जाना चाहती हूँ। मैं ध्यान में क्यों जाना चाहती थी इसका भी कारण है। जब राजौरी गार्डेन में गुरुवार के दिन भोग लगता था तो गुलजार दादी भोग लगाने आती थी। मैं उनके सामने ही बैठती थी। जब भोग के गीत बजते थे तब मुझे भी अनुभव होता था कि मैं भी जा रही हूँ। गुलजार दादी को उस समय झटका लगता था तो वे चली जाती थी। झटका मुझे लगता था लेकिन मैं नहीं जाती थी। वह वतन में जाकर भगवान से

कैसे मिलन मनाती है, मैं वह देखना चाहती थी, अनुभव करना चाहती थी। इसलिए मैंने बाबा से कहा, बाबा मैं ध्यान में जाना चाहती हूँ, बाबा से मिलन मनाना चाहती हूँ। बाबा ने कहा, अच्छा बच्ची, सुबह पाँच बजे आ जाना। ख़ुशी के मारे मैं रात भर सोयी नहीं। सुबह ठीक पाँच बजे नहा-धोकर, नये कपड़े पहनकर तैयार होकर मैं बाबा के पास गयी। बाबा अपने सामने बिठाकर दृष्टि देने लगे। जब बाबा दृष्टि दे रहे थे तब सारे कमरे में लाल सुनहरी प्रकाश फैल गया। बाबा की आँखों से नूर निकल रहा था। वह इतना सुन्दर, मीठा और आकर्षक था कि मुझे उसका वर्णन करना नहीं आ रहा है। बाबा का वो चेहरा, वो नयन, वो रोशनी मन को मुदित करने वाले थे। मुझे ऐसा अनुभव हो रहा था कि मैं सागर में समा गयी हूँ। यह अनुभव करते-करते मुझे यह महसूस हुआ कि अभी शिव बाबा ब्रह्मा तन में हैं। मैं अपने आप में कहने लगी कि जिनसे मुझे मिलने जाना था वो तो यहाँ आ गये। मैं वहाँ जाना नहीं चाहती। मन ही मन कहने लगी कि बाबा मुझे ध्यान में नहीं जाना है, मुझे ध्यान में नहीं जाना है। मुझे बाबा से मिलने का अनुभव करना था, वह तो अभी यहीं हो रहा है, बाबा, मुझे यह छोड़कर वहाँ नहीं जाना है। फिर बाबा ने मीठी दृष्टि देते हुए कहा, बच्ची, तुमको वतन में जाने की ज़रूरत नहीं, वतन ही तुम्हारे पास आ जायेगा। बाबा ने यह भी कहा कि तुम्हारी दृष्टि से सामने वाली आत्माओं को बाबा की दृष्टि का अनुभव होगा। बाबा के ये महावाक्य मेरे लिए ज़िन्दगी में वरदान बन गये। जब बाबा को भोग लगता है तब आज भी मुझे अनुभव होता है कि मैं वतन में हूँ, हालाँकि मैं वतन में नहीं जाती हूँ परन्तु मुझे ऐसा अनुभव होता है कि मैं वतन में बैठी हूँ, बाबा से मिल रही हूँ। साकार वतन में होते हुए भी साकार का कोई आकर्षण, प्रभाव नहीं है – ऐसा अनुभव होता है। ध्यान में न जाते हुए भी ध्यान में जाने की अनुभूति, सन्देश जानने की अनुभूति होती है।

बाबा को देखते ही ख़ुशी के मारे मेरे मुँह से निकला, "बाबा" ! नोट्स वहीं छोड़कर, दौड़कर गयी और छोटी बच्ची की तरह बाबा से लिपट गयी। बाबा भी उतने ही प्यार से बच्ची, बच्ची कहते मेरे सिर पर हाथ फेरने लगे।

बाबा ने मुझे 'ज्ञान-बुलबुल' का टाइटिल दिया

यह सन् 1967 की बात है। मैं दिल्ली से मधुबन आयी थी। रात को हिस्ट्री हॉल में अनुभव सुनाने लगी तो मुझे खड़ाऊँ की आवाज़ सुनायी पड़ी। मैंने समझा

s_book final.2.pmd 106 03-01-2005, 10:03 AM

कि बाबा आ गये, तो मैं चुप हो गयी। बाबा आये नहीं तो मैंने समझा यह मेरा भ्रम होगा। फिर सुनाना शुरू किया। थोड़े समय के बाद बाबा अन्दर आये और मेरे से कहने लगे कि 'ज्ञान-बुलबुल' क्या गीत गा रही थी ? बहुत अच्छा गीत गा रही थी। बाबा के ये महावाक्य भी मेरे लिए वरदान बन गये। बाबा के इन महावाक्यों ने मुझे यह प्रेरणा दी कि ज्ञान को गीत की तरह ही गाना है। तब से मुझे जो प्वाइंट्स अच्छी लगती थीं उनको पहले अन्दर में गुनगुनाती थी और बाद में गीत की तरह सुनाती थी। इस तरह मुझ में ज्ञान का रस भर गया। बाबा के इस वरदान से मुझे ऐसे लगने लगा कि मैं ज्ञान को गुनगुना रही हूँ और गीत के रूप में दूसरों को सुना रही हूँ। बाबा ने मुझे 'ज्ञान-बुलबुल' अथवा 'ज्ञान-नाइटिंगेल' का टाइटिल दिया।

मैंने बाबा को राखी भेजी। रिटर्न में बाबा ने एक रूमाल और एक चिट्ठी भी भेजी थी जिसमें बाबा ने लिखा था – "बच्ची, जब बाबा के साथ बच्चे का सम्बन्ध जुट जाता है तब बच्चे का पाई पैसे का जीवन हीरे जैसा बन जाता है।"

सबसे पहले जयपुर में म्यूजियम बना था। बाबा ने बहुत शौक से वह म्यूजियम बनवाया था। बाबा ने मुझे टेलिग्राम किया कि बच्ची, तुम जयपुर जाओ। मैं दिल्ली से जयपुर जाकर वहाँ सेवा करने लगी। वहाँ से मैं ख़ास बाबा की मुरली सुनने के लिए बीच-बीच में मधुबन आती थी। एक बार मैं सवेरे की ट्रेन से आयी और आकर क्लास में पीछे बैठ गयी। बाबा ने मुझे देखकर, "आओ मेरी महारथी बच्ची, आओ मेरी रूहे गुलाब बच्ची" कहकर, आगे बुलाया। मैं जाकर बाबा के सामने बैठी। बाबा ने कहा, "नहीं बच्ची, यहाँ बैठो" कहकर छोटे हॉल में जिस संदली पर मम्मा बैठती थी मुझे वहाँ बिठाया और क्लास में कहा कि यह मेरी देश-विदेश में बाबा का सन्देश देने वाली बच्ची है, वारिस बच्चे निकालने वाली बच्ची है। उस समय मुझे विदेश क्या है, यह उतना पता नहीं था, सिर्फ अमेरिका और इंग्लैण्ड का नाम सुना था। मुझे आज महसूस हो रहा है कि बाबा में कितनी दूरदर्शिता थी, बाबा के बोल में कितनी शक्ति थी ! बाबा के वो बोल मेरे लिए वरदान बनकर आज भी ईश्वरीय जीवन और सेवा में मुझे आगे बढ़ा रहे हैं।

बाबा के रूप का प्रत्यक्ष अनुभव

एक बार मैं मधुबन आयी थी। उस समय यहाँ गायें थीं। जो भी बच्चे आते थे उनको बाबा स्टोर, मकान आदि दिखाने ले चलते थे। बाबा ऐसे हमारी उंगली

s_book final.2.pmd 107 03-01-2005, 10:32 AM

पकड़कर ले जाते थे जैसेकि छोटे बच्चों को घुमाया जाता है, घर दिखाया जाता है। बाबा बहुत फास्ट चलते थे। उनके साथ चलने में बहुत मजा आता था। बाबा ने मुझे दो गायें दिखायीं, उनमें से एक बैठी थी और एक खड़ी थी। बाबा ने एक बच्चे को कहा, ''बच्चे, यह गाय बीमार पड़ी है, इसको खाने में फलानी चीज़ मिलाकर दो।'' मैंने बाबा से पूछा, बाबा, आप पशुओं के भी डॉक्टर हैं ? बाबा मुस्कराये। दूसरे दिन बाबा ने क्लास में बताया कि देखो बच्चे, रोज तुमको बाबा ज्ञान-घास देता है। अगर तुम उसको चबायेंगे नहीं, उगारेंगे नहीं तो बीमार हो जायेंगे। पशु को भी अकल है, घास चबाकर अपना खाना हजम करता है। तुम भी विचार सागर मंथन करके ज्ञान को हजम करो तो तन्दुरुस्त रहेंगे। इस प्रकार लौकिक को अलौकिक बनाकर बाबा बच्चों को शिक्षा देते थे !

जब बाबा दृष्टि दे रहे थे तब सारे कमरे में लाल सुनहरी प्रकाश फैल गया। बाबा की आँखों से नूर निकल रहा था। वह इतना सुन्दर, मीठा और आकर्षक था कि मुझे उसका वर्णन करना नहीं आ रहा है।

बाबा फेमिलीयर भी थे और ऑफ़िसियल भी थे

एक बार शाम को दूध फट गया था। भोली दादी बाबा के पास आयी और कहा, बाबा रात को पीने के लिए जो दूध बाँटना था वह फट गया, सिर्फ़ दही जमाने वाला दूध बचा है। अभी दूध क्या बाँटे और दही क्या जमायें ? उस समय मैं बाबा से गुड नाइट करने गयी थी। भोली दादी ने कहा, ''बाबा, या तो पीने के लिए दूध देना बन्द करना पड़ेगा या दही जमाना।'' बाबा ने कहा, ''नहीं बच्ची, पीने के लिए दूध देना बन्द नहीं करना। चलो, आज बाबा दूध बाँटेगा।'' अभी रतन मोहिनी दादी का जो आफ़िस और डायनिंग कमरा है, वहाँ उन दिनों किचन होता था। ज़मीन पर चौकी थी उस पर ही बाबा बैठ गये और सबको दूध देना शुरू कर दिया। जो सोये हुए थे वो भी दूध लेने आये क्योंकि बाबा दूध बाँट रहे थे। बाबा ने सबको दूध बाँटा, सब यज्ञवत्सों ने दूध लिया फिर भी दूध बच गया। तब बाबा ने भोली दादी से कहा, लो बच्ची, इसकी दही जमा दो। यहाँ प्रश्न उठता है कि दही के लिए रखा हुआ थोड़ा-सा दूध सबको बाँटने पर बचा कैसे ? अगर वही दूध भोली दादी ने बाँटा होता तो सब भाई-बहनें गिलास भरकर दूध माँगते परन्तु बाबा ने सबको आधा-आधा गिलास दिया। बाबा द्वारा बाँटे गये दूध को बहुत प्यार से लिया और थोड़े में ही सब सन्तुष्ट हुए। इस प्रकार बाबा समय अनुसार

s_book final.2.pmd 108 03-01-2005, 10:03 AM

युक्ति से कार्य करते थे और सर्व को सन्तुष्ट करते थे। ऐसे थे राँझू रम्जबाज हमारे बाबा ! बाबा फेमिलीयर भी थे और ऑफ़िसियल भी थे।

अन्तिम समय के क्षण

बाबा के साथ की लास्ट अनुभूति बहुत अनोखी थी। नवम्बर 1968 का बाबा से मेरा अन्तिम मिलन था। मैं उस समय जयपुर में रहती थी। बाबा से मिलने आयी थी। बाबा हमें पहाड़ी पर ले गये थे। पहाड़ी चढ़ते समय ऊपर चढ़ने के लिए बाबा ने मेरा हाथ पकड़ा तो मुझे यह अनुभव हुआ कि बाबा का हाथ इतना नरम और हल्का था कि जैसे उसमें माँस-हड्डी है ही नहीं। शरीर एकदम लाइट-लाइट दिखायी पड़ता था। वायब्रेशन्स इतने पॉवरफुल थे कि बाबा अव्यक्त फ़रिश्ता अनुभव होते थे। ऐसा लग रहा था कि मैं फ़रिश्ते के साथ चल रही हूँ। इस अनुभव को लेकर मैं 22 नवंबर, 1968 को जयपुर वापस गयी। कुछ दिनों बाद मैं दिल्ली गयी तो वहाँ मैंने क्लास में अनुभव सुनाया कि सब कहते हैं कि अव्यक्त बाबा सूक्ष्मवतन में हैं लेकिन इस बार मुझे अनुभव हुआ कि अव्यक्त बाबा अभी साकार में है। इस प्रकार मैंने आदि में सन् 1957 में भी बाबा को लाइट के रूप में अर्थात् फ़रिश्ते के रूप में देखा था और अन्त में सन् 1968 में भी मैंने बाबा का अव्यक्त रूप देखा तथा अनुभव किया। ❄

पहाड़ी चढ़ते समय ऊपर चढ़ने के लिए बाबा ने मेरा हाथ पकड़ा तो मुझे यह अनुभव हुआ कि बाबा का हाथ इतना नरम और हल्का था कि जैसे उसमें माँस-हड्डी है ही नहीं। शरीर एकदम लाइट-लाइट दिखायी पड़ता था।

शिव भगवानुवाच :

मीठे बच्चे, अभी बाप तुम्हारी बुद्धि को ईश्वरीय बुद्धि बनाते हैं तो तुम्हें सुख देने वाले बाप को सदा याद करना है।

तुम जानते हो आत्मा इस शरीर रूपी घर में आकर पार्ट बजाती है। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है, पार्ट बजाती है।

s_book final.2.pmd 109 03-01-2005, 10:32 AM

बाबा छोटे बच्चों को बेहद प्यार करते थे

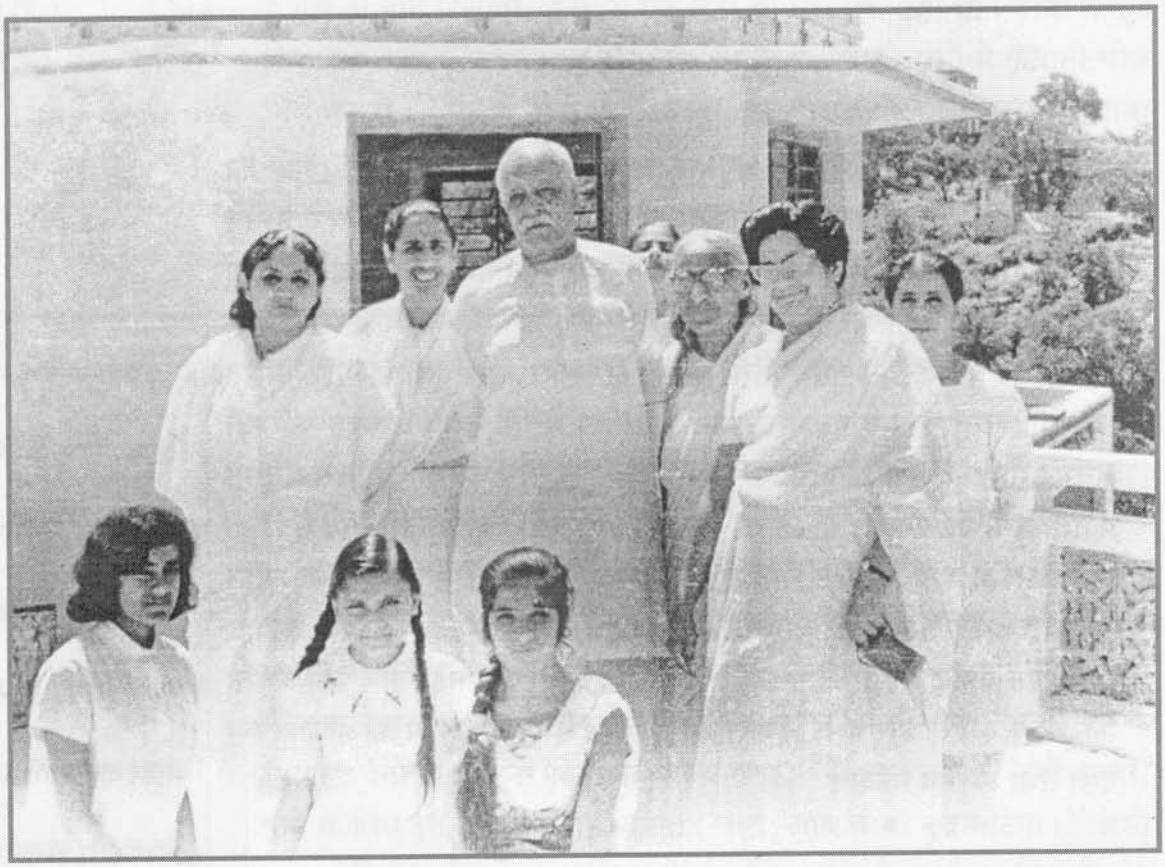

आबू– बृजशान्ता दादी, पुणे, शील दादी, मुंबई, सती भाभी (मुरली दादा की माँ, जयन्ती बहन की दादी माँ), रजनी बहन (जयन्ती बहन की माँ)। नीचे बैठी हैं जयन्ती बहन, लन्दन।

लन्दन से ब्रह्माकुमारी जयन्ती बहन जी अपना ईश्वरीय अनुभव इस प्रकार लिखती हैं कि सन् 1957 में मैं पहली बार बाबा से मिली, तब मेरी आयु 8 वर्ष थी। उस समय बाबा मुझे ग्रेंडफादर नज़र आये और उनका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था। बाबा ने मुस्कराते हुए मीठी दृष्टि दी। वही झलक मेरी बुद्धि में रह गयी। उसके बाद हम लन्दन चले गये।

s_book final.2.pmd 110 03-01-2005, 10:03 AM

सन् 1966 में हम दादी जानकी के साथ, पूना से बाबा को मिलने मधुबन आये। मधुबन आते ही ऐसे लगा कि मैं अपने घर वापिस आयी हूँ। जब हम मुरली क्लास में बैठे तो बाबा ने कहा, बच्ची विदेश में जाकर सेवा करेगी और टीचर बन ज्ञान सुनायेगी। जब वहाँ पूछेंगे कि यह ज्ञान कहाँ से प्राप्त हुआ तो आप कहेंगी कि यह ज्ञान माउण्ट आबू से प्राप्त हुआ है और परमात्मा शिव आकर सुना रहे हैं, तो वे बहुत आश्चर्य खायेंगे।

जब हम भारत से लन्दन वापस गये तो कुछ लोगों ने भाषण का निमंत्रण दिया। जब भाषण समाप्त हुआ तो उन्होंने पूछा कि यह ज्ञान कहाँ से प्राप्त हुआ है आपको ? मैंने बताया कि माउण्ट आबू से प्राप्त हुआ है और वही दृश्य मेरे सामने आया जब बाबा ने ऐसा कहा था।

जब मैं बाबा के सम्मुख गयी तो बाबा ने मुझे फूल दिये और दृष्टि दी तो मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि चुम्बक ने मुझ आत्मा को अपनी ओर खींच वतन में उड़ा दिया। मैं आत्मा, ज्योति की दुनिया में पहुँच गयी।

मैंने बाबा में माँ का रूप भी देखा

एक दिन मैं मधुबन में रात्रि क्लास में बैठी थी। बाबा ने क्लास के बीच में ही पूछा, बच्ची, कुछ चाहिए ? अगर कोई भी चीज़ की ज़रूरत हो तो बाबा से ले सकती हो। बाबा के यज्ञ में सब कुछ है, जो चाहे बाबा से लेना। मुझे ऐसे ही लगा कि जैसे माँ छोटे बच्चों को सम्भालती है। ऐसे बाबा का माँ का रूप भी देखा। क्योंकि मम्मा ने कुछ समय पहले ही शरीर त्याग किया था और बाबा ने माँ का रूप धारण किया हुआ था। साथ-साथ सूक्ष्म रूप से बाबा ने हमें अपना बनाया, वह भी तो माँ का ही सुन्दर रूप था। बाप के रूप में, भविष्य किस तरह से श्रेष्ठ बनाना है, वह प्रेरणा देते थे। टीचर के रूप में बाबा के सम्मुख आयी तो बड़ा ही आकर्षण रहा कि मुरली सुननी है। मुरली की जो कुछ बातें समझ में आयीं वो दिल में समा लीं। सतगुरु बन बाबा ने दृष्टि दी तो मैं आत्मा वतन में उड़ गयी, नज़र से निहाल हो गयी।

जानीजाननहार बाबा को मेरा भविष्य मालूम था। इसलिए बाबा, अपनी अलौकिक गोद में बिठाकर ऊँच बनने की प्रेरणा दे हिम्मत भरते रहे। बाबा मुझे सदैव यही कहते थे कि बच्ची, तुमको बहुत सेवा करनी है। मैं भी बाबा को ऐसे देखती थी कि बाबा मुझे अन्दर-बाहर अच्छी तरह से जानते हैं।

s_book final.2.pmd 111 03-01-2005, 10:32 AM

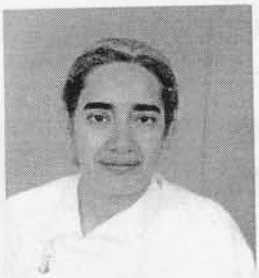

ब्रह्माकुमारी जयन्ती बहन जी

सन् 1957 में मैं पहली बार बाबा से मिली, तब मेरी आयु 8 वर्ष थी। उस समय बाबा मुझे ग्रेंडफादर नज़र आये और उनका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था। बाबा ने मुस्कराते हुए मीठी दृष्टि दी।

मैं आत्मा, ज्योति की दुनिया में पहुँच गयी

मैं जब सन् 1968 में बाबा से मिली तो बाबा ने पूछा, बच्ची, तुमको क्या करना है ? मैंने कहा, बाबा, मुझे समर्पित होना है। बाबा ने बड़ी मीठी दृष्टि दी और कहा, आज रात्रि को बाबा से गुडनाइट करने आना। रात्रि को आँगन में ही बाबा खटिया पर बैठे थे, साथ में कई दादियाँ और भाई-बहनें भी थे। मैं और दादी जानकी भी पहुँचे। देखा वहाँ लाइट ही लाइट चमक रही थी। बाबा की खटिया के पास मोतिया के ख़ुशबूदार फूल रखे थे और बाबा सबको दृष्टि दे रहे थे। जब मैं बाबा के सम्मुख गयी तो बाबा ने मुझे फूल दिये और दृष्टि दी तो मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि चुम्बक ने मुझ आत्मा को अपनी ओर खींच वतन में उड़ा दिया। मैं आत्मा, ज्योति की दुनिया में पहुँच गयी। बाबा ने मुझे पारलौकिक संसार में पहुँचा दिया। कुछ समय के बाद इस साकार दुनिया का आभास हुआ। देखा तो बाबा बड़े प्यार से दृष्टि दे रहे थे। बाबा ने पूछा, बच्ची, बाबा क्यों दृष्टि दे रहे हैं ? दादी जानकी ने काँध हिलाते हुए इशारे से कहा, हम जानती हैं कि अब पुरानी दुनिया से मरना है और बाबा की गोद में अलौकिक जन्म लेना है।

मेरी बच्चियों पर मनुष्यों की दृष्टि बिल्कुल नहीं पड़नी चाहिए

बाबा की दृष्टि का महत्त्व मेरे लिए यादगार बन गया। सतगुरु की दृष्टि ने मुझे निहाल किया। बाबा की शक्तिशाली, मीठी, प्रेम सम्पन्न दृष्टि ने मुझ आत्मा को उड़ा दिया। इसके बाद बाबा ने दीदी के साथ ईश्वरीय सेवा पर भेजा। जब दिल्ली जा रहे थे तो बाबा ने कहा कि दिल्ली में कुमारियों की ट्रेनिंग होने वाली है। अगर पसन्द आये तो वहाँ ट्रेनिंग करना। हम दिल्ली, कमला नगर सेन्टर पर पहुँचे तो वहाँ सामने ही एक मकान लिया हुआ था जहाँ कुमारियों की ट्रेनिंग रखी हुई थी। जब बाबा को मालूम पड़ा कि बच्चियों को सड़क पार करके दूसरे मकान में ट्रेनिंग के लिए जाना पड़ेगा तो तुरन्त बाबा ने कहा, मेरी बच्चियों पर कलियुगी मनुष्यों की दृष्टि बिल्कुल भी नहीं पड़नी चाहिए। इसलिए वहाँ ट्रेनिंग कैन्सिल करो और मधुबन में ही ट्रेनिंग का प्रोग्राम रहेगा। तो बाबा का कुमारियों पर कितना ध्यान रहता था

s_book final.2.pmd 112 03-01-2005, 10:03 AM

कि किसी की दृष्टि भी न पड़े। सदा बच्चियों को सुरक्षित रखते थे और प्यार से पालना करते थे। यह बात मेरे दिल में लग गयी।

बाबा देवलोक के देव स्वरूप लगते थे

मैंने बाबा को कभी पुरुषार्थ करते नहीं देखा। बाबा सदैव सम्पूर्ण स्वरूप में मुझे दिखायी पड़ते थे। साकार में होते भी ऐसे लगता था कि बाबा यहाँ नहीं हैं। जैसे चलते-फिरते फ़रिश्ता ही दिखायी देते थे, बिल्कुल शिव बाबा के समीप। इस साकारी मनुष्य लोक में बाबा देवलोक के देव स्वरूप लगते थे। बाबा हर बच्चे के कल्याण का ही सोचते थे ताकि हर आत्मा की उन्नति होती रहे। बाबा निरन्तर आत्म-स्थिति में रहते थे और हर आत्मा को आत्मिक दृष्टि देते थे ताकि उस आत्मा का देहभान छूट जाये और वह आत्मिक स्थिति में स्थित हो जाये। यह विशेषता बाबा की देखी। कई बार मुझे ऐसा लगता है कि हम और कोई पुरुषार्थ करें या न करें लेकिन आत्म-स्मृति में रहने का, आत्मिक स्थिति में रहने का पुरुषार्थ करते रहेंगे तो हम जल्दी से जल्दी बाबा के नज़दीक पहुँच सकते हैं।

बाबा ने कहा, बच्ची विदेश में जाकर सेवा करेगी और टीचर बन ज्ञान सुनायेगी। जब वहाँ पूछेंगे कि यह ज्ञान कहाँ से प्राप्त हुआ तो आप कहेंगी कि यह ज्ञान माउण्ट आबू से प्राप्त हुआ है और परमात्मा शिव आकर सुना रहे हैं।

बाबा साधारण होकर बच्चों के साथ खेलते थे

एक बार की बात है, मैं बाबा के साथ बैडमिंटन खेल रही थी तो खेलते-खेलते बाबा रुक गये और पूछा, बच्ची, किसके साथ खेल रही हो ? तुरन्त याद आया कि बाबा के साथ सर्वशक्तिवान शिव भी है। यह तो दिल को छूने वाली बात है कि परमात्मा भी बच्चों के साथ बच्चा बनकर, साधारण रीति से खेलपाल करता है। उसी समय बाबा ने कहा, आज बच्चों के साथ बाबा भोजन करेंगे। टेबल लगवाया गया और 8-10 भाई-बहनों को बाबा ने अपने साथ भोजन करवाया। बाबा एक तरफ़ बैठे थे और हम सब बाबा के सामने बैठे थे, उतने में बाबा बोले, देखो बच्चे, ऐसा मौका सतयुग में भी नहीं मिलेगा। अभी सर्वशक्तिवान बाप के साथ भोजन करने का मौका मिला है। तो हम कितने भाग्यवान हैं जो ज्ञान सागर, प्यार के सागर बाप के संग इस समय भोजन कर रहे हैं !

s_book final.2.pmd 113 03-01-2005, 10:32 AM

यह मेरे लिए सारे कल्प का भाग्य है

बाबा निरन्तर आत्म-स्थिति में रहते थे और हर आत्मा को आत्मिक दृष्टि देते थे ताकि उस आत्मा का देहभान छूट जाये और वह आत्मिक स्थिति में स्थित हो जाये। यह विशेषता बाबा की देखी।

एक दिन हिस्ट्री हॉल के बाहर बैठकर मैं कुछ सेवा कर रही थी। बाबा कमरे से बाहर आये और एरोप्लेन (एक मकान का नाम) की ओर बढ़ने लगे, मुझे भी इशारा किया। मैं दौड़कर बाबा के पास पहुँची। बाबा ने मेरा हाथ पकड़ा और चल दिये। वहाँ जाकर देखा तो दीदी, दादी और बड़े भाई-बहनों की मीटिंग चल रही थी। मैं संकोचवश अन्दर जाना नहीं चाहती थी मगर बाबा मुझे वहाँ ले गये। बाबा अपने स्थान पर जाकर बैठे और मुझे भी बैठने का इशारा किया। मैं पीछे बैठ गयी। मुझे इतना अच्छा मौका मिला जो बड़ी दादियों और भाई-बहनों की चिटचैट सुनी। ऐसी मीटिंग में बैठने का मौका बाबा ने दिया, उसे मैं अपना भाग्य समझती हूँ। बाबा भविष्य को जानते थे कि सेवा के निमित्त कैसे और कौन कारोबार चलायेगा। वह दिन मेरे लिए यादगार बन गया। कई बातें सीखने को मिलीं। आज भी कई परिस्थितियाँ आती हैं या ख़ुद के संस्कार भी आते हैं परन्तु मुझ आत्मा को बाबा किसी भी युक्ति से सभी बातों से पार उड़ाकर सेवा के निमित्त बना देता है। यह बाबा की ही कमाल है जो उस समय शक्तिशाली दृष्टि देकर मुझ में शक्ति भर देते हैं। उस आधार से ही मेरा इतना ऊँचा और श्रेष्ठ जीवन बन गया। यह मेरे लिए सारे कल्प का भाग्य है।

मुझे एक घटना याद आ रही है कि जब मेरी आयु 10 वर्ष की थी और हम लन्दन में रहते थे तब एक दिन एयर मेल (Air mail) आया। पार्सल खोला तो उसमें आपुस आम थे। हमें बड़ा आश्चर्य लगा कि भारत से किसने ये आम भेजे होंगे ! हमारे लौकिक सम्बन्धियों ने तो आज तक हमें याद नहीं किया। लेकिन पता चला कि साकार बाबा उस समय मुंबई में थे। आम खाते समय उन्हें हम छोटे बच्चे याद आये और बाबा ने बड़े प्यार से अच्छे-अच्छे आम चुनकर पार्सल द्वारा भेजे। मेरे मन ने भाव-विभोर होकर कहा, इतना प्यार करेगा कौन ? उस समय लन्दन में आम का नाम-निशान भी नहीं था। परन्तु बाबा ने हमें प्यार से याद किया। वह दृश्य मुझे कभी भूल नहीं सकता।

❄

s_book final.2.pmd 114 03-01-2005, 10:03 AM

आख़िरकार बाबा ने मुझे ब्रह्माकुमारी बना ही दिया

आबू– (दायें से बायें) बाबा के साथ वेदान्ती बहन, नैरोबी और उनकी लौकिक बहनें तथा अन्य कुमारियाँ।

नैरोबी, आफ्रीका से ब्रह्माकुमारी वेदान्ती बहन जी कहती हैं कि मैं पहली बार नवम्बर 1965 में दादी जानकी जी के साथ मधुबन आयी थी। हमारे ग्रुप में आठ लोग थे। नुमाशाम के समय हम सभी बाबा से मिलने कमरे में गये। हम सभी बाबा के सम्मुख बैठे थे और बाबा एक-एक को दृष्टि दे रहे थे। जब बाबा की दृष्टि मुझ आत्मा पर पड़ी तो मुझे ऐसे लगा कि बाबा की जगह गुलाब के फूलों का ढेर था जिसमें से प्रकाश ही प्रकाश आ रहा था। वह बहुत पॉवरफुल दृश्य था। उसके बाद बाबा एक-एक को वरदान दे रहे थे। जब मैं बाबा के सामने गयी तो मेरी लौकिक माँ भी साथ थी। बाबा के बोलने से पहले ही मेरी माँ ने बाबा से कहा कि बाबा, आप मेरी बच्ची को कहो कि शादी करे। यह शादी के लिए मना कर रही है।

s_book final.2.pmd 115 03-01-2005, 10:32 AM

ब्रह्माकुमारी वेदान्ती बहन जी

हमारी माता जी तो भक्तिमार्ग के गुरु की नज़र से बाबा को देखकर बात कर रही थी। बाबा ने कहा, ''माता, तुम अब तक भक्ति में भगवान को, पतित-पावन आओ, कहकर पुकारती थी और आज तुम्हारी बेटी पावन बनना चाहती है तो उसको क्यों पतित बनाना चाहती हो ? तुम्हारी यह बेटी कभी भी पतित नहीं बनेगी। यह पावन रहकर विश्व की सेवा करेगी।'' उस समय बाबा के मुख से ये वरदान भरे बोल निकले जो बाद में साकार हो गये।

मेरा लौकिक नाम ''रंजन'' था। बाबा ने मुझे कहा कि बच्ची तूने वेद, शास्त्र आदि का अभ्यास बहुत किया है तो बाबा तुम्हें वेदों का अन्त दे रहा है। तुम्हें बाबा वेद का अन्त जानने वाली 'वेदान्ती' कहकर बुलायेगा।

बच्ची, तुम ये कपड़े पहनकर रखना

जब मैं ज्ञान में आयी तब ज्ञान तो बहुत अच्छा लगता था लेकिन मैंने अन्दर ठान लिया था कि ब्रह्माकुमारियों की सफ़ेद पोशाक कभी नहीं पहनूँगी। यह बात मेरे मन में ही थी। मैंने कभी किसी को बतायी भी नहीं थी। मैं जब मधुबन में साकार बाबा से झोपड़ी में मिलने गयी तो बाबा ने अचानक सिलाई करने वाले को बुलाया और कहा कि बच्ची के लिए दो जोड़ी कपड़े सिलाई करके दो। मैं अन्दर ही अन्दर सोचने लगी कि ये कपड़े मिलेंगे तो रख दूँगी, कभी पहनूँगी नहीं। दो घण्टे के बाद बाबा ने बुलाया और सिलाई किये हुए कपड़े मुझे देकर कहा कि बच्ची, ये कपड़े ले जाओ और जल्दी पहनकर बाबा को दिखाओ। मैं आज्ञाकारी बनकर कमरे में गयी और पहनकर जब बाबा के सामने आयी तो बाबा देखकर कहने लगे, ''बच्ची, तुम मम्मा की तरह दिखायी दे रही हो। ये कपड़े सदा पहनकर रखना।'' उन्हीं कपड़ों में मैं अहमदाबाद गयी। यह घटना मुझे कभी नहीं भूल सकती। बाबा ने मुझे ब्रह्माकुमारी बना ही दिया। वाह बाबा वाह ! कमाल है आपकी, जिन्होंने मुझे अपना बनाकर महान् बनने का रास्ता बता दिया।

बाबा ने ही मेरा नाम 'वेदान्ती' रखा

मधुबन वरदान भूमि की मेरी पहली यात्रा के समय मेरे मन में कई प्रश्न थे लेकिन प्यार भरी बाबा की पहली मुलाक़ात में ही सारे प्रश्न जैसे हवा में उड़ गये। मेरा लौकिक नाम ''रंजन'' था। बाबा ने मुझे कहा कि बच्ची तूने वेद, शास्त्र

s_book final.2.pmd 116 03-01-2005, 10:03 AM

आदि का अभ्यास बहुत किया है तो बाबा तुम्हें वेदों का अन्त दे रहा है। वेदों का अन्त 'भगवान' अब तुम्हें मिल गया। तो तुम्हें बाबा वेद का अन्त जानने वाली 'वेदान्ती' कहकर बुलायेगा। इस प्रकार, मेरी नामकरण-विधि बाबा ने की। फिर बाबा ने पूछा, बच्ची, तुम बादल बनकर बरसोगी या ऐसे ही चली जाओगी अर्थात् क्या ज्ञान की सेवा करोगी ?

अब हमारा वापस घर जाने का समय आ गया। मैं वापस लौकिक घर गयी। लेकिन मेरा पढ़ाई में दिल नहीं लग रहा था। बाबा के वरदानों भरे बोल कानों में गूँज रहे थे। बार-बार वही दृश्य आँखों के सामने घूम रहा था। वही दिव्य अलौकिक बातें याद आ रही थीं। बस मन में यही संकल्प बार-बार आ रहा था कि अभी तो मुझे ईश्वरीय सेवा में लगना है। साथ-साथ शिव बाबा की याद भी बहुत आ रही थी। बहुत कशिश हो रही थी कि मैं उड़कर बाबा के पास चली जाऊँ। लौकिक पढ़ाई से भी जल्दी छूटने का मन कर रहा था कि बस अब समय को ईश्वरीय सेवा में सफल करना है। छह मास के अन्दर ही परिवार को समझा कर मैं ईश्वरीय सेवा में हाज़िर हो गयी। आज तक मुझे यह अनुभव हो रहा है कि बाबा के वरदानों ने ही मुझे जीने की सच्ची राह दिखायी, जिससे मेरा जीवन बहुत ही ऊँचा और श्रेष्ठ बन गया है।

जब बाबा की दृष्टि मुझ आत्मा पर पड़ी तो मुझे ऐसे लगा कि बाबा की जगह गुलाब के फूलों का ढेर था जिसमें से प्रकाश ही प्रकाश आ रहा था। वह बहुत पॉवरफुल दृश्य था। बाबा के अन्दर पालना करने की अद्भुत शक्ति थी।

बाबा ने कहा, अब शेरनी बनकर गर्जना करो

बाबा के अन्दर ज्ञान से पालना करने की अद्भुत शक्ति थी। मैंने सच्चे माँ-बाप का प्यार क्या होता है – वह बाबा से पाया। मेरे लिए आश्चर्य की बात यह थी कि मेरे मन में जो विचार चलते थे वे बाबा को पहले से ही मालूम हो जाते थे। मेरे जीवन का भविष्य भी बाबा की नज़रों में पहले से ही स्पष्ट था।

बाबा ने कहा, बच्ची, तुम नौकरी कर धन से सेवा कर सतयुग में साहूकार बनना चाहती हो परन्तु बाबा को तो तुम्हारा धन नहीं चाहिए। बाबा को तो तुम्हारे जैसी बच्ची चाहिए। बाबा ने कहा, लौकिक बन्धनों की बातें सुनाना माना बकरी की तरह बे-बे करना। अब शेरनी बनकर गर्जना करो। इस प्रकार, बाबा ने मुझे निर्बन्धन बना दिया और मैं समर्पित होकर सेवा करने लगी। ❄

s_book final.2.pmd 117 03-01-2005, 10:32 AM

बाबा ने मुझे शक्तिस्वरूपा, नष्टोमोहा बना दिया

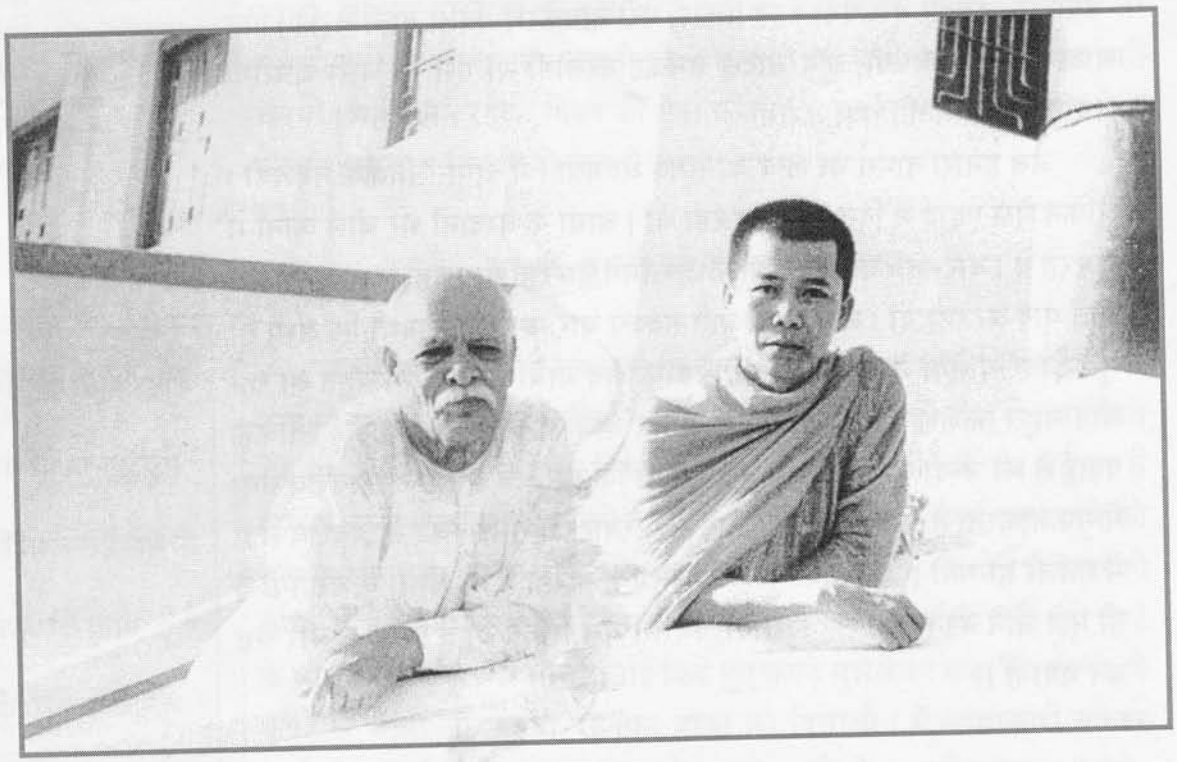

बौद्ध भिक्षु के साथ बाबा।

काठमाण्डु, नेपाल से ब्रह्माकुमारी राज बहन जी अपने अलौकिक अनुभव में लिखती हैं कि मेरा लौकिक जन्म सन् 1937 में एक धार्मिक आस्था वाले सम्पन्न परिवार में हुआ था। नित्य भगवान की पूजा-अर्चना से जीवन की दिनचर्या आरम्भ होती थी। भौतिक सुख-सुविधाओं से सम्पन्न जीवन होते हुए भी अन्तर्मन में प्रभु प्राप्ति की इच्छा सदा बनी ही रहती थी।

सन् 1960 की बात है, एक दिन मैं अपनी लौकिक माँ से मिलने फगवाड़ा, पंजाब में गयी हुई थी। वहाँ पर मुझे अपनी लौकिक बड़ी बहन भाग जी भी मिली। उन्होंने बताया कि यहाँ पर सिन्ध से कोई देवियाँ (दादियाँ) आयी हैं जो बहुत ही अच्छा ज्ञान सुनाती हैं। मैं उन्हों का ज्ञान सुनने आश्रम पर नित्य जाती हूँ, मुझे

s_book final.2.pmd 118 03-01-2005, 10:03 AM

बहुत ही आनन्द आता है। यह बात सुनकर मुझ में भी उन देवियों से मिलने की अभिलाषा जागी और मैं बड़ी बहन के साथ आश्रम पर गयी। जब हम अमृतसर के आश्रम पर पहुँचे तो वहाँ हमें दीदी चन्द्रमणि जी मिलीं। उन्होंने हमें सम्मान के साथ अन्दर बुलाया और अपने साथ ही कुर्सी पर बिठाया। बड़े प्यार से हमें प्रसाद भी दिया। दीदी जी का निश्छल स्नेह, उनके हृदय की पवित्रता, सत्यता और निःस्वार्थ व्यवहार से मैं बहुत ही प्रभावित हुई। मुझे यह पता था कि भक्तिमार्ग में तो गुरु-गोसाईं आदि नव आगन्तुकों को अपने साथ में कभी भी नहीं बिठाते हैं। लेकिन मैंने यहाँ वैसा व्यवहार नहीं देखा। उसके बाद जब दीदी जी ने बड़े प्यार से हमें परमात्मा का परिचय सुनाया तो मुझे सुनकर अति हर्ष हुआ और अनुभव होने लगा कि परमात्मा शिव ही हम सर्व आत्माओं के पिता हैं। इससे पहले तो हमारे संकल्प और स्वप्न में भी यह नहीं था कि इस साकार लोक में हमें कभी प्रभु की प्राप्ति भी हो सकती है। आश्रम से घर लौटने के बाद जब मैंने घर वालों को अपना अनुभव सुनाया तो सभी सुनकर बहुत ख़ुश हुए।

हमारे संकल्प और स्वप्न में भी यह नहीं था कि इस साकार लोक में हमें कभी प्रभु की प्राप्ति भी हो सकती है। आश्रम से घर लौटने के बाद जब मैंने घर वालों को अपना अनुभव सुनाया तो सभी सुनकर बहुत ख़ुश हुए।

इस प्रकार मैं ज्ञान-स्नान करने के लिए प्रतिदिन आश्रम में जाने लगी। नित्य ईश्वरीय ज्ञान का पठन-पाठन और सहज राजयोग के अभ्यास द्वारा मेरे जीवन में परिवर्तन आने लगा और ख़ुशी से जीवन भरपूर होता गया। इस तरह से दिन प्रतिदिन लौकिक गृहस्थ जीवन में अलौकिकता आने लगी। निरन्तर दैवी गुणों की धारणा और आध्यात्मिक ज्ञान के मनन-चिन्तन के द्वारा जीवन में आमूल सुधार और परिवर्तन आता गया। सफलता की किरणें उदित होने लगीं।

बाबा की मदद से अद्‌भुत सफलता

मेरे जीवन में परीक्षा के तौर पर कुछ ऐसी घटनायें भी आयीं जिनके कारण मुझे अदालत में जाना पड़ा। जाने से पहले हमारे वकील ने मुझे कुछ बातें सिखाकर अदालत में बोलने के लिए भेजा था पर वे मेरे अन्तर्विवेक को नहीं भा रही थीं। जब मैं अदालत के कठघरे में गयी तो मुझे बाबा की बहुत गहरी याद आयी। मैं अपने को मम्मा का स्वरूप अनुभव करने लगी और अपनी देह को भी भूल गयी। सामने उपस्थित न्यायाधीश, अन्य बैठे हुए लोग और मेरे वकील आदि मुझे बहुत ही

s_book final.2.pmd 119 03-01-2005, 10:32 AM

ब्रह्माकुमारी राज बहन जी

सन् 1960 की बात है, एक दिन मैं अपनी लौकिक माँ से मिलने फगवाड़ा, पंजाब में गयी हुई थी। वहाँ पर मुझे अपनी लौकिक बड़ी बहन भाग जी भी मिली। उन्होंने बताया कि यहाँ पर सिन्ध से कोई देवियाँ आयी हैं।

छोटे-छोटे नज़र आने लगे। मुझे अन्दर से ऐसी प्रेरणा आने लगी कि मैं जो कुछ भी कहूँगी वह एक सत्य परमात्मा की याद में सच ही कहूँगी – ऐसा मनोबल मेरे में पैदा हुआ। इतने में ही मैंने अपना बयान देना शुरू किया। मेरे वचनों को सुनकर के न्यायाधीश बहुत ही प्रभावित हुआ। उन्होंने उस केस का मेरे पक्ष में फैसला देते हुए मुझे विजयी घोषित किया। बात इतनी सहज और सरल रीति से सुलझ जायेगी – यह किसी के भी मन में नहीं था परन्तु बाबा की टचिंग और योग की शक्ति ने मेरे कर्मबन्धन को सहज ही पार कर दिया। इससे मुझे बाबा के ऊपर और ही दृढ़ निश्चय हो गया। केस का सामना करना मेरे लिए एक कठिन चुनौती थी। फिर भी बाबा की मदद से तूफ़ान जैसी परिस्थिति भी मेरे लिए तोहफ़ा बन गयी। इससे मैं अपने लक्ष्य में सम्पूर्ण सफल हो गयी। बाबा ने मुझे इस प्रकार शेरनी शक्ति बनाया। मैं अबला से सबला, निर्बल से बलवान बन गयी। मुझ में उस प्रभु के प्रति अपने जीवन को न्योछावर कर देने की अभिलाषा पैदा हुई। आख़िर सन् 1962 में वह दिन आया जब मैंने जीवन को ईश्वरीय सेवार्थ समर्पित कर दिया।

साकार बाबा से प्रथम मिलन की अनुभूति

सन् 1962 में जब दीदी चन्द्रमणि जी अमृतसर की पार्टी को बाबा से मिलाने मधुबन ले गयी थी तो मैं भी उसमें शामिल थी। मेरे जीवन में प्रभु-मिलन का वह स्वर्णिम अवसर आया जिसकी वर्षों से मेरे अन्दर तीव्र इच्छा थी। जब मैंने बाबा की दिव्य छवि को देखा तो उनकी शीतल और शक्तिशाली दृष्टि ने मुझे आत्म-विभोर कर दिया। बाबा ने मुझे दिल को द्रवीभूत करने वाला अलौकिक प्यार दिया तथा वरदान देते हुए कहा कि बच्ची बहुत नष्टोमोहा है, बहुत योगयुक्त है। बच्ची ने जल्दी ही अपने कर्मबन्धनों को काटा है – ऐसे कहते हुए बाबा ने दिल से मेरी बहुत प्रशंसा की और मेरा उमंग-उत्साह बढ़ाया।

बाबा के वो बोल मेरे लिए वरदान सिद्ध हुए

कुछ वर्ष अमृतसर सेवाकेन्द्र पर रहते हुए मुझे दीदी चन्द्रमणि जी की अलौकिक

s_book final.2.pmd 120 03-01-2005, 10:03 AM

पालना मिलती रही और ईश्वरीय सेवा की कारोबार सम्भालने की कला भी प्राप्त हुई। उस पालना और प्रशिक्षण से मुझ में बहुत योग्यतायें भर गयीं। दीदी चन्द्रमणि जी के जीवन का प्रभाव इतनी गहरी रीति से मेरे जीवन पर पड़ा कि मुझ में निर्भयता और दैवीगुणों की धारणायें प्रबल होती गयीं। आयी हुई नयी कन्याओं में ईश्वरीय धारणाओं के प्रति अभिरुचि बढ़ाने के कार्य की ज़िम्मेवारी भी दीदी जी मुझे देती थीं। उसमें भी मुझे अधिक सफलता दिन प्रति दिन मिलती गयी। इस प्रकार ब्राह्मण परिवार में रहते ईश्वरीय सेवा करना और श्रेष्ठ धारणाओं को अपने जीवन में अधिक से अधिक अपनाते जाना, यह मेरे जीवन का अभिन्न अंग बन गया।

बाद में जब हम मधुबन में आये और बाबा से मिले तो बाबा ने कहा कि "बच्ची, तुम मीरा हो, तुम गुणवान हो, तुम अपने को नहीं जानती, बाबा तुम्हें जानता है, तुम बहुत अच्छी सेवा कर सकती हो"– ऐसे वरदानी बोलों से बाबा ने मेरा उमंग-उत्साह बढ़ाया। बाबा ने उस समय मुझे और विश्वरतन दादा को आबू के मिनिस्टर कॉटेज में वी.आई.पीज. की सेवा के लिए भेजा था। मेरी सेवा की लगन को देखकर बाबा ने कहा, "बच्ची, तुम पटना में सेवा करने जाओ।" पटना में ईश्वरीय सेवा के लिए जाना हुआ और वहाँ पर भी सेवा में बाबा के दिये वरदान अनुसार बहुत अच्छी सफलता मिलती गयी। वहाँ पर बनाया गया म्यूजियम उन दिनों बहुत ही अच्छा था जिसको बाबा ने नम्बर वन में रखा था। पटना से जब मैं मधुबन पार्टी लायी तो साकार बाबा ने कहा, बच्ची ने देखो इतने बड़ों-बड़ों को लाया है, बच्ची सेवा करने में बहुत होशियार है, सफलता इसका जन्मसिद्ध अधिकार है।

जब मैंने बाबा की दिव्य छवि को देखा तो उनकी शीतल और शक्तिशाली दृष्टि ने मुझे आत्म-विभोर कर दिया। बाबा ने कहा कि "बच्ची, तुम मीरा हो, तुम गुणवान हो, तुम बहुत अच्छी सेवा कर सकती हो"।

इस तरह अलौकिक जीवन में अनेक अलौकिक अनुभव हुए और होते ही रहते हैं। अभी सदा यही उमंग मन में रहता है कि जल्दी से जल्दी अपनी सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त करके इस वसुन्धरा पर आये हुए भगवान को प्रत्यक्ष करें ताकि अन्धकार में भटकती हुई करोड़ों आत्मायें प्राण प्यारे बाप से मिलन मना सकें और उसके अविनाशी वर्से की अधिकारी बन सकें। हम भी अब जल्दी से जल्दी बाप समान बनें और बाबा की श्रेष्ठ आशाओं को पूरा करें – यही हमारे जीवन का लक्ष्य रहता है।

s_book final.2.pmd 121 03-01-2005, 10:32 AM

मातृ-वत्सलम् जगतो माता-पिताः

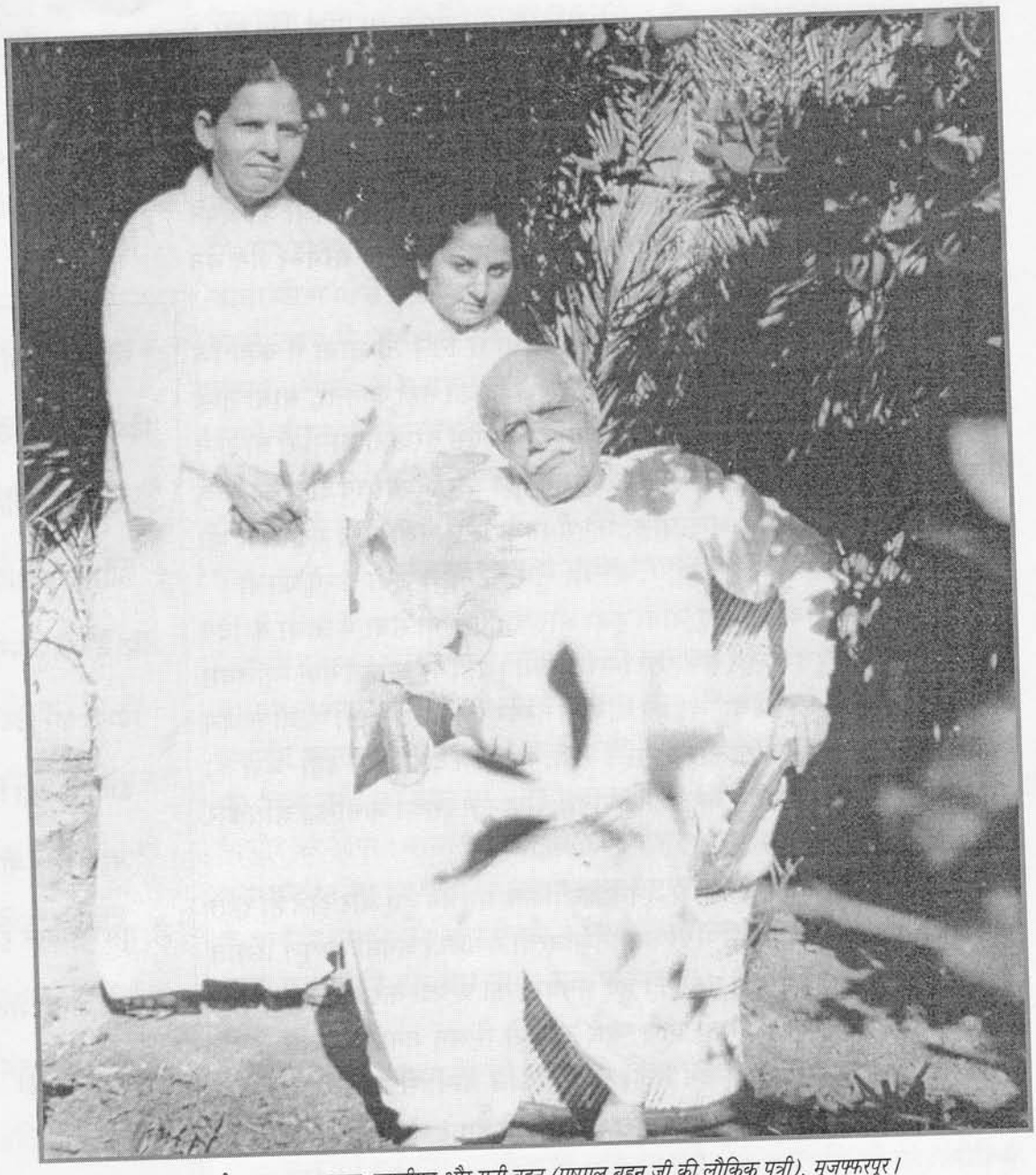

बाबा के साथ अचल बहन, चण्ड़ीगढ़ और रानी बहन (पुष्पाल बहन जी की लौकिक पुत्री), मुजफ्फरपुर।

s_book final.2.pmd 122 03-01-2005, 10:03 AM

ब्रह्माकुमारी पुष्पाल बहन जी

ब्रह्माकुमारी पुष्पाल बहन जी अपने अलौकिक अनुभव ऐसे सुनाती हैं कि भारत विभाजन के बाद हम पाकिस्तान से दिल्ली आ गये। दिल्ली में आने के बाद मैं हर दीपावली को बीमार हो जाती थी। इस कारण दु:खी रहती थी और भगवान को कहती थी कि हे भगवान, मैंने कौन-सा पाप किया है जो दिवाली पर बीमार हो जाती हूँ। एक दिन मैंने भगवान के नाम पर पाँच पेज का पत्र लिखा और पोस्ट में डाल दिया। तीन दिन के बाद लौकिक चाची ने मुझे अपने घर पर बुलाया, पर जब मैं उनके घर गयी तो चाची जी घर पर नहीं थी। मैंने पूछा, कहाँ गयी है ? तो कहा गया कि वो सत्संग में गयी है। मैं उसके इन्तजार में बैठी रही। वह दोपहर दो बजे आयी तो मैंने आते ही सुना दिया कि मैं कब से बैठी हूँ। वह इतनी ख़ुशी में थी कि मेरे बोलने का उस पर कोई असर नहीं हो रहा था। मुझे महसूस हुआ कि इसको अजीब-सा सुख मिला है जो अपनी मस्ती में है। चाची ने मुझे कहा कि एक दिन तुम मेरे साथ आश्रम चलकर देखो। तुमने तो बहुत साधु-महात्माओं को देखा है, शास्त्र भी पढ़े हैं। लेकिन आबू से देवियाँ आयी हैं उनको भी चलकर देखो। उन देवियों ने 14 साल तपस्या की है। चाची के इतना कहने के बाद मेरे मन में उत्सुकता हुई कि जाकर देखें।

मैं दिल्ली, कमला नगर आश्रम पर गयी। वहाँ देखा कि एक छोटे-से कमरे में तीन बहनें योग में बैठी थीं। उनको देखते ही बहुत ख़ुशी हुई। उनके चेहरे की अलौकिक आभा, शुद्ध तथा शान्त वातावरण से मन प्रफुल्लित हो गया।

पहले ही प्रश्न में फेल हो गयी

दूसरे दिन उनके साथ दिल्ली, कमला नगर आश्रम पर गयी। देखा कि एक छोटा-सा कमरा, उसमें तीन बहनें योग में बैठी थीं। उनको देखते ही मन में बहुत ख़ुशी हुई। क्योंकि उनके चेहरे की अलौकिक आभा से और वहाँ के शुद्ध तथा शान्त वातावरण से मन प्रफुल्लित हो गया। वहाँ जाने से पहले मन में था कि मैंने तो बहुत शास्त्र आदि पढ़े हैं, संस्कृत भी सीखी है, वे लोग मुझे क्या बतायेंगी। उनमें से एक बहन ने मेरे से प्रश्न पूछा कि क्या आप जानती हो कि आप कौन हो ? मैंने कहा, हाँ, मैं जानती हूँ, मैं परमात्मा का अंश हूँ। बहन ने कहा, परमात्मा तो अजर, अमर, अविनाशी है। वह टुकड़ा हो नहीं सकता। आप परमात्मा का अंश नहीं हो परन्तु परमात्मा का वंश हो। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं पहले प्रश्न में ही फेल हो गयी। इसका अर्थ हुआ कि बहनें मेरे से ज़्यादा जानती हैं। फिर मैंने पूछा कि यह

s_book final.2.pmd 123 03-01-2005, 10:32 AM

ज्ञान आपको किसने सुनाया ? बहन ने कहा, यह ज्ञान हमें बाबा ने दिया। 'बाबा' शब्द सुनते ही ऐसा लगा कि यह मेरा ही बाबा है। बाबा शब्द मुझे बहुत प्यारा और मीठा लगने लगा। क्योंकि मैं परमात्मा को बाप के रूप में याद करती थी। मैंने उनसे पूछा कि बाबा कहाँ रहते हैं ? बहन ने कहा, आबू में। 'बाबा' और 'आबू' – शब्दों ने ही मुझे बहुत आकर्षित किया। मैंने उनको बार-बार कहा, आप मुझे बाबा के पास ले चलोगी ? लेकिन बहनों ने जवाब नहीं दिया। मैंने उनसे कहा कि आप वायदा करो। लेकिन तीनों बहनें मुस्कराने लगीं। मैं फिर दोहराने लगी तो मेरी चाची घबराने लगी कि पहले तो आश्रम पर आने को तैयार नहीं थी और अभी यहाँ से जाने को तैयार नहीं है। बार-बार बहनों से कह रही है कि मुझे आबू ले जाने के लिए वायदा करो। चाची ने मेरे से कहा, चलो घर चलते हैं। लेकिन मैंने फिर बहनों से पूछा, वहाँ जाने के लिए ख़ास शर्तें हैं तो बताइये। बहनें सोच में पड़ गयीं कि यह अभी आयी है, अगर नियम बतायेंगे तो चली न जाये। इसलिए आनाकानी करने लगीं। मैंने उन्हें फिर पूछा, तब बहनों ने कहा कि बाबा से मिलना है तो पवित्र जीवन बिताना पड़ेगा। मुझे यह बड़ी बात नहीं लगी क्योंकि भगवान के लिए सिर भी कट जाये तो कोई बड़ी बात नहीं। अगर सिर्फ पवित्र जीवन बिताने से भगवान मिलता है तो यह बहुत सस्ता सौदा है। मैंने उनसे वायदा किया कि मैं पवित्र रहूँगी। बहनों ने भी वायदा किया कि हम आपको आबू ले चलेंगी।

बाबा से मिलना है तो पवित्र जीवन बिताना पड़ेगा – मुझे यह बड़ी बात नहीं लगी क्योंकि भगवान के लिए सिर भी कट जाये तो कोई बड़ी बात नहीं। अगर सिर्फ पवित्र जीवन बिताने से वह मिलता है तो यह बहुत सस्ता सौदा है।

क्यों नहीं बच्ची, बाबा तो आप माताओं के लिए ही आया है

ख़ुशी-ख़ुशी से बाबा को पत्र लिखना शुरू किया। पहले पत्र में मैंने बाबा को लिखा कि ''बाबा आपने इन बहनों को 14 साल अपने पास रखकर पालना की, तपस्या करायी। मैंने आपकी भक्ति की, पूजा, पाठ, व्रत, उपवास किये लेकिन आप मुझे नहीं मिले। अभी आपका परिचय मिला है, मैं आप से मिलना चाहती हूँ। आप ज़रूर अपने पास बुलाना।'' लाल अक्षरों में बाबा का उत्तर आया कि ''क्यों नहीं बच्ची, बाबा तो आप माताओं के लिए ही आया है, जब चाहो बाबा के पास आ जाना।'' लेकिन परिवार बहुत बड़े खानदान का होने के कारण अकेली

s_book final.2.pmd 124 03-01-2005, 10:03 AM

घर से आ नहीं सकती थी। सेन्टर पर जाकर बहनों को कहा कि मैं आबू अकेली जा नहीं सकती इसलिए सास को साथ में ले चलती हूँ। बहनों ने मना कर दिया क्योंकि सास ने ज्ञान नहीं समझा था। मैंने कहा, मेरे साथ घर का कोई-न-कोई व्यक्ति चाहिए, नहीं तो मैं बाबा के पास जा नहीं सकती इसलिए आप बाबा से पूछ लो। बाबा से छुट्टी मिली कि भले सास को साथ ले आओ। सन् 1955 में जब आबू पहुँची तो उस समय आश्रम धौलपुर हाउस में था। मैं तैयार होकर बाबा से मिलने गयी तो बाबा को देखते ही दिव्यता और अलौकिकता नज़र आयी। मुझे ऐसा लगा कि ऐसा दिव्य व्यक्तित्व दुनिया में कहीं है ही नहीं। ऐसा दिव्य रूप मैंने ज़िन्दगी में कभी देखा ही नहीं था। विचित्र रूहानी कशिश थी। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि यह ऊपर से उतरकर आये हैं। इस दुनिया के नहीं हैं। साथ-साथ मैं बाबा को देखते-देखते किसी दूसरी दुनिया में चली गयी जहाँ आनन्द ही आनन्द था। मेरी तन्द्रा टूटी तो बाबा ने कहा कि यह कल्प पहले वाली बच्ची है, बाप को पहचाना है। मुझे भी यही अनुभव हुआ कि यही मेरा जन्म-जन्म का पिता है, जो मैं बहुत समय से बिछड़ गयी थी, अभी मेरा बाबा मुझे मिल गया। मैं इतनी मस्त हो गयी थी कि मुझे यह भी याद नहीं था कि मुझे वापस लौकिक घर जाना है। मैंने समझा कि अब मुझे यहीं रहना है। एक सप्ताह बीतने के बाद जाने की तैयारी होने लगी। मुझे आश्चर्य लगा कि जब बाप मिल गया तो वापस जाने की क्या दरकार है ? मैं बाबा के पास जाकर कहने लगी कि बाबा, मुझे कहीं नहीं जाना है। आपके पास ही रहना है। तब बाबा ने बड़े स्नेह से कहा, हाँ बच्ची, तुमको कहीं नहीं जाना है। तुम्हें बाबा के पास ही रहना है। बाबा ने इतना कहा तो मैं शान्त हो गयी। जब मैं शान्त हो गयी तो बाबा ने कहा, बच्ची तुम्हें जाना नहीं है, तुम्हें तो सेवा करके अन्य आत्माओं को लाने जाना है। अगर यह बहनें सेवा पर नहीं जाती तो तुम यहाँ कैसे आती ? इसलिए बाबा तुम्हें सेवा पर भेज रहा है। तुम जाकर सेवा करेगी तो और बच्चे बाबा से मिलने आयेंगे। तुम लौकिक घर थोड़े ही जा रही हो ? जब बाबा ने ऐसा कहा तो मैंने सेवा पर जाना स्वीकार कर लिया। हमने बैलगाड़ी पर सामान रखा और बाबा से विदाई ले पैदल बस स्टैण्ड गये। उस समय साधन कम थे लेकिन साधना बहुत थी। मधुबन में आते ही हरेक आत्मा अलौकिकता का अनुभव करती थी। मम्मा-बाबा के सामने आते ही हर आत्मा अलौकिक

बाबा को पत्र लिखा कि बाबा, आपका परिचय मिला है, मैं आप से मिलना चाहती हूँ। आप ज़रूर अपने पास बुलाना।" बाबा का उत्तर आया कि "क्यों नहीं बच्ची, बाबा तो आप माताओं के लिए ही आया है।

s_book final.2.pmd 125 03-01-2005, 10:32 AM

अनुभूतियों में डूब जाती थी, शरीर से परे हो जाती थी। दिल करता था कि सदा हम इसी अलौकिक दुनिया में रहें।

सन् 1955 में आबू पहुँची। मैं तैयार होकर बाबा से मिलने गयी तो बाबा को देखते ही दिव्यता और अलौकिकता नज़र आयी। मुझे ऐसा लगा कि ऐसा दिव्य व्यक्तित्व दुनिया में कहीं है ही नहीं।

निश्चय की परीक्षा आरम्भ हो गयी

बाबा के मिलने से पहले ही मेरी पवित्र रहने की इच्छा हो रही थी। जब मधुबन में बाबा से मिलकर वापस घर आयी तो पति, पति के रूप में दिखायी नहीं पड़ता था। कभी मुझे संकल्प तक नहीं आया कि यह मेरा पति है। ऐसा लगता था कि जैसे यह आत्मा भाई है। इतनी आत्मिक दृष्टि पक्की हो गयी थी। लौकिक पति ने भी तीन वर्ष सहयोग दिया, कभी तंग नहीं किया, कभी विकारी भावना से नहीं देखा। तीन साल तक हमारे जीवन में सुख-शान्ति रही। आश्रम पर आने वाले भाई-बहनों को आश्चर्य लगता था कि कैसे पति ने सहयोग दिया, हालाँकि वह आश्रम पर नहीं आता था। सभी कहते थे कि ईश्वरीय जीवन बड़ा कठिन है लेकिन मैं कहती थी कि यह बहुत सहज है। तीन वर्ष के बाद पति को लोगों ने भड़काया तो उसकी भावना भी बदल गयी और मुझे आश्रम जाने से रोकने लगा, तंग करना शुरू किया, उल्टा-सुल्टा बोलने लगा। मैं जब आश्रम जाने के लिए सुबह-सुबह तैयार होती थी तो बच्चियाँ (सुधा और रानी) भी तैयार हो जाती थीं। पति गुस्से से बोलता था कि तुम जाती हो और बच्चियों को भी ले जाती हो। इसलिए वह मुझे आश्रम जाने से रोकता था और कहता था कि सुबह चार बजे आश्रम नहीं जाया करो। तुम्हें रात भर सिर में दर्द रहता है और उल्टी होती है इसलिए तुम विश्राम करो। मुझे सिरदर्द इसलिए होता था कि मैं दिन में बाबा की सर्विस करने बाहर जाती थी। कड़ी धूप होती थी। लौकिक में कभी धूप में वा बस में जाने की आदत नहीं थी। इस कारण पति सुबह आश्रम जाने से मना करता था। मैं कहती थी कि ठीक है, मैं नहीं जाऊँगी, आप सो जाइये। जब वह सो जाता था तो मैं आश्रम चली जाती थी।

s_book final.2.pmd 126 03-01-2005, 10:03 AM

मैं विमान में बैठकर क्लास करने जाती थी

हमारा घर कमला नगर सेन्टर के नज़दीक था तो घर वालों ने सोचा कि यहाँ रहने से यह आश्रम जाना नहीं छोड़ेगी, घर बदली कर देंगे। उन्होंने शाहदरा में घर ले लिया। शाहदरा से कमला नगर दूर पड़ता था और उस समय सुबह-सुबह चार बजे बसें तो चलती नहीं थीं। लेकिन मैंने आश्रम जाना छोड़ा नहीं। मैं क्या करती थी, सुबह-सुबह सब्जी के ठेले पर बैठकर सेन्टर पर जाया करती थी। ठेले वाले पूछते थे कि आप इस समय कहाँ जाती हो ? कभी कहती थी कि गॉडली युनिवर्सिटी में जाती हूँ, कभी कहती थी कि सत्संग में जाती हूँ।

एक बार मम्मा साउथ एक्सटेंशन में आयी थी और सुबह उनसे मिलने जाना था। रेलवे स्टेशन से बस पकड़नी थी। मैं चार बजे ठेले में बैठकर स्टेशन पर आयी तो वहाँ कमला नगर से जगदीश भाई और गुलजार बहन भी आये। शाहदरा से नयी दिल्ली रेलवे स्टेशन के बीच में जंगल पड़ता था। कोई मकान आदि भी नहीं थे। मैं सब्जी के ठेले पर बैठ जाती थी। ठेले वाला कभी हिन्दू होता था, कभी मुसलमान होता था, कभी सरदार होता था। फिर भी मुझे कोई डर नहीं था। बाबा की याद में मस्त रहकर निकल पड़ती थी। जब जगदीश भाई और गुलजार बहन ने मुझे उस दिन स्टेशन पर देखा तो पूछा कि तुम किस में आती हो ? इस समय न कोई बस, न कोई टैक्सी मिलती है। मैंने हँसते हुए कहा कि बाबा मेरे लिए विमान भेजता है, उसमें आती हूँ। एक दिन बहुत बारिश पड़ रही थी। उस दिन मैं सुबह ठेले में बैठकर आ रही थी। जब ठेला जमुना का पुल पार कर रहा था, पुल के ऊपर से ट्रेन निकली और ट्रेन से कोयले मेरे ऊपर गिरे, शाल काली हो गयी। जब दिल्ली स्टेशन पर पहुँची तो जगदीश भाई ने देखा और कहने लगे कि तुम रोज़ विमान में आती हो, आज तुम्हारे विमान को क्या हुआ जो शाल काली हो गयी ? तब मैंने सारी बात बतायी। ऐसे रोज़ मेरे साथ कोई-न-कोई घटना घटती थी।

ऐसा दिव्य रूप मैंने ज़िन्दगी में कभी देखा ही नहीं था। विचित्र रूहानी कशिश थी। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि यह ऊपर से उतरकर आये हैं। इस दुनिया के नहीं हैं। बाबा को देखते किसी दूसरी दुनिया में चली गयी।

बाबा न्यायनिधि भी और दयानिधि भी थे

मैंने सदा बाबा का बहुत प्यारा रूप ही देखा था। बाबा की दृष्टि सदा मेरे

s_book final.2.pmd 127 03-01-2005, 10:32 AM

मैं जब आश्रम जाने के लिए सुबह-सुबह तैयार होती थी तो बच्चियाँ (सुधा और रानी) भी तैयार हो जाती थीं। पति गुस्से से बोलता था कि तुम जाती हो और बच्चियों को भी ले जाती हो।

लिए रूहानी स्नेह की होती थी। परन्तु बाबा जितने लवफुल थे उतने ही लॉफुल भी थे। यह अनुभव मुझे एक बार हुआ। सन् 1963 की बात है। बड़ी दीदी कमला नगर में हर बुधवार को माताओं का क्लास कराती थी। मैं क्लास करके शाम को घर लौट जाती थी। मुझे पता पड़ा कि कल सुबह राजौरी गार्डेन में बाबा सभी से मिलेंगे। मुझे संकल्प आया कि अभी घर जाकर सुबह राजौरी गार्डेन पर जा नहीं सकूँगी। बाबा दिल्ली में आये और मैं बाबा से नहीं मिलूँ – यह कैसे हो सकता है ? मेरा आकर्षण बाबा की तरफ़ बहुत था कि बाबा को सदा देखती रहूँ। दीदी का क्लास पूरा हुआ, सभी मातायें चली गयीं। मैं भी घर जाने के लिए रेलवे स्टेशन तक गयी। लेकिन मुझे संकल्प आया कि एक रात की ही तो बात है। आज रात आश्रम पर रुककर कल सुबह बाबा से मिलकर ही क्यों नहीं घर जाऊँ ? फिर उसी बस में कमला नगर सेन्टर पर आ गयी। सेन्टर पर गयी तो रुकमणी बहन ने कहा, तुम वापस आ गयी ? मैंने कहा, आज रात यहीं रहूँगी और कल बाबा का क्लास करके जाऊँगी। रुकमणी बहन ने कहा, अगर रात को तुम्हारा पति आया तो ? मैंने कहा, आप कहना कि वह यहाँ से क्लास करके चली गयी। मैं रात को रुकमणी बहन के बिस्तर पर सो गयी और अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर दिया। थोड़े ही समय के बाद पति सेन्टर पर आया और पूछा, पुष्पाल कहाँ है ? मुझे उसकी आवाज़ सुनायी पड़ी। उसको कहा गया कि वह यहाँ से चली गयी। पति को पता था कि बाबा आये हैं। वह उसी समय राजौरी गार्डेन सेन्टर पर गया और बहनों को कहा कि पुष्पाल अभी तक घर नहीं आयी है। यह कहकर वह चला गया। सुबह होते ही मैं, रुकमणी बहन और जगदीश भाई एक टैक्सी लेकर राजौरी गार्डेन गये। बाबा ऊपर वाले कमरे में ठहरे थे और आलराउण्डर दादी बाबा के पास थी और बाबा को कह रही थी कि रात को पुष्पाल का पति आया था, वह कह रहा था कि पुष्पाल घर पर नहीं पहुँची है, तो वह कहाँ गयी है ? बाबा ने कहा, बच्ची, बाबा से मिलने यहाँ आ गयी होगी, देखो। उसने कहा, बाबा वह यहाँ नहीं आयी। उसका पति यहाँ से रात को 12 बजे गया। बाबा ने कहा, क्या बच्चा रात को 12 बजे तक भटकता रहा ? तो वह रात को कहाँ रही होगी ? मैं पीछे से सीढ़ियाँ चढ़ रही थी। मैंने कहा, बाबा मैं यहाँ हूँ। बाबा बड़े आश्चर्य से देखने लगे। फिर वे कहने लगे, तुम यहाँ ! रात को कहाँ थी ? मैंने कहा, बाबा मैं रात को कमला नगर में थी।

s_book final.2.pmd 128 03-01-2005, 10:03 AM

बाबा ने कहा, वहाँ होते हुए भी उस बच्चे को तुमने भटकाया ? बेचारे को इतना तंग किया ? उस समय बाबा के चेहरे पर उस बच्चे (लौकिक पति) के प्रति बेहद दया भावना स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ रही थी। बाबा एक क्षण गहरी शान्ति में चले गये। बाबा को मालूम था कि वह बच्ची को परेशान करता है, तो भी उसके प्रति बाबा का करुणा भाव उमड़ रहा था। बाबा ने कहा, तुमने बच्चे को रात भर भटका कर उसको परेशान क्यों किया ? मैंने कहा, बाबा क्लास पूरा होते ही मैं यहाँ से चली जाऊँगी। बाबा ने अपने हाथ पीछे बाँधकर कहा, आज बाबा क्लास में जायेंगे ही नहीं। बाबा बैठ गये और कहा, तुमने उस बच्चे को परेशान किया है इसलिए बाबा क्लास में नहीं जायेंगे, पहले तुम घर जाओ। मुझ से भी रहा नहीं गया। मैंने जाकर बाबा का हाथ पकड़ा और कहा, बाबा दुनिया मुझे ठुकराती है, आप भी मुझे ठुकराते हैं ? ठीक है, मैं जा रही हूँ। मेरे ये शब्द सुनते ही बाबा की आँखें भर आयीं परन्तु आँसू बाहर नहीं निकले। जब भी बाबा का प्यार उमड़ता था तब नयन भर आते थे। मैंने बाबा को कहा, मैं जाती हूँ। इतना कहकर, बाहर निकल गयी। तुरन्त बाबा ने जगदीश भाई और अन्य भाइयों को भेजा कि जाओ, बच्ची ने रात को कुछ खाया नहीं होगा, सुबह-सुबह इतनी सर्दी में आयी है, चाय भी नहीं पी होगी। उसको चाय पिलाकर भेजो। बाबा ने रुकमणी बहन को कहा, वह रात को तुम्हारे पास थी इसलिए तुम उसको घर छोड़कर आओ। जब मैं गेट पर पहुँची तो कोई टोली लेकर, कोई चाय लेकर दौड़े आ रहे थे। मैंने कहा, मुझे कुछ नहीं चाहिए, मैं कुछ नहीं खाऊँगी। लेकिन रुकमणी बहन साथ चल दी। मैंने उसे आने के लिए मना किया और कहा, यह मेरा विषय है, जो होगा मैं देखूँगी, तुम वापस जाओ, मैं अकेली जाऊँगी। जब मैं घर पहुँची तो सभी अपने जोश में बैठे हुए थे। कहने लगे कि आ गयी ? चलो, आज तुम्हारा फैसला हो जाये। रोज़-रोज़ के झगड़े हमसे देखे नहीं जाते। मैंने भी कहा, चलो, फैसला हो जाये तो बहुत अच्छा है। पति मुझे लौकिक रिश्तेदारों के पास लेकर गया और बोला कि यह ब्रह्माकुमारियों के पंजे में आ गयी है और उन्होंने इसको भटका दिया है। पति बहुत बोलता रहा लेकिन मैं चुप रही, कुछ नहीं बोली। पति बार-बार कहने लगा कि ब्रह्माकुमारियों ने इसका दिमाग ख़राब कर दिया है। तो सभी ने फैसला किया कि इसके दिमाग (ब्रेन) का टैस्ट किया जाये।

सुबह-सुबह सब्जी के ठेले पर बैठकर सेन्टर पर जाया करती थी। ठेले वाले पूछते थे कि आप इस समय कहाँ जाती हो ? कभी कहती थी कि गॉडली युनिवर्सिटी में जाती हूँ, कभी कहती थी कि सत्संग में जाती हूँ।

s_book final.2.pmd 129 03-01-2005, 10:32 AM

दो बार ब्रेन-टैस्ट हुआ

सन् 1965 में मेरे दिमाग का टैस्ट रामतीर्थ हॉस्पिटल में कराया गया, उस समय पीठ से एक बोतल पानी निकाला गया जिस कारण मेरी पीठ कमज़ोर हो गयी। रिपोर्ट मिली कि इसका दिमाग ठीक है। आराम के बाद भी मैं बैठ नहीं सकती थी, खड़ी नहीं हो सकती थी। दिन-प्रतिदिन दर्द बढ़ता गया। उसी समय मम्मा अव्यक्त हुई। आख़िर मेरी चाची ने कहा कि तुम मुंबई आ जाओ। मुंबई में डॉक्टर को दिखायेंगे। मैं जैसे-तैसे मुंबई पहुँच गयी। मेरी चाची का लड़का बहुत बद्धिमान था, वह समझ गया कि इसको क्लास में जाने नहीं दे रहे हैं, तंग कर रहे हैं इसलिए दिमाग में तनाव रहता है। तो वह रोज़ मुझे और चाची को सुबह टैक्सी में सेन्टर पर छोड़ आता था। मैं छह महीने मुंबई में रही। फिर उसने कहा कि एक बार ब्रेन का टैस्ट कराना चाहिए। वह एक पार्सी डॉक्टर के पास ले गया। वह डॉक्टर मुझे देखकर अवाक् रह गया। वह सोचने लगा कि यह महिला इतने साधारण वस्त्रों में ! वह कहने लगा कि हमारी किताबों में लिखा हुआ है कि जब महिलायें इतने साधरण वस्त्र पहनेंगी तब दुनिया बदलेगी। मैंने कहा, अब तो दुनिया बदलने वाली ही है। वह मेरी बात बहुत उत्सुकता से सुनने लगा। लेकिन दूसरा डॉक्टर उसको कहने लगा कि ब्रह्माकुमारियाँ भाई-बहन बनाती हैं, घर-बार छुड़ाती हैं और कई उल्टी बातें सुनाने लगा तो पार्सी डॉक्टर ने उसकी बातें नहीं सुनीं और मेरे से कहा, मैं समझता हूँ कि आपका दिमाग ख़राब नहीं है। फिर भी आपके परिवार वालों को सर्टिफिकेट देना है इसलिए टैस्ट करना ज़रूरी है। मेरा टैस्ट पूरा हुआ और वह पार्सी डॉक्टर फूल माला लेकर आया और मेरे गले में डालकर कहा, यू आर आल ओके, ब्रेन इज वेरी ओके (आप बिल्कुल ठीक है, आपका दिमाग बहुत अच्छा है)। इस प्रकार मैं मुंबई में एक साल रही, उसके बाद वापस दिल्ली आयी।

मुझे पता पड़ा कि कल सुबह राजौरी गार्डेन में बाबा सभी से मिलेंगे। मुझे संकल्प आया कि अभी घर जाकर सुबह राजौरी गार्डेन पर जा नहीं सकूँगी। बाबा दिल्ली में आये और मैं बाबा से नहीं मिलूँ – यह कैसे हो सकता है ?

आख़िर लौकिक बन्धन टूट गया

आख़िर मेरे बन्धन टूटने का समय भी आ गया। मैंने दोनों बच्चियों को टिकट देकर ट्रेन में बिठा दिया और कहा कि स्टेशन से रिक्शा लेकर चन्द्रमणि दादी

s_book final.2.pmd 130 03-01-2005, 10:03 AM

के पास आश्रम पर चले जाना। खाने-पीने के लिए कुछ नहीं दिया था। सिर्फ एक बैग में कपड़े डालकर भेज दिया था। दादी चन्द्रमणि को आश्चर्य लगा कि ये दिल्ली से अकेली आयी हैं। दो बेटों को भी अपनी लौकिक माँ के पास अमृतसर भेज दिया। बच्चों को भेजने के बाद मैं फ्री हो गयी और मुझे प्रबल संकल्प आने लगा कि कैसे भी यहाँ से छूटूँ। मैंने पटना जाने की योजना बनायी। मैंने जगदीश भाई को कहा कि मेरे पटना जाने की टिकट बना दे। जगदीश भाई ने कहा, तुम स्टेशन पर आ जाना, मैं टिकट लेकर स्टेशन पर इन्तजार करूँगा। पता नहीं उस दिन पति घर से बाहर गया ही नहीं। इसलिए मैं घर से बाहर जा नहीं सकी। फिर दूसरे दिन जगदीश भाई को फोन किया कि कल ज़रूर टिकट करा देना, मैं ज़रूर आ जाऊँगी। दूसरे दिन मैं छोटी-सी अटैची लेकर दोपहर 12 बजे घर से निकल गयी। पति को पता पड़ा तो वह ढूँढ़ता हुआ मेरे पीछे आया। लेकिन गलियों में होती हुई, छिप-छिपाकर पति से बचते हुए बस स्टैण्ड पर पहुँची। बस पकड़कर कमला नगर न जाकर, दूसरे सेन्टर पर गयी। उसी रात को पटना मेल में बैठकर पटना पहुँच गयी। उसी दिन से पति और घर वालों के बन्धन से मुक्ति मिल गयी।

कुछ वर्षों के बाद बच्चे मुझे वापस आने के लिए जबरदस्ती करने लगे क्योंकि मकान, पैसे, जेवर, लॉकर्स आदि सभी मेरे नाम पर ही थे। रिश्तेदारों ने समझा कि इसने सब कुछ ब्रह्माकुमारियों को दे दिया होगा। इसलिए बच्चे बार-बार मेरे पास आकर तंग करने लगे। एक बार बड़ा बेटा आया क्योंकि उसकी शादी थी। शादी में जेवर चाहिएँ थे। बेटा बड़ी दीदी के पास जाकर दीदी से पत्र लिखवाकर आया। उस समय मैं विराट नगर, नेपाल में थी। वह वहाँ आया और दीदी का पत्र दिखाया। बड़ी दीदी ने पत्र मैं लिखा था कि बच्चे की शादी है तो उसको कुछ जेवर आदि दे दो। मैं बाबा के कमरे में गयी और बाबा से पूछा कि मैं जाऊँ या न जाऊँ। मुझे बाबा की टचिंग हुई कि मुझे जाना चाहिए। मैं बेटे के साथ दिल्ली आयी। मैं सेन्टर पर ठहरी, बच्चा घर गया। अगले दिन बेटे को लेकर बैंक गयी। मेरे लॉकर्स में जो कुछ था सब उसको दिखाया। वह देखकर हैरान हो गया क्योंकि हीरे, मोती, सोना, जेवर सब उसमें थे। बेटे ने सुना था कि माँ ने सब कुछ ब्रह्माकुमारियों को दे दिया है। मैंने कहा, तुमको जो चाहिए, जितना चाहिए उठा लो। वह उठाने में संकोच करने लगा। थोड़े समय तक उसको समझ में नहीं आया कि क्या करे, क्या

मैंने जाकर बाबा का हाथ पकड़ा और कहा, बाबा दुनिया मुझे ठुकराती है, आप भी मुझे ठुकराते हैं ? ठीक है, मैं जा रही हूँ। ये शब्द सुनते ही बाबा की आँखें भर आयीं। जब भी बाबा का प्यार उमड़ता था तब नयन भर आते थे।

s_book final.2.pmd 131 03-01-2005, 10:32 AM

ले और कितना ले। फिर उसने आधा लिया और कहा कि हम दोनों भाइयों के लिए लिया है। मैंने कहा, ठीक है। फिर उसने एक क्षण सोचा और कहा, मम्मी आप तो तीन लोग हैं। फिर उसने जो लिया था उसमें से निकाल कर मेरे में डाल दिया। वह अपना लेकर चला गया। मकान भी लड़कों के नाम लिख दिया और काग़ज़ात भी उन्हें दे दिये। वे सब ख़ुश हो गये। मैंने अपना हिस्सा जो मिला था उसको लेकर लॉकर्स ख़त्म करके हमेशा के लिए लौकिक सम्बन्ध और बन्धन दोनों तोड़ दिये और निश्चिन्त होकर बाबा की सेवा में व्यस्त हो गयी।

वह मुझे एक पार्सी डॉक्टर के पास ले गया। डॉक्टर मुझे देखकर अवाक् रह गया। वह सोचने लगा कि यह महिला इतने साधारण वस्त्रों में ! उसने कहा कि जब महिलायें इतने साधरण वस्त्र पहनेंगी तब दुनिया बदलेगी।

बाबा के अन्तिम दिनों की स्थिति का अनुभव

सन् 1968 में मैं बाबा से मिलने आयी। उस समय मुझे बाबा अलग दिखायी पड़ते थे। मुझे लगता था कि बाबा बदल गये हैं, पहले वाले बाबा नहीं हैं। एक दिन मैं और न्यूयार्क वाली मोहिनी बहन बाबा के कमरे में गये। बाबा एकदम मगन अवस्था में थे। पहले कभी बाबा के कमरे में जाते थे तो बाबा कहते थे, आओ, बच्चे आओ। उस दिन हम दोनों बहुत देर तक खड़ी रहीं परन्तु बाबा ने कुछ नहीं कहा। हमें महसूस हुआ कि बाबा का शिव बाबा के साथ बहुत गहरा कनेक्शन जुड़ा हुआ है। बहुत तल्लीन अवस्था में हैं इसलिए हम बाबा को डिस्टर्ब नहीं करेंगे। हम जाने की सोच ही रहे थे कि बाबा की नज़र हम पर पड़ी तो बाबा ने कहा, बच्ची आयी हो ? इतना कहकर फिर शिव बाबा की याद में मगन हो गये। हमें लगा कि बाबा उपराम हो गये हैं। एक दिन बाबा क्लास कराकर बाहर आ रहे थे और बाबा के साथ लच्छू बहन और ईशू बहन थी। उस समय मुझे एक अनोखा दृश्य दिखायी दिया। बाबा के पाँव धरती से बहुत ऊपर दिखायी पड़ रहे थे और इन दोनों बहनों के पाँव बहुत नीचे धरती पर दिखायी पड़े। मैं यह दृश्य बहुत ध्यान से देखने लगी और ऐसा लगा कि बाबा सम्पूर्ण फ़रिश्ता बन गये हैं। एकदम इस दुनिया से उपराम हो गये हैं। बाद में मैंने बहुत भाई-बहनों को भी बताया कि बाबा की अवस्था बहुत ऊँची हो गयी है, बाबा सम्पूर्ण फ़रिश्ता दिखायी दे रहे हैं। इस प्रकार बाबा के अन्तिम दिनों की स्थिति को भी मैंने देखा। यह मेरा सौभाग्य है। ❄

s_book final.2.pmd 132 03-01-2005, 10:03 AM

बाबा कितने निरहंकारी थे !

आबू– बच्चों की सेवा करते हुए बाबा। साथ में हैं (दायें से बायें) जमुना प्रसाद भाई, मधुबन, जयप्रकाश भाई, दिल्ली और अन्य।

तिनसुकिया, आसाम से ब्रह्माकुमारी सत्यवती बहन जी अपने अनुभव सुनाती हैं कि प्यारे, मीठे साकार बाबा से मेरा पहला मिलन सन् 1961 में मधुबन में हुआ। जैसे ही हम आये तो बाबा धोबीघाट पर खड़े थे। देखते ही बाबा ने हमें गले लगाया और कहा, ''आ गयी मेरी मीठी, प्यारी बच्ची।'' बाबा के ये बोल सुनते

s_book final.2.pmd 133 03-01-2005, 10:32 AM

ब्रह्माकुमारी सत्यवती बहन जी

ही मुझे अनुभव हुआ कि जो कुछ है, सर्वस्व यही है। उसी क्षण मेरा बुद्धि का लगाव, झुकाव सब तरफ़ से ख़त्म हो गया।

एक बार मैं अपने गाँव में सवेरे क्लास में जा रही थी तो बीच में एक चोर मिला और उसने मेरे गले की चैन खींची, मैंने उसका सामना किया। जब बाबा को मैंने यह समाचार सुनाया तो बाबा ने मुझसे कहा, यह मेरी शेरनी बच्ची है जो गुण्डे का सामना करके आयी है। उसी समय से डर बिल्कुल समाप्त हो गया। जब-जब कोई परिस्थिति आती है तो ऐसा महसूस होता है जैसेकि बाबा का वरदानी हाथ मेरे सिर पर है।

बाबा से मेरा पहला मिलन सन् 1961 में मधुबन में हुआ। जैसे ही हम आये तो बाबा धोबीघाट पर खड़े थे। बाबा ने मुझसे कहा, यह मेरी शेरनी बच्ची है जो गुण्डे का सामना करके आयी है। उसी समय से डर बिल्कुल समाप्त हो गया।

बाबा के मस्तक से जैसे कि किरणें निकल रही हैं

एक बार मैं क्लास में बाबा के सामने बैठी थी। मुझे ऐसा लग रहा था कि एक ज्योति बाबा में आकर समा रही है और बाबा के मस्तक से जैसे कि किरणें निकल रही हैं। इससे पहले मुझे ब्रह्मा बाबा से तो बहुत प्यार था लेकिन यह निश्चय नहीं था कि शिव बाबा इनमें आते हैं। परन्तु उस दिन से ऐसा अनुभव हुआ कि संसार की कोई हस्ती मेरे निश्चय को हिला नहीं सकती।

एक बार बाबा से मिल रही थी तो बाबा ने मेरे सिर पर हाथ रख कर बोला, बच्ची, तुम्हारे जैसी एक दर्जन मातायें मिल जायें तो बाबा का कार्य जल्दी हो जाये। उसके बाद जब मैं कोलकाता गयी तो टिबरेवाल धर्मशाला में प्रदर्शनी की। उसी प्रदर्शनी से एक दर्जन मातायें निकलीं और निश्चय बुद्धि बनीं। इस प्रकार, बाबा का महावाक्य सिद्ध हो गया।

सन् 1965 में जब मम्मा अव्यक्त हुई तो बाबा को देखा कि बाबा ड्रामा की पटरी पर अटल, अडोल खड़ा था। बच्चों को धीरज दे रहा था कि ड्रामा में होगा तो तुम्हारी माँ वापस ज़रूर आयेगी। बाबा जैसे बिल्कुल निश्चिन्त थे। बाबा अशरीरी स्थिति का कैसे अभ्यास करते थे – यह हमने प्रैक्टिकल देखा। एक बार बाबा लेटे हुए अख़बार देख रहे थे। देखते-देखते बाबा एकदम साइलेन्स में चले गये। मैं सामने खड़ी देख रही थी कि बाबा को क्या हुआ। फिर थोड़ा समय के बाद जब बाबा की पलकें झपकीं तो लगा कि बाबा कैसे अशरीरी हो जाते हैं ! हमने देखा,

s_book final.2.pmd 134 03-01-2005, 10:03 AM

बाबा को बच्चों को अलौकिक पालना देने का, उन्हें ज्ञान-रत्नों से शृंगारने का, गुणों से सम्पन्न बनाने का, सेवा में बच्चों को आलराउण्डर बनाने का बहुत शौक था।

बाबा की दृष्टि जैसे सर्च लाइट का अनुभव कराती थी। इतनी उम्र होते हुए भी बाबा ऐसे चलते थे जैसे कि फ़रिश्ता चल रहा है। बाबा के एक-एक बोल ऐसे होते थे जो दिल में जगह बना लेते थे। सर्व के प्रति बाबा की दृष्टि समान और सम्मानयुक्त रही।

बाबा के सिर से एक ज्योति बाहर निकल रही थी

एक बार बाबा के साथ झूले में झूल रही थी। बाबा ने पूछा, बच्ची, किसके साथ झूल रही हो ? मुझे ऐसे लग रहा था जैसेकि छोटे मिचनू श्री कृष्ण के साथ झूल रही हूँ। बाबा कितने निरहंकारी थे ! मुरली क्लास पूरी होने के बाद जब बाबा उठते थे तो दरवाज़े के बाहर जाने तक बाबा बच्चों को नमस्ते-नमस्ते कहते बच्चों की तरफ़ पीठ न करके ऐसे ही पीछे चलते थे और बाहर जाने के बाद मुड़कर जाते थे। उस समय मैंने देखा कि बाबा के सिर से एक ज्योति बाहर निकल रही थी।

एक बार मैं अमृतवेले 3.30 बजे बाबा के पास गयी। बाबा गद्दी पर बैठे थे। जैसे ही मैंने कमरे में प्रवेश किया, बाबा ने मुझे गले से लगाया तो ऐसा महसूस हुआ जैसेकि कोई शक्तिशाली फ़रिश्ता और रूई जैसा बहुत हल्का है। हड्डी-मांस का शरीर महसूस ही नहीं हुआ। बाबा मुझे 'फूल बच्ची' कह पुकारते थे। ❄

शिव भगवानुवाच :

मीठे बच्चे, तुम पुरुषोत्तम संगमयुगी हो। इस संगम पर तुम ज्ञान की नयी-नयी बातें सुनते हो तो उसका चिन्तन चलना चाहिए, जिसको विचार सागर मंथन कहा जाता है। तुम हो रूप-बसन्त, तुम्हारी आत्मा में सारा ज्ञान भरा जाता है।

मुरली क्लास पूरी होने के बाद जब बाबा उठते थे तो दरवाज़े के बाहर जाने तक बाबा बच्चों को नमस्ते-नमस्ते कहते बच्चों की तरफ़ पीठ न करके ऐसे ही पीछे चलते थे और बाहर जाने के बाद मुड़कर जाते थे।

s_book final.2.pmd 135 03-01-2005, 10:32 AM

मेरे बहुरूपी बाबा

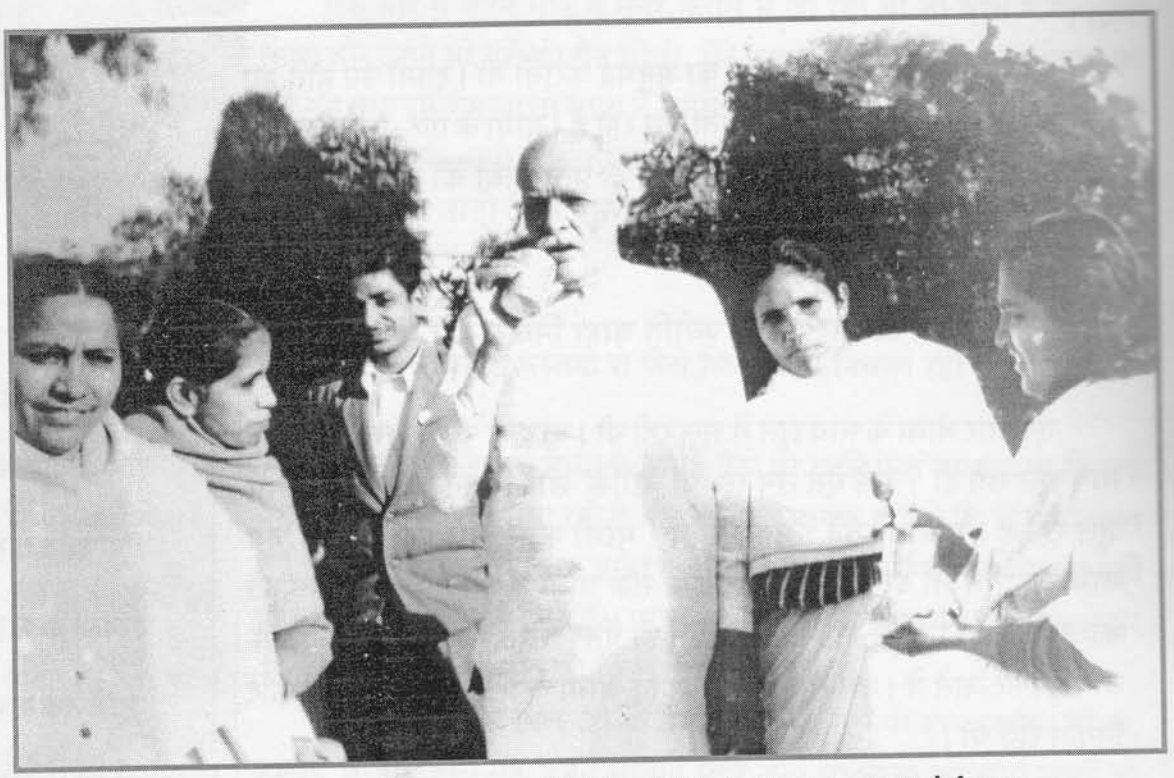

आबू– गरम-गरम दूध पीते हुए बाबा। साथ में हैं दीदी मनमोहिनी, कौशली बहन, सरला बहन, रोजी बहन।

कटक, उड़ीसा से ब्रह्माकुमारी कमलेश बहन जी कहती हैं कि मुझे ईश्वरीय ज्ञान सन् 1962 में मिला और साकार बाबा से सन् 1965 में मिली, पर पत्रों द्वारा सम्पर्क पहले से ही था। बाबा से प्रथम मिलन में तो मुझे बहुत ही सुन्दर अनुभव हुए। मैं बहुत बाँधेली गोपिका थी। जिसको मैं खोज रही थी उस भगवान को मैंने पा लिया। बाबा को देखते ही लगा कि पाना था सो पा लिया, अब कुछ नहीं है पाने का। जब मैं पहली बार बाबा की गोद में गयी तो मुझे अतीन्द्रिय सुख का अनुभव हुआ और नशा चढ़ा कि मैं स्वयं भगवान की गोद में हूँ। फिर बाबा ने मेरी परीक्षा ली। पूछा, बच्ची, मैं अपने बच्चों को कितना प्यार करता हूँ ! क्या तुम्हें अपने बच्चे याद नहीं आते ? क्या उनसे मोह नहीं है ? मैंने कहा, नहीं बाबा। मैं

s_book final.2.pmd 136 03-01-2005, 10:03 AM

तो आपकी बच्ची हूँ। मुझे बहुत सेवा करनी है। तो बाबा ने मुझे बहुत प्यार दिया, पीठ पर हाथ रख शाबासी दी, गोद में लिया और कहा, ''बाबा को ऐसी साहसी बच्चियाँ चाहिएँ। शाबास बेटी, तुम ऐसे ही सर्विस करते आगे बढ़ती रहना। तुम मेरे विजयी रत्न हो।'' दादी निर्मलशान्ता जी की ओर देखकर बाबा ने कहा, इस बच्ची को यहाँ मधुबन में जी भरकर रखना। मैं प्रथम बार ही मधुबन में तीन मास साकार बाबा के पास रही। एक झलक में ही मुझे बाबा ने दो वरदान दिये – ''विजयी भव'' और ''सेवा करते रहो।'' आज भी ये वरदान प्रैक्टिकल हर पल अनुभव करती रहती हूँ। साकार बाबा का वो दृश्य आँखों के सामने आते ही मेरे पैर ख़ुशी के मारे पृथ्वी पर नहीं रहते, अतीन्द्रिय सुख में खो जाती हूँ।

ब्रह्माकुमारी कमलेश बहन जी

मुझे ईश्वरीय ज्ञान सन् 1962 में मिला और साकार बाबा से सन् 1965 में मिली, पर पत्रों द्वारा सम्पर्क पहले से ही था। बाबा से प्रथम मिलन में तो मुझे बहुत ही सुन्दर अनुभव हुए। मैं बहुत बाँधेली गोपिका थी।

बाबा के अनेक रूप दिखायी पड़ते थे

बाबा के इन वरदानों के कारण ही, ईश्वरीय जीवन में जितनी भी अलौकिक और लौकिक परीक्षायें, परिस्थितियाँ आयीं, मैं उनमें सदा विजयी रही। साहस और सहनशीलता बहुत बढ़ गयी। कई बार मुझे ऐसा लगता कि बाबा मेरे सामने खड़े हैं। कई बार भाषण करते समय अनुभव होता है कि बाबा ने ही करवाया, मैंने कुछ नहीं किया। अनुभव होता है कि बाबा मेरे सिर पर हाथ रखते और शक्ति भरते हैं। जब बाबा मुरली सुनाते थे तब मैंने कई बार अनुभव किया कि बाबा के मस्तक में लाइट चमक रही है और उससे मुझे शक्ति मिल रही है। मैंने बाबा के कई रूपों का अनुभव किया है। जैसे कभी गोपियों के साथ श्री कृष्ण का रूप, कभी सखा का स्वरूप, कभी शिक्षक का स्वरूप, कभी गुरु का वरदानी स्वरूप, कभी गिरे हुओं को ऊपर उठाने वाले पतितोद्धारक का स्वरूप, कभी निर्बलों को बल देने वाले बलवान का स्वरूप, कभी बेसहारों को सहारा देने वाले दीनबन्धु का स्वरूप।

जिसके सिर पर भगवान का हाथ है, क्या करेंगे भाई और बन्धन ?

जब मैं बन्धन में थी उस समय प्यारे बाबा के पत्रों को हमारे घर वाले पढ़ने

s_book final.2.pmd 137 03-01-2005, 10:32 AM

नहीं देते थे। उनको मैं साड़ियों में छिपा कर रखती थी। जब घर वाले उनकी खोजबीन करते थे तो एक भी पत्र उन्हें नहीं मिलता था। साड़ी झाड़ने के बाद भी वे नीचे नहीं गिरते थे, मानो कोई ने अपनी जादूगरी से उन्हें साड़ी के अन्दर चिपका कर रखा हो। वे लोग चुप रह जाते। यह प्यारे बाबा का चमत्कार नहीं था तो और क्या !

एक बार मेरा लौकिक भाई आया और चेतावनी देकर गया कि तुम जहाँ भी होगी, तुम्हें मैं वापिस घर ले जाऊँगा। गुण्डों को लेकर पहुँचूँगा। तुम्हें रहना है तो ससुराल में रहो, या मेरे पास रहो। मैं थोड़ा डर गयी। यह बात मैंने बाबा को कमरे में सुनायी तो बाबा ने प्यार से सिर पर हाथ रखकर कहा, ''बच्ची, तुम बिल्कुल नहीं डरो। तुम बाबा पर बलिहार हो गयी हो, अनुभवी हो, तुम्हें दुनिया की कोई शक्ति मुझसे दूर नहीं ले जा सकती। बलिहार होने वाले बाबा के गले के हार होते हैं। तुम बाबा के गले का हार हो। तुम्हें माया नहीं हरा सकती।'' मुझे बहुत हिम्मत और साहस आ गया। मेरा भाई कुछ नहीं कर सका। वह हार गया, बाबा की जीत हो गयी। कैसा भी बड़ा बन्धन और भयभीत करने वाली बात मेरा कुछ नहीं कर सकी।

बाबा ने कहा, ''बाबा को ऐसी साहसी बच्चियाँ चाहिएँ। शाबास बेटी, तुम ऐसे ही सर्विस करते आगे बढ़ती रहना। तुम मेरे विजयी रत्न हो।'' 'विजयी भव'' और ''

दिलाराम बाबा ने मेरे दिल की आश जान ली

सन् 1966 की बात है। उस समय मैं एक सेन्टर पर थी। मैं बहुत बीमार हो गयी। ऐसी परिस्थिति आयी कि कमज़ोरी के कारण चलना भी मुश्किल हो गया। पता नहीं जानीजाननहार बाबा को कैसे पता पड़ा, दूसरे दिन ही साकार बाबा का टेलिग्राम आया कि बच्ची को फ़ौरन मधुबन भेजो। उस बीमार अवस्था में मेरे श्वास-श्वास में बाबा और मधुबन की ही याद थी। जब मधुबन पहुँची तो बड़ा विचित्र और रोमाञ्चकारी दृश्य था। पहुँचते ही बाबा मेरा हाथ पकड़कर बगीचे में ले गये और एकदम पास में बिठाकर सारा समाचार पूछा। दिलाराम बाबा ने मेरे दिल की आश जान ली और साकार में सुन भी ली। उस समय मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मैं अपने प्यारे दिलवर के सामने सब दिल की बातें सुना रही हूँ। बाबा ने इतना प्यार किया जिसे कि मैं वर्णन नहीं कर सकती। मैं अपने सारे दु:ख-दर्दों को भूल गयी और बाबा की प्रीत में खो गयी।

03-01-2005, 10:03 AM

बच्चों को ख़ुश रखना ही, बाबा का एकमेव उद्देश्य होता था

एक बार मधुबन में मैं और सत्यवती बहन झूले में झूल रहे थे। बाबा आकर बीच में बैठ गये। हमें ऐसा अनुभव हुआ कि बाबा एक छोटा, सुन्दर बच्चा है, वह हमारे साथ बैठा हुआ है। हमें बहुत ख़ुशी हो रही थी। तब बाबा ने बोला, बच्ची, तुम ऐसे ही सदा अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते रहना। एक बार की घटना है, मुझे सब्जी कटवाने की ड्यूटी मिली हुई थी। बाबा मेरे पास आकर बैठ गये। एक तरफ़ मैं थोड़ा डर गयी, दूसरी तरफ़ अपने भाग्य पर नाज़। बाबा ने कहा, बच्ची क्या कर रही हो ? मैंने कहा, बाबा कच्चे टिण्डों को पके हुओं से और पके हुओं को कच्चे टिण्डों से निकाल रही हूँ। बाबा ने कहा, बच्ची, देखो मैं तुम्हारे कच्चे टिण्डों से पके टिण्डों को निकाल दूँगा और पके हुए टिण्डों से कच्चे टिण्डों को निकाल दूँगा। सचमुच, बाबा ने टोकरियों में हाथ डाला और कच्चों में से पकों को निकाल दिया जिन्हें कि हम अलग-अलग कर चुके थे। इस प्रकार बाबा बच्चों को हँसाते थे, बहलाते थे और आश्चर्यचकित कर देते थे। जब भी बाबा हमारे आस-पास होते तब हमारे में ख़ुशी की लहरें प्रवाहित होती थीं, मन आनन्द से विभोर हो जाता था।

बाबा के कई रूप मैंने देखे। जैसे कभी श्री कृष्ण का रूप, कभी सखा का रूप, कभी शिक्षक का रूप, कभी गुरु का वरदानी रूप, कभी पतितोद्धारक का रूप, कभी बेसहारों को सहारा देने वाले दीनबन्धु का स्वरूप।

आँख मिचौली खेल

एक बार बाबा ने मेरे साथ आँख मिचौली खेली। बाबा क्लास में जा रहे थे। छोटे हाल में क्लास होना था। मैंने सोचा कि बाबा जिस गेट से प्रवेश करते हैं मैं भी उधर से ही जाकर क्लास में बैठूँगी। जब मैंने देखा कि बाबा पीछे के गेट की तरफ़ जा रहे हैं तो मैं पीछे के गेट की तरफ़ गयी परन्तु फिर बाबा आगे के गेट की तरफ़ जाने लगे। मुझे लगा शायद मेरी आँखें ही मुझे धोखा दे रही हैं। फिर एक सेकण्ड चुप होकर बाबा से पूछना चाहा, उतने में बाबा ने मुझसे कहा, बच्ची, तुमने आज बाबा के साथ आँख मिचौली खेली ना ? तुम जहाँ भी बैठोगी बाबा तुम्हारे साथ है।

हमेशा बाबा में सम्पूर्णता और सम्पन्नता दिखायी पड़ती थी। उनके सामने

जाते ही मैं सब कुछ भूल जाती थी, एक तरह की अलौकिक मस्ती में डूब जाती थी। बाबा का पुरुषार्थ उच्च श्रेणी का था। अमृतवेले दो बजे जागकर बाबा योग साधना करते थे। चलते-फिरते बाबा ख़ुद याद में रहते थे और जो भी मिले उनको भी बाबा की याद दिलाते थे। बाबा फ़ाकदिल थे। शिव बाबा पर और शिव बाबा के सिद्धान्तों पर उनका अचल, अटल और अविनाशी निश्चय था। वे किसी भी परिस्थिति में हिले नहीं। जब समाज में इस ज्ञान को कोई मानता नहीं था, कई बड़े-बड़े परिवारों की मातायें, कन्यायें घर त्यागकर आयीं, उनको शरण देना, उनकी पालना करना – कितनी हिम्मत की बात है ! किसी की पत्नी, किसी की माँ, किसी की बच्ची, किसी की बहन एक बूढ़े व्यक्ति के साथ सब कुछ छोड़कर चली जाये तो कितने हंगामें मचे होंगे, कितने केस चले होंगे ! फिर भी ब्रह्मा बाबा एकदम निश्चिन्त थे। दुनिया वाले भी कुछ नहीं कर पाये, आश्चर्य से देखते रहे। आख़िर जीत उन गोपियों की ही हुई जो मुरलीधर शिव बाबा पर न्योछावर हुई थीं, उसकी मुरली पर मोहित हुई थीं।

हमेशा बाबा में सम्पूर्णता और सम्पन्नता दिखायी पड़ती थी। उनके सामने जाते ही मैं सब कुछ भूल जाती थी, एक तरह की अलौकिक मस्ती में डूब जाती थी। बाबा का पुरुषार्थ उच्च श्रेणी का था।

बाबा सर्व गुणों से सम्पन्न थे। उनमें से बाबा का एक गुण मुझे बहुत पसन्द आया, माताओं और कन्याओं को सम्मान देकर उनको ऊँचा उठाया और दुनिया के सामने दर्पण बनाया, सेम्पल बनाया। अपना सब कुछ उनको समर्पण कर सिर्फ आध्यात्मिक नेता नहीं, सफल एवं समर्थ प्रशासक भी बनाया। नारी समस्त विश्व के लिए मार्गदर्शक भी बन सकती है – यह सिद्ध करके दिखाया।

भावनाप्रिय मेरे भोले बाबा

एक बार कर्नाटक की पार्टी मधुबन में बाबा से मिलने आयी थी। उसमें एक माता बाबा के लिए गुड़ की पोटली लेकर आयी थी जो उसने अपनी ब्राह्मणी को दी कि बाबा को दे दे। टीचर बहन ने सब सामान दे दिया था परन्तु गुड़ की पोटली नहीं दी थी। बाबा ने तुरन्त टीचर से पूछा, वो पोटली कहाँ है जो यह माता लायी थी। टीचर घबरा गयी कि यह बात बाबा को कैसे पता पड़ी ! फिर बाबा ने कहा, जाओ, पहले पोटली ले आओ। उस बहन ने लाकर बाबा को दी। बाबा ने उसे खोलकर देखा और लच्छु बहन को बुलाकर कहा, आज ही इस गुड़ से मीठा चावल

s_book final.2.pmd 140 03-01-2005, 10:03 AM

बनाओ, बाबा भी खायेगा और बच्चों को भी खिलायेगा।

एक बार मैं बाबा के पास बैठी थी। उस समय बाबा से एक पार्टी मिलने आयी। उनमें से एक भाई ने बाबा से कहा कि बाबा, हमारे यहाँ कोई बहन ठहरती नहीं है, सन्तुष्ट नहीं रहती। तुरन्त बाबा का रूप बदल गया। मुझे लगा कि बाबा ने धर्मराज का रूप धारण किया है। बाबा ने उस भाई से कहा, जिसमें बहुत देह-अहंकार होता है, उससे कोई सन्तुष्ट नहीं रह सकते और कोई वहाँ टिक भी नहीं सकता। इसलिए पहले अपने देह-अहंकार का त्याग करो, तब सन्तुष्ट होंगे। इस तरह प्यारे बाबा बहुरूपी बन बच्चों को प्यार भी करते थे और सब शिक्षा भी देते थे। ❄

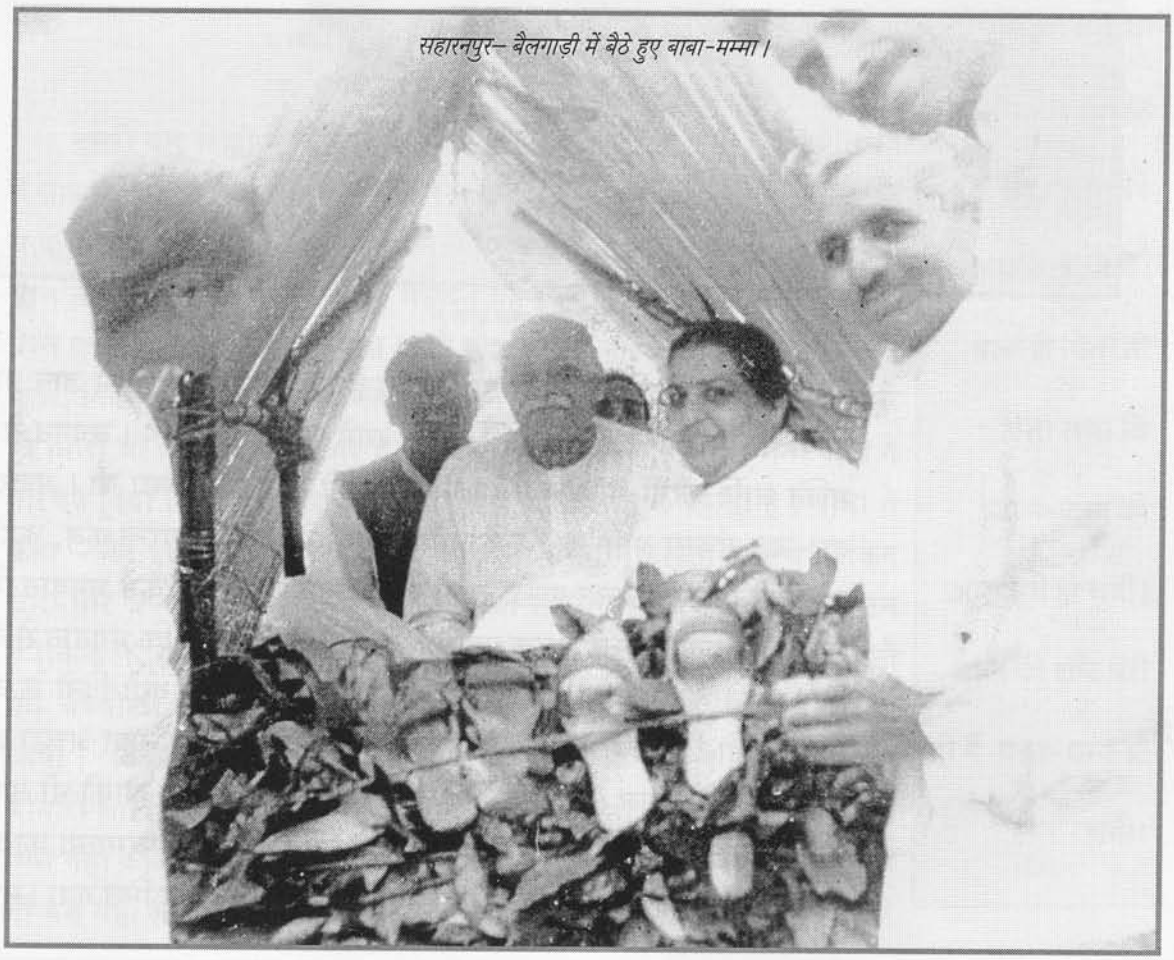

सहारनपुर– बैलगाड़ी में बैठे हुए बाबा-मम्मा।

s_book final.2.pmd 141 03-01-2005, 10:32 AM

बाबा लोहे को सोना बनाने वाले चैतन्य पारसमणि थे

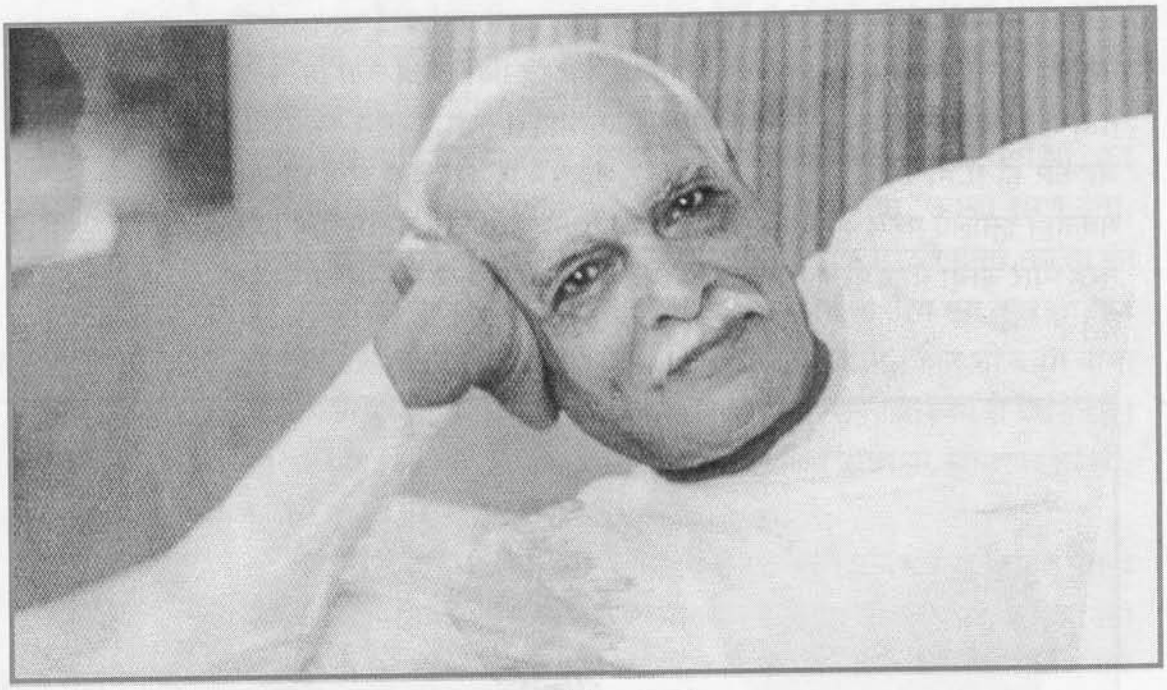

प्रभु-मस्ती में मस्त बाबा।

अम्बाला कैंट से पुष्पा माता लिखती हैं कि मैंने सन् 1959 में ज्ञान प्राप्त किया और परिवार सहित ज्ञान में चली जिसमें चार बच्चे भी थे। बचपन से ही भक्ति आदि करती थी और परमात्मा से मिलने की बहुत इच्छा थी। अन्दर में बार-बार संकल्प आता था कि मैं कभी भगवान से मिली थी परन्तु कब, कहाँ – यह पता नहीं था। अन्दर इच्छा रहती थी कि कोई बताये कि कैसे भगवान मिल सकता है। एक बार घर में एक महात्मा जी आये, उनसे पूछा कि भगवान से कैसे मिल सकते हैं। महात्मा जी ने कहा, अभी तुम छोटी हो। थोड़े दिनों के बाद मालूम हुआ कि आबू से सफ़ेद पोशधारी बहनें आयी हैं और बहुत अच्छा ज्ञान सुनाती हैं। मेरे युगल (पति) के मित्र ने आकर बताया और वह हमको भी आश्रम पर ले गया जहाँ हमको ध्यानी दादी और राधे बहन ने आत्मा, परमात्मा का ज्ञान सुनाया। बस, मुझे तो निश्चय हो गया कि मैं जो चाहती थी वह मिल गया। मुझसे

s_book final.2.pmd 142 03-01-2005, 10:03 AM

ध्यानी दादी ने निश्चय पत्र लिखने को कहा। मैंने निश्चय पत्र लिखकर बाबा को मधुबन भेज दिया। बाबा का लाल अक्षरों वाला पत्र आया कि ये पक्के हैं, भले आयें। टेप द्वारा बाबा की आवाज़ सुनी तो दिल होती थी कि बाबा से मिलूँ। दिन बीतते गये दिल तड़पता रहा मिलने के लिए। कुछ समय के बाद समाचार मिला कि बाबा दिल्ली आ रहे हैं, यह सुनकर बहुत ख़ुशी हुई। बाबा दिल्ली आये तो मैं और मेरे युगल बाबा से मिलने गये। बाबा से मिले तो ऐसा लगा कि जन्म-जन्म की आश पूरी हो गयी। जब बाबा की दृष्टि मुझ पर पड़ी तो अनुभव हुआ कि बाबा के मस्तक पर शिव बाबा की प्रवेशता हुई और मैं चुम्बक की माफ़िक खिंचकर बाबा की गोद में चली गयी। मुझे यह अनुभव हुआ कि मैं अपने पिता से मिल रही हूँ।

पुष्पा माता

मैंने सन् 1959 में ज्ञान प्राप्त किया और परिवार सहित ज्ञान में चली जिसमें चार बच्चे भी थे। बाबा से मिली तो ऐसा लगा कि जन्म-जन्म की आश पूरी हो गयी। बाबा की दृष्टि पड़ी तो मैं धन्य-धन्य हो गयी।

बच्ची, किसके पास आयी हो ?

दूसरी बार दिल्ली में प्यारे बाबा मेजर भाई की कोठी पर आये थे। उस समय मैं बाबा से मिलने गयी तो बाबा आँगन में खड़े थे। मैं वहीं बाबा से मिली। उसके बाद मैं अपने शहर आ गयी लेकिन मन में मधुबन जाने की इच्छा बनी रही। एक साल के बाद मधुबन जाना हुआ। मधुबन पहुँचकर सुबह की क्लास में बाबा ने प्रश्न पूछा – बच्ची, किसके पास आयी हो ? मैंने कहा, पिता के घर। बाबा ने पूछा, निश्चय है ? पहले कब मिली हो ? मैने कहा, हाँ बाबा, कल्प पहले भी ऐसे ही मिली थी। फिर बाबा कमरे में गये। हम भी वहाँ गये। वहाँ ध्यानी दादी ने परिचय दिया कि यह चार बच्चों और युगल सहित ज्ञान में चलती है। बाबा ने कहा – मैंने इसे अपनी एक बच्ची दी है। उस समय मुझे पता नहीं था लेकिन धीरे-धीरे बच्चे बड़े हुए, उनमें से एक बच्ची समर्पित होकर 32 साल से पाटन सेवाकेन्द्र पर सेवा कर रही है। यह मुझे बाद में पता पड़ा कि बाबा ने मुझे अपनी एक बच्ची दी है। बाबा का बनने से ऐसा अनुभव हुआ है कि 'पाना था सो पा लिया !' विकट परिस्थितियों में भी बाबा की मदद का अनुभव बहुत हुआ है। बीमारी आदि में भी बाबा की मदद मिली है। ठंडी, गर्मी, बारिश में कभी क्लास मिस नहीं की है। कुछ भी हो सवेरे की क्लास में 44 वर्षों से नित्य जाती हूँ। अब तो बस यही आशा है कि चलते-फिरते बाबा की याद में ही शरीर छूटे। ❋

s_book final.2.pmd 143 03-01-2005, 10:32 AM

बच्चों को सर्व सम्बन्धों के अनुभव कराने वाले सर्व सम्बन्धी बाबा

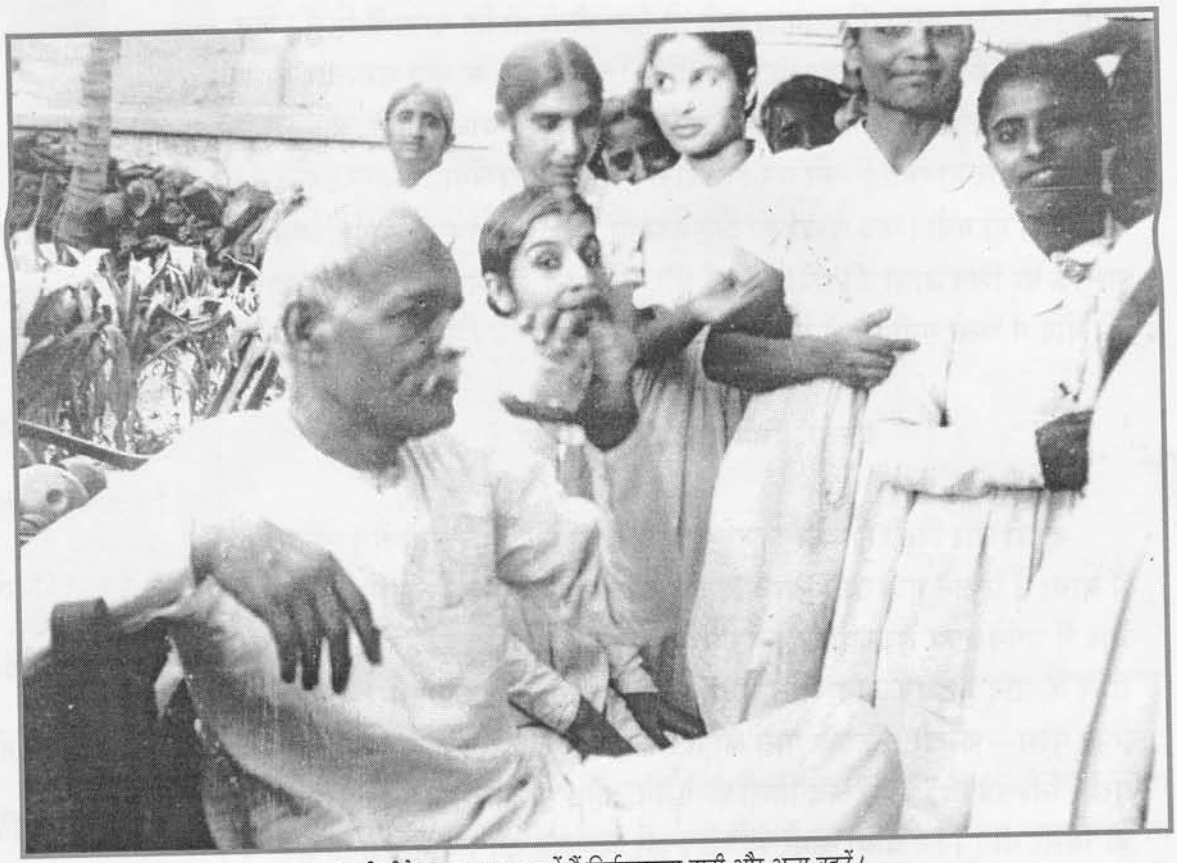

पानी पीते हुए बाबा। साथ में हैं निर्मलशान्ता दादी और अन्य बहनें।

अहमदाबाद से सावित्री माता, साकार बाबा के संग के अनुभव सुनाती हैं कि मेरा अलौकिक जन्म सन् 1965 में हुआ और मैं बाबा से मिलने तुरन्त दो माह में ही मधुबन आ गयी। जब बाबा के सम्मुख गयी तो बाबा को देखते ही लाइट ही लाइट दिखायी दी। मैं अपने आपको भूल गयी, जैसे कोई आनन्द की दुनिया में खो गयी। कुछ ही क्षण बाद बाबा की मधुर आवाज़ कानों में पड़ी, बच्ची, कुछ बोलो। लेकिन मैं तो बाबा को देखने में ही मगन हो गयी। मेरे साथ एक बहन थी उसने बाबा को कहा कि यह पवित्र रहना चाहती है। बाबा ने कहा, बच्ची, वह बच्चा

s_book final.2.pmd 144 03-01-2005, 10:03 AM

क पति) बहुत अच्छा है। उस समय मैं बाबा से अकेली मिल रही थी, पति बाहर थे। फिर बाबा ने कहा, बच्ची, तुम निश्चिन्त हो जाओ, ात को मुरली चलायेगा। बाबा ने रात को पवित्रता पर मुरली चलायी। हम ुनकर सो गये। सवेरे क्लास के बाद हमको वापस जाना था। सवेरे मुरली के बाद बाबा ने दो थालियों में टोली (प्रसाद) मंगवायी। फिर बाबा ने जो मुजफ्फरपुर से बच्चे आये हैं वे खड़े हों। फिर लौकिक पति को कहा, यह टोली क्लास में बाँटोगे ? तो उन्होंने कहा, जी बाबा। बाबा ने कहा, तुम्हें पता है यह टोली कौन बाँट सकता है ? जो बच्चे पवित्र रहते हैं वही ली बाँट सकते हैं। तब लौकिक पति ने कहा, जी बाबा, हम पवित्र रहेंगे। ने सभा से कहा, बच्चे, सभी ताली बजाओ। फिर बाबा ने हम दोनों के हाथ ी की थाली दी और हम दोनों ने पवित्रता की प्रतिज्ञा की। ऐसे चतुर सुजान ा।

सावित्री माता

मेरा अलौकिक जन्म सन् 1965 में हुआ और मैं बाबा से मिलने तुरन्त दो माह में ही मधुबन आ गयी। जब बाबा के सम्मुख गयी तो बाबा को देखते ही लाइट ही लाइट दिखायी दी।

मातायें ही ज्ञान-कलश की अधिकारी हैं

दूसरी बार जब बाबा से मिलने मधुबन आये तो मैंने बाबा से मिलते ही ''बाबा, आपने मेरे को लड़की क्यों बनाया ? हमारे लौकिक समाज में यों को पढ़ाते नहीं हैं। 'पराया धन' कहकर सम्बोधित करते हैं।'' बाबा ने ''बच्ची, तुम लड़का होती तो बाबा ज्ञान-कलश कैसे देता ? ज्ञान-कलश बा ने माताओं को ही दिया है। तुम्हें तो बहुतों का कल्याण करना है। तुम नहीं हो, तुम शक्ति हो और ज़्यादा पढ़ी नहीं हो तो बहुत अच्छा है, नहीं तो ुआ फिर भूलना पड़ता। तुम्हें तो भगवान से पढ़ना है। तुम गॉडली स्टूडेण्ट तुम्हें ज्ञान-रत्नों का व्यापार करना है, बड़ा व्यापारी बनना है।'' मैं अपने का उत्तर पाकर गद्‌गद हो उठी, ख़ुशी का पारावार नहीं रहा। आज तक ी स्टूडेण्ट का नशा रहता है। मैंने आज तक कभी क्लास मिस नहीं की है। नयी चित्र प्रदर्शनी बनी थी, जो कोलकाता में लगायी गयी थी। बाबा ने पर कहा कि बच्ची, कोलकाता जाकर प्रदर्शनी ज़रूर देखकर आओ। हम माताओं ने कोलकाता जाकर प्रदर्शनी देखी। फिर बाबा को फोन पर कहा,

md 145 03-01-2005, 10:32 AM

बाबा प्रदर्शनी बहुत अच्छी है, हमारे यहाँ भी यह प्रदर्शनी होनी चाहिए। हमारे यहाँ उस समय सेन्टर नहीं था। हम घर-घर में जाकर सत्संग के रूप में क्लास करते थे। बाबा ने कहा, बच्ची, तुम लोग प्रदर्शनी लगाने का प्रबन्ध करो, बाबा बैठा है, सब कुछ करेगा। हम सभी माताओं ने मिलकर प्रदर्शनी करने की जगह का इन्तजाम किया। सारा प्रबन्ध हो गया, निर्मलशान्ता दादी जी ने तीस भाई-बहनों को मदद के लिए भेजा। हम तो इतना कुछ समझते नहीं थे। हमने सहज भाव से ही रोजी बहन को कहा कि सब तैयारी तो हो गयी है परन्तु बाबा ने अभी तक पैसा नहीं भेजा है। रोजी बहन ने कहा, चलो, सब योग में बैठो। हम सभी योग में बैठ गये। एक माता जिसके घर में सभी भाई-बहनें ठहरे थे, वह ध्यान में गयी तो वतन में बाबा-मम्मा दोनों बैठे थे। उस माता ने बाबा के सम्मुख जाकर कहा, बाबा, सब तैयारी हो गयी परन्तु अभी तक आपने पैसा नहीं भेजा। बाबा ने कहा, बच्ची, तुम नीचे जाओ, बाबा मम्मा को भेज रहा है। बाबा ने मम्मा को कहा, बच्ची, तुम जाओ। तो मम्मा उठकर खड़ी हो गयी। इतने में वो माता भी ध्यान से नीचे आ गयी और बोली कि बाबा ने कहा है कि मम्मा को भेज रहा हूँ। हम सभी उठकर कमरे से बाहर आये तभी हम सभी की बुद्धि में यह बात आयी कि हम बाबा से पैसा मँगायेंगे ? नहीं, नहीं। हमारे पास जो पैसा है वो किस काम का ? कितनी शर्म की बात है जो हम बाबा से पैसा माँगते हैं ! यह संकल्प आते ही सभी ने अपने पास से पैसे देने शुरू किये। ढेर सारे रुपये इकट्ठे हो गये। यह थी बाबा की कमाल जो सभी की बुद्धि को परिवर्तन कर दिया। प्रदर्शनी बड़े धूमधाम से 15 दिन तक चली जिसका समाचार रोज़ बाबा को सुनाते थे। प्रदर्शनी पूरी हो गयी, उसके बाद सबको सौग़ातें दीं। फिर भी बहुत पैसा बच गया। बाबा को कहा, बाबा, पैसा बहुत बचा है, क्या करें ? बाबा ने कहा, ''बच्ची सेन्टर खोल दो, बाबा दो ब्राह्मणियों (टीचर्स) को भेज देंगे।'' सेन्टर खुल गया। दो टीचर बहनें रहने लगीं। सेवा की वृद्धि होती गयी।

बाबा को देखते ही मैं अपने आपको भूल गयी, जैसे कोई आनन्द की दुनिया में खो गयी। कुछ ही क्षण बाद बाबा की मधुर आवाज़ कानों में पड़ी, बच्ची, कुछ बोलो। लेकिन मैं तो बाबा को देखने में ही मगन हो गयी।

ऐसे बच्चों से ही बाबा ख़ुश होते हैं जो हर कार्य ख़ुद करते हैं

एक बार मधुबन आयी थी तो बाबा ने मुझे सर्व सम्बन्धों का अनुभव कराया।

s_book final.2.pmd 146 03-01-2005, 10:03 AM

सुबह क्लास में बैठी हुई थी, बाबा के क्लास में आने पर मैंने देखा कि ब्रह्मा बाबा मुझे देखकर मुस्कराया, फिर बाबा ने कहा, कमज़ोर स्टुडेण्ड पीछे बैठते हैं। तो मैं उठकर आगे बैठ गयी। बाबा ने 10 मिनट दृष्टि दी। मैंने देखा कि ऊपर से लाइट आकर बाबा में प्रवेश हुई और बाबा का चेहरा एकदम गुलाबी रंग जैसा हो गया। उस समय मुझे सतगुरु का रूप दिखायी दिया। मुरली के बाद हम छोटे हाल की छत पर गेहूँ साफ़ करने गये। तो अचानक बाबा वहाँ आ गये और बोले कि बच्ची, इस बच्ची से गेहूँ साफ़ करवा रहे हो ? मैंने कहा, बाबा मैं तो घर में भी गेहूँ ख़ुद साफ़ करती हूँ। तो बाबा ने मेरे सिर पर हाथ रखकर कहा, शाबास बच्ची ! ऐसे बच्चों से ही बाबा ख़ुश होते हैं जो हर कार्य ख़ुद करते हैं। फिर हम गेहू साफ़ करके कमरे में गये। अचानक लच्छु बहन आयी और बोली, जल्दी चलो, बाबा आपको बुला रहे हैं। मैं बड़ी उमंग से बाबा के कमरे में गयी। बाबा ने कहा, आओ बच्ची। मैं बाबा के सम्मुख बैठ गयी तो बहुत मीठी दृष्टि देते हुए बाबा ने कहा, बच्ची, माँ अपने बच्चों को पालती है ना ? मैंने कहा, जी बाबा। फिर बाबा ने कहा, बच्ची, ब्रह्मा तुम्हारी माँ है। ऐसे कहते-कहते बाबा ने छोटी-सी रोटी, मक्खन और शहद लगाकर मेरे मुख में दे दी। उस समय माँ का इतना मीठा रूप था कि मैं तो माँ के प्यार में खो गयी। वह दिन कभी भूलाये भी नहीं भूलता।

बाबा ने कहा, "बच्ची, तुम लड़का होती तो बाबा ज्ञान-कलश कैसे देता ? ज्ञान-कलश तो बाबा ने माताओं को ही दिया है। तुम्हें तो बहुतों का कल्याण करना है। तुम नारी नहीं हो, तुम शक्ति हो।

त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव...

एक बार रात्रि क्लास में बाबा योग पर समझा रहे थे। बोले, शिव बाबा को कैसे याद करना चाहिए ? बाबा आप कितने मीठे हो, कितने प्यारे हो। ऐसे बातें करते-करते, मैंने देखा, बाबा छोटे बच्चे के रूप में शिव बाबा से बातें कर रहे हैं। दूसरे सेकण्ड लगा कि बाबा सन्दली पर बैठे हैं। भक्ति में गाते थे त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव... यह अनोखा दृश्य मैंने ख़ुद देखा और अनुभव किया। सचमुच बाबा ने मेरे जीवन को धन्य-धन्य बना दिया, जन्म-जन्म की आश पूरी कर दी।

❄

s_book final.2.pmd 147 03-01-2005, 10:32 AM

बच्चों की जीवनरेखा बदलने वाले भाग्य-लेखक बाबा

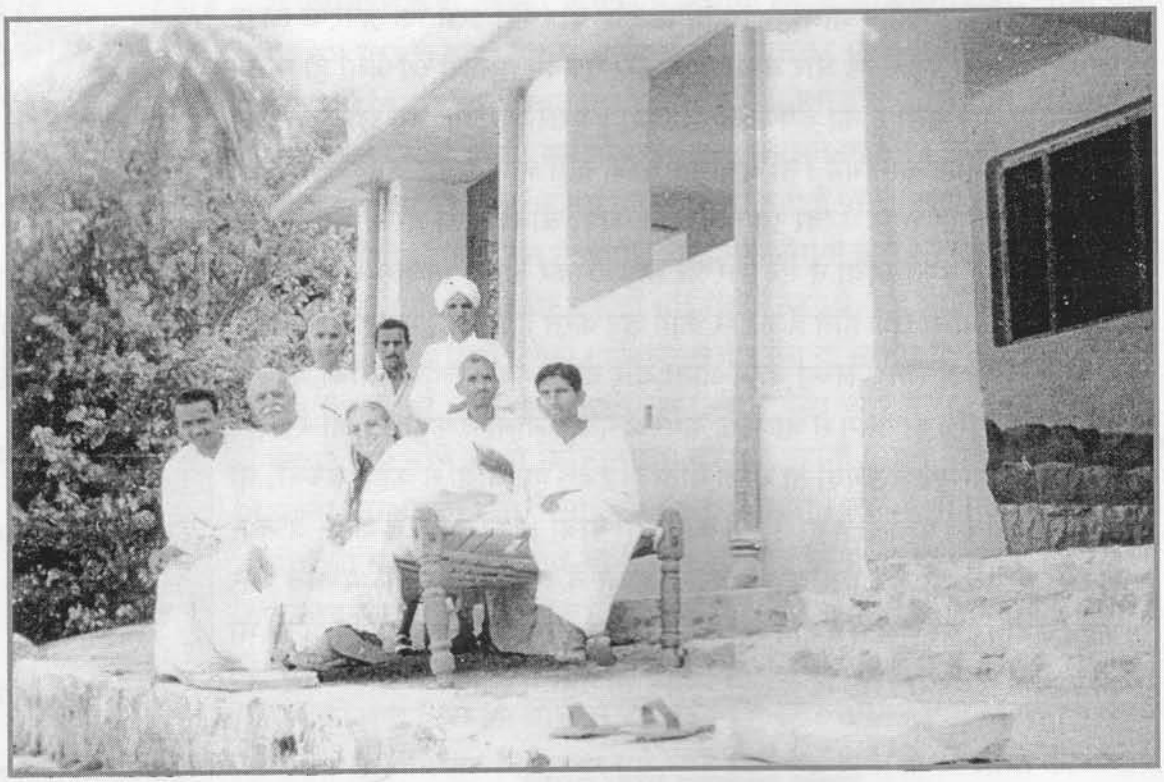

आबू– बाबा के साथ बैठे हैं काकू भाई, बृजेन्द्रा दादी, विश्वरतन दादा और अन्य भाई।

अम्बाला, हरियाणा से कृष्णा माता सूद कहती हैं कि मैं श्री कृष्ण की भक्ति करती थी, गीता पढ़ती और अन्न की परहेज करती थी। भगवान मिल जाये उसके लिए उपवास भी करती थी। पति नास्तिक होने के कारण उनका खान-पान अशुद्ध था परन्तु मैंने स्वयं पर पूरा कंट्रोल रखा। मैं अपने को पवित्र रखने का भी पूरा प्रयास करती थी, जिस कारण घर में झगड़ा चलता रहता था। परन्तु इससे मेरी लगन भगवान से मिलने के लिए और ही बढ़ती जाती थी, साथ-साथ वैराग्य भी बढ़ता गया। सोचती थी कि कहीं हरिद्वार में जाकर सन्त बन जाऊँ। ऐसे अपने से बातें करती रहती थी। अनेक सत्संगो में जाती रहती थी कि कहीं भगवान मिल

s_book final.2.pmd 148 03-01-2005, 10:03 AM

साकार बाबा एक ही हैं, उन जैसा इस संसार में और कोई है नहीं

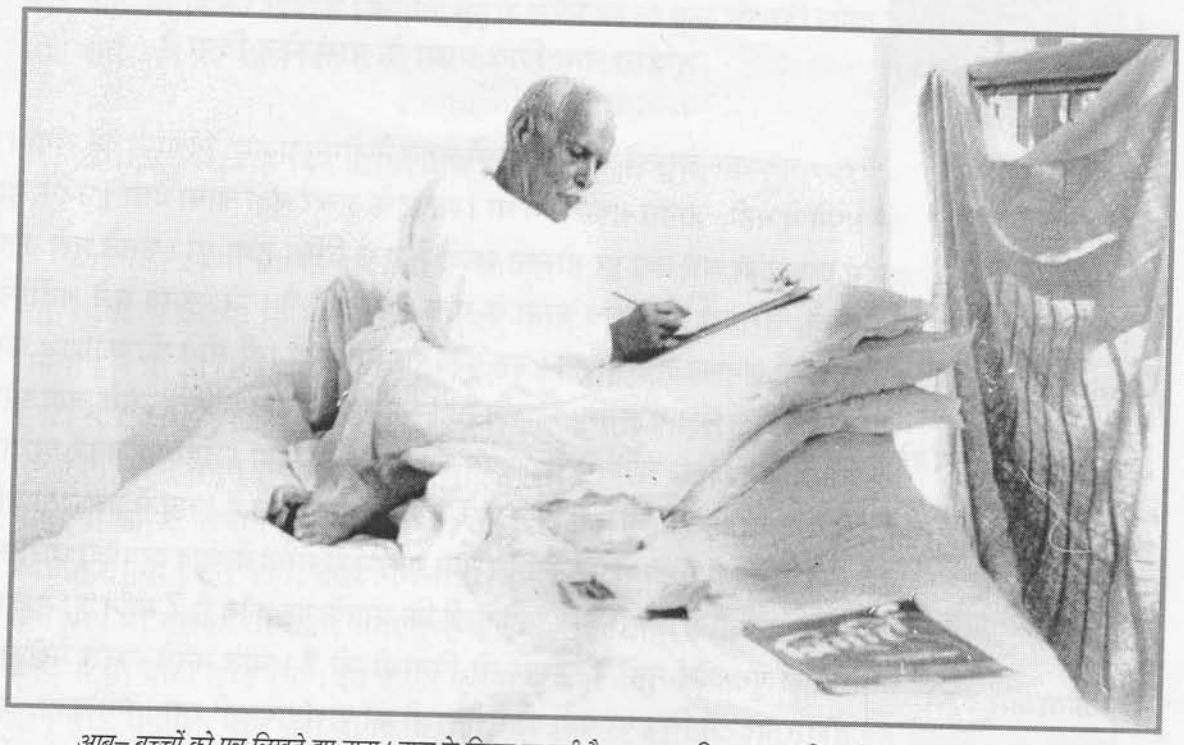

आबू– बच्चों को पत्र लिखते हुए बाबा। बाबा के बिस्तर पर पड़ी है उस समय की ज्ञानामृत पत्रिका जिसका नाम पहले त्रिमूर्ति था।

बेंगलोर से ब्रह्माकुमार पुरी भाई जी (दिल्ली, आशा बहन जी के लौकिक पिता जी) अपने अलौकिक अनुभव सुनाते हैं कि 25 जनवरी, 1958 की शाम को मेरे लौकिक मामा का लड़का मेरे पास आया और कहने लगा कि चलो यहाँ ब्रह्माकुमारी बहनें आयी हैं। हम दोनों चल दिये जहाँ बहनें ठहरी थीं लेकिन ज्ञान समझने के विचार से नहीं। तिलक नगर में हरविलास राय जी ने एक छोटा-सा कमरा बहनों को दिया था जहाँ क्लास होती थी। हम वहाँ पहुँचे तो आत्ममोहिनी (गंगे) दादी जी ने हमें बिठाया और संस्था का लक्ष्य बताया – मनुष्य से देवता बनने का, दैवी गुण धारण करने का और अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का। मैंने पूछा कि आप मनुष्य से देवता बना सकते हो ? उन्होंने कहा कि आपको जैसा हम

s_book final.2.pmd 151 03-01-2005, 10:32 AM

पुरी भाई जी

25 जनवरी, 1958 की शाम को मेरे लौकिक मामा का लड़का मेरे पास आया और कहने लगा कि चलो यहाँ ब्रह्माकुमारी बहनें आयी हैं। हम दोनों चल दिये जहाँ बहनें ठहरी थीं लेकिन ज्ञान समझने के विचार से नहीं।

कहें वैसा अपने को परिवर्तन करना पड़ेगा। हम दोनों भाई हँसी-मजाक करके वहाँ से अपने घर आ गये। भोजन आदि करके सो गये।

तुम्हारा नाम शिव बाबा के पास भेज दिया है

अचानक अमृतवेले मेरे कमरे में बहुत तेजोमय प्रकाश दिखायी देने लगा। मैं सपने में नहीं, जाग्रत अवस्था में था। लाइट के अन्दर बूढ़ा बाबा देखा। उनके हाथ में एक कवर था, उस पर गोल्डन शब्दों में कुछ लिखा हुआ था। उसने मुझे कहा, बच्चे, तुम्हारा नाम शिव बाबा के पास भेज दिया है। उस समय मुझे अतीन्द्रिय सुख का अनुभव हो रहा था। यह दृश्य समाप्त हुआ। मैं सोने की कोशिश करने लगा लेकिन नींद का नाम-निशान नहीं। मैं उठा, स्नान किया, उसके बाद सोचा कि आश्रम जाना चहिए। मैं आश्रम की ओर चल दिया। वहाँ पहुँचकर दरवाज़ा खटखटाया। बहन जी ने कहा, बाहर बैठो, अभी खोलते हैं। मन में उत्कण्ठा बहुत थी इसलिए मैं समय से पहले पहुँच गया था। कुछ समय के बाद दरवाज़ा खुला और मैंने बहन जी से पहली बात यही पूछी कि आपके गुरु कौन हैं ? बहन जी ने कहा, हमारा गुरु कोई नहीं है, हमारे तो पिताश्री जी हैं। बात करते-करते मेरी नज़र दीवार पर टंगे चित्र पर पड़ी तो मेरी ख़ुशी का पारावार नहीं रहा। मैंने कहा, बहन जी, यही बाबा तो मुझे सुबह तीन बजे मिले और कहा कि तुम्हारा नाम शिव बाबा के पास भेज दिया है। बहन जी ने कहा, आप वही कल्प पहले वाले बाबा के बच्चे हैं, जो आपको बाबा ने अपना बना लिया। मेरे मन में बार-बार यही विचार आते रहे कि जिन्हें मैंने देखा नहीं, वे स्वयं मेरे पास आकर कह रहे हैं कि तुम्हारा नाम शिव बाबा के पास भेज दिया है। उसके बाद सुबह-शाम जाकर कोर्स पूरा किया और नित्य जाने लगा। एक दिन भी मिस नहीं करता था। जो पुरानी आदतें थीं वे सब सहज छूट गयीं।

मेरे लौकिक परिवार वाले राधा स्वामी मठ में जाते थे। मुझे भी गुरु जी से मंत्र मिला था। उन्होंने पुरानी आदतें – बीड़ी, सिगरेट, शराब छोड़ने के लिए कहा था लेकिन मैं एक भी आदत छोड़ नहीं पाया था। घर में मांसाहार बनता था। मैंने घर वालों से कहा, मैं होम्योपैथिक दवाई ले रहा हूँ इसलिए इन सब चीज़ों का परहेज

s_book final.2.pmd 152 03-01-2005, 10:03 AM

है। उसके बाद एक दिन भी मांसाहार घर में नहीं बना। लेकिन कुछ दिनों के बाद घर वालों को शक हुआ कि यह रोज़ सुबह ब्रह्माकुमारियों के पास जाता है, ज़रूर कोई जादू उन्होंने कर दिया है। क्योंकि गुरु के कहने पर तो कुछ भी नहीं छोड़ा था और वहाँ जाने पर पहले दिन से ही सब कुछ छोड़ दिया है।

आख़िरकार, वह दिन आया जब मेरी युगल भी साथ चलने लगी

यहाँ की पहली धारणा पवित्रता है, जो मुझे बहुत अच्छी लगी। अगर पवित्र नहीं रहूँगा तो धारणा भी नहीं होगी और प्रभु-मिलन भी नहीं होगा, योग भी नहीं लगेगा। मैं पवित्र रहने लगा लेकिन मेरी पत्नी को लौकिक सम्बन्धियों ने उल्टा-सुल्टा बोलकर भड़का दिया। वह मेरी एक भी बात नहीं मानती थी। इस कारण एक दिन घर में बहुत झगड़ा हो गया। लेकिन मेरा शुरू का नशा भी बहुत था कि पाना था सो पा लिया। मुझे जो चाह थी वह मिल गया। पत्नी क्या जाने कि मुझे क्या मिल गया। मैंने कहा, देखो निर्मला, रोज़-रोज़ का झगड़ा अच्छा नहीं। एक दिन आप भी चलकर तो देखो, अगर तुम्हें कोई बुराई दिखायी दे तो मैं वादा करता हूँ कि मैं भी जाना छोड़ दूँगा। इस प्रकार एक साल बीत गया क्योंकि उसकी (पत्नी की) बुद्धि में ग़लत बातें भरी थीं कि बहनें सुरमा डालकर वश कर लेती हैं। कहते हैं, जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि। एक दिन मैंने अपना फैसला सुना दिया कि मैं तुमको छोड़ सकता हूँ लेकिन आश्रम जाना नहीं छोड़ूँगा। आख़िर वह दिन आया जो मेरे साथ वह आश्रम आयी। उस समय गंगे दादी जी योग करा रही थीं। जैसे ही मेरी युगल की नज़र गंगे दादी जी पर गयी, उनसे दुर्गा का साक्षात्कार हो गया और वह मन ही मन अपने को दोषी मानने लगी। कहने लगी कि ये तो पवित्र देवियाँ हैं, मैं इनके बारे में ग़लत सोचती थी। उसके बाद निर्मला (मेरी युगल) भी रोज़ मेरे साथ क्लास में आने लगी और फिर सारा परिवार इस ज्ञान में चलने लगा। अब मन में यही चाह थी कि जिस बाबा ने इन बहनों को इतना श्रेष्ठ बनाया और हमारा जीवन बदल दिया तो क्यों ना ऐसे बाबा से जाकर मिलें। परन्तु यहाँ के नियम बड़े कड़े थे। जब तक एक साल पवित्र ना रहें तब तक मधुबन जाने की छुट्टी नहीं मिलती थी।

अचानक अमृतवेले मेरे कमरे में बहुत तेजोमय प्रकाश दिखायी देने लगा। मैं सपने में नहीं, जाग्रत अवस्था में था। लाइट के अन्दर बूढ़ा बाबा देखा। उस समय मुझे अतीन्द्रिय सुख का अनुभव हो रहा था।

s_book final.2.pmd 153 03-01-2005, 10:32 AM

नयनों से नूर बरस रहा था

सुबह क्लास में गंगे दादी ने बताया कि बाबा कानपुर आ रहे हैं। मैं मन ही मन बड़ा ख़ुश हो गया कि बाबा ने हमारी सुन ली। हम बाबा से मिलने कानपुर पहुँच गये। हम क्लास में बैठे थे, बाबा ने क्लास हॉल में प्रवेश किया तो मैं देखता ही रह गया। लम्बा, सफ़ेद वस्त्रधारी, तेजोमय चेहरा, नयनों से नूर बरस रहा था। दिव्य शक्ति से भरपूर ऐसा व्यक्तित्व आज तक नहीं देखा था। बाबा सन्दली पर बैठे तो हॉल में गहरी शान्ति छा गयी। बाबा सबको दृष्टि देने लगे। जब मेरे पर दृष्टि पड़ी तो ऐसा लगा कि आँखों से प्रकाश ही प्रकाश निकल रहा है। जैसे ही बाबा ने पहला शब्द उच्चारण किया, ''मीठे बच्चे'', वह दिल को छू गया। फिर मुरली शुरू हुई। मुरली के बाद बाबा कमरे में गये। बहन जी ने कुछ भाई-बहनों को इशारा किया। मैं भी कमरे में गया। मैं बाबा की गोद में चला गया और देह को ही भूल गया। मैं कहाँ हूँ – यह भी भूल गया। बाबा से जो अलौकिक सुख मिला, उसका वर्णन शब्दों में नहीं कर सकता। साकार बाबा का प्यार-दुलार कभी भूल नहीं सकता जिसने सर्व सम्बन्धों का दिव्य सुख दिया। मात, पिता, बन्धु, सखा के सम्बन्धों का सुख उस दिव्य शक्ति से प्राप्त हुआ और मेरा निश्चय एकदम दृढ़ हो गया।

बाबा ने क्लास हॉल में प्रवेश किया तो मैं देखता ही रह गया। लम्बा, सफ़ेद वस्त्रधारी, तेजोमय चेहरा, नयनों से नूर बरस रहा था। जब मेरे पर दृष्टि पड़ी तो ऐसा लगा कि आँखों से प्रकाश ही प्रकाश निकल रहा है।

बाबा कहते थे, सोचो, दुनिया जिसके एक साक्षात्कार के लिए तरसती है, मैं उसकी गोदी में बैठा हूँ। बाबा की दृष्टि में सभी बच्चे समान थे। बाबा कहते थे कि बाबा तो ग़रीब निवाज़ है। दिल से यही निकलता था कि 'इतना प्यार करेगा कौन'!

आया था जान से मारने, आ गया शरण में

लौकिक में मैं मयूर मिल में लेबर ऑफ़िसर था। मैंने एक लेबर को बर्खास्त कर दिया तो उसको बहुत गुस्सा आया और कहा कि मैं पुरी को जान से मार दूँगा। जब मुझे मालूम पड़ा तो मैंने गंगे दादी को जाकर सुनाया कि आज मेरे साथ ऐसी घटना घटने वाली है। दादी ने तुरन्त बाबा को फोन किया कि बाबा पुरी भाई को

s_book final.2.pmd 154 03-01-2005, 10:03 AM

आज एक लेबर जान से मारने के लिए कह रहा है। तब बाबा ने कहा, बच्चे को कहो कि उसको कुछ भी नहीं होगा, निश्चिन्त रहे। मैं जब मिल से बाहर आया तो वह दरवाज़े पर ही खड़ा था मारने के लिए। लेकिन बाबा का जादू देखो, वह तुरन्त मेरे पैरों में पड़ गया, माफ़ी माँगने लगा और कहा कि मेरा हिसाब कर दो।

इस प्रकार साकार में दूर होते हुए भी बाबा बच्चों की रक्षा करते थे। बाबा के बारे में क्या वर्णन करें, क्या छोड़ें – समझ में नहीं आता। इतना तो मैं कह सकता हूँ कि साकार बाबा एक ही हैं, उन जैसा और कोई इस संसार में न था, न है और न कभी होगा। ❄

आबू– बाबा के साथ जमुना प्रसाद भाई, मधुबन, बृजेन्द्रा दादी, काकू भाई, मुंबई, विश्वरतन दादा और अन्य।

s_book final.2.pmd 155 03-01-2005, 10:32 AM

वाह बाबा वाह !!

विराट प्रकृति को निहारते हुए शिव बाबा की याद में तल्लीन बाबा।

दिल्ली, मालवीय नगर से भ्राता ब्रह्माकुमार लक्ष्मण जी कहते हैं कि मेरा जन्म सन् 1933 में कराची (सिन्ध) में हुआ। मेरी 9 वर्ष की आयु में ही लौकिक पिता ने शरीर छोड़ दिया था। मेरी तीन बहनें हैं। एक मेरे से बड़ी, दो छोटी। हमें जीवन में काफी मानसिक तथा आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। हमारा परिवार भारत का विभाजन होने के पश्चात् नवम्बर 1947 में दिल्ली में आ गया। फिर भी भाग्य अनुसार हम सभी भाई-बहनें अच्छी पढ़ाई कर पाये।

मैंने बचपन से ही जीवन में निराशा, दुःख तथा वैराग्य का अनुभव किया। परन्तु माता-पिता द्वारा प्राप्त भक्ति के प्रबल संस्कार, व्रत, गीता के अध्ययन और

s_book final.2.pmd 156 03-01-2005, 10:03 AM

कॉलेज में स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी तथा महात्मा गाँधी जी की जीवन कहानियों को पढ़ने का मेरे जीवन पर पूरा प्रभाव रहा जिससे जीवन में सहनशक्ति, धैर्य, प्रभु-प्रेम, आध्यात्मिकता तथा पवित्रता की तरफ़ झुकाव हो गया। मेरे अन्दर भगवान को पिता के रूप में मिलने की तीव्र इच्छा बढ़ती ही गयी।

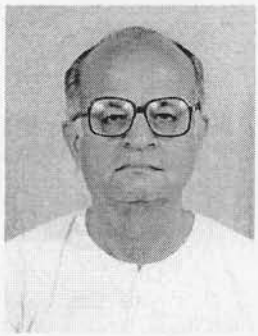

भ्राता ब्रह्माकुमार लक्ष्मण जी

परमात्मा बाप ने अपनी बाहों में मुझे समा लिया

उस समय जीवन में निराशा ज़्यादा, आशा कम थी। सन् 1958 में, 25 वर्ष की आयु में परमात्मा का ज्ञान प्राप्त हुआ जिससे मुझ आत्मा का टिमटिमाता हुआ दीपक, परमात्मा के प्यार तथा ज्ञान की रोशनी से जग गया। ज्ञान और राजयोग के अभ्यास से मुझे जबरदस्त सहारा मिला। कुछ ही समय के बाद आबू आने का अवसर प्राप्त हुआ। जब साकार में शिव बाबा से ब्रह्मा बाबा के तन में मिला तो सचमुच उनका बन गया। वो मिलना ऐसे था जैसे बच्चे और बाप का। परमात्मा बाप ने अपनी बाँहों में मुझे समा लिया। प्यार व ख़ुशी का ऐसा अनुभव पहले कभी नहीं हुआ था और बाप से फिर-फिर मिलने का आकर्षण बढ़ता ही गया। जैसे एक बच्चा अपने बाप से एक ही बार मिलकर तृप्त नहीं होता है वैसे ही मेरे साथ हुआ। बाप से अनेक बार मिलन मनाते उसका सुख लेता रहा। ऐसा अनुभव हुआ कि मुझे स्वयं परमात्मा आकर मिले हैं।

सन् 1958 में 25 वर्ष की आयु में परमात्मा का ज्ञान प्राप्त हुआ जिससे मुझ आत्मा का दीपक, परमात्मा के प्यार तथा ज्ञान की रोशनी से जग गया। ज्ञान और राजयोग के अभ्यास से मुझे जबरदस्त सहारा मिला।

बाबा ने मुझे पवित्र गृहस्थाश्रमी बनाया

आदि से लेकर मुझे भगवान ने दिव्य दृष्टि का वरदान भी दिया। जब भी प्रभु-स्मृति में बैठता था तो सूक्ष्म शरीर द्वारा ब्रह्माण्ड की सैर करने के साथ-साथ स्वर्ग के अनेक अद्भुत और सुन्दर दृश्य भी देखता था। ऐसे अनुभव होते थे कि मैं भगवान के साथ एक रथ वा उड़न खटोले में बैठकर सैर कर रहा हूँ। दिन-प्रतिदिन बाप की ओर आकर्षण तथा उनके प्रति प्रेम बढ़ता ही गया और ज्ञान पर भी पूरा निश्चय हो गया। मेरे परिवार के सभी सदस्य इस ज्ञान-योग के मार्ग पर साथ-साथ चल पड़े जिससे मुझे इस आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढ़ने में बहुत सहयोग

s_book final.2.pmd 157 03-01-2005, 10:32 AM

मिला। सन् 1962 में 29 वर्ष की आयु में मेरा दिव्य (गंधर्व) विवाह ब्रह्मा बाबा ने करवाया, जिसका लक्ष्य पवित्र और योगी जीवन में रहकर परमात्मा के कार्य में सहयोगी बनना था। ऐसे जीवन में रहते हुए पवित्रता की शक्ति तथा प्रभु की विशेष पालना का अनुभव किया। हम जो भी शुभ संकल्प रखते थे उन्हें बाबा अवश्य ही पूरा करते थे। साकार बाबा ने हमें महावीर तथा महावीरनी कहकर इस मार्ग पर चलने के लिए प्रोत्साहित किया और परमपिता परमात्मा शिव बाबा ने रूहानी शक्ति देकर सफलता दी। परमात्मा अपने बच्चों को ड्रामा में विशेष पार्ट देकर सारे विश्व तथा ईश्वरीय परिवार में महिमा योग्य बनाना चाहते थे और यह साबित करना चाहते थे कि प्रवृत्ति में रहते हुए मन एवं तन से सम्पूर्ण पावन रहना इस संगमयुग पर अति सहज सम्भव है। क्योंकि परमात्मा स्वयं गाइड बनते हैं तथा आने वाली सतयुगी सृष्टि को पवित्र और सतोप्रधान बनाकर श्री लक्ष्मी, श्री नारायण का राज्य स्थापन करते हैं। इस सफलता का पूर्ण श्रेय बापदादा को है। बापदादा ने ही हमें पवित्रता और सत्यता की राह पर चलाकर स्वर्ग का ऊँच मालिक बनने की मंज़िल स्पष्ट दिखायी है।

जब साकार में शिव बाबा से, ब्रह्मा बाबा के तन में मिला तो सचमुच उनका बन गया। वो मिलना ऐसे था जैसे बच्चे और बाप का। परमात्मा बाप ने बाँहों में समा लिया। बाप से फिर-फिर मिलने का आकर्षण बढ़ता ही गया

साकार बाबा के साथ जो घड़ियाँ बितायी हैं वा उनके साथ की मुलाक़ातों में जो सम्मुख बातचीत हुई है, उसकी स्मृति से ही रोमाञ्च हो जाता है तथा प्यार से आँखें गीली हो जाती हैं। साकार बाबा ने हमारे प्रति जो भी महावाक्य बोले, वे सभी हमारे लिए वरदान बन गये हैं। बाबा ने एक बार सभा में कहा कि ये बच्चे बहुत लक्की हैं। यही अनुभव हमें जीवन के हर क़दम-क़दम में हो रहा है। बाबा ने हमारे जीवन को हल्का, अनासक्त तथा अति सुखमय बना दिया है। साथ में जीवन का लक्ष्य दिया है कि बाप को फॉलो करके उन समान बनना है। सर्व आत्माओं को अपनी वाणी तथा कर्म द्वारा परमपिता का सन्देश देकर मुक्ति और जीवनमुक्ति की दुनिया में पवित्रता, सुख, शान्ति का वर्सा दिलाना है।

मेरा जीवन सब प्राप्तियों से भरपूर हो गया

भगवान आकर न केवल अलौकिक जीवन का उत्थान करते हैं लेकिन वे लौकिक जीवन की प्राप्तियों से भी हमें हर प्रकार से सम्पन्न कर देते हैं। ऐसा ही

s_book final.2.pmd 158 03-01-2005, 10:03 AM

मेरे जीवन में हुआ है। एक क्लर्क की नौकरी से आगे बढ़ाकर मुझे सरकारी कंपनी के मुख्य प्रबन्धक के पद पर पहुँचाया। जीवन में सुख के सभी साधनों एवं सुविधाओं से भलीभाँति भरपूर किया। लौकिक कार्यार्थ देश और विदेश में ले जाकर ईश्वरीय सेवाओं द्वारा मेरी अविनाशी कमाई करायी। जीवन में सन्तुष्टता, सुख तथा यश की प्राप्ति हुई। मेरा यह निश्चय है कि भगवान आये हैं, उन्हें अपना जीवन अर्पण करने से ही मुझे आध्यात्मिक उन्नति तथा सफलता प्राप्त हुई है। परिवार तथा समाज के प्रति अपना कर्त्तव्य पूरा करने में समर्थ तथा सफल बनाकर उन्होंने मुझे सुखमय तथा सन्तुष्ट बना दिया है।

बाबा का बनने पर अनेकानेक अनुभव तथा प्राप्तियाँ हुई हैं जिनसे मैं समझता हूँ कि निराकार शिव परमात्मा इस धरती पर मेरे ही कल्याण के लिए आये हैं। इसलिए ही उनका गायन है, 'पतित-पावन', 'नैनहीन को राह दिखाने वाला' तथा 'ग़रीब निवाज़'...। वाह बाबा, वाह !! आपने मुझ नैनहीन आत्मा को ज्ञान का नैन दिया और पावन बनाया ! ग़रीब निवाज़ बनकर आपने मुझे सम्पन्न बना दिया और मुझ भूले-भटके राही का हाथ पकड़ कर कहा – ''ओ मेरे लाडले बच्चे, अभी चलो मेरे साथ सत्यता और पवित्रता के मार्ग पर, मैं तुम्हें सतयुग (स्वर्ग) की मंज़िल तक पहुँचा दूँ।''

❄

साकार बाबा के साथ जो घड़ियाँ बितायी हैं वा उनके साथ की मुलाक़ातों में जो सम्मुख बातचीत हुई है, उसकी स्मृति से ही रोमाञ्च हो जाता है तथा प्यार से आँखें गीली हो जाती हैं। उनके महावाक्य वरदान बन गये।

शिव भगवानुवाच :

मीठे बच्चे, जितना हो सके देही-अभिमानी बनने की मेहनत करनी है। जितना तुम देही-अभिमानी बनते जायेंगे उतना अनेक बीमारियों से छूटते जायेंगे।

मीठे बच्चे, तुम्हें अभी टॉकी से मूवी और मूवी से साइलेन्स में जाना है इसलिए टॉकी को कम करना है।

जो बहुत थोड़ा और धीरे से बोलते हैं, उन्हें रॉयल घर का समझा जाता है। तुम बच्चों के मुख से सदैव ज्ञान-रत्न ही निकलने चाहिए।

s_book final.2.pmd 159 03-01-2005, 10:32 AM

बच्चों को महा शूर-वीर बनाने वाले महा उस्ताद

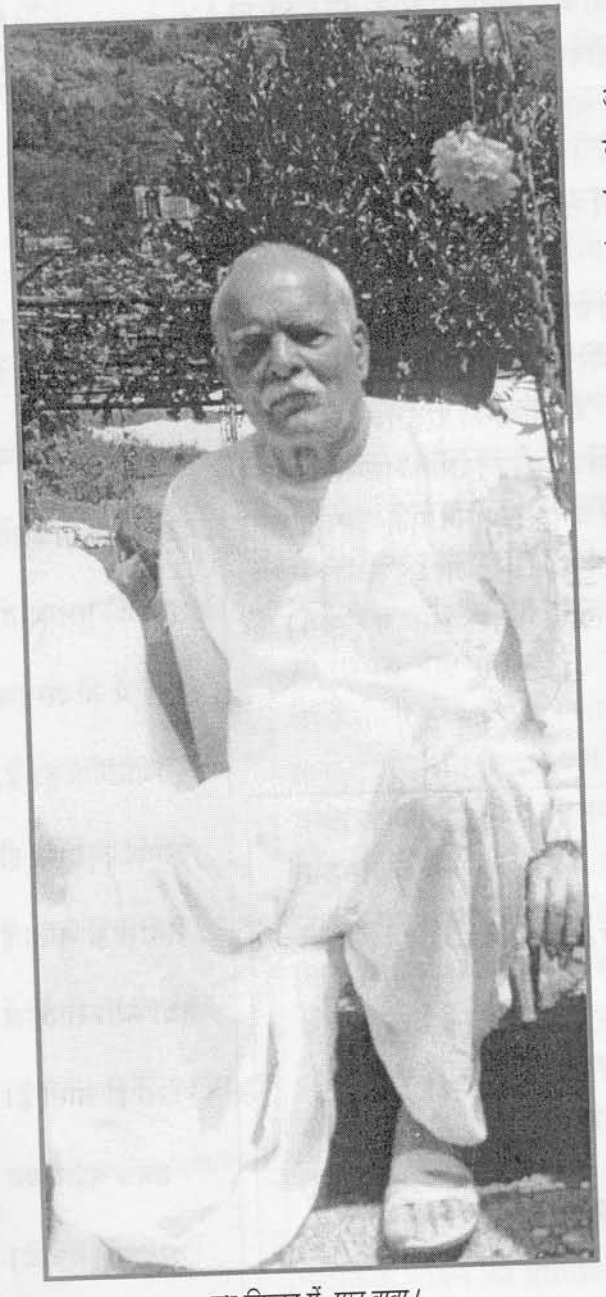

प्रभु चिन्तन में मग्न बाबा।

हरिनगर, दिल्ली से ब्रह्माकुमार सुन्दर लाल जी अपने अनुभव इस प्रकार सुनाते हैं कि मैंने दिल्ली कमला नगर सेन्टर पर सन् 1956 में आना शुरू किया। सप्ताह कोर्स करने के बाद कोई-न-कोई सेवा में भी समय देने लगा परन्तु यहाँ की जो बुनियादी बात है कि यहाँ भगवान स्वयं पढ़ाते हैं, इस पर निश्चय नहीं था। थोड़े दिनों के बाद जब पता चला कि ब्रह्मा बाबा दिल्ली चानना मार्किट के इलाके में ठहरे हुए हैं तो वहाँ जाने का तथा पहली बार ब्रह्मा बाबा से मिलने का सुअवसर मिला। बाबा सन्दली पर बैठे थे और अन्य लोगों के साथ मैं थोड़ी दूर नीचे बैठा था। बाबा ने आत्मा के बारे में ही थोड़ा समझाया और फिर मेरी ओर देखा। जैसे ही बाबा की दृष्टि मुझ पर पड़ी, मेरे अन्दर रूहानियत से भरी कुछ ऐसी ईश्वरीय शक्ति की खींच हुई कि मैं अपने स्थान से उठकर बाबा की गोदी में चला गया। वहाँ कुछ समय के लिए मैं अपने शरीर की सुध-बुध भूल गया, अशरीरीपन तथा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करने लगा। इसके बाद मुझे यह निश्चय हुआ कि यह ज्ञान स्वयं परमपिता परमात्मा शिव, साकार ब्रह्मा बाबा के तन में प्रवेश करके दे रहे हैं। बाबा ने बच्चे, बच्चे कहकर मेरे अन्दर जो बड़ेपन का भान था वह ख़त्म कर दिया और तब से मैं अपने को शिव बाबा का बच्चा ही समझने लगा।

s_book final.2.pmd 160 03-01-2005, 10:03 AM

समाज के सामने एक उच्च आदर्श स्थापित करना है

ब्रह्माकुमार सुन्दर लाल जी

फिर तो कई बार मधुबन में जाना हुआ और बाबा से मिलना भी हुआ। एक बार मैं बाबा के पास गया तो बाबा ने कहा, ''आओ मेरे महावीर बच्चे !'' इस पर मैं सोचने लगा कि मैंने कोई ऐसा विशेष कार्य तो किया नहीं, फिर बाबा मुझे महावीर कैसे कह रहे हैं ? साथ में यह भी विचार चला कि हो सकता है कि मुझे भविष्य में कोई ऐसा पार्ट बजाना हो जो विशेष कार्य कहा जा सके। कुछ समय के बाद सन् 1960 में जब मेरे दिव्य (गंधर्व) विवाह की बात हुई तो मैंने कहा कि यहाँ पवित्रता का ज्ञान है तो यहाँ शादी करने की कोई बात ही नहीं होनी चाहिए। फिर बाबा के आदेश पर मम्मा ने मुझे समझाया कि अमृतसर की शुक्ला कुमारी की शादी के लिए उसकी लौकिक माता जी बहुत कह रही है परन्तु वह कन्या पवित्र जीवन व्यतीत करना चाहती है, इसलिए तुम्हें यह शादी करके पवित्र जीवन व्यतीत करना है और समाज के सामने एक उच्च आदर्श स्थापित करना है। तब मुझे बाबा के वो शब्द याद आये कि मुझे महावीर बनकर इस परीक्षा में पास होकर दिखाना है। इस प्रकार, बाबा के ये शब्द मेरे लिए वरदान सिद्ध हुए और क़दम-क़दम पर इन शब्दों की स्मृति से मुझे अपने लक्ष्य अर्थात् सम्पूर्ण पवित्र जीवन की ओर अग्रसर होने में सफलता मिलती गयी और आज बड़े हर्ष के साथ मैं कह सकता हूँ कि अपने परम प्यारे बापदादा की असीम मदद और शक्ति से मैं इस परीक्षा में पास होकर आगे बढ़ रहा हूँ। दुनिया जिसको असम्भव समझती है वह न सिर्फ सम्भव हुआ है बल्कि बापदादा ने सहज कर दिया है। एक बात और बाबा के बारे में मैं बताना चाहता हूँ कि मधुबन में प्राय: मकान निर्माण का कार्य चलता रहता था। हम जब भी वहाँ जाते और बाबा थोड़े ख़ाली होते तो बाबा हमें अपने साथ ले जाकर दिखाते कि बच्चे, अभी यह-यह बना है और आगे ऐसा-ऐसा बनाना है। मैं सोचता था कि बाबा यह सब क्यों बता रहे हैं ! तो विचार चला कि इससे भी बाबा मेरे अन्दर अपनेपन की भावना भर रहा है कि मैं यज्ञ का हूँ और यज्ञ मेरा है।

❄

मैंने सन् 1956 में ज्ञान प्राप्त किया। ब्रह्मा बाबा दिल्ली चानना मार्किट के इलाके में ठहरे हुए थे। जैसे ही बाबा की दृष्टि मुझ पर पड़ी, मेरे अन्दर रूहानियत से भरी ईश्वरीय शक्ति का संचार हुआ।

s_book final.2.pmd 161 03-01-2005, 10:32 AM

ऐसे थे मेरे निराले बाबा !

सहारनपुर– शिव बाबा की याद में भोजन करते हुए बाबा। साथ में पुस्तु माता और अन्य भाई-बहनें बैठे हैं। बाबा के पीछे सावित्री दादी, दादी कुमारका और सन्देशी दादी।

बरेली के ब्रह्माकुमार राजकृष्ण भाई कहते हैं, ब्रह्माकुमारी आश्रम में आने से पहले मैं गीता, हनुमान चालीसा आदि पढ़ता था और महात्माओं के सत्संग में जाया करता था। एक दिन एक महात्मा के पास जा रहा था तो एक भाई ने रास्ते चलते आत्मा की चर्चा शुरू कर दी। चर्चा करते-करते हम दोनों महात्मा के पास पहुँच गये। महात्मा जी का प्रवचन सुनने के बाद मैं वापस आ रहा था तो वही भाई मेरे साथ पुनः ज्ञान चर्चा करने लगा और कहा, अगर ज्ञान को अच्छी तरह से समझना चाहते हो तो यहाँ गुरुद्वारे के पास मेरठ से कुछ देवियाँ आयी हैं जो

s_book final.2.pmd 162 03-01-2005, 10:03 AM

परमात्मा का ज्ञान सुनाती हैं, उनके पास चलो। आप रविवार को दो बजे मिलना, मैं आपको साथ ले जाऊँगा। रविवार के दिन उस भाई के साथ आश्रम पर गया।

ब्रह्माकुमार राजकृष्ण भाई

मेरी चोटी को एक लकड़ी से बाँध दिया

वहाँ के शान्त वातावरण ने मुझे बहुत आकर्षित किया। बाद में बहनों ने शिव परमात्मा का परिचय दिया और एक छोटी-सी पुस्तक दी। उसको मैंने पढ़ा। पढ़ने के बाद मन आनन्द से भर गया। दूसरे दिन गया तो शिवरात्रि का दिन था। बहनों ने रात को अखण्ड योग का कार्यक्रम रखा था। मुझे कहा कि रात्रि को योग करने आना। मैं भी रात्रि को योग करने पहुँच गया। योग में बैठे तो मेरी चोटी को एक लकड़ी से बाँध दिया और कहा कि अगर झुटका आया तो सारा झाड़ हिल जायेगा। इसलिए एक की लगन में जाग्रत होकर बैठना। मैं सारी रात योग में बैठा रहा। सुबह पाँच बजे प्रकाश इन्द्रा दीदी आयी और योग की दृष्टि देकर योग कराया। उस समय मैं एकदम हल्का हो गहन शान्ति में खो गया। उसके बाद नित्य क्लास में जाने लगा और सिन्धी मुरली पढ़ने लगा। मेरी लगन मुरली के प्रति इतनी बढ़ गयी कि बहनों से सन् 1948 तक की मुरलियाँ लेकर पढ़ने लगा। भगवान से मिलने की तीव्र इच्छा जाग्रत हो गयी कि मैं सम्मुख जाकर उनसे मिलूँ। मई 1956 में मधुबन पार्टी जा रही थी। मुझे नौकरी से छुट्टी नहीं मिली लेकिन लगन बहुत थी तो मैंने बहनों से कहा कि मैं ज़रूर आऊँगा। मैंने बाबा को बहुत याद किया। दूसरे दिन छुट्टी मिल गयी।

बहनों ने शिव परमात्मा का परिचय दिया और एक छोटी-सी पुस्तक दी। उसको मैंने पढ़ा। पढ़ने के बाद मन आनन्द से भर गया। दूसरे दिन शिवरात्रि का दिन था। बहनों ने रात को अखण्ड योग का कार्यक्रम रखा था।

बाबा मुझे 'स्वराज्य कृष्ण' के नाम से ही बुलाते थे

मैं अकेले ही गाड़ी में बैठ आबू रोड़ स्टेशन पर पहुँच गया। विश्वकिशोर दादा दूसरी पार्टी को लेने आये थे तो मैं भी उनके साथ मधुबन पहुँच गया। स्नान आदि करके हम मम्मा-बाबा से मिलने गये। बाबा की मेरे पर दृष्टि पड़ते ही मैं बाबा की गोदी में चला गया। बाबा बोले, बच्चे, जीते जी मरने के लिए आये हो ? एकदम मुझे समझ में आया कि भृगु ऋषि ने मेरी जन्मपत्री पढ़ ली। ऐसा ही महसूस हुआ

s_book final.2.pmd 163 03-01-2005, 10:32 AM

कि मेरे असली माँ-बाप यही हैं। एक दिन मैंने बाबा को अपने दिल की बात कही कि मेरी सगाई हो चुकी है, क्या करूँ ? तो बाबा ने कहा, बच्चे, हमारा प्रवृत्तिमार्ग है इसलिए उसको भी ज्ञान दो। जब मधुबन से वापस आया तो घर पर गुरु आये थे। माता-पिता ने कहा, गुरु कर लो। मैंने कहा, मुझे तो सतगुरु मिल गया है तो गुरु की क्या दरकार है ? फिर माता-पिता को भी यह ज्ञान सुनाया। उनको भी बहुत अच्छा लगा और ज्ञान में चलने लगे।

सन् 1957 में बाबा से मिलने मधुबन गया तब काफ़ी समय वहाँ रहकर यज्ञ की भिन्न-भिन्न सेवा करता रहा। हमारे सामने मम्मा-बाबा त्याग, तपस्या और सेवा के सैम्पल थे। बाबा मुझे 'स्वराज्य कृष्ण' के नाम से ही बुलाते थे और कहते थे कि बच्चे, अपना फैसला कर लो। तो यहाँ से सीधा अम्बाला गया और सभी रिश्तेदारों को बुलाकर झाड़, त्रिमूर्ति पर पूरा ज्ञान समझाया और कहा, मैंने शिव बाबा से आजीवन ब्रह्मचर्य में रहने का वायदा किया है। यदि आपको मंजूर है तो मैं शादी करके भी आजीवन ब्रह्मचर्य में रहूँगा। उन्होंने मना कर दिया। फिर मैंने सारा समाचार मम्मा-बाबा को लिख दिया।

बाबा की मेरे पर दृष्टि पड़ते ही मैं बाबा की गोदी में चला गया। बाबा बोले, बच्चे, जीते जी मरने के लिए आये हो ? मुझे ऐसे लगा कि भृगु ऋषि ने मेरी जन्मपत्री पढ़ ली। ऐसा ही महसूस हुआ कि मेरे असली माँ-बाप यही हैं।

बच्चे, इस बच्ची को बन्धनों से छुड़ाना है

सन् 1958 में मम्मा-बाबा दिल्ली राजौरी गार्डेन में आये। मैं मम्मा-बाबा से मिलने गया। उस दिन ब्रह्मा भोजन रखा था। वहाँ काफ़ी भाई-बहनें आये हुए थे। मैं जैसे ही भोजन पर बैठा, कुँज दादी आयी और कहा, आपको बाबा बुला रहे हैं। मैंने सोचा, इतने भाइयों में से मुझे ही क्यों बुलाया, ज़रूर मेरे से कोई भूल हुई होगी। मैं थाली छोड़कर तुरन्त बाबा के पास गया। बाबा ने बड़े प्यार से अपने पास बिठाया, दूसरी तरफ़ मम्मा बैठी। मुझे बीच में बिठा लिया। उसके बाद बाबा ने एक कन्या का लिखा हुआ निश्चय-पत्र दिखाया जिस पर उस कन्या का फोटो लगा था। बाबा ने कहा कि बच्चे, इस बच्ची को बन्धनों से छुड़ाना है। मैंने कहा, बाबा, अभी तो आपने मुझे स्वतन्त्र पंछी बनाया है। मैं अब शादी के चक्र में नहीं आऊँगा। मम्मा ने मुझ से कहा, कहो, बाबा आप जैसे कहेंगे। तो बाबा बोले कि शिव बाबा जैसे कहे। उसी समय सन्तरी दादी को ध्यान में भेजा। थोड़ी देर में

s_book final.2.pmd 164 03-01-2005, 10:03 AM

सन्देशी वापस आयी और सन्देश सुनाया कि शिव बाबा ने कहा है कि बच्चे को दिव्य (गंधर्व) विवाह कर बच्ची को बन्धन से मुक्त करना है। मैंने कहा, जो आज्ञा। उसके बाद शादी करके हम बाबा के पास पहुँच गये। बाबा ने हम दोनों को बड़े प्यार से गोद में लिया और कहा कि ये दोनों बच्चे बाबा को कमाल करके दिखायेंगे। उसके बाद उस कन्या को बाबा ने दिल्ली सेन्टर पर भेज दिया और मैं लौकिक सर्विस पर सहारनपुर चला गया। वहाँ बाबा को निमन्त्रण दिया तो बाबा ने कहा, ''ज़रूर आऊँगा, आप तैयारी करो क्योंकि बच्चों ने बाप का हुक्म माना है, बाप भी बच्चों का हुक्म मानेंगे।'' बाबा-मम्मा सहारनपुर आये तो मेरी ख़ुशी का पारावार न रहा। कुछ दिन मम्मा-बाबा सहारनपुर में रहकर मुंबई गये। फिर मुझे भी सेवा के लिए वहाँ बुलाया।

सन् 1968 में जब बाबा से मिलने मधुबन गया तो बाबा एकदम न्यारे और प्यारे लगते थे। चलते-फिरते फ़रिश्ता स्वरूप देखने में आता था। जब बाबा से मिलते थे तो मात-पिता दोनों का अनुभव होता था। लेकिन मुझे यह मालूम नहीं था कि बाबा से मैं अन्तिम बार मिल रहा हूँ। ऐसे थे मेरे निराले बाबा ! ❄

सन् 1968 में जब बाबा से मिलने मधुबन गया तो बाबा एकदम न्यारे और प्यारे लगते थे। चलते-फिरते फ़रिश्ता स्वरूप देखने में आता था। जब बाबा से मिलते थे तो मात-पिता दोनों का अनुभव होता था।

शिव भगवानुवाच :

मीठे बच्चे, सबसे अच्छा दैवीगुण है शान्त रहना, जास्ती कोई से न बोलना, मीठा बोलना, बहुत थोड़ा बोलना।

तुम्हारे पास कोई भी आये तो देखो कि बात कितनी मीठी करते हैं। देह-अभिमान में आने से ही बाप को भूलते हो। बाप को भूलने से ही बाप-टीचर-सद्गुरु तीनों की निन्दा कराने के निमित्त बनते।

जो बच्चे अच्छी सेवा करते हैं वे बाबा की दिल पर चढ़ते हैं। याद की यात्रा भी ज़रूरी है। बाप कहते हैं बच्चे, याद में रहो, जिससे तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे।

बाबा ने दृष्टि मात्र से मेरे विलासी जीवन को वैरागी जीवन बना दिया

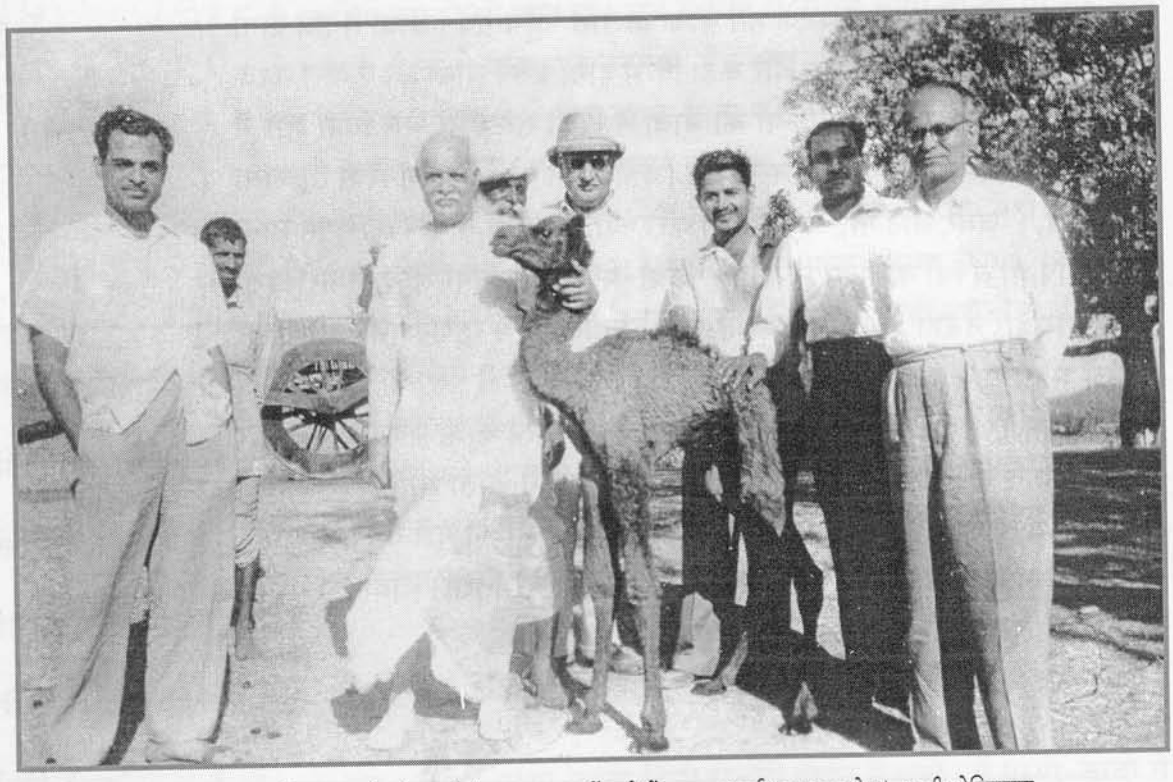

सहारनपुर– सर्वप्रिय बाबा ऊँट के बच्चे के साथ। साथ में खड़े हैं नारायण भाई (बाबा का बेटा), मुखी गोविन्दराम, विश्वकिशोर भाऊ (एकदम किनारे पर) तथा अन्य।

मधुबन के गुरुमुख दादा अपना अनुभव इस प्रकार सुनाते हैं कि मैं आज से 45 साल पहले 50 साल की उम्र में ज्ञान में आया। जहाँ मैं रहता था वहाँ उस समय ब्रह्माकुमारी बहनों को कोई जानता तक नहीं था। उन दिनों मैं सहारनपुर में था और रेलवे में नौकरी करता था। उस समय स्टीम इंजन होते थे, मैं असिस्टेण्ट लोको फोरमैन था। वहाँ मेरा एक मामा था, वह बहुत बड़ा आदमी था और कॉन्ट्रैक्टर था। उसका सम्बन्ध अंग्रेज़ों के साथ था। उसकी एक लड़की थी, शादी के छह मास के बाद उसका पति मर गया तो मामा जी ने सहारनपुर में एक मकान बनाकर वहाँ उसको रखा। वह बहन दु:खी बहुत थी। क्योंकि जब उसका पति मरा था उस

s_book final.2.pmd 166 03-01-2005, 10:03 AM

समय उसके पेट में बच्चा था। इस कारण उस बच्चे के भविष्य का भी सवाल था। जब वह बहुत दु:खी थी तो उसने वहाँ के ब्रह्माकुमारी सेन्टर पर जाना शुरू किया। उस समय सेन्टर नया-नया खुला था। वहाँ जाने से उसको बहुत आनन्द मिला, दु:ख दूर होता गया। उस बहन को इतना अच्छा लगा कि उसने अपने मकान का ऊपर वाला सारा हिस्सा ब्रह्माकुमारियों को दे दिया। मैं रेलवे कॉलोनी में रहता था। कभी-कभी मैं उसके घर जाया करता था। जब भी मैं उससे मिलने जाता था तब वह कहती थी कि भाई साहब, आप यह ज्ञान सुनो। सुनके तो देखो, बहुत अच्छा है। मैं सुना-अनसुना कर चला जाता था। इस प्रकार, दो साल तक वह मुझे कहती रही और मैं उसकी बात ऐसे ही टालता रहा।

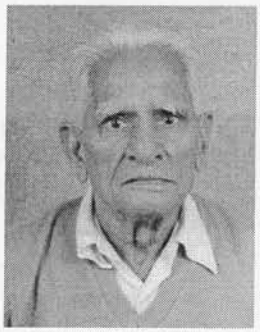

गुरुमुख दादा

मैं आज से 45 साल पहले 50 साल की उम्र में ज्ञान में आया। जहाँ मैं रहता था वहाँ उस समय ब्रह्माकुमारी बहनों को कोई जानता तक नहीं था। उन दिनों मैं सहारनपुर में था और रेलवे में नौकरी करता था।

जैसी दृष्टि वैसी ही सृष्टि दिखायी पड़ती है

वहाँ आश्रम पर एक बार बाबा आये। सुबह 10 बजे का वक्त था, मैं दफ़्तर में काम कर रहा था। एक भाई मेरे पास आया और कहने लगा कि आपकी बहन आपको बुला रही है, बाबा से आपको मिलाना है। बाबा, बाबा शब्द तो मैं हर बार अपनी बहन के मुख द्वारा सुनता ही था। मुझे कुछ ख़ास नहीं लगा, एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दिया और मैं अपने काम में लग गया। पौने घण्टे के बाद और एक भाई आया। मेरा पद ऐसा था कि मेरे दफ़्तर में मेरी अनुमति बग़ैर कोई अन्दर आ नहीं सकता था। लेकिन यह ब्रह्माकुमार भाई सीधा मेरे पास आया और कहने लगा, अरे साहब, आप यहाँ बैठे हो? आपकी बहन आपको बुला रही है। आपको बाबा से मिलाना है। उसकी बात सुनकर मैं हैरान हो गया कि यह क्या कह रहा है! मेरे आफ़िस में, मेरी इज़ाज़त के बिना अन्दर आकर इतना निडर होकर कह रहा है! मैंने कहा, ठीक है आऊँगा। उसने कहा, चलो, चलो, अभी उठो। मैंने सोचा, अरे यह तो कमाल का आदमी है, मुझे इतने अधिकार से कह रहा है। फिर मैं उठा और उसके साथ चल पड़ा। जब मैं वहाँ गया तब बाबा बच्चों से मिल रहा था। मैं खड़ा देख रहा था। हॉल में बाबा के चारों तरफ़ बहुत भाई-बहनें बैठे हुए थे। बाबा उनको ऐसे प्यार करता था जैसे बाप अपने सगे बच्चों से करता है। उनको गोद में भी लेता था। मैं ज्ञान में नहीं था ना इसलिए वह दृश्य देख मुझे बहुत

s_book final.2.pmd 167 03-01-2005, 10:32 AM

गुस्सा आया, नफ़रत आयी कि यह बाबा क्या कर रहा है? मैं दूर दरवाज़े के पास ही खड़ा हुआ था। मुझे नज़दीक नहीं बुलाया गया।

बाबा के बोल ने मुझे अनमोल बना दिया

बाबा सबसे मिल चुके थे, फिर भी मुझे नहीं बुलाया गया। बाद में मेरी बहन बाबा का हाथ पकड़कर ले आयी और मेरे सामने खड़ा कर दिया। वह बाबा से मेरा परिचय कराने लगी कि बाबा, यह मेरी बुआ का लड़का है, वो करता है, यह करता है आदि। उसके बाद बाबा ने मेरी तरफ़ देखा और आगे चला गया। मेरे से कुछ नहीं बोला। चार-पाँच फुट आगे चला गया और वहाँ जाकर रुक गया। फिर मुड़कर वापस आ गया। आकर मुझे देखने लगा। मैं भी बाबा को देखता रहा। जैसे सामान्य रूप में एक व्यक्ति दूसरे को देखता है तो दूसरा भी उसको देखता है। तीन-चार मिनट बाबा मुझे देखता रहा। मुझे ऐसे लग रहा था कि बाबा मुझे छह मास से देख रहा है। फिर बाबा मुड़कर मेरी बहन से कहने लगा, बच्ची, यह बच्चा बहुत अच्छा है। ऐसे कहकर चले गये। बहन भी चली गयी। वे दोनों चले गये तो मैं भी चला गया और दफ़्तर पहुँच गया। जब मैं दफ़्तर में गया तो मेरा मन एकदम बदला हुआ था। मतलब मैं बहुत अच्छी मन:स्थिति में, ख़ुशी से भरपूर मन:स्थिति में था। उस दिन मैंने बहुत अच्छा काम किया, घर गया, खाना खाया। खाना खाने के बाद मैं एक-डेढ़ घण्टा विश्राम करके आता था। लेकिन उस दिन खाना खाकर सीधा फिर दफ़्तर आ गया और काम करना शुरू किया। बाबा से मिलकर, उनकी दृष्टि लेकर मुझे बहुत अच्छा लगने लगा। फिर 4-5 दिन तक मैं सेवाकेन्द्र की तरफ़ गया नहीं। फिर मुझे बहन याद आयी तो बहन के पास चला गया। वह मुझे घर के ऊपर आश्रम पर ले गयी। वहाँ कोई अनुभवी बहन थी, वह मुझे ज्ञान समझाने लगी। उसकी बातें बहुत अच्छी लगने लगी। उसके बाद मेरी बहन ने कहा, आप चार-पाँच दिन एक-एक घण्टा यहाँ पर आना, बाद में इस ज्ञान में चलना या न चलना वह आपके ऊपर है। मैंने मान लिया और 5-6 दिन जाकर ज्ञान लिया। बहनों से ज्ञान सुनने से मेरे में परिवर्तन आने लगा और मैंने रोज़ जाना शुरू कर दिया।

एक भाई आया और कहने लगा कि आपकी बहन बुला रही है, बाबा से आपको मिलाना है। बाबा शब्द तो मैं हर बार बहन ढारा सुनता था। मुझे ख़ास नहीं लगता था, एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देता था।

s_book final.2.pmd 168 03-01-2005, 10:03 AM

लेकिन मैं ऐसा आदमी था जो ख़ूब सिगरेट पीता था, क्लब जाकर गैम्बलिंग करता था, सब काम करता था और विकारी तो था ही, पाँच बच्चे थे। रेलवे में पोस्ट अच्छी होने के कारण तनख़्वाह भी बड़ी अच्छी मिलती थी। जिस दिन से मैंने आश्रम जाना शुरू किया उस दिन से मैंने अपनी पत्नी को विकारी दृष्टि से न देखा और न उसका हाथ तक छुआ। पवित्र रहने के लिए मुझे किसी ने कहा नहीं। यह अपने आप मन में शुद्ध भावना आने लगी। यह सब थी ज्ञान और उन बहनों के पवित्र वायब्रेशन्स की कमाल। कुछ मास के बाद मेरे भाई की लड़की की शादी थी। उस शादी में जाना ही पड़ा। वहाँ बहुत अच्छी-अच्छी मिठाइयाँ आदि दे रहे थे परन्तु मैंने कुछ नहीं लिया, कुछ नहीं खाया। मुझे किसी ने नहीं बताया था कि बाहर की चीज़ें नहीं खानी चाहिएँ। उनको मैंने कहा, मुझे फल ला दो, बस। इस तरह आश्रम पर रोज़ जाने से मुझे ये सारी प्रेरणायें आती थीं।

बाबा ने मेरी तरफ़ देखा और आगे चला गया। मेरे से कुछ नहीं बोला। चार-पाँच फुट आगे चला गया और वहाँ जाकर रुक गया। फिर मुड़कर आया और कहा, बच्ची, यह बच्चा बहुत अच्छा है।

मैं सम्पूर्ण बदल गया

कुछ दिनों के बाद सहारनपुर से एक पार्टी मधुबन आ रही थी। उसके साथ मुझे भी भेजा गया। मधुबन आकर मैं बाबा से मिला। बाबा ने तो मुझे पहले सहारनपुर में दृष्टि दी हुई थी और कहा भी था कि यह बहुत अच्छा बच्चा है। बाबा ने बहुत प्यार किया। पहले मम्मा से मिला, बाद में बाबा से। दोनों ने इतना प्यार किया कि मैं सम्पूर्ण बदल गया। मधुबन से जब मैं सहारनपुर आया तो मेरी बदली अम्बाला हो गयी और मेरा भोगी जीवन, योगी जीवन में परिवर्तित हो गया।

मैंने यह देखा कि बाबा जब किसी को दृष्टि देता था तब हर कोई व्यक्ति ज्ञान में चलना शुरू कर देता था। क्योंकि बाबा में शिव बाबा बैठकर डायरेक्ट काम करता था ना! जो बाबा से दृष्टि लेता था उसको ही पता नहीं पड़ता था कि मैं कहाँ हूँ, क्या कर रहा हूँ, कैसे कर रहा हूँ। वह अपने आप बदल जाता था। उसके मन, वचन, कर्म, सम्बन्ध, सम्पर्क में बदलाव आ जाता था, श्रेष्ठता आ जाती थी। उनके रिश्तदार भी ये सब देखकर आश्चर्य खाते थे। इस प्रकार साकार बाबा से मिलना माना जीवन परिवर्तन होना, असुर से सुर बनना, भोगी से योगी बनना।

❄

s_book final.2.pmd 169 03-01-2005, 10:32 AM

मज़बूरों को मज़बूत बनाने वाले बाबा

आबू– राज बहन जलन्धर, बाबा और कृष्णा बहन, अम्बाला।

अम्बाला कैण्ट से ब्रह्माकुमारी कृष्णा बहन जी अपने अनुभव सुनाती हैं कि जब मैं ज्ञान में आयी उस समय स्कूल में पढ़ती थी। बहुत ही बन्धन होने के कारण लौकिक बाप बाहर नहीं निकलने देते थे। सन् 1950 में बाबा अमृतसर आये थे तो पेपर देने का बहाना बनाकर मैं अमृतसर जाकर बाबा से मिली। मैंने एक कविता लिखी थी जो खड़े होकर बाबा के सामने प्रस्तुत की–

''मुझे निश्चय है कि आप भगवान हैं,
करते सबका कल्याण हैं,
मेरी नैय्या डगमग डोले,
किश्ती भंवर में खाये हिंडोले,
गोद में ले लो पार करो... ।''

s_book final.2.pmd 170 03-01-2005, 10:03 AM

बोलते-बोलते मेरी आँखों से आँसुओं की धारा बह गयी। बाबा ने मेरा हाथ पकड़ कर अपने सीने से लगा लिया। मुझे कोई होश नहीं था। ऐसा लगा कि बाबा रूई जैसे कोमल-कोमल हाथों से अपने ही रूमाल से मेरे आँसू पोंछ रहा है और धैर्य दे रहा है कि धीरज धरो, धीरज धरो। मेरे साथ और भी बहुत-सी कुमारियाँ थीं। बाबा ने सबको देखते हुए चन्द्रमणि दीदी को कहा कि मैं तो सबको गाड़ी में भरकर ले जाऊँगा। यह मेरी बाबा के साथ पहली मुलाक़ात थी लेकिन घर वालों से छिप-छिपके। इस मिलन के बाद ऐसा लगा कि किसी ने मेरा चित्त चुरा लिया और नींद ले ली। दूसरी बार बाबा ने मुझे पत्र भेजा कि अपनी फोटो भेजो। किसी दूसरे स्थान पर जाकर बाबा को फोटो भेजा। फोटो देखकर बाबा ने चन्द्रमणि दीदी को कहा कि यह तो मेरी कल्प पहले वाली बच्ची है। कैसे भी मदद कर इसको बचाना है। यह तुम्हारी मददगार बनेगी।

बोलते-बोलते मेरी आँखों से आँसुओं की धारा बह गयी। बाबा रूई जैसे कोमल-कोमल हाथों से अपने ही रूमाल से मेरे आँसू पोंछ रहा था और धैर्य दे रहा था कि धीरज धरो, धीरज धरो।

बाबा के बोल मेरे लिए क़दम-क़दम पर पदम दिलाने वाले वरदान बन गये

बाबा से मुझे दो वरदान मिले। एक 'शेरनी शक्ति' है। दूसरा 'यज्ञसेवा में मददगार बनेगी।' ये दोनों वरदान आज तक मेरे साथ चल रहे हैं। जहाँ भी मैंने क़दम रखा वहाँ मुझे बाबा के वरदान अनुसार पदम मिले। रूखे-सूखे सेन्टर, जहाँ थाली-कटोरी-गिलास की भी कमी थी थोड़े ही दिनों में हरे-भरे हो जाते थे। खास कर पंजाब में तलवाड़ा, होशियारपुर एवं शिमला इत्यादि में यह देखा। आज तक अनेक विघ्न आते भी हैं लेकिन मुझे बाबा के वरदान अनुसार सफलता ही सफलता मिलती रहती है।

वे मुझे कहने लगे – तुम देवी हो, हमें माफ़ कर दो

विकट परिस्थिति का चमत्कार है कि जब सहन करते-करते चार साल बीत गये, कलह-क्लेश का वातावरण लौकिक घर में रोज़ बना रहता था तो बड़े भाई ने लास्ट फैसला यह लिया कि इसका गला दबाकर इसे मारकर ख़ुद मैं भी ख़ुदकुशी

s_book final.2.pmd 171 03-01-2005, 10:32 AM

ब्रह्माकुमारी कृष्णा बहन जी

कर लूँगा या जेल में चला जाऊँगा। फिर एक दिन तंग आकर रात को मेरा गला दबाने लगा। मैं ''बाबा-बाबा'' करने लगी। पता नहीं अचानक मेरे अन्दर कौन-सी शक्ति आयी कि भाई मुझे मारने के बजाये ख़ुद बड़ी दूर जा गिरा और बेहोश हो गया। मेरे माँ-बाप सब मेरे पैर छूने लगे। कहने लगे, ''तुम देवी हो, देवी हो, हमें माफ़ करो। हमसे ग़लती हो गयी, माफ़ कर दो, माफ़ कर दो।'' उस दिन से मेरे सारे बन्धन छूट गये। मुझे नौकरी के बहाने किसी दूसरे शहर में जाने की छुट्टी मिल गयी। मैंने दो-तीन स्कूलों में लौकिक सर्विस की और वहाँ बाबा के लाल अक्षरों से लिखित पत्र मिलते रहे।

जब मैं ज्ञान में आयी उस समय स्कूल में पढ़ती थी। बहुत ही बन्धन होने के कारण लौकिक बाप बाहर नहीं निकलने देते थे। सन् 1950 में बाबा अमृतसर आये थे तो पेपर देने का बहाना बनाकर मैं अमृतसर जाकर बाबा से मिली।

साधारण मानव-तन में बैठ, सामान्य कर्म करती हुई परम शक्ति को देखा

बाबा के चेहरे पर मैंने अनोखी चमक, आँखों में अति प्रेम का आकर्षण और हाथों में स्थूल तथा सूक्ष्म सब कुछ करने की अद्भुत शक्ति का अनुभव किया है। मैं कितनी भाग्यशाली हूँ जो बच्चों के साथ बैठकर सब्जी काटते, धान साफ़ करते हुए भगवान को मैंने देखा। घरों में पुरुष लोग पानी का एक गिलास भी लेकर नहीं पीते, यहाँ निरहंकारी बाबा को अनेक स्थूल कार्य एक्यूरेट करते देखा।

ब्रह्मा बाबा की आन्तरिक स्थिति का ज़्यादा अनुभव तब हुआ जब अव्यक्त होने से कुछ समय पहले मैं उनसे मिली थी। उस समय बाबा बहुत गंभीर लगने लगे। मुरली के पश्चात् खड़े होकर दृष्टि देना, अपने कमरे तक आकर भी पहले कई बार चैम्बर में जो दो शब्द बोलते थे उसमें भी गंभीर रहने लगे। सबको शान्ति में ले जाते थे। शान्ति की स्थिति में बहुत गहराई महसूस होने लगी। खड़े-खड़े बहुत देर तक योग करते लाइट स्वरूप बनते देखा।

बाबा में सभी प्रकार के गुण थे। सबसे बड़ी बात, बाबा में परखने की अद्भुत शक्ति थी। पार्टी के भाई-बहनों को मधुबन में लाकर बाबा के सामने बिठाते थे। पार्टी से मिलने के बाद बाबा हमें अलग बिठाकर कहते थे कि यह भाई तुम्हें आगे चलकर धोखा दे सकता है। सचमुच वह ऐसा ही निकलता था। जिसके लिए हम कहते थे कि यह अच्छा नहीं है, लड़ता रहता है, उसके लिए बाबा कहते

s_book final.2.pmd 172 03-01-2005, 10:03 AM

थे कि यह तुम्हें यज्ञ में बहुत सहायता देगा। ऐसे बाबा अनेक आत्माओं की जन्मपत्री पढ़ लेते थे। एक बार समझानी मिल गयी कि सब कुछ बाबा को सुनाना होता है, तब से लेकर मैं सब कुछ बाबा को सच-सच लिखती रही हूँ। इसलिए भी बाबा ने मुझे कई बार ''सचली कौड़ी'' का टाइटिल भी दिया हुआ है।

लॉफुल और लवफुल बाबा

बाबा का धर्मराज रूप मैंने तीन बार देखा है। ग़लती करने पर भी सच्चे दिल से सब कुछ बाबा को सुनाने पर बाबा माफ़ कर देते हैं और वे बच्चे बाबा के नज़दीक चले जाते हैं। इसके बारे में एक छोटा-सा प्रसंग सुनाती हूँ। एक बार लगभग एक मास मैं मधुबन में रही। मेरे ऊपर इंचार्ज रूप में बड़ी बहन थी। मैं छोटी थी। उस बड़ी बहन को कुछ दिमागी तकलीफ़ होने के कारण कई बार रात को कमरे से बाहर घूमती रहती थी। उसे नींद नहीं आती थी। तब पाण्डव भवन पूरा बना नहीं था, सिर्फ तीन-चार कमरे बने थे जिन्हें ट्रेनिंग रूम कहते थे। वह बहन पूरी रात बाहर घूमती रही। किसी बहन ने बाबा को यह सब बता दिया। दिन में बाबा ने उसे कुछ भी न कहकर मुझे अकेले में बुलाकर बहुत कुछ कह दिया कि तेरा योग नहीं, तेरा अपनी साथी से सम्बन्ध ठीक नहीं, तूने आये हुए परमात्मा बाप को पहचाना ही नहीं। रूप भी बाबा का बहुत सख्त, पूरा धर्मराज का था। बाबा ने मुझे बहुत कुछ कह दिया। मेरी टाँगें काँप रही थीं। डर के मारे मुँह लाल हो गया। फिर जब मैं वापिस कमरे में गयी तो उस बहन ने मुझसे पूछा कि तुझे क्या हुआ ? बाबा ने तुझे क्या कहा ? मैंने कुछ नहीं बताया और जाकर बिस्तर पर लेट गयी। मुझे बहुत ज़ोर का बुखार चढ़ गया। रात भर शरीर गरम रहा। सुबह अमृतवेले डरती-डरती उठी और क्लास में गयी। बाबा ने सारी मुरली मुझे ही देखकर चलायी। देखता भी रहा और मुस्कराता भी रहा। मुरली पूरी होते ही बाबा उँगली पकड़कर मुझे अपने कमरे में ले गया और ऐसा प्यार दिया, ऐसा प्यार दिया कि मैं क्या बताऊँ ! प्यार का सागर बन गोद में समा लिया और कहा, ''कभी भी किसी भी बात में मज़बूर नहीं होना, मज़बूत हो रहना। सब कुछ बाबा को सुनाना।'' यह समझा कर फिर से गले से लगाकर टोली, बादाम, मिश्री खिलाकर

बाबा के चेहरे पर मैंने अनोखी चमक, आँखों में अति प्रेम का आकर्षण और हाथों में स्थूल तथा सूक्ष्म सब कुछ करने की अद्भुत शक्ति का अनुभव किया है। बाबा में सभी गुण थे। उनमें परखने की अद्भुत शक्ति थी।

s_book final.2.pmd 173 03-01-2005, 10:32 AM

छुट्टी दी। बड़ी दीदी (मनमोहिनी जी) को बुलाकर कहा कि बहुत मज़बूत बच्ची है, इसका ख्याल रखना। ऐसे थे मेरे लॉफुल और लवफुल साकार बाबा! एक बार मैंने बाबा को कहा कि मुझे लौकिक बाप बार-बार याद आता है। कभी-कभी रोना भी आ जाता है। बाबा मुझे देखता रहा और मेरी पूरी बात सुनता रहा। बहुत मीठी दृष्टि देकर हँसते हुए कहा, फिर क्या हुआ ? बाप है ना ! वर्सा ज़्यादा बाप से ही मिलता है। बाबा ने मुझे तो यह कहा परन्तु उस दिन के बाद मोह का अंश भी समाप्त हो गया। ऐसा लगा कि बाबा ने इस मोह के विकार को ब्लॉटिंग पेपर बन मेरे से निकाल दिया।

बाबा ने प्यार का सागर बन कहा, "कभी भी किसी भी बात में मज़बूर नहीं होना, मज़बूत हो रहना। सब कुछ बाबा को सुनाना।" यह समझा कर फिर से गले से लगाकर टोली, बादाम, मिश्री खिलाकर छुट्टी दी।

युक्तियुक्त बोल से बन्धनों से मुक्त करने वाले बाबा

बाबा के होते पाण्डव भवन छोटा था। इसे और बड़ा करने के लिए बाबा प्लान बनाते रहते थे। उस समय मैं लौकिक सर्विस करती थी। बन्धन छुड़ाने के लिए बाबा को पत्र लिखती रहती थी। बाबा दयालु-कृपालु बन लाल अक्षरों में उत्तर लिखते थे। एक बार बन्धनमुक्त बनाने हेतु बाबा की ओर से मुझे एक युक्तियुक्त पत्र आया। बाबा ने लिखा कि बच्ची, मैं एक बहुत बड़ा और बहुत सुन्दर भवन बना रहा हूँ। एक में फुलकास्ट ब्राह्मण रहेंगे और दूसरे में हाफकास्ट। मुझे तो इसका अर्थ समझ में नहीं आया कि फुलकास्ट ब्राह्मण क्या है और हाफकास्ट ब्राह्मण क्या है। मैंने फिर लिखा, बाबा, मुझे समझ में नहीं आया। तो बाबा ने लिखा, बुद्धू बच्ची हो क्या ? फुल समर्पण होना माना फुलकास्ट ब्राह्मण। फिर दिन-रात बुद्धि चलने लगी कि क्या करूँ। पहले ही मैं बहुत सहन कर चुकी थी इसलिए मैंने दृढ़ संकल्प किया कि अब तो मुझे फुलकास्ट ब्राह्मण बनना ही है। मैं दो महीने में अपनी नौकरी से इस्तीफ़ा देकर अमृतसर चन्द्रमणि दादी जी के पास चली गयी और समर्पित हो गयी। फिर तो साकार बाबा से ऐसा मनभावन मिलन मनाया कि सच्चे-सच्चे मात-पिता का अनुभव किया। बाबा ने ऐसा गले लगाया कि मैं दुनिया भूल गयी, पावन प्रेम-गंगा में डूब गयी। बस फिर तो वो मस्ती चढ़ी कि आज तक उस इलाही (ईश्वरीय) मस्ती में पल रही हूँ। फिर तो बाबा ने निश्चय बुद्धि का टाइटिल दिया। ❄

s_book final.2.pmd 174 03-01-2005, 10:03 AM

ऐसे थे विश्व के प्रथम महाराजकुमार बनने वाले मेरे बाबा !

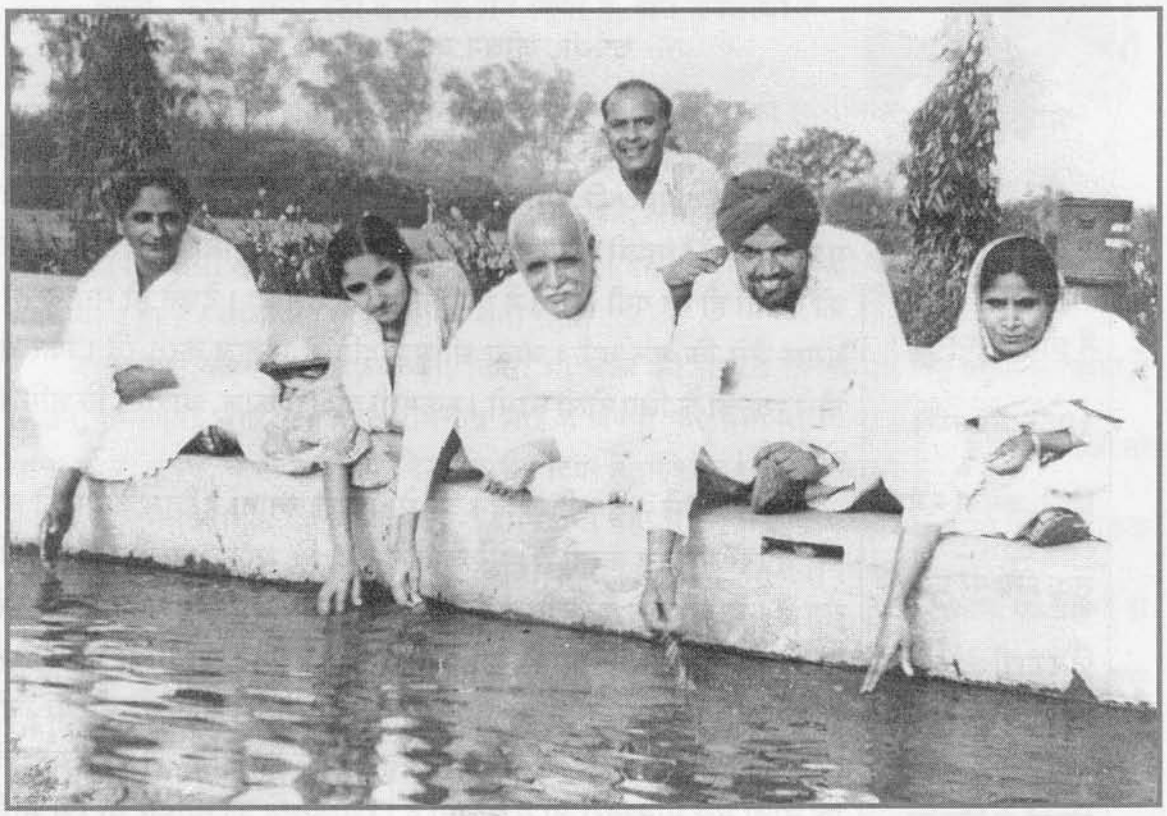

आबू– आलराण्डर दादी, बाबा और उनके पीछे खड़े हैं जग्गी भाई (शान्तामणि दादी के भाई) और अन्य।

कानपुर से ब्रह्माकुमारी दुलारी बहन जी लिखती हैं कि मैं ज्ञान में सन् 1955 में आयी। दिल्ली, कमला नगर सेवाकन्द्र पर प्रथम दिन दादी आलराऊण्डर ने त्रिमूर्ति के चित्र पर मुझे समझाया। दो दिन बहनों को देखा तो उनके जीवन से पवित्रता की झलक का अनुभव किया। दूसरे दिन बृहस्पतिवार था। बड़ी दीदी मनमोहिनी जी के कहने पर कमलमणि बहन (अभी जो दिल्ली, कृष्णा नगर सेवाकेन्द्र में हैं) ने मुझे कल्पवृक्ष पर समझाया।

उसी समय पटना के एक युगल मधुबन से लौटे थे। वे ब्रह्मा बाबा के मिलन का अनुभव सुना रहे थे। मेरे अन्दर भी जिज्ञासा पैदा हुई कि ऐसे ब्रह्मा बाबा को मैं

s_book final.2.pmd 175 03-01-2005, 10:32 AM

करना चाहिए। जेवर पहनने से बहुत लोग लूट लेते हैं, लीवर घड़ी भी गिर जाती है। मेरे को एकदम धक से लगा कि मैं भगवान के सामने बैठी हूँ, उनको न बताऊँ, यह कैसे हो सकता ! जैसे ही चेम्बर में बाबा गये, मैं भी गयी और बोली, बाबा, रात्रि को हम घूमने गये थे तो लाडली बहन की घड़ी कहीं गिर गयी। बाबा बोले, बच्ची, उसी समय क्यों नहीं बताया ? बाबा ख़ुद टार्च लेकर जाता, घड़ी मिल जाती। लच्छू बहन से बोला, घड़ी लेकर आओ। तो मन कह रहा था कि देखो, बाबा किसी बच्चे को अपनी चीज़ की कमी महसूस नहीं करने देते थे।

एक दिन बाबा मुझे भण्डारे में अपने साथ ले जा रहे थे तो चौके में देखा कि लकड़ियाँ बड़े चूल्हे में जल रही हैं और रोटी बनाने वाला कोई नहीं था। बाबा ख़ुद रोटी बनाने लगे। मैं भी साथ में जुट गयी।

गणिकाओं का भी उद्धारक

एक बार बाबा मुझसे बोले, बच्ची, वेश्याओं की भी सेवा करो। मैं इटावा में जाकर कमीशनर, डी.एस.पी. के सहयोग से वेश्याओं की सेवा करने गयी। क़रीब 70-80 वेश्यायें थीं, उन्हें रोज़ कोर्स कराने हम 2-3 बहनें जाती थीं। बाबा का पत्र आया। उसमें लिखा था, बच्ची, ध्यान रखना कोई ब्राह्मण कुल का डूब न मरे। बाबा सब की कर्म कहानी जानते तो हैं। उन वेश्याओं में 2-3 ने प्रतिज्ञा की कि हम भल लकड़ी, कोयला बेचकर अपना जीवन निर्वाह करेंगी लेकिन हम ज़रूर पवित्र रहेंगी। इस प्रकार बाबा संसार की अनेक आत्माओं के कल्याणार्थ प्रेरणा देते रहते थे। ❄

शिव भगवानुवाच :

मीठे बच्चे, याद में तुमको आँखें बन्द नहीं करना है। आँखें खोलकर बैठो, बुद्धि में परमप्रिय बाप की याद हो। याद में आँखें बन्द हो जाती हैं तो ज़रूर कुछ दाल में काला है, और कोई को याद करते होंगे।

मेहनत सारी याद में है। शिव बाबा ही ज्ञान का सागर है जो तुमको सुनाते हैं। वही ऊँच से ऊँच है। वह निराकार है। वही रचना के आदि, मध्य, अन्त को जानते हैं। बाप आये हैं मनुष्यों को देवता बनाने, तो तुम बच्चों को दैवी गुण भी ज़रूर धारण करने हैं।

s_book final.2.pmd 178 03-01-2005, 10:28 AM

बाबा सर्व पर सदा प्यार की वर्षा करते थे

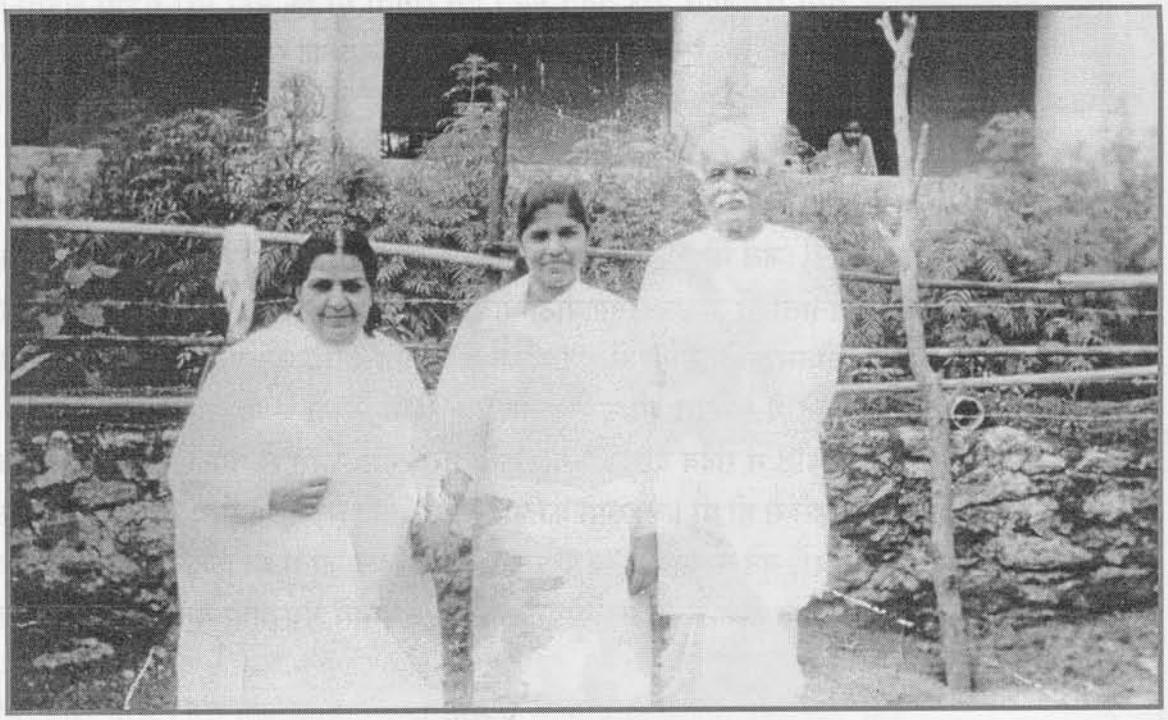

आबू– जगत् के मात-पिता के साथ सुन्दरी बहन, पुणे।

पूना, मीरा सोसाइटी से ब्रह्माकुमारी सुन्दरी बहन जी अनुभव सुनाती हैं कि मानव के जीवन में एक ऐसी दिव्य घड़ी आती है जब अनायास ही उसका भाग्योदय हो जाता है। ऐसे ही सन् 1960 में जब पहली बार मैं पाण्डव भवन में पहुँची तो पाँव रखते ही मुझे ऐसा लगा कि यह मेरा ही स्थान है। यह कोई नया स्थान नहीं है। जैसेकि मेरा यहाँ अनेक बार आना हुआ है। मैं निःसंकल्प रहती थी, कहाँ मूँझती नहीं थी। बाबा से मुलाक़ात होने के बाद उन्होंने मुझसे पूछा, बच्ची, किससे मिलने आयी हो ? मैंने फलक से जवाब दिया, मैं अपने बापदादा से मिलन मनाने आयी हूँ। फिर पूछा, क्या लेने आयी हो ? मेरे मुख से सहज रीति से निकला, मैं स्वर्ग का वर्सा लेने आयी हूँ। फिर बाबा ने पूछा, पहले कब लिया था ? मेरे अन्तर्मन से अत्यन्त निश्चय से निकला, अनेक बार। उसी समय मुझे बाबा विष्णु

s_book final 2.pmd 179 03-01-2005, 10:32 AM

ब्रह्माकुमारी सुन्दरी बहन जी

सन् 1960 में जब पहली बार मैं पाण्डव भवन में पहुँची तो पाँव रखते ही मुझे ऐसा लगा कि यह मेरा ही स्थान है। यह कोई नया स्थान नहीं है। जैसेकि मेरा यहाँ अनेक बार आना हुआ है। मुझे बाबा विष्णु के रूप में दिखायी पड़े।

के रूप में दिखायी पड़े। बाबा के सामने जाते ही मुझे एकदम अशरीरी स्थिति का, देहभान से न्यारेपन का अनुभव होता था। बाबा की पवित्र पालना से ही हम पक्के तथा ख़ुशबूदार फूल बनते गये। ऐसे लगता था कि यही मेरा सच्चा खेवनहार है जिसके साथ संगम का सफ़र, जीवन की नैय्या का सफ़र निरन्तर चलता रहेगा।

प्यारा भी उतना और न्यारा भी उतना

जब भी बाबा के सामने पार्टियाँ आती थीं और आत्मायें अपने बाप से मिलन मनाती थीं तो उस समय मीठा बाबा उनके ऊपर प्यार की वर्षा करते थे। अन्तरात्मा शीतलता के सागर में डूब जाती थी। फिर बाबा उतने ही न्यारे, निःसंकल्प हो जाते थे। न्यारा भी उतना और प्यारा भी उतना – यह सन्तुलन मैंने बाबा की स्थिति में सदैव देखा। जगत का प्यारा तथा जगत से न्यारा – यह धारणा उनमें पहले से ही थी। बहुरूपी का पार्ट था उनका। बच्चों के साथ बच्चा, युवा के साथ युवा, बूढ़े के साथ बूढ़ा अर्थात् वानप्रस्थी बन जाता था। जैसा समय, स्थान और व्यक्ति वैसा बाबा का रूप होता था। तभी तो सब आयु वाले उनसे सन्तुष्ट होते थे।

एक बार सभी यज्ञवत्स क्लास के बाद घूमने चल पड़े। आगे शिव-शक्ति सेना के प्रमुख कमाण्डर बाबा भी थे। कमाण्डर के पीछे हम सभी शान्ति में चल रहे थे। जब बाबा गेट तक पहुँचे तो अचानक बाबा ऐसे मुड़ गये कि आगे वाले पीछे हो गये और पीछे वाले आगे हो गये। बाबा ने खड़े होकर सभी यज्ञ-वत्सों को ऐसी दृष्टि दी जो ज्ञानसूर्य से सर्चलाइट पाकर आत्मायें भरपूर होती गयीं। हम सब अर्ध चन्द्रमा के आकार में खड़े थे। बाबा की दृष्टि सबको खींचती रही। बाबा का रूप ऐसा था जैसे एक पॉवर हाउस का।

साकार बाबा से वरदानों की झोली भरने पर मैंने सेवा में सफलता ही सफलता पायी है। योगी जीवन का स्वरूप प्रैक्टिकल में देखा। न पुरुषार्थ में कठिनाई, न सेवा में कोई विघ्न। अनेक बड़े-बड़े सेवास्थान बनते गये, साधन भी मिलते ही रहे परन्तु साधना को मैं कभी नहीं भूली। बाबा से सर्व सम्बन्ध रखकर, योगयुक्त रहकर सदैव अपने में रूहानियत धारण करती रहती हूँ। ❄

s_book final.2.pmd 180 03-01-2005, 10:03 AM

बाबा भव्य मूर्ति के साथ सौम्यमूर्ति भी थे

आबू– उर्मिला बहन गांधीधाम, पीछे हैं कुँज दादी, कमल सुन्दरी दादी। बच्चों को टोली खिलाते हुए बाबा।

जूनागढ़, गुजरात से ब्रह्माकुमारी दमयन्ती बहन जी लिखती हैं कि आज से 40 साल पहले मेरी साकार बाबा के साथ पहली बार मुलाक़ात हुई। उस समय का अनुभव बड़ा ही सुहावना, अलौकिक और अवर्णनीय है। बाबा के स्नेह में हृदय गद्‌गद हो उठा। बाबा की उस अलौकिक प्रतिभा में जैसेकि मैं खो गयी। दिल बार-बार कहता, मेरा बाबा...। नज़र उससे हटती ही नहीं थी। जब बाबा की नज़र पड़ी तो, 'नज़र से निहाल' हो गयी, सुषुप्त आत्मा जाग उठी। बाबा की नज़रों से अपार प्यार और दुलार का अनुभव हुआ। बाबा की उस एक नज़र से

बाबा भव्य मूर्ति के साथ सौम्यमूर्ति भी थे

आबू– उर्मिला बहन गांधीधाम, पीछे हैं कुँज दादी, कमल सुन्दरी दादी। बच्चों को टोली खिलाते हुए बाबा।

जूनागढ़, गुजरात से ब्रह्माकुमारी दमयन्ती बहन जी लिखती हैं कि आज से 40 साल पहले मेरी साकार बाबा के साथ पहली बार मुलाक़ात हुई। उस समय का अनुभव बड़ा ही सुहावना, अलौकिक और अवर्णनीय है। बाबा के स्नेह में हृदय गद्‌गद हो उठा। बाबा की उस अलौकिक प्रतिभा में जैसेकि मैं खो गयी। दिल बार-बार कहता, मेरा बाबा...। नज़र उससे हटती ही नहीं थी। जब बाबा की नज़र पड़ी तो, 'नज़र से निहाल' हो गयी, सुषुप्त आत्मा जाग उठी। बाबा की नज़रों से अपार प्यार और दुलार का अनुभव हुआ। बाबा की उस एक नज़र से

s_book final.2.pmd 181 03-01-2005, 10:32 AM

ब्रह्माकुमारी दमयन्ती बहन जी

40 साल पहले साकार बाबा से मेरी प्रथम मुलाक़ात हुई। उस समय का अनुभव बड़ा ही सुहावना, अलौकिक और अवर्णनीय है। बाबा के स्नेह में हृदय गद्‌गद हो उठा। बाबा की उस अलौकिक प्रतिभा में जैसेकि मैं खो गयी।

शरीर का भान भूल गयी और मैं आत्मा स्वयं को एक प्रकाश के समुद्र में हिलोरें लेती अनुभव करती रही। उनसे नैन मुलाक़ात करने से आत्मा में यह भाव झंकृत हो उठा कि 'तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया।'

बाबा की मधुर मुस्कान देखकर मुझ आत्मा के मिलन की चाह पूरी हो जाती। यदि सायंकाल का समय होता तो मेरी दिन भर की थकान उतर जाती थी। यदि प्रातः का समय होता तो कम-से-कम दिनभर के लिए एक नयी उमंग, नयी तरंग, नया उत्साह उभर आता था। सेवामूर्ति बाबा ने ऐसे कितनी आत्माओं को नया जीवन प्रदान किया ! कितनों को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करके माया से जीतने के योग्य बनाया !

बाबा चैतन्य शिवालय थे

बाबा एक चैतन्य शिवालय थे जिसमें स्वयं शिव बाबा चलते, फिरते, बोलते, देखते, सुनते थे। बाबा ने अपकारी पर भी उपकार किया। ऐसा अटूट, निर्मल, सर्वोच्च प्यार – न कभी सुनने को, न पढ़ने को, न देखने को, न पाने को और न कल्पना करने को मिला है और न मिलेगा। एक बार बाबा ने मुझे एक अन्य सेवास्थान पर जाने के लिए कहा। बाबा ने मेरे सिर पर हाथ रखा। तब से लेकर आज दिन तक बाबा की छत्रछाया सदा ही मेरे ऊपर है। मैं उस छत्रछाया के नीचे ही चल रही हूँ– ऐसा अनुभव करती हूँ।

बाबा के जीवन में मैंने रमणीकता और गंभीरता का बैलेन्स (balance) देखा। बच्चों के साथ खेलकूद करते हुए भी देखा। बाबा के जीवन में बहुत से गुण देखने, अनुभव करने में आते थे। बाबा सच्चे पिता के समान व्यवहार करते थे। बाबा एक भव्य मूर्ति के साथ सौम्यमूर्ति भी थे। वे कहते थे, बच्चे, यही आपका असली घर है। जो कुछ बाबा का है सो आप बच्चों के लिए है। तब तो दिल से आवाज़ निकलता है, 'वाह मेरा बाबा वाह'।

❄

s_book final.2.pmd 182 03-01-2005, 10:03 AM

बाबा पवित्रता, सुन्दरता एवं दिव्यता का प्रतिरूप थे

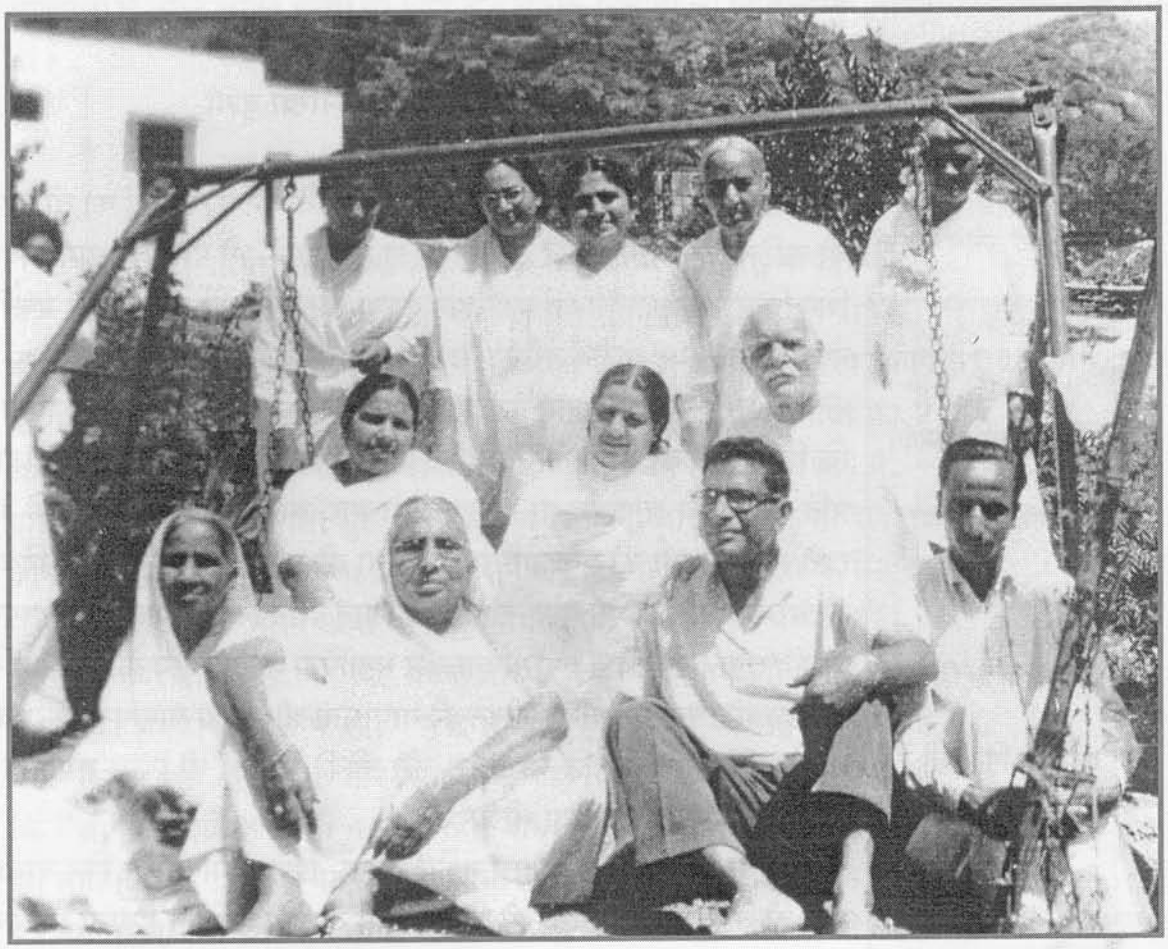

आबू– मम्मा-बाबा के पीछे खड़े हैं रजनी बहन, लन्दन, जानकी दादी और पूना की पार्टी।

नड़ियाद (गुजरात) से ब्रह्माकुमारी पूर्णिमा बहन जी कहती हैं कि बाबा के साथ बीते हुए बचपन के पल अनमोल और स्मरणीय हैं। वे कुछ दिन के हैं, दुर्लभ हैं और कुछ ही घटनायें हैं जो आज कई वर्षों के बाद भी मुझे याद आ रही हैं। बचपन की ईश्वरीय अलौकिक ख़ुशियाँ कुछ और ही थीं। साकार बाबा के साथ बीता बचपन याद करते ही मन नाच उठता है और दिल गाने लगता है।

s_book final.2.pmd 183 03-01-2005, 10:32 AM

ब्रह्माकुमारी पूर्णिमा बहन जी

सन् 1966 में हमारे घर पर दादी जानकी जी का आना हुआ। दादी जी गीता पाठशाला के लिए लौकिक पिता जी से मिलने आयी थी। उसी समय मुझे देखते ही दादी जी ने कहा कि "यह बच्ची आपकी नहीं, भगवान की है।"

बाबा के संग मधुबन में रहना जीवन की बसन्त ही समझो। इस बसन्त में खिला हुआ ख़ुशबूदार फूल-राजा कहो अथवा रूहे गुलाब कहो वह था – साकार बाबा।

अजीब तरीक़ा और अनोखा दृश्य

छह फुट से भी ज़्यादा ऊँचे कद वाले बाबा के मन की ऊँचाई को तो नापना भी कठिन था। आकाश की ऊँचाई को छू कर उसके भी पार परमधाम निवासी शिव पिता के पास पहुँच कर रूहरिहान करना और धरती पर पाँव रखकर बच्चों से बात करना – यह अजीब तरीक़ा था और अनोखा दृश्य था।

बाबा मधुबन में बच्चों के आकर्षण का बिन्दु था। यह भी महसूस होता था कि शिव बाबा को भी साकार बाबा के प्रति और साकार बाबा को शिव बाबा के प्रति अति दिव्य आकर्षण था। शिव बाबा बार-बार साकार ब्रह्मा-तन में आते रहते। शिव बाबा की प्रवेशता साकार बाबा की पवित्रता, सौन्दर्य और दिव्यता की चरम सीमा थी। ऐसे बाप-दादा का साक्षात् दर्शन विनाशी शब्दों और दृष्टान्तों द्वारा कराना असम्भव है। परमपिता और महापिता के सान्निध्य के सुख, शान्ति, समृद्धि, शीतलता एवं पवित्र जीवन की महसूसता और दिव्य आनन्द के अनुभव के आगे स्वर्गिक सुख-समृद्धि भी नीरस और फीकी भासती थी। उस समय के वो महान् पल देवताओं के लिए भी दुर्लभ थे।

बाबा के संग रहकर अनाज सफ़ाई करना, खाना बनाना और फिर बाबा के साथ ही ब्रह्मा भोजन करना भी तो देवताओं के लिए दुर्लभ है। बाबा साकार में होते हुए, बच्चों के साथ रहते हुए, बच्चों से मिलते हुए भी उपराम दिखायी देते थे। कमाल यह थी कि बाबा कभी बाप के रूप का, तो कभी जिगरी दोस्त के रूप का, तो कभी साजन के रूप का अनुभव कराते थे। बाबा द्वारा बच्चों का स्वागत करना, पालना करना, शिक्षा देना, खेल-पाल करना और विदाई देना – ये सभी पल अलौकिक और देखने लायक होते थे।

मैंने अनुभव किया कि मधुबन में पाँव रखते ही मुख्य द्वार पर खड़े बाबा द्वारा शीतल दृष्टि देना, मधुर शब्द बोलना, पिस्ता, बादाम, शक्कर की टोली का मुख में

s_book final.2.pmd 184 03-01-2005, 10:03 AM

डालना और बच्चे का बाबा की बाँहों में समा जाना – इन सबसे जन्म-जन्म की थकावट दूर हो जाती। बाबा की छत्रछाया में ज्ञान-ख़ुराक मिलती, ज्ञानामृत से आत्माओं में अखुट शक्ति भरती थी। वह क्षण सम्पूर्ण दिव्यता का एहसास कराता था।

यह बच्ची आपकी नहीं, भगवान की है

हमारा पूरा परिवार भक्तिमय था। परिवार में शिव जी की पूजा, गायत्री मंत्र और अम्बे माता की नित्य आरती होती थी। बचपन से ही मुझ में प्रभु की प्राप्ति की तीव्र इच्छा थी। प्रभु-प्राप्ति के लिए घर छोड़कर जंगल में जाने का संकल्प भी कभी-कभी तीव्र हो जाता था। इसी बीच अनायस ही घर में प्रभु-प्राप्ति का अनुभव हुआ। ईश्वरीय सन्देश देने के लिए ब्रह्माकुमारी बहनों ने सन् 1966 में, हमारे घर में गीता पाठशाला शुरू करने का संकल्प किया और अचानक ही दादी जानकी जी का घर आना हुआ। दादी (जानकी) जी गीता पाठशाला के लिए लौकिक पिता जी से मिलने आयी थी। उसी समय दादी जी के सामने मैं बैठी थी। देखते ही दादी जी ने कहा कि ''यह बच्ची आपकी नहीं, भगवान की है। आप इस बच्ची को भगवान को सौंप दो।'' कुछ समय के बाद पिता जी मधुबन गये। बाबा ने मुझे देखा भी नहीं था और पिता जी से कहा कि जनक बच्ची बता रही थी कि ''आपकी लौकिक बच्ची आपकी नहीं, बाबा के यज्ञ की है। यज्ञ की सेवा में इसे लगाना है।'' दादी जी का संकल्प, बाबा का कहना और तीसरी बात यह हुई कि जब मम्मा अव्यक्त रूप में आयी थी तो मम्मा ने भी पिता जी से मेरे जीवन को यज्ञ में न्योछावर करने के लिए कहा। यह भी जीवन का सौभाग्य है कि मैं ख़ुद ईश्वर माता-पिता और महारथियों की पसन्द हूँ।

6 फुट से भी ज़्यादा ऊँचे कद वाले बाबा के मन की ऊँचाई को तो नापना कठिन था। पार परमधाम निवासी शिव पिता से रूहरिहान करना और धरती पर बच्चों से बात करना – यह अजीब तरीक़ा था और अनोखा दृश्य था।

महापिता और परमपिता – दोनों के प्यार की वर्षा इकट्ठी बरसती थी

आख़िर प्रभु-मिलन का वह दिन आया जिसका मैं भक्ति में इन्तज़ार कर रही

s_book final.2.pmd 185 03-01-2005, 10:32 AM

थी। हम सात कन्याओं को दमयन्ती बहन सन् 1966 में मधुबन बापदादा के पास ले गयी। मधुबन के आँगन में जाते ही ख़ुद बाबा ने हमारा स्वागत किया। बाबा की प्यार भरी दृष्टि और प्रभावशाली व्यक्तित्व ने हमें उसी क्षण चुम्बक की तरह खींच लिया था। बाबा ने 'आओ मेरे मीठे बच्चे' कहकर पुकारा और कहा बच्चे, थके तो नहीं हो ना ? अच्छा, स्नान, चाय, नाश्ता करके तैयार होकर आना, बाबा आपसे फिर मिलेंगे। बाबा से पहली ही मुलाक़ात का अलौकिक और अद्भुत क्षण आज भी चित्त पर अङ्कित है। बाबा से उसी शाम को मिलना हुआ। बाबा ने हम सबका परिचय लिया। उस क्षण हम महसूस कर रहे थे कि जैसे बरसों से खोये हुए माँ-बाप को पा लिया। मैं महसूस कर रही थी कि मैं पहली बार नहीं, कई बार यहाँ आयी हूँ। बाबा बच्ची-बच्ची कह पुकारते, बातें करते तो ऐसे लगता था जैसे साकार बाबा के तन में शिव बाबा भी आकर बातें करते हैं। उसी क्षण यह एहसास भी मुझे होता था कि बाबा के बोल भी जैसेकि बदल रहे हैं। बाबा के तन में जब शिव बाबा प्रवेश कर बातें करते थे तो उसी समय बाबा का मस्तक तेजोमय सूर्य जैसा दिखायी देता था और दृष्टि से शक्ति तथा स्नेह की किरणें हमारे में भर रही हों – ऐसा अनुभव होता था।

बाबा के संग रहकर अनाज सफ़ाई करना, खाना बनाना और बाबा के साथ ही ब्रह्मा भोजन करना तो देवताओं के लिए दुर्लभ है। बाबा साकार में होते हुए, बच्चों के साथ रहते हुए, मिलते हुए भी उपराम रहते थे।

दूसरे दिन सुबह के क्लास में, बाबा के आने के बाद हम पहुँचे। हिस्ट्री हॉल में हम सात कन्यायें पीछे बैठी थीं। नज़र हमारे पर पड़ी और बाबा ने कहा, पीछे से आगे आ जाओ। फिर कहा, देखो, आज सात कन्यायें आयी हैं। एक कन्या 100 ब्राह्मणों के बराबर। आज तो मधुबन के क्लास में 700 ब्राह्मण बैठे हुए हैं। इस तरह बाबा हम कन्याओं की बहुत महिमा करते रहे और कहा कि ये सात शीतलायें हैं।

बच्ची, तुम पूर्ण-माँ हो

क्लास के बाद हम बाबा से कन्याओं का व्यक्तिगत मिलना हुआ तो बाबा ने मुझे कहा, बच्ची, पढ़ाई पढ़कर क्या करेगी। पढ़ाई छोड़कर बाबा की सेवा में लग जाना है। बाक़ी कन्याओं को लौकिक पढ़ाई करने को कहा। स्वाभाविक था कि कन्याओं को प्रश्न उठा कि बाबा ने हमें ऐसा क्यों कहा ! एक पढ़ाई छोड़े और

s_book final.2.pmd 186 03-01-2005, 10:28 AM

बाक़ी नहीं। बाबा ने कहा कि बाबा तो हर एक बच्चे की जन्मपत्री जानता है। पूर्णिमा बच्ची का पढ़ाई छोड़ने में और बाक़ी तुम सभी का पढ़ाई में लगे रहने में ही कल्याण है। फिर बाबा ने मुझे कहा, बच्ची, तुमको यहाँ से जाकर सीधा सेन्टर पर ही ठहरना है। जाने से पहले बाबा से छुट्टी लेकर जाना। बाक़ी कन्याओं की दिल थी, कुछ दिन मधुबन में ठहरने की, तो बाबा ने उन्हें ठहरने के लिए छुट्टी दी और मुझे कहा, बच्ची, तुमको रुकना नहीं है। बादल सागर के पास भरने आते हैं तो तुमको अभी जाकर ज्ञान बरसात करनी है। फिर ख़ाली हो तो बादल बन के सागर के पास भरपूर होने आ जाना। बाबा के पास जब मैं अहमदाबाद जाने के लिए छुट्टी लेने गयी तब बाबा अपने कमरे में कुर्सी पर बैठे थे। मैंने बाबा को कहा, बाबा, मैं दमयन्ती बहन के साथ जा रही हूँ, आपसे छुट्टी लेने आयी हूँ। बाबा ने मेरा हाथ पकड़ा, फिर सिर पर हाथ घुमाकर प्यार भरी दृष्टि देते हुए कहा, बच्ची, नाम क्या है ? मैंने कहा, पूर्णिमा। बाबा ने कहा, बच्ची, तुम 'पूर्ण-माँ' हो। तुम छोटी कन्या नहीं हो, तुम तो जगत् माता हो। तुम्हें सभी की माँ बनकर सभी का कल्याण करना है इसलिए अब तुम्हें बाबा की सेवा में ही लगे रहना है। मैंने कहा, जी बाबा। फिर बाबा ने पूछा, बच्ची, दाल-रोटी बनाना आता है ? मैंने कहा, नहीं बाबा। बाबा ने कहा, अच्छा बच्ची, दाल-रोटी बनाना सीखकर जाना।

मधुबन के आँगन में जाते ही ख़ुद बाबा ने हमारा स्वागत किया। बाबा की प्यार भरी दृष्टि और प्रभावशाली व्यक्तित्व ने हमें उसी क्षण चुम्बक की तरह खींच लिया था। बाबा ने 'आओ मेरे मीठे बच्चे' कहकर पुकारा।

विचित्र बड़ी माँ की विचित्र ममता

फिर बाबा ने पूछा, बच्ची, और कुछ चाहिए क्या ? पहनने के लिए दो जोड़ी कपड़े और खाने के लिए दाल-रोटी चाहिए। बाबा के घर में तो ये मिल जायेंगे। और क्या चाहिए ? मैंने कहा, बाबा, जिनको पाने के लिए भक्ति की, उसकी ही गोद में बैठी हूँ तो उससे ज़्यादा मेरा कौन-सा सौभाग्य हो सकता है ! मैं कितनी भाग्यशाली हूँ जो माँ-बाप के रूप में स्वयं भगवान को पाया है। उस समय मैं अनुभव कर रही थी कि मुझे बरसों से खोयी हुई अमूल्य वस्तु मिल गयी है। फिर बाबा ने लच्छु बहन को बुलाकर कहा, आज बाबा इस बच्ची को अपने ही हाथों से रोटी-मक्खन खिलायेंगे। तुम गरम-गरम फुलका बनाकर दो। उस समय लच्छु बहन ने गरम-गरम फुलके बनाकर उन पर शहद और मक्खन लगाकर बाबा के

s_book final.2.pmd 187 03-01-2005, 10:32 AM

हाथों में दिये। बाबा ने अपने ही हाथों से मुझे रोटी खिलायी। बाबा जब खिला रहे थे तो बाबा का रूप वात्सल्यमयी माँ का था। ऐसा प्यार लौकिक माँ-बाप से भी नहीं पाया। इतनी अलौकिक और निःस्वार्थ पालना बाबा से मिली।

वरदान के रूप में बाबा ने कहा, बच्ची, जहाँ भी पाँव रखेगी वहाँ सफलता तुम्हारे चरणों में ही होगी। बाबा ने वरदान के बाद बादाम, मिश्री, ईलायची देते 'गो सून, कम सून' (Go soon, Come soon) कहते ऐसे गले लगाया जैसेकि माँ-बाप बच्ची को ससुराल के लिए विदाई देते हैं। आँखों में आँसू बहते थे। दिल नहीं चाहता था कि बाबा को छोड़कर जायें लेकिन बाबा सेवा पर भेज रहे थे तो फिर मैं अहमदाबाद सेवास्थान पर पहुँची, जहाँ जानकी दादी, दमयन्ती बहन और वनीता बहन भी थीं। बाबा से मिलने के बाद अलौकिक मस्ती में दिन बिता रही थी। बाबा से मिला प्यार और दुलार याद करते हुए, मैं बाबा के यज्ञ से जो भी सेवा मिलती थी उसे दिल लगाकर करती रहती थी। सेवाकेन्द्र पर रहने के लिए जब मैंने लौकिक परिवार और घर छोड़ा तब मेरी आयु केवल 16 वर्ष की थी।

बाबा से पहली ही मुलाक़ात का अलौकिक और अद्भुत क्षण आज भी चित्त पर अङ्कित है। बाबा ने हम सबका परिचय लिया। उस क्षण हम महसूस कर रहे थे कि जैसे बरसों से खोये हुए माँ-बाप को पा लिया।

बाबा, बाप-टीचर-धर्मराज के रूप में

मैं जब मधुबन दोबारा बाबा से मिलने सरला दीदी के साथ आयी तो उसी समय अपने जीवन में एक नया अनुभव पाया। पहली मुलाक़ात में बाबा से माँ-बाप के रूप में प्यार मिला था। जब दूसरी मुलाक़ात हुई तो बाबा बाप के साथ-साथ टीचर, सतगुरु और धर्मराज भी है – यह भी अनुभव हुआ। सुबह की क्लास में बाबा की मुरली धर्मराज की शिक्षाओं से भरी थी। बाबा ने कहा कि यह इन्द्र की सभा है जहाँ परियाँ अर्थात् पवित्र आत्मायें ही बाबा के सामने बैठ सकती हैं। कोई भी अपवित्र आत्मा का इस सभा में स्थान नहीं है। अगर कोई आत्मा आती है तो उसको सज़ा मिल जाती है। इस बात पर मुझे उस समय की एक घटना याद आती है। क्लास के बाद हम नाश्ता कर अपने कमरे में गये तो मेरा छोटा भाई, भाइयों के कमरे की ओर से दौड़कर आ रहा था। उसने दीदी से कहा कि अपने साथ आया हुआ एक भाई खटिया पर लेटा हुआ है और हाथ-पाँव पटक-पटक कर चिल्ला रहा है और कह रहा है कि बाबा मुझे माफ़ करो, मेरे से सहन नहीं हो रहा है। हम अपने

s_book final.2.pmd 188 03-01-2005, 10:29 AM

कमरे से बाहर आते ही विश्वकिशोर भाऊ से मिले, उनको लेकर उस भाई के कमरे में गये। सज़ा भोग रहे भाई ने बोला, बाबा को बुलाओ। जब हम सभी बाबा के पास गये तो बाबा कुछ भाई-बहनों के साथ बैठे थे। बाबा को जब समाचार सुनाया और आने के लिए कहा तो बाबा ने बताया कि बच्चा अपनी ग़लती की सज़ा भोग रहा है। फिर हम सभी ने कहा कि बाबा, उसकी टीचर को तो उसके पास भेज दो। बाबा ने इसके लिए भी मना कर दिया। फिर कहा कि बच्चे, उस पर पानी छिड़क दो और एक गिलास पानी पिला दो। भाऊ ने बाबा के दिये हुए पानी को उस भाई पर छिड़का और पिलाया। वह शान्त हो गया। दूसरे दिन सबके साथ मिलते हुए बाबा ने उस भाई को कहा कि बच्चे, धर्मराज को किये हुए सारे पाप लिखकर दो तो बाप आधा माफ़ कर सकता है। शुरू-शुरू में मधुबन में धर्मराज की कचहरी होती थी। बाबा रात को कचहरी में, जिसने भूलें की हों, उसे सभा में सुनाने का आदेश देते थे और सभा में ही सबके सामने माफ़ी मँगवाते थे। उस समय बाबा का धर्मराज का रूप भी मैंने देखा था।

बाबा ने कहा, देखो, आज सात कन्यायें आयी हैं। एक कन्या 100 ब्राह्मणों के बराबर है। आज तो मधुबन के क्लास में 700 ब्राह्मण बैठे हुए हैं। इस तरह बाबा हम कन्याओं की बहुत महिमा करते रहे और कहा, ये सात शीतलायें हैं।

बच्चों के साथ बच्चा बनकर लीला दिखाने वाला लीलाधर बाबा

बाबा बच्चों के साथ खेल-पाल भी करते थे। बच्चों के साथ बच्चा, युवा के साथ युवा और बूढ़ों के साथ बूढ़ा बनकर रहना – यह बाबा की अनोखी विशेषता थी। एक बार हम सब बच्चे बाबा के कमरे में गुड नाइट करने गये तो बाबा ने सब बच्चों को अपने पास बुलाया। हम सब छोटे-बड़े बाबा के पास बैठे। बाबा ने मेरे छोटे भाई को एक छोटा-सा डिब्बा दिया। बाबा ने कहा, बच्चे, इसमें ढेर सारी चाकलेट हैं, सभी को बाँटना। जैसे ही डिब्बा खोला तो उसके अन्दर से एक साँप उछलकर निकला। घबराहट में सभी बड़े बाहर निकल गये। जो छोटे थे उनमें से कइयों ने उस साँप का मुँह पकड़ा, कई उसकी पूँछ पकड़कर बाबा की गोद में बैठ हँसते-हँसते खेल रहे थे। बड़ों को आश्चर्य हुआ कि कमरे में बाबा और बच्चे खेल रहे हैं। बाबा ने कहा, बड़े बच्चे डर गये। देखो, छोटे बच्चे कितने निडर हैं क्योंकि निर्दोष हैं। वह साँप असली नहीं बल्कि नकली था। यह खेल देख सब बहुत हँस रहे थे। बाबा ने कहा, ख़ुशी जैसी ख़ुराक नहीं। बाबा ने यह भी बताया कि भविष्य में

s_book final.2.pmd 189 03-01-2005, 10:32 AM

भयानक विनाश के दृश्य देखने में आयेंगे इसलिए अपनी अवस्था ऐसी पक्की बनाओ कि भयभीत न हों।

बाबा रस्सी खींच तथा बेडमिंटन जैसे खेल भी खेलते थे। बाबा जीतकर कहते थे, देखो बच्चे, शिव बाबा मेरे साथ है तो मैं जीत गया। कभी बाबा कहते, बच्चे किसके साथ खेल रहे हो ? बच्चे कहते, बाबा, आपके साथ। तो बाबा कहते, बच्चे फ़ेल हो गये। आपको तो शिव बाबा दिखायी देना चाहिए। इस प्रकार, बाबा का प्यार भरा रमणीक रूप भी देखने को मिलता था।

बाबा, जिनको पाने के लिए भक्ति की, उसकी ही गोद में बैठी हूँ तो उससे ज़्यादा मेरा कौन-सा सौभाग्य हो सकता है ! मैं कितनी भाग्यशाली हूँ जो माँ-बाप के रूप में स्वयं भगवान को पाया है।

इंजिन और डिब्बे का खेल

बाबा की विदाई देने की विधि भी अलग ही थी। बाबा बादाम, मिश्री देकर लाइन में खड़े रखते थे। बाबा ख़ुद आगे रहते फिर एक के बाद एक बच्चे और लास्ट में ब्राह्मणी (टीचर), इस तरह एक ट्रेन बना देते। बाबा कहते, बच्चे, डबल इंजिन (शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा) आगे हैं, आप सभी डिब्बे हो, मेरे पीछे आते रहना। बाबा मधुबन के पीछे के गेट तक आते थे फिर बाबा ख़ुद निकल अलग होकर खड़े-खड़े रूमाल हिलाते और बच्चे बाबा को देख-देखकर आगे चलते रहते थे, जब तक कि बाबा दिखायी पड़ता और बाबा भी जब तक बच्चे दिखायी पड़ते वहाँ ही खड़े रहते। उस समय मन कहता था – इतना प्यार करेगा कौन !

बाबा ने मुझे अपने हाथों से गरम रोटी खिलायी थी। अजीब बात है कि आज भी मुझे मधुबन सेवा में या अन्य स्थान पर रोटी डिपार्टमेण्ट ही मिलता है। यह भी मेरा सौभाग्य है। शुरू-शुरू में मैं जिस भी सेवास्थान पर गयी वहाँ दाल-रोटी और दो जोड़ी कपड़ों से ही जीवन चलाया। यह भी बेगरी पार्ट का अनुभव बाबा के संग किया। कभी भी किसी तरह का संकल्प नहीं चला। बाबा के साथ का अनुभव करती रही। आज भी बाबा का हाथ सिर पर है और बाबा की छत्रछाया में पल रही हूँ – यह अनुभव मुझे सदा होता है।

s_book final.2.pmd 190 03-01-2005, 10:30 AM

बाबा ने मुझे अन्तिम यात्रा का पूरा दृश्य दिखाया

सरला दीदी ने मुझे सेवा के लिए दिसंबर 1968 में आणंद भेजा था। वहाँ से पहली जनवरी, 1969 को बड़ौदा भेजा जहाँ बहुत बड़ी प्रदर्शनी लगी थी। बाबा ने कुमारका दादी (दादी प्रकाशमणि जी) को भेजा था। दमयन्ती बहन ने दादी के साथ बाबा को पत्र भेजा कि यहाँ गुजराती बहन की ज़रूरत है। बाबा ने पत्र का उत्तर दिया, "बच्ची, पूर्णिमा बच्ची तुम्हारे साथ रहेगी, जो सयानी और समझू भी है। सेवा में भी बहुत अच्छी मदद करेगी। बड़ौदा में तुम्हारे पास ही रहेगी।" बाबा के आदेश-पत्र के बाद मैं बड़ौदा ही रही। पत्र के बाद चार-पाँच दिन में ही बाबा ने शरीर त्यागा। अठारह जनवरी, 1969 में बाबा के शरीर छोड़ने का समाचार मिलते ही मुझे सेन्टर पर छोड़ सब बाबा की अन्तिम यात्रा के लिए मधुबन आ गये।

मुझे संकल्प चला कि यह कैसा भाग्य है जो मैं अन्तिम समय बाप से मिल भी नहीं सकी ! हमने तीन दिन अखण्ड योग रखा। आश्चर्य की बात है कि बाबा ने मुझे अन्तिम यात्रा का पूरा दृश्य दिखाया और अनुभव कराया कि बाबा का इतना सुन्दर रथ भी पाँच तत्वों में मिल गया तो हमारा शरीर तो कुछ भी नहीं है। यह शिक्षा और प्रेरणा मिली कि शरीर से मोह निकाल बाबा की तरह ही अव्यक्त कर्मातीत फ़रिश्ता बनने का हमें पुरुषार्थ करना है। मुझे लक्ष्य रहता है कि बाबा ने हमें जितनी प्यार से पालना दी है उसके रिटर्न में हमें भी यज्ञ में हड्डी-हड्डी सेवा करनी है और निर्विघ्न बन सबको सन्तुष्ट करना है। ❄

शिव भगवानुवाच :

मीठे बच्चे, तुम मनुष्य से देवता बनने की पढ़ाई पढ़ रहे हो। तुम्हें दैवीगुण धारण करने हैं। तुम्हारा खान-पान, बोल-चाल बहुत रॉयल होना चाहिए।

देवतायें कितना थोड़ा खाते हैं, उनमें कोई लालच नहीं रहती। खान-पान की लालच रखना – इसको दैवी चलन नहीं कहा जाता। तुम्हारा खान-पान बड़ा शुद्ध और साधारण होना चाहिए।

बाबा बच्चों के साथ खेल-पाल भी करते थे। बच्चों के साथ बच्चा, युवा के साथ युवा और बूढ़ों के साथ बूढ़ा बनकर रहना – यह बाबा की अनोखी विशेषता थी। बाबा रस्सी खींच तथा बेडमिंटन जैसे खेल भी खेलते थे।

s_book final.2.pmd 191 03-01-2005, 10:32 AM

बाबा ने मेरी आयु बढ़ाकर जीवनदान दिया

आबू बृजकोठी (1953)– नीचे बैठे हैं रुक्मणी दादी, गोपी भोली दादी, कुँज दादी, कमलमणि दादी, मथुरी। बीच की लाइन में देवा दादी (शान्तामणि दादी की बड़ी बहन), किशनी दादी, कमल सुन्दरी दादी, बाबा, आनन्द किशोर दादा, बृजेन्द्रा दादी। पीछे की लाइन में प्रकाश इन्दिरा बहन, जशोदी दादी।

गाँधी नगर, गुजरात से ब्रह्माकुमारी कैलाश बहन जी अपने अनुभव इस प्रकार सुनाती हैं कि मेरी जन्मपत्री में लिखा था कि यह बच्ची छोटेपन में संन्यासी बन जायेगी और जहाँ भी जायेगी वहाँ सभी सुख उपलब्ध होंगे लेकिन 25 वर्ष की आयु में ही मर जायेगी। घर वालों को इस बात का दुःख होता था और इसलिए स्कूल में भी नहीं जाने दिया। मेरा स्वभाव शान्त और एकान्त प्रिय था। मेरे पिता जी के कई गुरु थे। मैं लास्ट गुरु के पास जाया करती थी। गुरु जी और अन्य साधु-सन्त भी यही कहते थे कि यह लड़की 25 साल से ज़्यादा नहीं जीयेगी। जब मैं पहली बार सन् 1962 में बाबा के पास आयी तो बाबा ने भी यही कहा, बच्ची,

s_book final.2.pmd 192 03-01-2005, 10:03 AM

ब्रह्माकुमारी कैलाश बहन जी

तुम्हारी उम्र बहुत छोटी है। सभी यही कहते थे कि 25 साल के बाद एक दिन भी जिन्दा नहीं रह सकती। बाबा ने भी ऐसा ही कहा था। लेकिन बाबा के कहने में और दूसरे लोगों के कहने में काफ़ी अन्तर था। क्योंकि बाबा ने साथ में यह भी कहा कि हो सकता है योगबल से आयु बढ़ जाये। मैंने कभी उम्र बढ़ाने के लिए योग नहीं किया। लेकिन बाबा ने जो वरदान दिया था उसके कारण आज तक बाबा की सेवा में तत्पर हूँ। उन 25 सालों में मृत्यु के कई कारण बनते रहे लेकिन बाबा की मदद से सदा बचती रही। जब 25 साल पूरे होने को थे उसी दिन मैं ट्रेन से गिर गयी और ट्रेन में फँस गयी। लेकिन किसी ने दौड़कर मुझे बाहर निकाला और मैं बच गयी।

मेरी जन्मपत्री में लिखा था कि यह बच्ची छोटेपन में संन्यासी बन जायेगी और जहाँ भी जायेगी वहाँ सभी सुख उपलब्ध होंगे लेकिन 25 वर्ष की आयु में ही मर जायेगी। इसलिए मुझे स्कूल में भी नहीं जाने दिया।

मन डोले, गोदी में साँप डोले

इस विषय में एक और घटना मुझे याद आ रही है। तब मैं होशियारपुर सेन्टर पर कृष्णा बहन (अम्बाला वाली) के साथ रहती थी। योग के समय कृष्णा बहन रिकार्ड नम्बरवार रख जाती थी और मैं नम्बरवार बजाती रहती थी क्योंकि मुझे पढ़ना नहीं आता था। एक दिन सभी योग में बैठे थे, मैंने रिकार्ड लगाया 'मेरा मन डोले, मेरा तन डोले...।' उसी समय क्लास हॉल में मेरे सिर पर साँप गिरा और फिर गोद में बैठ गया। सन्दली पर बैठी बहन योग करा रही थी, वह घबरा गयी। मैंने इशारे से कहा, आप बैठे रहो। क्लास में किसी को पता नहीं चला और मैं एक ही रिकार्ड बजाती रही। साँप मेरे को देखता था, मैं उसको देखती थी। एक ही रिकार्ड लगाती रही तो कृष्णा बहन सोचने लगी कि एक ही रिकार्ड क्यों बजा रही है। कुछ समय के बाद जैसे ही रिकार्ड बन्द किया तो साँप मेरे ऊपर चढ़ने लगा। मैंने उसे झटके से नीचे गिरा दिया और साथ ही वही रिकार्ड लगाकर कृष्णा बहन को बुलाने गयी। कृष्णा बहन ने बोला, अरे कैलाश, तुम आधे घण्टे से एक ही रिकार्ड क्यों लगा रही हो ? मैंने कहा, क्लास में साँप गिरा है। मैं उन्हें क्लास हॉल में ले गयी और दरवाज़े से दिखाया, देखा तो वह बहुत मस्ती में नाच रहा था। कृष्णा बहन ने कहा, कमाल है, कब से पड़ा है ! मैंने बताया, जब शुरू में गीत लगाया, मेरा मन डोले... तब से मेरी गोद में पड़ा था। कृष्णा बहन ने कहा, मेरा मन डोले, तेरी गोदी में साँप डोले। फिर सबको बाहर बुलाया गया। इस प्रकार

s_book final 2.pmd 193 03-01-2005, 10:32 AM

उस समय भी बाबा ने ही मुझे साँप से बचा लिया।

मैंने ध्यान के लिए कोई पुरुषार्थ नहीं किया था। लेकिन जब योग में बैठती थी तो मुझे ऐसा अनुभव होता था कि कोई गले में रस्सा डालकर खींच रहा है। इस कारण मुझे बहुत डर लगता था और इसलिए मैं योग में बैठना पसन्द नहीं करती थी, सेवा करना पसन्द करती थी। एक दिन होशियारपुर सेन्टर पर एक बाँधेली माता, जो बाबा से मिलकर आयी थी, मधुबन का अनुभव सुना रही थी। उसका अनुभव सुनकर मुझे भी साकार बाबा से मिलने की तीव्र इच्छा हो गयी। लेकिन कुछ परिस्थितियों के कारण मधुबन आ नहीं पाती थी। अनुभव सुनते-सुनते मैं बाबा की याद में खो गयी और नैनों से अश्रु बहने लगे। फिर कृष्णा दीदी ने योग में बैठ दृष्टि दी तो मैं गुम हो गयी और तीन दिन के बाद मेरी चेतना वापस लौटी। सभी बहनें देख रही थीं कि मैं बहुत ख़ुश हूँ। क्योंकि बाबा ने मुझे सुन्दर-सुन्दर फल-फूल आदि दिखाये थे। मैंने ऐसे फल इकट्ठे किये थे जो कभी नहीं देखे थे। बाबा ने कहा, बच्ची, ये फल किस लिए इकट्ठे किये हैं ? मैंने कहा, बाबा ये फल नीचे सबको खिलाऊँगी। तो बाबा ने कहा, सबको खिलायेगी ? पक्का ? मैंने कहा, जी बाबा। बाबा मुस्कराने लगे।

बाबा ने कहा, बच्ची, तुम्हारा इतना अच्छा ध्यान में जाने का पार्ट है तो तुम पंजाब क्यों जाती हो ? बाबा जहाँ भेजे वहाँ जायेगी ? मैंने कहा, जी बाबा, आप जहाँ भेजेंगे वहाँ जाऊँगी लेकिन घर के नज़दीक नहीं भेजना।

बाबा ने ही मुझे पढ़ना सिखाया

सन् 1962 में बाबा से मिल रही थी, वहाँ दीदी भी बैठी थी। दीदी ने कहा, बाबा यह बच्ची हिमाचल की है, भोली है, अच्छी है और ध्यान में जाती है। एक दिन बाबा ने कहा, बच्ची, तुम्हारा इतना अच्छा ध्यान में जाने का पार्ट है तो तुम पंजाब क्यों जाती हो ? बाबा जहाँ भेजे वहाँ जायेगी ? मैंने कहा, जी बाबा, आप जहाँ भेजेंगे वहाँ जाऊँगी लेकिन घर के नज़दीक नहीं भेजना। वहाँ से दूर रखेंगे तो मैं अच्छी सेवा कर सकूँगी। बाबा ने कहा, अच्छा बच्ची, तुमको बाबा जयपुर भेज रहे हैं, तो वहाँ जाना और बाबा को रोज़ भोग लगाना क्योंकि तुमको ट्रान्स में जाने की लिफ्ट मिली हुई है। इस गिफ्ट से सेवा करना। इस प्रकार बाबा ने कपड़े आदि डलवाकर पेटी तैयार करावायी और जयपुर सेवा पर भेजा।

आठ मास के बाद बाबा ने मुझे मधुबन बुलाया और पूछा, बच्ची, जयपुर

s_book final.2.pmd 194 03-01-2005, 10:03 AM

अच्छा लगता है ? ख़ुश हो ? मैंने कहा, जी बाबा। फिर बाबा ने पूछा, बच्ची, तुम रोज़ मुरली पढ़ती हो ? मैंने कहा, बाबा मैं पढ़ी नहीं हूँ इसलिए मुरली नहीं पढ़ती हूँ, सुनती हूँ। तुम्हें पढ़ना तो बहुत था क्यों नहीं पढ़ाई की ? मैंने कहा, ड्रामा में नूँध नहीं होगी। बाबा बहुत हँसे और बोले, बच्ची, बाबा का दिया ज्ञान बाबा को ही सुना रही हो ? फिर बाबा ने कहा, बच्ची, चिन्ता नहीं करो तुम्हें बाबा पढ़ायेंगे। आज शाम को चार बजे ऑफ़िस में आना, बाबा तुम्हें सिन्धी पढ़ना सिखायेंगे। मैं चार बजे ऑफ़िस में गयी और बाबा ने सिन्धी लिखना शुरू भी किया। इतने में जयपुर से फोन आया कि कैलाश को जल्दी भेज दें, यहाँ बहुत सेवा है। बाबा ने कहा, बच्ची, तुमको जयपुर वाले बुला रहे हैं। मुझे लगा कि मेरी पढ़ाई सचमुच ड्रामा में नहीं है। मुझे बहुत दुःख हुआ और रोना भी आया। बाबा बोले, बच्ची, चुप रहो, सब दुःखों को हरने वाले और सुख देने वाले बाप के सामने रोते हो ? फिर बाबा ने बहुत प्यार करके शान्त किया और बोले, बच्ची, जयपुर में तुम सारा दिन बिजी रहती हो लेकिन रात को सभी सो जायें तब तुम एकान्त में कॉपी-पेन लेकर बाबा की याद में बैठना तो बाबा तुमको पढ़ायेंगे। मैं मूँझ गयी क्योंकि ब्रह्मा बाबा यहाँ, शिव बाबा ऊपर और मैं जयपुर में। तो बाबा मुझे कैसे पढ़ायेंगे ? बाबा ने पूछा, क्यों, मूँझ रही हो क्या ? बाबा में निश्चय नहीं है ? बच्ची, बाबा के बोल पर निश्चय रखो।

बाबा ने कहा, बच्ची, चिन्ता नहीं करो तुम्हें बाबा पढ़ायेंगे। आज शाम को चार बजे ऑफ़िस में आना, बाबा तुम्हें सिन्धी पढ़ना सिखायेंगे। मैं चार बजे ऑफ़िस में गयी और बाबा ने सिन्धी लिखना शुरू किया।

मैं जयपुर गयी। सारा दिन तो बहुत सेवा होती थी। रात हो गयी, सब सोये हुए थे। मैं उठी और आफ़िस में जाकर बाबा को याद करने लगी। थोड़े समय में ही मैं वतन में गयी। वहाँ देखा बाबा सामने से आ रहे थे और बहुत मुस्करा रहे थे। मैंने कहा, बाबा, मैं तो चिन्ता कर रही हूँ और आप मुस्करा रहे हैं ! बाबा ने कहा, बच्ची रोज़ तुमको पढ़ाने के लिए बाबा मधुबन से आयेगा। फिर बाबा ने मुझे पढ़ाना शुरू किया। बाबा का पढ़ाना अलग था जैसे यहाँ क, ख, ग, ऐसे नहीं पढ़ाया। लेकिन बाबा मेरे हाथ से ही जोड़ी अक्षर लिखवाता था। मधुबन में जब ब्रह्मा बाबा ने लिखना शुरू किया था तो वह सिन्धी भाषा लिखी थी, जब ऊपर वतन में पढ़ाया तो हिन्दी में ही पढ़ाया। मैं रोज़ वतन में जाती थी और बाबा से पढ़ती थी। पन्द्रह दिन में मैंने हिन्दी पढ़ना सीख लिया। बाबा ने कहा, बच्ची, जितनी लगन से मेहनत करेगी उतना आगे जा सकती है। फिर मैं एकान्त में आधा

s_book final.2.pmd 195 03-01-2005, 10:32 AM

घण्टा धीरे-धीरे मुरली पढ़ती थी।

ऑपरेशन के समय बाबा आकारी रूप में मेरे पास ही खड़े थे

एक बार की बात है कि मेरी आँखों में बहुत तकलीफ़ थी। सभी ने कहा कि ऑपरेशन कराना पड़ेगा। लेकिन डॉक्टर ने कहा कि ऑपरेशन के बाद देख सकेगी कि नहीं – यह नहीं कह सकते हैं। फिर बाबा से पूछा तो बाबा ने सन्देश में कहा कि बाबा ज्योति देने वाला है, लेने वाला नहीं। इसलिए बच्ची को निश्चिन्त होकर हॉस्पिटल ले जाओ। हॉस्पिटल में ले गये। दो डॉक्टर ऑपरेशन करने वाले थे, साथ में एक ब्रह्माकुमार डॉक्टर चॉकसी भाई भी ऑपरेशन थियेटर में खड़े थे। जब ऑपरेशन शुरू हुआ तो जो डॉक्टर ऑपरेशन कर रहा था उसे ब्रह्मा बाबा दिखायी दिया और वह देख रहा था कि बाबा की आँखों से सर्चलाइट की किरणें निकल कर मेरी आँखों पर पड़ रही हैं और बाबा ने मेरे सिर पर हाथ रखा हुआ है। यह सब देखकर डॉक्टर को बड़ा आश्चर्य लगा और बोला कि वो कौन थे, उनको कौन अन्दर ले आया ? इतने में डॉक्टर चॉकसी भाई ने भी बाबा को देखा। वे बाबा के पास गये तो बाबा वहाँ से गुम हो गये। फिर डॉ. चॉकसी जी ने बोला, डॉक्टर, आप निश्चिन्त होकर ऑपरेशन कीजिये, बाबा शक्ति देकर गये हैं, इसकी आँखों को कुछ नहीं होगा। ऑपरेशन सफल हुआ, आँखें ठीक हो गयीं। डॉक्टर को भी बहुत आश्चर्य हुआ। बाद में डॉक्टर ने कोर्स भी किया और क्लास में भी आने लगे।

इस प्रकार सर्वशक्तिवान बाबा ने कम उम्र वाली को जीवनदान दिया, अनपढ़ को पढ़ा-लिखा बनाया, भोली को तीनों लोकों में चक्कर लगाने वाली सन्देशी बनाया, आँखों की रोशनी दी। क्या महिमा करें, कितनी महिमा करें उस महिमापूर्ण बाबा की, सब कम ही रहेंगी।

❄

बाबा ने अनपढ़ को पढ़ा-लिखा बनाया, भोली को तीनों लोकों में चक्कर लगाने वाली सन्देशी बनाया, आँखों की रोशनी दी। क्या महिमा करें, कितनी महिमा करें उस महिमापूर्ण बाबा की, सब कम ही रहेंगी।

s_book final.2.pmd 196 03-01-2005, 10:03 AM

साकार में विश्व की सर्वोच्च आत्मा – पिताश्री ब्रह्मा

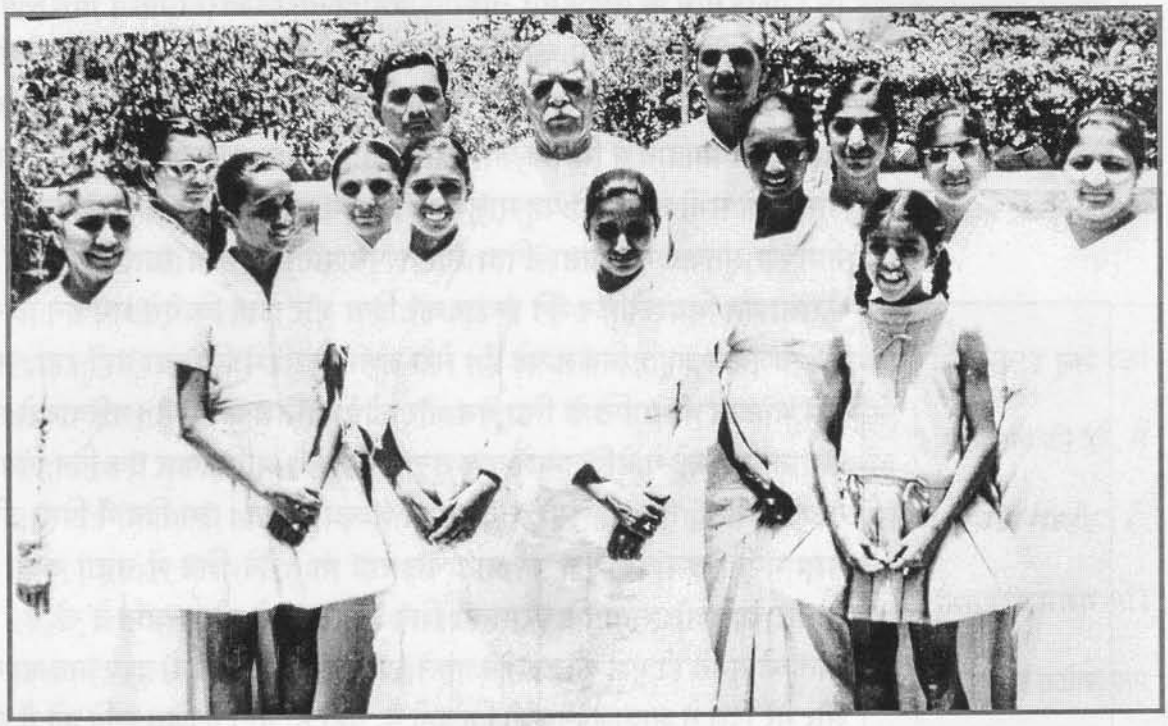

बाबा के साथ दीदी मनमोहिनी, अहमदाबाद की चन्द्रिका बहन, वेदान्ती बहन, सरला दीदी और अन्य कुमारियाँ।

महादेव नगर, अहमदाबाद से ब्रह्माकुमारी चन्द्रिका बहन जी कहती हैं कि सन् 1965 की बात है कि एक दिन ब्रह्ममुहूर्त में क़रीब 3.30 बजे मैं कुर्सी पर बैठी थी। ईश्वर-चिन्तन में ही मगन थी। तभी मैंने सफ़ेद प्रकाश की काया वाले व्यक्ति में लाल प्रकाश को प्रवेश करते देखा। कुछ ही सेकेण्ड के बाद वह आकर्षक स्वरूप मेरे निकट आया। मेरे सिर पर हाथ रखा और कहा, बच्ची, मैं भारत में आया हूँ, तुम मुझे ढूँढ़ लो। बहुत ही स्पष्ट रूप से दो बार यह आवाज़ मैंने सुनी और तभी से लेकर मैं कई सत्संगों में, धर्मगुरु, धर्म-उपदेशक और धर्म-प्रचारकों के पास जाने लगी कि जिन्हें ध्यानावस्था में देखा था वह मुझे ज़रूर कभी साकार में मिल जायेंगे। काफी सत्संगों में जाने के बावजूद भी मुझे उस दिव्य पुरुष का दर्शन नहीं हुआ।

s_book final.2.pmd 197 03-01-2005, 10:32 AM

ब्रह्माकुमारी चन्द्रिका बहन जी

सन् 1965 की बात है कि एक दिन ईश्वर-चिन्तन में ही मगन थी। तभी मैंने सफ़ेद प्रकाश की काया वाले व्यक्ति में लाल प्रकाश को प्रवेश करते देखा। कुछ ही सेकेण्ड के बाद वह आकर्षक स्वरूप मेरे निकट आया।

मेरे दिल से निकला कि यही है, यही है

कुछ मास के बाद हमारे नज़दीक ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से साप्ताहिक कोर्स का आयोजन हुआ। हमें भी उसमें जाने का निमंत्रण मिला। जो निमंत्रण देने आये थे उन्होंने कहा कि यहाँ आप जैसी छोटी-छोटी बहनें स्वयं भगवान से मिलाने का दावा करती हैं, आप ज़रूर आइये। हमारे आस-पास वाले सभी लोगों को यह मालूम था कि हम काफी भक्ति करते हैं। उन्हों का निमंत्रण सुनकर मेरे माता-पिता सहित पूरे परिवार ने तो सात दिन जाने का फैसला कर लिया लेकिन मैंने इन्कार कर दिया और कहा कि ऐसे भगवान के नाम पर आजकल बहुत निकल पड़े हैं। मेरा अभी किसी में विश्वास नहीं रहा, न ही मुझे भगवान की प्राप्ति के लिए अब और कोई कोशिश करनी है। परिवार से सभी रोज़ जाया करते थे लेकिन मुझे कुछ सुनाते नहीं थे। आख़िरकार एक दिन पिताजी ने कहा, बेटी, तुम भी चलो, तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा। उस दिन मैं पिता जी के साथ गयी। तब कल्पवृक्ष का पाठ चल रहा था। मैंने चित्र में ब्रह्मा बाबा की तस्वीर देखी और सुना कि परमात्मा शिव इनके तन से गीता-ज्ञान दे रहे हैं। इस बात को सुनते ही मुझे कुछ महीने पहले ध्यानावस्था में देखा वो दृश्य याद आ गया और मेरे दिल से आवाज़ निकली कि यही है, यही है, यही है जिस छवि को मैं इतने दिनों से तलाश रही थी।

मैंने कहा – बाबा, मुझे तो यहाँ ही रहना है

मैं सात दिन का कोर्स भी पूरा नहीं कर पायी। केवल कल्पवृक्ष और तीन लोक के बारे में ही सुना। इसी बीच में गुरुवार को अहमदाबाद के पालड़ी सेवाकेन्द्र पर मेरा जाना हुआ (तब अहमदाबाद में एक ही सेवाकेन्द्र था, वह मकान अभी बदली हो गया है)। मुझे खुली आँखों से योगाभ्यास करने के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था लेकिन मेरी लौकिक बड़ी बहन रंजन (वर्तमान समय आफ्रीका में ईश्वरीय सेवा कर रही वेदान्ती बहन) ने मुझे बताया कि योग में आँखें खुली रखना और सामने जो बहन बैठी है उनकी आँखों से आँख मिलाना और अन्दर से बोलना कि मैं

s_book final.2.pmd 198 03-01-2005, 10:03 AM

आत्मा हूँ... मैं प्रकाश स्वरूप हूँ...। मैं तो उनको देखते-देखते कुछ ही क्षणों में ध्यान में चली गयी। मैंने ध्यानावस्था में फिर ब्रह्मा बाबा को देखा। मैं उनके गले लग गयी। बाबा ने भी कहा, आ गयी बच्ची ! मैंने कहा, जी बाबा। फिर तो मुझे नयी सतयुगी दुनिया के स्वयंवर, रास-मण्डल, गोप-गोपियाँ आदि के साक्षात्कार हुए। काफी समय वतन में ही बहलती रही। फिर बाबा ने कहा, बच्ची, अब तुम जाओ। मैंने कहा, बाबा, मुझे तो यहाँ ही रहना है, और कहीं नहीं जाना है। बाबा ने कहा, बच्ची, यह तो सूक्ष्म वतन है, तुम यहाँ नहीं रह सकती। तुम्हें तो जाकर बाबा की बहुत सेवा करनी है। मैं बाबा की बातों से ज़्यादा अपनी बात को लिये बैठी थी कि नहीं बाबा, मुझे तो यहाँ ही रहना है। ध्यानावस्था में ही मेरा रोना शुरू हो गया। मैं बहुत रो रही थी। तब बाबा ने कहा, बच्ची, बाबा तुमसे वायदा करता है कि जब भी तुम बाबा को दिल से याद करोगी, बाबा तुम्हें अपने पास वतन में बुला लेगा। फिर तो रोज़ सुबह 5 बजे जैसेकि वतन में बाबा के पास जाने का नियम ही बन गया। मैंने वतन में बाबा के पास ही सप्ताहिक कोर्स किया। साकार में मुरली सुनने के पहले मैंने वतन में बाबा से कई मुरलियाँ सुनी। देखिये, जब बाबा साकार में थे तो भी आलमाइटी बाबा ने ब्रह्मा बाबा के आकारी स्वरूप से बच्चों की कितनी सेवा और पालना की !

मेरे सिर पर हाथ रखा और कहा, बच्ची, मैं भारत में आया हूँ, तुम मुझे ढूँढ़ लो। बहुत ही स्पष्ट रूप से दो बार यह आवाज़ मैंने सुनी, तभी से मैं कई सत्संगों में ढूँढ़ने लगी कि जिन्हें ध्यानावस्था में देखा था वे मुझे मिलें।

आख़िर वह दिन आया, साकारी फ़रिश्ते से मिलन मनाने का

साक्षात्कार के क़रीब छः मास के बाद मेरा माउण्ट आबू में आना हुआ। ब्रह्मा बाबा से साकार में मिलते हुए मैंने बहुत ख़ुशी के साथ अपने अनुभव बाबा के सामने वर्णन किये। मैंने कहा, बाबा, आपने मुझे अपना साक्षात्कार कराया था। तब बाबा ने बड़ी विनम्रता के साथ कहा, बच्ची, हो सकता है शिव बाबा ने साक्षात्कार कराया होगा। इस बाबा को कुछ भी मालूम नहीं है। बाबा के उस उत्तर को सुनकर पहले तो मुझे ऐसा लगा कि ब्रह्मा बाबा जानते हुए भी अनजान बन रहे हैं और कहते हैं कि कराने वाला शिव बाबा ही है।

प्रथम बार जब मैं मधुबन में आयी तब मेरी उम्र केवल 18 साल ही थी और मैं स्नातक के अन्तिम वर्ष में पढ़ रही थी। बाबा ने मुझे कहा कि बच्ची, इस जन्म की

s_book final.2.pmd 199 03-01-2005, 10:32 AM

सारी कर्म-कहानी बाप को बता दो। मैंने अपनी पूरी जीवन-कहानी बाबा को सुनायी। छोटे से छोटी ग़लती भी याद करके बाबा को अपना पूरा पोतामेल दिया। उसे सुनने के बाद बाबा ने मुझे वरदान दिया कि बच्ची, तुम्हारे द्वारा बहुत बड़े-बड़े लोगों की सेवा होगी। इस वरदान को मैंने अपने जीवन में साकार होते हुए देखा है और जब-जब ऐसे प्रसंग आते हैं तो बाबा के द्वारा मिला हुआ यह वरदान बार-बार मुझे याद आता है और मुझे महसूस होता है कि मैंने सच्चाई से बाबा के आगे अपने जीवन की हर बात सुनायी, उसी के फलस्वरूप बाबा से मुझे यह वरदान प्राप्त हुआ।

मैंने कहा, बाबा आपने मुझे अपना साक्षात्कार कराया था। तब बाबा ने बड़ी विनम्रता के साथ कहा, बच्ची, हो सकता है, शिव बाबा ने साक्षात्कार कराया होगा। इस बाबा को कुछ भी मालूम नहीं है।

बाबा के सामने ड्रिल की और सेल्यूट दी

जब से मैंने बाबा को देखा, मुझे पूरा निश्चय हुआ कि यह बाबा ही मेरा सर्वस्व है। तब से मैं हर क़दम बाबा की आज्ञा से ही रखती थी। कॉलेज की पढ़ाई के समय एन.सी.सी. (N.C.C.) में मेरा चयन हुआ। देहली में होने वाली 26 जनवरी की परेड के लिए मुझे एक मास ट्रेनिंग के लिए देहली जाना था तो बाबा की राय लेने के लिए मैंने अहमदाबाद से आबू आकर बाबा से पूछा, बाबा, मुझे एक मास परेड के लिए देहली जाना है और एक मास वहाँ रहना होगा तो मेरे खाने-पीने आदि की धारणा का क्या होगा ? इतना सुनते ही बाबा ने मेरे से पूछा, अच्छा बच्ची, तुमको ड्रिल करना आता है क्या ? आज रात्रि क्लास में बाबा को दिखाना। ऐसा कहते हुए लच्छु बहन को बुलाया और कहा, बच्चियों को पहरे वाले की नयी ड्रेस निकाल कर देना। मैं तो बहुत ख़ुश हो गयी क्योंकि शाम को बाबा को ड्रिल दिखानी थी। लच्छु बहन ने मुझे नयी तीन जोड़ी ड्रेस दी। मैं, वेदान्ती बहन और हमारी एक सखी हम तीन थे। रात्रि में बाबा की क्लास पूरी हुई और बाबा ने कहा कि अहमदाबाद से आयी हुई बच्चियाँ आज ड्रिल करके दिखायेंगी। फिर तो हमने छोटे हाल में ड्रिल की और बाबा को सेल्यूट दी। बाबा ने भूरी-भूरी प्रशंसा की और कहा, तुम्हारे जैसी बच्चियाँ रूहानी ड्रिल कराना सीख जायें तो बाबा का नाम बाला हो जायेगा। हम तो बहुत ख़ुश हुईं। रात्रि को बाबा से गुड नाइट करके सो गये। परन्तु वो सवाल का जवाब तो बाक़ी रह गया। सुबह हुई

s_book final.2.pmd 200 03-01-2005, 10:03 AM